श्रद्धेय अध्यक्ष डॉ० प्रमथनाथ वंद्योपाध्याय
को समर्पित

इस उपन्यास की कथा किंवदन्तियों एवं कल्पना पर आधारित है। ये दोनों किस परिमाण में इसमें हैं, यह पाठकों की सूझ-बूझ पर छोड़ता हूँ। जॉब चार्नक के जीवन-काल में ही उसको लेकर अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हो गयी थीं। इस उपन्यास से यदि उसी शृंखला में किसी नयी किंवदन्ती का सृजन होता है तो अपना प्रयास मैं सफल समझूँगा।

एक

पंच[1] के प्याले को जॉब चार्नक ने खाली किया। खाली प्याले के धुंधले आईने में वह बिना पलक झपकाए अपनी बिगड़ी हुई परछाईं देखने लगा। अकेला, यहाँ वह निहायत अकेला है ! कहाँ लंदन और कहाँ यह कासिम बाजार ! न माँ, न बाप; न दोस्त, न बीवी। सात समंदर पार इस अजाने देश में जॉब चार्नक का कोई नहीं, कोई भी नहीं !

कंधे पर ज़ोरों की थाप किसने लगायी ? जॉब चार्नक ने पलटकर देखा। जॉन इलियट। लाल सुर्ख वर्तुल मुखड़ा, चटक वेश-भूषा, मेद-बहुल शरीर। इलियट कम्पनी का कारिन्दा है। उसने कौतुक से कहा, 'मिस्टर चार्नक, घर के लिए जी भर आता है न ? स्वाभाविक है। आये भी कितने दिन हुए ? चीयरियो ! और ज़रा-सी पंच—मीठी, हलकी, शराब लीजिए। पंच की बाढ़ में सारे दुखों को बहा दीजिए।'

'न, छोड़िए। बहुत पी चुका।'

'नहीं क्या !' इलियट ने आवाज़ दी। 'मेरी एन, पंच लाओ ! ... आपसे बताऊँ मिस्टर चार्नक, फिलहाल पंच ही हम लोगों का सहारा है। अच्छा माल अब कहाँ मिलता है ? 'यूरोप' जहाज में होम से कुछ वाइन आयेगी।'

कासिम बाजार के इस पंच-हाउस का नाम है 'ओल्ड इंग्लैंड'। इसका मालिक है जॉन इलियट, हालाँकि बेनामी। 'ऑनरेबुल कम्पनी' का नौकर होने के बावजूद बेनामी व्यवसाय चलाता है। इस मधुशाला में विदेशियों की भीड़ रहती है। फ्रांसीसी, डच, अँगरेज आपस में प्रतियोगी होते हुए भी गुप्त कारोबार में सहयोगी हैं। गैरकानूनी सौदों की बहुतेरी गुप्त बातें

---

1. एक प्रकार की हलकी शराब।

यहाँ गूँजती है। मधुशाला गंगातट पर नाव-घाट के पास है। मिट्टी की दीवारें, फूस की छौनी, मगर खासी अच्छी-सी। सामने के छोटे-से बगीचे में बेला, जुही, गुलदाऊदी तथा और भी बहुत-से मौसमी फूलों के पौधे। एक बरगद के पेड के नीचे लकडी की कई टूटी-सी मेज़-कुर्सियाँ। झोंपड़ी में जगह की कमी होने से ग्राहक यही भीड लगाते हैं।

मेरी एन एक बडे जग मे पंच ले आयी। दसेक साल की लड़की, लेकिन उमगती-सी बनावट। इसी उम्र में फ्रॉक पर उठती छाती की उद्वेलता। बादामी वेणी, अधमैला रंग, नीली आँखें और धुमैली पुतलियाँ; नसों में मिश्र-रक्त की धडकन। मृदु मुस्कराहट के साथ मेरी एन ने जॉब चार्नक के पात्र को भर दिया।

'मिस्टर चार्नक,' इलियट ने कहा, 'मेरी यह नयी क्रीतदासी कैसी लगती है?'

चार्नक की राय सुनने के लिए मेरी एन उद्ग्रीव हुई।

चार्नक अचंभे मे आ गया। बोला, 'क्रीतदासी? अरे, यह तो निरी बच्ची है।'

मेरी एन के नितंब पर धप् से एक हाथ मारकर इलियट ने कहा, 'बस, महज़ दो-एक साल इंतज़ार कीजिए, यह बच्ची ही झकझक युवती हो जायेगी। जानते हैं मिस्टर चार्नक, ये नेटिव लड़कियाँ कम उम्र में ही जवान हो जाती है?'

दस साल की लड़की मेरी एन ने झंकार के साथ प्रतिवाद किया, 'मिस्टर इलियट, फिर? फिर आपने मुझे नेटिव कहा! मैं इंगलिश हूँ। मेरी माँ ब्लैकी थी, मगर पिता तो अँगरेज़ थे।'

'ब्रेवो,' इलियट उमगा; लड़की तेज़ है। 'बहुत खूब, तुम ईस्ट इंडियन हो।'

'नही-नही, मैं इंगलिश हूँ,' मेरी एन ने पच के जग को एकाएक मेज़ पर और हाथ कमर पर रखकर कहा, 'कहिए आप, मैं इंगलिश हूँ। नहीं तो मैं रो दूँगी।'

उस बच्ची के लिए चार्नक को कैसी कौतुक-भरी माया हो आयी। उसने तसल्ली दी, 'बाइ जोव, तुम इंगलिश हो। बेशक इंगलिश हो।'

कृतज्ञता से मेरी एन की आँखें दमक उठीं। उसने अचानक चार्नक के गले से लिपटकर उसे चूमा। कहा, 'मिस्टर, आप बड़े अच्छे हैं। इलियट दुष्ट है !'

बच्ची के आकस्मिक उच्छ्वास से चार्नक परेशान हुआ।

'खूब, खूब !' इलियट ने हँसकर कहा, 'मिस्टर चार्नक, खासी रहती आपकी यह प्रेयसी। फिर भी, और जरा उम्र होती तो अच्छा था।'

'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ,' पंच का जग उठाकर एन दौड़ती हुई अंदर चली गयी। कहती गयी, 'मैं तुम्हे प्यार करती हूँ, मिस्टर चार्नक !'

चार्नक का चेहरा सुर्ख हो आया, समय से पहले सयानी इस बच्ची के बेझिझक प्रेम-निवेदन से।

इलियट ने ठहाका लगाया, 'खासे मुनाफे का सौदा है यह मेरी एन। क्या खयाल है, मिस्टर चार्नक ? यह लौंडिया बहुत ग्राहकों को खींच लाएगी। बस, दो साल और। फिर तो इसकी उभरी जवानी से इस मधुशाला में ग्राहकों की भीड़ होगी।'

'इस लड़की को पाया कहाँ ?'

'महज दस सिक्के में इसे हुगली में खरीदा है। सुना तो आपने, उसकी माँ नेटिव थी और बाप अँगरेज। हमारे ही जात-भाई किसी नाविक की जारज संतान होगी। हुगली में पेपिस्टों ने उसे पाला था। इसलिए यह लड़की इसी उम्र में नियम से प्रार्थना करती है। चाहें तो आप मेरी एन को ले सकते हैं। मामूली मुनाफे पर मैं इसे आपके हाथ बेच सकता हूँ। आपकी लगाई पूँजी पर लाभ ही होगा। कुछ ही दिनों में यह जवान हो जायेगी। आपका मूल सूद सहित वसूल हो जायेगा।'

'शुक्रिया, मिस्टर इलियट,' चार्नक ने कहा, 'क्रीतदासी रखने की ख्वाहिश ही नहीं है, तिस पर यह बच्ची। आपने पागल समझा है मुझे ?'

'आपने तो मुझे अवाक् कर दिया, मिस्टर चार्नक !' व्यवसायी-सुलभ स्वर में इलियट ने कहा, 'इस नौजवानी में आप कासिम बाज़ार कोठी के चौथे अफ़सर हैं। शायद हो कि कल ही ऑनरेबुल कंपनी की निगाह में आने से चीफ हो जायें। आप क्रीतदासी नहीं रखेंगे तो और कौन रखेगा ? वेल्, माफ़ कीजिएगा मिस्टर चार्नक, आपकी कोई नेटिव रखैल नहीं है ?'

चार्नक को यह चर्चा क़तई अच्छी नहीं लग रही थी। चार्नक इलियट से उम्र में तरुण है, पर पद में ऊँचा। नीचे ओहदे के इस कर्मचारी की रसिकता से उसे खीज हो आयी। उसने जरा रुखाई से कहा, 'नहीं मिस्टर इलियट, मेरी कोई रखैल नहीं, न ही रखने की इच्छा है। महज पाँच साल के इकरारनामे पर हिंदोस्तान आया हूँ। इकरारनामे की मियाद पूरी होते ही अपने घर लौट जाऊँगा। इस मुल्क की नेटिव डाइनों के पल्ले पड़ने का अपना इरादा नहीं।'

'डाइन!' इलियट ताज्जुब में पड़ा। 'आप बिलकुल कच्चे हैं, मिस्टर चार्नक! नेटिव औरतों के बारे में आपको कोई जानकारी नहीं है। ये फूलों की तरह कोमल और रेशम जैसी चिकनी होती है। इनके प्रेम की मादकता, वेल् मिस्टर चार्नक, सिर्फ अपने अनुभव से जानी-बूझी जा सकती है, दूसरे के किये वर्णन से नहीं। आप मर्द हैं न!'

इतने में सामने की पगडंडी से कुछ मूर[1] औरतें जाती दिखायी दीं—सारा शरीर बुरके से ढँका। आँखों पर गोलाकार दो जालियाँ।

उन्हें देखकर जॉब चार्नक जोश में आकर बोल उठे, 'देखिए मिस्टर इलियट, वह रहीं आपकी नेटिव स्त्रियाँ। चलती-फिरती पोटलियाँ, भूत जैसी। अँधेरे में देखने से कलेजा धक् से रह जायेगा।'

'आप बड़े बुद्धू हैं, मिस्टर चार्नक,' इलियट ने कहा, 'यह बुरका अँधेरे के लिए नहीं है। अँधेरे में यह बुरका जब उतर जायेगा, उफ़, क्या बताऊँ आपसे...!'

अचानक राहगीरों की वह जमात बुरके के अंदर हँस पड़ी। वे पोटलियाँ जैसे चंचल होकर एक-दूसरे पर लुढ़क जाने लगीं। लगा, जालियों के अंदर से आँखों की कुछ जोड़ियाँ चार्नक पर गड़ गयीं, कौतुक से चमकती आँखें। हँसी की कलकल ध्वनि के साथ अपनी भाषा में वे जाने क्या बोलने लगीं!

नेटिव भाषा अभी तक चार्नक को वैसी रवाँ नहीं हो सकी है। ये गठरियाँ बोल क्या रही हैं? हो न हो चार्नक के बारे में ही कुछ कह रही

---

1. उस समय अँगरेज मुसलमानों के लिए प्राय: 'मूर' शब्द का ही प्रयोग करते थे।

हैं। छलकती हँसी से गांव की पगडंडी को गुंजाती हुई वे चली गयीं।

'क्या कह रही थी वे ?' जॉब चार्नक ने ज़रा खीजकर पूछा।

इलियट हो-हो करके हँस पड़ा। उसके बाद रस लेते हुए बोला, 'वे क्या कह रही थी, मालूम है ? बोलीं—ऐ दीदी, वह जो बच्चा-सा साहब है, वह साहब है कि मेम ? मेमों की तरह उसके कंधों तक कैसे सुनहले बाल लटक रहे हैं ! शक्ल भी जनाना है। मेमों जैसी रुपहली झालरदार रंग-बिरंगी पोशाक—वह जरूर मेम है, जरूर।'

इलियट के ठहाके के बीच चार्नक ने एक बार कंधों तक लटकते अपने सुनहले बालों पर हाथ फेर लिया। रुपहली झालर वाले कोट पर सलज्ज दृष्टि गयी। अनचीन्ही नेटिव औरतो की रसिकता से उसे नाराजगी नहीं हुई। पंच के प्याले को खाली करके वह भी धीमे-धीमे हँसने लगा। उसके बाद इलियट के ठहाके के साथ उसकी हँसी भी कही खो गयी।

मकसूदाबाद के निकट ही भागीरथी तट पर कासिम बाजार एक छोटा-सा गाँव है। जंगल-झाडियों में मिट्टी के बने घर, गड़हे-डाबर—दूसरे और गांव की ही तरह। तंग रास्ते। छोटा सा एक बाजार। बाजार का रास्ता इतना सँकरा कि एक पालकी मुश्किल से गुजर पाती है। जगह बिलकुल स्वास्थ्यकर नहीं। बुखार-बुखार और पेट की बीमारी लगी ही रहती हैं। लेकिन रेशम का कारोबार खूब जमा हुआ है। कासिम बाजार के चारों ओर शहतूत के पेड़ों की खेती होती है। रेशम के कीड़ों का खाद्य हैं शहतूत के नर्म पत्ते। इधर के रेशम का रंग पीला होता है, लेकिन व्यवसायी लोग केले के छिलके की राख से फीचकर रेशम को साफ़ करते हैं। रेशम के लोभ से इन दिनो विदेशी व्यापारियो की आवाजाई से कासिम बाजार में खासी सरगरमी रहती है। डच, फ्रासीसी, अँगरेज। इंगलैंड की राइट ऑनरेबुल ईस्ट इंडिया कंपनी ने फैक्टरी खड़ी की है; कोठी, गोदाम, कर्मचारियों के आवास, नाव-घाट, बगीचा भी। पक्के मकान विरले ही हैं। फूस की छौनीवाले कच्चे घरों में ही उन लोगों का कारोबार है। व्यवसाय के लिए विभिन्न देशों की विभिन्न जाति के लोग यहाँ जुटते हैं। बड़े-बड़े नाव-बजरे

घाट पर आकर लगते हैं। माल चढ़ता-उतरता है। नेटिव बनिये, दलाल, तगादेदार, पोद्दारों की भीड़ है। बादशाह के दीवान कर की वसूली के लिए बार-बार कर्मचारियों को भेजते हैं। फिर भी हिंदुस्तान की एक निहायत मामूली मंडी है कासिम बाजार, जहाँ की नयी अँगरेजी कोठी का चौथा अफसर है जॉब चार्नक; बीस पौंड वार्षिक वेतन है उसका। ऑनरेबुल ईस्ट इंडिया कंपनी के डाइरेक्टरों से कुछ जान-पहचान थी, इसीलिए पाँच साल के इकरारनामे पर वह आज चौथे अफ़सर के ऊँचे ओहदे पर विराज रहा है। उसके मातहत अनेक स्तर के अँगरेज़ कर्मचारी हैं—एप्रेंटिस, राइटर, कारिन्दे, मर्चेंट, सीनियर मर्चेंट। इनका वेतन और भी कम है।

लेकिन उनका लोभ और भी ज्यादा है। यह जो राइटर रिचर्ड पिटमैन है, जिससे जॉब चार्नक ने कुछ परिचय कर लिया है, सुना जाता है, इसी बीच काले गुमाश्तों से साँठ-गाँठ करके उसने अच्छा कमा लिया है। तीसरे अफसर मिस्टर जॉन प्रिड्डी के ज़िम्मे रेशम का गोदामघर है—फूस की छौनी वाला मिट्टी का सुरक्षित घर। वहाँ सिल्क की गाँठों की कतारें छत को छूती हैं। उस रोज जाने किस वजह से मिस्टर प्रिड्डी गोदाम नहीं जा सके। उसने बनियों के साथ जाकर सिल्क की नयी आयी हुई गाँठों को सहेज आने का भार पिटमैन को सौंपा। वह गया। बाद में जब हिसाब मिलाया गया तो एक गाँठ कम थी। दो गाँठों में घटिया रेशे का रेशम था। चीफ़ आयमन केन साहब तो बेहिसाब बिगड़े, पिटमैन पर सन्देह किया। हो न हो, बनियों से हिस्सेदारी में उसी ने माल खिसकाने में मदद दी है। आम टेबिल पर खाने के समय चीफ ने खुलेआम ही जुर्म लगाया। लेकिन पिटमैन ने भगवान की क़सम खाकर इनकार किया।

रिचर्ड पिटमैन आजकल कीमती चटकदार पोशाक पहनता है।

'कीमत कहाँ से चुकाते हो?' चार्नक ने पूछा था।

पिटमैन ने जवाब दिया, 'उपहार है।'

'कौन तुम्हारा ऐसा चाचा है जो तुम्हें उपहार देता है?'

पिटमैन ने बेहया की नाईं जवाब दिया, 'कंपनी सालाना दस रुपया तनख़्वा देती है। सोचती क्या है? हम ईसा मसीह या संत जोन हैं? ऊपरी

आमदनी न करें तो आखिर इस सील वाले सड़ी गरमी के मुल्क में मरने के लिए क्यों आये हैं ? अरे यार, जहाँ से बने, लूट लाओ, कूट खाओ। कुछ ही वर्षों में लॉर्ड बन जाओगे। उसके बाद अपने मुल्क में जाकर कैसल खरीद कर ज़िंदगी के बाक़ी दिन आराम से बिताओगे।'

चार्नक ने प्रतिवाद किया, 'लेकिन डिक्, कंपनी का नमक खाते हो, नमकहरामी न करो।'

'रुको भी, जॉब,' पिटर्मन ने ताना दिया, 'तुम अभी भी बच्चे हो। मेक हे व्हाइल द सन शाइन्स। उम्र कम है। अपनी इसी उम्र में कुछ कमा-धमा लो। नहीं तो कलम घिसते और रोकड़ रखते-रखते एकांगी जीवन सूख जायेगा।'

शीराजी शराब का घूंट लेते हुए जॉब चार्नक ने सोचा—जीवन सचमुच ही एकांगी है। बही-खाता और बही-खाता—पन्नों हिसाब लिखते चले जाओ। रेशम, गरद, ताफ़्ता की कितनी गाँठें आयी और गयीं, कितनी नाव शोरा भेजा गया, कितने मन अफ़ीम का निर्यात हुआ—सबका हिसाब रखो। बस, हिसाब और हिसाब ! कहीं गोलमाल हुआ कि गजब। सर्विस बुक में खराब एंट्री; और, ऐसी एडवर्स एंट्री दो-चार हुई कि नौकरी गयी। फैक्टरी का कायदा-क़ानून ठीक फौजी कानून जैसा ही सख्त। बग़ैर इजाज़त के कोई फैक्टरी से बाहर नहीं रह सकता। सबेरे के नौ बजे से दिन के बारह बजे तक काम। और कहीं काम का बोझ बढ़ा तो दिन के चार बजे तक। काम बेशक ज्यादा नहीं, पर माल-लदी नाव के आ जाने पर साँस लेने की फ़ुरसत नहीं रहती। दोपहर को भोजशाला में सभी साथ खाने बैठते हैं। पद का भेद खाने की मेज पर पूरी तरह मानना पड़ता है। पद के क्रम से ही बैठना पड़ता है। खाने का सुख तो जरूर है। कितने ही प्रकार का भोज रहता है—मछली, मांस, भारतीय, पुर्तगाली, अँगरेज़ी, यहाँ तक कि फ्रांसीसी तरीके की रसोई भी। इतवार को या छुट्टी के दिन शिकार किये हुए पशु-पक्षी का मास खूब जमता है। शराब के प्याले को उठाकर राजा और माननीय कंपनी से लेकर मामूली किरानी तक, सभी के स्वास्थ्य के लिए पान करो। फिर एक साथ रात का खाना-पीना। रात के नौ बजे फैक्टरी का फाटक बन्द होगा। लिहाजा सब लौट आओ।

16 : जॉब चार्नक की बीवी

कैसा एक नियम मे बँधा जीवन ? नियम से उठो-बैठो। नियम के मुताबिक खाओ और सोओ। मौज-मजे के लिए मधुशाला की शीराजी शराब और खींची हुई पंच पीओ। बहुत हुआ तो डच पडोसियों के साथ खाना-पीना। आसपास कही शिकार खेलने जाओ। बाहर जाना हो तो अर्दली को साथ लेकर जाना होगा, नही तो कंपनी के अफसरों और खुद कंपनी की मानहानि होगी।

हाँ, नियम-क़ानून जितना कड़ा होता है, उन्हें तोड़ना उतना ही सहज। तरुण जॉब चार्नक नियम के पालन मे, और पिटमैन नियम तोड़ने में व्यस्त है।

'तुम्हें नौकरी जाने का खौफ़ नही ?' जॉब चार्नक ने कहा।

'हुं., इस नौकरी का मोह !' पिटमैन ने बेफिझक कहा, 'सिर्फ़ ऊपरी पावने के लोभ से ही तो नौकरी कर रहा हूँ। नौकरी जायेगी तो इंटर-पोलरो के दल मे जुट जाऊँगा। हमारे जैसा जानकार मिले तो वे साग्रह स्वीकार कर लेंगे।'

इंटरपोलर लोग हैं तो अँगरेज ही, मगर कंपनी के बड़े दुश्मन हैं। एकाधिकार वाले व्यापार मे दरार डालने के लिए वे अपने जहाज से सात समंदर पार हिन्दुस्तान में आकर हाजिर होते हैं। नेटिवों से सीधे सौदा करते है, ज्यादा दाम देकर माल खरीदते हैं, बनियों को लुभाते हैं। इनकी इस होड के चलते ईस्ट इंडिया कंपनी के डाइरेक्टरों की रात की नींद हराम है। वे राजाओं की कितनी आरजू-मिन्नत करते हैं, नवाबों की खुशामद करते है कि आफत के इन परकालों को हिन्दुस्तान की चौहद्दी में न आने दें। वे अँगरेज, स्वधर्मी, स्वजातीय हुए तो क्या ! वे भी तो वणिक हैं, तिस पर प्रतियोगी। वे बाजार बिगाड़े दे रहे हैं। ज्यादा दाम देकर नेटिव बनियों का लोभ बढ़ा रहे हैं, यूरोप में माल सस्ता बेचकर कंपनी को नुकसान पहुँचा रहे हैं। उनको दबाया न गया तो कंपनी चित हो जायेगी। वे पुर्तगाली-डच-फ्रांसीसियों से भी बड़े दुश्मन हैं। घर के दुश्मन हैं न !

'नही-नही, डिक,' चार्नक ने उसे होशियार करते हुए कहा, 'उन लोगों को तरह न दो।'

'तुम निरे नाबालिग़ हो,' पिटमैन ने कहा, 'बालिग होते तो हमारे ऊपरवाले अधिकारियों की तरह इंटरपोलरों से कारोबार करते।'

'झूठ! यह हरगिज़ नहीं हो सकता,' जॉब चार्नक ने प्रतिवाद किया, 'ऊपरवाले कंपनी के दुश्मनों को कभी बरदाश्त नहीं कर सकते, कारोबार तो दूर की बात।'

'तुम जानते ही कितना हो, जॉब? जैसे-जैसे दिन बीतेंगे, जितना अनुभव होगा, स्वयं देखोगे। देखोगे और सीखोगे। और अगर मर्द होगे तो समय रहते कारोबार सँवार लोगे,' पिटमैन ने समझदार की तरह कहा।

'झूठा प्रलोभन दे रहे हो, डिक्,' चार्नक ने कहा, 'बिलकुल झूठा प्रलोभन।'

शीराज़ी का नशा तेज हो आया। उस दिन उन देसी औरतों ने जॉब चार्नक की हँसी उड़ाई थी—वह साहब नहीं, मेम है। इलियट ने कहा था—आप मर्द हैं न! आज पिटमैन कह रहा है—मर्द होगे तो कारोबार सँवार लोगे। जॉब चार्नक सोचने लगा—ये शैतान के अनुचर हैं। सिर्फ बुरे रास्ते का प्रलोभन दिखाते हैं। रूप और रुपये का प्रलोभन। न-न, मैं जॉब चार्नक हूँ, मैं कुपथ पर नहीं जाऊँगा। मालिक की नमकहरामी मैं नहीं करूँगा, बेईमानी मैं नहीं करूँगा। रूप और रुपये के फंदे में पाँव नहीं डालूँगा। मैं जॉब चार्नक हूँ, इतना छोटा मैं नहीं हो सकता। मेरी एक महत्वाकांक्षा है—मालिकों को खुश करूँगा। अच्छे रास्ते से धन कमाऊँगा। पाँच साल का समझौता पूरा हो जाने पर घर लौट जाऊँगा। किसी रूथ या जेनी से ब्याह करके लंदन में, सम्मान के साथ ज़िंदगी बसर करूँगा। मैं प्रलोभन में नहीं पड़ूँगा, हरगिज़ नहीं।

गंगा की गोद में मंथर गति से चला जा रहा है वरदिपपुल मिस्टर चेंबरलेन का बजरा। मजबूत, मँझोले आकार का, कई चमकीले रंगों से चित्रित। फ़रवरी की हिमशीतल बयार में मस्तूल के ऊपर का रंगीन पाल फूल-फूल उठता है। मल्लाह डाँड़ खे रहे हैं।

पटना की कोठी के चीफ़ चेंबरलेन साहब जॉब चार्नक को पसंद करते हैं। बेचारा कैसा उदास-मायूस रहता है! इसीलिए वह उसे अपने साथ पटना लिये जा रहे हैं। कासिम बाजार की रुँधी हवा में जॉब चार्नक को छुटकारा मिला। देश-भ्रमण और अभिज्ञता। उम्र कम है उसकी। हिंदुस्तान को जानना चाहिए, देखना चाहिए, नेटिवों से मिलना-जुलना चाहिए, तभी वह व्यवसाय के गुप्त मंत्र का अधिकारी होगा, धूर्त नेटिवों की टेढ़ी चालों को समझ सकेगा। चलो, पटना चलो।

साल्ट पीटर की आढ़त है पटना में। यहाँ शोरे से बारूद बनता है। जिस देश का बारूद जितना अच्छा है, वह देश उतना ही बलशाली है। यूरोप में लड़ाई तो लगी ही रहती है। यहाँ तक कि मुल्क में भी। इसलिए शोरे की माँग दिनों-दिन बढ़ रही है। ऑनरेबुल कंपनी बराबर तकाजे करती है, शोरा भेजो—'इंडियामैन' जहाज भरकर शोरा भेजो। टटका, सूखा, जोरदार बारूद जल-थल में अँगरेजों की ताक़त बढ़ाएगा। पटना का शोरा सूरत के इलाके के शोरे से उम्दा किस्म का है, इसलिए शोरे की अच्छी जानकारी हासिल करनी होगी।

मद्रास के फ़ोर्ट सेंट जार्ज से भी हुक्म आया है। मिस्टर जॉब चार्नक की बदली पटना हुई। उससे आग्रह किया गया कि वह साल्ट पीटर के बारे में तथ्य संग्रह करे। साल्ट पीटर के गुण और विशेषता की अभिज्ञता प्राप्त करने का व्रत ले।

जॉब मिस्टर चेंबरलेन के बजरे की छत पर बैठा है। बजरा धीरे-धीरे राजमहल की ओर बढ़ रहा है—राजमहल, मुंगेर, पटना।

नाव का यह अभियान अच्छा लग रहा है। फरवरी की सरदी। बहुत ही मनोरम आबो-हवा। नीले आसमान पर साफ़-सुनहली धूप। इतनी रोशनी, ऐसी नीलिमा शायद लंदन के आसमान में नहीं होती।

बतखों का झुंड उड़ा जा रहा था। कभी माला जैसा, कभी तीर की तरह। कितने विचित्र आकार! किस अजानी जगह से उड़कर आ रही हैं वे, किस अजानी जगह को जाएँगी, कौन जाने! नीले आकाश में बतखों की पाँत का खेल देखने में अच्छा लग रहा था।

धाँय! कान के पास बंदूक की गरज। जॉब चार्नक चौंक उठा।

उस हँसी से चार्नक को बेचैनी-सी हुई। युवती उसे मेम समझ रही है ? उस दिन की मूर स्त्रियों की हँसी भी चार्नक को याद आयी। बुरके के अंदर प्रेतनी जैसी। जालियों के सूराखों से आँखें मानो व्यंग्य कर रही थीं। मगर आज की इस जेंटू-स्त्री की काली और बड़ी-बड़ी आँखों में कोई व्यंग्य नहीं है, बल्कि स्निग्ध सहृदय दृष्टि है। नदी की बाँक में बजरा जब तक ओझल नहीं हो गया, जॉब चार्नक ने मुग्ध आँखों तब तक उस दृष्टि के लालित्य का उपभोग किया।

फिर भी सर के लंबे बाल भारी-से लगने लगे। इन बालों की वजह से सच ही क्या वह जनाना-सा लगता है ? चाँदी की झालर वाला कोट भी इस गरम देश में कष्टदायक है। लगता है, नेटिवों की वेश-भूषा ही यहाँ की आबो-हवा के अनुकूल है।

बजरे के कमरे में मिस्टर चेंबरलेन की नींद टूट गयी थी, ग्रॉल्डवर्थ की बंदूक की आवाज से। उन्होंने आवाज दी, 'जॉब चार्नक !'

'जी, सर !' जॉब बजरे की छत से कमरे में उतर आया। खासा बड़ा सजा-सजाया कमरा। झिलमिली वाले चार-एक झरोखे। झरोखे से हाथ बढ़ाने से नदी का पानी छुआ जा सकता है। छलछलाता पानी हाथ में लगता है, सिहरन होती है हाथ में।

'जॉब, बंदूक किसने छोड़ी ?'

'हेनरी ने। बत्तख का शिकार करना चाहा था। कामयाब नहीं हुआ।'

'गनीमत है, किसी नेटिव का शिकार नहीं किया। हेनरी को समझना चाहिए, बंगाल में हम लोगों ने नया-नया व्यवसाय शुरू किया है, हमें बड़ी होशियारी से चलना चाहिए। यदि कोई ऐसी-वैसी वारदात हो जाये, तो मौका पाकर ये नेटिव लोग हमें देश से निकाल बाहर करेंगे।'

'मैं हेनरी को सावधान कर दूंगा।'

'मैं जानता हूँ, तुम बड़े चौकस जवान हो,' चेंबरलेन ने कहा, 'जॉब, मैं तुम्हें अपने लड़के की तरह मानता हूँ। मुझे यक़ीन है, तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल है।'

'धन्यवाद, सर !' चार्नक ने कहा, 'आपके साथ काम करने में मुझे खुशी होगी।'

'मुझे भी। पटना चलो। गंडक के किनारे सिंगिया में हमारी फैक्टरी है। शोरे की ग्राढ़त। खूब तरक्की होगी। तुम जैसे विश्वासी कर्मचारी की बड़ी ज़रूरत है। मैं मद्रास चिट्ठी लिखता हूँ, लंदन में डाइरेक्टरों के पास भी तुम्हारा ज़िक्र करते हुए मैंने लिखा है।'

"मैं सदा आपका एहसानमंद रहूँगा,' चार्नक ने कहा, 'लेकिन सर, पाँच साल की मियाद पूरी होते ही मैं मुल्क लौट जाऊँगा।'

'घर के लिए मन मचलता है?' उसकी पीठ ठोंककर चेंबरलेन ने कहा, 'ऐसा होता ही है। इस देश को देखो, इसे जानो। इस देश से तुम्हें मोह हो जायेगा। जितना बड़ा है, वैसा ही विचित्र है यह देश। जानते हो जॉब, मुझे लगता है, हम अँगरेज़ों का भविष्य इससे जुड़ा हुआ है। हम तुम जैसे नौजवानों को चाहते हैं।'

तब तक हेनरी ऑल्डवर्थ उतर आया था। वह बोला, 'सर, गला सूख गया है, आपका प्याला खाली है क्या?'

'नहीं, एक-एक बौल दो, हेनरी!'

'मैं अभी नहीं पीऊँगा,' चार्नक ने कहा।

ऑल्डवर्थ ने मज़ाक किया, 'सर, चार्नक शायद धार्मिक मूर होता जा रहा है, यह अब शराब नहीं छूएगा।'

'माफ कीजिएगा,' कहकर चार्नक कमरे से बाहर बजरे में आ गया।

हेनरी का मज़ाक आज उसे अच्छा नहीं लग रहा है। गंगा की गोद में बजरे की मंथर गति ने उसके मन को अलसा दिया है। उसकी आँखों में तैर रही है जेंटू स्त्रियों की स्निग्ध सहृदय दृष्टि और कानों में बज रही है बुरके वालियों की व्यंग्य भरी हँसी। चार्नक ने लंबे-चिकने सुनहले बालों पर हाथ फेरा और एक झलक देखा चाँदी की झालर वाले अपने रंगीन कोट को।

बड़ा मनोरम है राजमहल का परिवेश। एक ओर नीलाभ पहाड़ों की पाँत, दूसरी ओर गंगा और बीच में शहर। नदी के उस पार मालदह की समतल भूमि। पीले-पीले-से बालू भरे टापू में बगुले, सारस, बत्तखें। नाव-बजरों के यातायात से नदी का वक्ष चंचल है।

अँगरेज़ों का यह दल जब राजमहल में उतरा, तो भिखमंगों ने घेर लिया—'हुज़ूर माई-बाप, कुछ दीजिए। अल्लाह आपका भला करे,' ईश्वर

आपको राजा बनाये।'

इस सोने के हिंदुस्तान में इतने भिखारी! हड्डियों के ढांचे-से, आबाल-वृद्ध-वनिता। गढ़ों में धँसी आँखों में भूख, शीर्ण उँगलियों में आकुल प्रार्थना। एक कौडी की भीख मिलने पर वे आपस में छीना-झपटी करते हैं, जैसे एक टुकडा मांस के लिए राह के कुत्ते आपस में लड़ते है।

चार्नक हैरान रह गया! प्राचुर्य का देश है यह हिंदुस्तान—उसका भी शिरोमणि बंगाल, जिसकी धन-दौलत, विलास-व्यसन की कथा-कहानी यूरोपियों की ज़बान पर है, जिसका मसाला, मसलिन, रेशम, शोरा सात समंदर पार के वणिकों की तकदीर पलट देता है—उसी देश में टिड्डियां जितने भिखमंगे!

किसी तरह से उन भिखमंगों से जान बचाकर अँगरेज़ वणिक बाज़ार में पहुँचे। बाज़ार कहाँ! जहाँ पण्य-संभार से समृद्ध बाज़ार था, वहाँ सिर्फ जली लकडियों का, बाँसों और राख का अंबार लगा है। कुछ दिन पहले अग्निकांड हुआ है शायद। बुझाने की लाख कोशिशों के बावजूद आग की लपलपाती लपट ने बाज़ार को लील लिया। हवा की अनुकूलता से फूस के छप्पर धू-धू कर जल उठे। खाद्य-वस्त्र-संभार राख की ढेरी हो गये। अकाल और बढ गया। नवाब सरकार भी इस समय परेशान है। ऐसे में इन अभागों को फिर से बसाने की कोशिश कौन करे?

राजमहल के कर्मचारी ने देश के मौजूदा हालात का विस्तार से ब्यौरा दिया। मुगल बादशाह शाहजहाँ बीमार है। दिल्ली की गद्दी के लिए भाइयों में खूनी लड़ाई छिड़ गयी है। सल्तनत का क्या हाल होगा, कहा नहीं जा सकता। बादशाह के दूसरे बेटे सुलतान शुजा ने इसी राजमहल में अपने को बादशाह ऐलान कर दिया और फ़ौज लेकर दौड पडा आगरा की ओर। बादशाहज़ादा दारा शिकोह के बेटे सुलेमान और राजा जयसिंह ने वाराणसी में उसका मुकाबला किया, धन-दौलत सब छीन ली। शुजा नाव से किसी प्रकार पटना भाग आया, वहाँ से मुंगेर। चाचा का कुछ दिन तक अवरोध करके सुलेमान ने पंजाब के लिए कूच किया। शुजा नये उत्साह से फ़ौज लेकर दिल्ली की ओर दौड़ा। इलाहाबाद पार होते न होते औरंगजेब की विशाल सेना ने बाधा उत्पन्न की। खजुवा की लड़ाई

मे शिकस्त खाकर शुजा ने बंगाल में डेरा डाला। तब तक दिल्ली की गद्दी पर औरंगजेब ने क़ब्ज़ा कर लिया। अपने बूढ़े बाप को उसने आगरा मे क़ैद कर लिया। शुजा की हालत संगीन हो गयी।

अहा, शुजा एक निहायत अच्छा आदमी है। अँगरेजों पर बड़ी कृपा है। हो भी क्यों न कृपा? आखिर एहसान का तो खयाल है। एक बार उसकी प्यारी बहन जहाँआरा के कपड़ों में आग लग गयी। आग ज़ोरों से लहक उठी। वह लहकती लपट पागल-सी लपकी। बड़ी कठिनाई से आग जब बुझी तो शाहज़ादी मरणासन्न! आगरा के हकीम-वैद्यों ने जवाब दे दिया। बचने की कोई आशा नही रही। सूरत खबर गयी। 'होपवेल' जहाज के अँगरेज सर्जन ग्रेब्रिएल बाउटन की बुलाहट हुई। सूरत से आगरा। उसके इलाज से शाहज़ादी चंगी हो गयी।

सुल्तान शुजा बाउटन को खुश होकर राजमहल ले आया। इनाम देना चाहा। अँगरेज़ बाउटन ने अपने लिए कोई इनाम नहीं माँगा—उसने अपनी जाति के लिए एक चिह्न माँगा—व्यापार करने की सुविधा, जिसके फलस्वरूप मात्र तीन हज़ार रुपये सालाना देकर अँगरेजों को उड़ीसा-बंगाल में बेरोक व्यापार करने की छूट मिल गयी। यह सुलतान शुजा का ही दान है। अहा, सुलतान शुजा जयी हो!

लाल मिट्टी की सड़कों पर घोड़े पर सवार हो जॉब चार्नक घूमता रहा। साथी हुआ ऑल्डवर्थ। राजमहल उदास था, सुलतान के महल में रौनक नही, फूलों का बाग सूना-सा। इस भ्रातृघाती संग्राम का अंतिम परिणाम क्या होगा? मुगल साम्राज्य का अनिश्चित भविष्य!

ऑल्डवर्थ ने प्रस्ताव किया, 'चलो, गाना सुनें। आप[illegible] बहलेगी।'

'कहाँ?'

'बाईजी के यहाँ।'

'चलो, गाना सुनने मे भला क्या दोष है?'

ऑल्डवर्थ ने इसी बीच बाईजी-[illegible] का पता कर लिया था।

दोपहर का समय-असमय। फिर भी वह चार्नक को एक वेश्यालय में ले गया। विदेशियों की बडी खातिर की गयी। रंगीन चोली और घाघरा, मलमल की ओढ़नी बाईजी की देह-सुषमा के रहस्य को बढ़ा रही थी। सुरमा आँजी आँखें, अलता रँगे गाल और मेंहदी लगे हाथ-पाँव जी को चुराते थे। सारंगी में कोई करुण सुर बज रहा था। तबले पर ठेका पड़ रहा था और वह गा रही थी जिसका अर्थ चार्नक की समझ मे खाक नही आ रहा था। फिर भी तान-लय-सुर भा रहा था। सुर मे कैसा तो एक अलस एकाकीपन था!

बाईजी नाचने लगी। घुंघरू के बोल। घाघरे को एक हाथ से उठाकर वह घूम-घूमकर नाचने लगी। घाघरे के नीचे सफ़ेद पायजामे के अंदर से आजानु-पदयुगल दीख रहे थे। बाईजी आत्मनिवेदन करने लगी, नाच की ताल पर उसकी छाती स्पंदित होने लगी। उसके नाच के साथ-साथ चार्नक का तरुण रक्त नाच उठा। उसके कलेजे मे आदिम वासना उथल-पुथल मचाने लगी। उस नेटिव नृत्यनिरत नर्तकी को बाँहों में लपेट लेने, पीस डालने की इच्छा होने लगी।

ऑल्डवर्थ धीमे-धीमे हँस रहा था; बाईजी की ओर एकटक देख रहा था। नाचते-नाचते बाईजी ने हठात् ऑल्डवर्थ के गले को बाँहो में लपेट लिया। घुंघरू की आवाज खामोश हो गयी। आल्डवर्थ ने चुंबन से बाईजी के होंठों को भर दिया। बाईजी उसके गले से बाँहे हटाकर फिर नाचने लगी। आँखो मे लोल कटाक्ष।

चार्नक उत्सुक हो उठा। सोचा, अब शायद उसकी बारी है। अबकी नर्तकी उसका आलिगन करेगी। उसकी छाती की धड़कन तेज हो गयी।

नाच थम गया। लेकिन चार्नक की आशा पर पानी फिर गया। उसके पौरुष को ठेस लगी। ईर्ष्या से उसका मन भर गया। वह ऑल्डवर्थ से किस बात मे हेय है? नाचनेवाली ने उसकी उपेक्षा क्यों की? उस विलास-कक्ष के आईने मे उसके कंधे तक लटकते सुनहले केश और चाँदी की झालर वाले कोट की परछाईं दिखायी दी। सचमुच, उसका चेहरा बहुत जनाना लग रहा है! पौरुष की तंद्रा टूट गयी।

कोठी में लौट आया। कोई भी बात न की। हज्जाम को बुलवाया

और बेरहम होकर अपने लंबे सुनहले बालों को कटवा डाला।

कच-कच करके कैंची चली। हज्जाम ने मुगलाना फैशन में बाल छाँटे। सुनहले बाल धूल में लोटने लगे, उसके साथ शायद उसकी रमणी-सुलभ कोमलता भी।

दोपहर के भोजन के बाद ऑल्डवर्थ ने चार्नक को एक चिट्ठी पढ़ने के लिए दी। चार्नक ने पढ़ा—

राजमहल
फ़रवरी, १६५८

मिस्टर टॉमस डेविस तथा माननीय बंधु,

कल यहाँ पहुँचा हूँ। देखा, बाजार लगभग खाक हो गया है और खाद्य की कमी से बहुतेरे लोग भूखों मर रहे हैं। मिस्टर चार्नक मेरे लिए विशेष दुख का कारण हुआ है, मगर उतना नहीं, जितना तुम्हें साथ नहीं पाने से। तुम्हें हमलोग (और कोई अच्छी शराब नहीं मिलने से) पच के पात्र के साथ प्रायः याद करते हैं। मिस्टर चेंबरलेन और मिस्टर चार्नक कल पटना रवाना होंगे, जल्दी जाने के लिए मिस्टर चार्नक अभी अपने बाल कटवा रहा है। उसकी इच्छा है कि आज से ही वह मूरों की पोशाक पहने। पुराने यादगार रखने के लिए उसके केशों का एक गुच्छा आपको भेजने का इरादा था, पर मिस्टर चार्नक ने खुद ही यह काम करने का वायदा किया ...'

चार्नक ने आगे नहीं पढ़ा। जान में जान आयी; हेनरी ऑल्डवर्थ बाल कटाने का असली इतिहास नहीं जानता। कंबख्त नाई ने मुगलाना फैशन अच्छा बना दिया है। आईने में अपना चेहरा अब खासा जँचने लग रहा था। बाल कटाने के बाद चार्नक शहर के दर्जी-टोले में घूमा। एक अच्छे दर्जी से उसने मुसलमानी पोशाक ली। उसे पहनकर वह अपने आपको ही नहीं पहचान सका। मुगलाना बाल और पोशाक ने उसके आत्मविश्वास को बढ़ा दिया। मन-ही-मन सोचा, अब कोई नेटिव औरत उसकी हँसी उड़ाने की जुर्रत नहीं करेगी!

पटना में मकानों की बड़ी कमी है। शहरी क्षेत्र में कोई फैक्टरी नहीं बनवाई जा सकी। फूस की छौनी वाले किराए के एक कच्चे मकान में किसी तरह कारोबार चलता है। एक अच्छा कारखाना था। कई साल पहले शहर में आग लगी। ढेरों मकान जल गये। नवाब ने ज़ोर-ज़बर्दस्ती अंगरेज़ों के कारखाने पर दखल कर लिया।

पटना शहर में प्रायः पंद्रह मील उत्तर सिंगिया में चौकी बनायी है अंगरेज़ों ने। गंडक के बाएँ तट पर शोरे की यह आढ़त। स्वास्थ्यकर जगह तो खैर बिलकुल नहीं है, लेकिन हाँ, पटने के नवाब और उनके कर्मचारियों का जुल्म यहाँ कम है। इसलिए पटना-कोठी के चीफ़ आमतौर से यहीं रहते हैं।

चार्नक शोरे की पहचान सीखने में जुट पड़ा। मोटा-बारीक कितने ही तो प्रकार का शोरा है!

व्यापारी नाव की नाव शोरा लादकर ले आते। वज़न करने से पहले उसे अच्छी तरह से सुखा लिया जाता, नहीं तो वज़न का नुकसान होता है। महीन शोरे का दाम ज़्यादा है। और फिर शोरे को गोदाम में ज़्यादा दिनों तक डालकर रखा भी नहीं जा सकता। बोराबंदी करके फटाफट चालान किया जाता है। शोरे से लदी नावों का काफिला हुगली जाता है। वहाँ उसकी जहाज़ पर लदाई होती है, फिर सात समंदर पार इंग्लैंड जाता है। वहाँ बिहार के शोरे की माँग ज़्यादा है। ऑनरेबुल कंपनी के डाइरेक्टर लगातार चिट्ठियाँ भेजते रहते हैं, शोरा भेजो, शोरा भेजो। शोरे की माँग पूरी करते-करते पटना-कोठी के कर्मचारी बहुत परेशान हैं।

चुन-चुनकर महीन शोरे की पंद्रह बड़ी-बड़ी नावें चार्नक ने लदवा कर तैयार करायी थीं। वे नावें नदी से हुगली के लिए रवाना की गयीं। खबर आयी कि पटना की चौकी पर नवाब के कारिंदों ने नावों को रोक लिया है। वजह बहुत ही सहज थी—कर दो, भेंट दो। नक़द दो हज़ार सिक्के हाज़िर करो तो नावों को जाने दिया जायेगा। खुद सुलतान शुजा की दी हुई निशानी है, उसी ने बेरोक व्यापार की छूट दी है। यह क्या अड़ंगा है? उसी के बल पर सिंगिया कोठी का यह परवाना है, जिसे

दिखाकर शोरा-लदी नावें बेरोक-टोक हुगली जायेंगी। अरे, रखो अपनी निशानी। शुजा खुद ही उलट रहा है, तो कीमत क्या है उसकी निशानी की ? जान बचाने के लिए शुजा ने पूर्वबंगाल के जहाँगीरनगर—यानी ढाका में पनाह ली है, पटना मे उसकी निशानी नही चलेगी। यदि अबुल मुजफ्फर मोहिउद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर आलमगीर बादशाहे-गाजी का फ़रमान ला सको, तभी नावें छोड़ी जायेंगी।

दुभाषिए को साथ लेकर चार्नक शोरे की नावों को छुड़ाने के लिए गया। उसे भी वही जवाब मिला। मारे गुस्से के चार्नक जल उठा, मगर निरुपाय था। बदन का ज़ोर इनके आगे बेकार है ! मुग़लों की अपार शक्ति के आगे चार्नक की शक्ति ही कितनी थी ? भेंट दिये बिना चारा नहीं। बख्शी, दारोगा, मुतसद्दी, खासनवीस, मीर-शहर—सभी प्रभुओ को कुछ-कुछ सलामी देनी पडी—रंगीन कपडा, तलवार, बन्दूक, पिस्तौल, आईना। बहुत-बहुत नज़राने। तब कही जाकर उन लोगों ने नावो को छोड़ा। फिर भी क्या चैन है ? बीच रास्ते मे फिर किसी राजा-ज़मीदार की चौकी नावों को रोकेगी, कही डोंगियों से आकर डाकू धावा बोलेंगे और लूटेंगे। पूरी अराजकता। इसी हालत मे व्यापार चलाना है।

शिवचरण सेठ अफसोस कर रहा था। कपड़े का व्यापारी है वह। कई पुश्तों का कारोबार। भागलपुरी कपड़ों का ज़ोरदार व्यवसाय। अँगरेज़ी कोठी से खूब लेन-देन है।

सेठ अफ़सोस कर रहा था, 'पूछिए मत चार्नक साहब, कारोबार अब समेटना पड़ेगा। कोपीन पहनकर संन्यासी बनने की नौबत है !'

'माजरा क्या है, सेठजी ?' चार्नक ने पूछा।

'अजी साहब, अकबर बादशाह की अमलदारी मे जो हाल था, वह अब कहाँ ! सुना है, उस समय हिंदुओं का कैसा बोलबाला था ! जहाँगीर बादशाह भी अच्छा था। शाहजहाँ के वक़्त से ही हमारी बदहाली शुरू हुई। भागलपुर में शिवजी का एक मंदिर बनवा रहा था। हुक्म हुआ कि नया मंदिर बनाना बंद करो। बादशाह का हुक्म है, कोई हिंदू नया मंदिर

नहीं बना सकता।'

'और आपने बंद कर दिया, सेठजी ?'

'राम कहिए, वह पाप भला कर सकता हूँ ?'

'तो ?'

'हाजिर कर दी कुछ भेंट, कुछ रुपया, कपड़ा। बस, फिर क्या था। सिर्फ कोतवाल ने ज़रा आँखें बंद कर लीं, धड़ाधड उठ खड़ा हुआ मंदिर। अरे, यह सिर्फ नजराने का कारोबार है। समझे, चार्नक साहब ?'

'सुना है, नया बादशाह औरंगजेब कट्टर मुसलमान है, अब क्या नज-राना देकर पार पाओगे, सेठजी ?'

'उसी की तो फिक्र पडी है, साहब। हमारा क्या हाल होगा ? शिवजी ही जानें। नसीब की बात !'

'आप लोग नसीब को बहुत मानते है, सेठजी।'

'और क्या मानें, साहब ? नसीब के सिवा और है क्या, कहिए ! कारोबार मे नफा-नुकसान, सब नसीब...!' शिवचरण तब असली बात पर उतरा, 'मुझे कुछ कर्ज दीजिए, साहब।'

'रुपया-सिक्का कहाँ से लाऊँगा ?'

'चीफ साहब आपको बहुत मानते हैं। आप कहिएगा तो काम बन जायेगा। मैं आपको खुश कर दूँगा। दस्तूरी दूँगा।'

'नहीं-नहीं, मुझे वह सब नहीं चाहिए।'

'नहीं चाहिए ? कह क्या रहे हैं, साहब ? आप निहायत बच्चे है। इस दुनिया में रुपया किसे नहीं चाहिए ? योगी-फकीर की बात जुदा है। और साहब, आप न योगी हैं, न फ़कीर। रुपये के प्रति आप उदासीन क्यों ?'

'ऑनरेबुल कंपनी को मैं नुकसान नहीं पहुँचा सकता।'

'आपकी बात ! अजी, कंपनी को नुकसान पहुँचाने को कौन कह रहा है आपको ? कंपनी कर्ज देती है, पेशगी देती है—ब्याज लेती है, माल लेती है। और आप, औरों को न देकर मुझे कर्ज दिलाइएगा। मैं ब्याज दूँगा, कपड़े दूँगा। बदले में आपको दस्तूरी मिलेगी। राजी ?'

'सोच लेने दीजिए।'

'ज़रा जल्दी करें। मुसलमान महाजनों ने बड़े ऊँचे सूद पर रुपया

उधार दिया है। मियाद पूरी होने से पहले ही मांग रहा है। क़ाज़ी के पास अर्ज़ी दी है। घूस लेकर क़ाज़ी मेरी सुन नहीं रहा है। सो, रुपये जल्द लौटाने हैं। आप उधार दिलवाइए, मैं आपको खुश कर दूंगा।'

चार्नक ने सेठ शिवचरण का आग्रह रखा। रखे भी क्यों नहीं ? महज़ बीस पौंड वार्षिक वेतन पर कितने दिन चल सकता है ? हां, कंपनी खाने-रहने की मुफ़्त व्यवस्था जरूर करती है। लेकिन ख्वाहिश-मुराद तो है ! पटना की सराय में तरह-तरह की शराब मिलती है—कीमत बहुत है। कई खूबसूरत मूर-पोशाकें देखी हैं उसने, पहनने पर उसे खूब फबेंगी। कम्बख्त दर्ज़ी दाम बहुत मांग रहा है। उस दिन चार्नक बाज़ार से लौट रहा था तो सारंगी की आवाज़ और तबले की ठनक कानों में आयी। कोई बाईजी नाच-गा रही थी। चार्नक की बड़ी इच्छा हुई, जाकर नाच-गाना सुने। मगर टेंट में पैसा नदारद। उसने रास्ते से खड़े-खड़े ही सुना। कानों में धुन गूंजती रही और आंखों में नृत्य-चंचला नर्तकी की तसवीर उतर आयी।

सेठ शिवचरण ने मोटी दस्तूरी दी। सोने की मुहर की आवाज़ बड़ी मीठी होती है। पीली धातु की झकमक मुद्रा जेब में रहने से तबियत भी रंगीन हो उठती है। हाथ में रखे रहना अच्छा लगता है। चार्नक ने सोचा, बाईजी की मेंहदी रंगी हथेली पर मुहर रख देने से गर्व से छाती फूल उठेगी। चार्नक आखिर दस्तूरी क्यों न ले ? इससे ऑनरेबुल कंपनी का तो कोई नुक़सान नहीं होता।

लेकिन दस्तूरी के रुपये लेकर चार्नक दो रात सो नहीं सका। विवेक उसे बींधता रहा। उसे लगा, उसने मालिक के साथ विश्वासघात किया है। वह बेचैन हो उठा। कंपनी के रुपयों के लेन-देन का जो कमीशन है, वह तो कंपनी का ही पावना है। सो, दस्तूरी की मुहरें उसे कांटे-सी गड़ती रहीं।

चार्नक लपककर चेंबरलेन साहब के पास गया। मुहरें उसने उनके हाथ पर रख दीं। मिस्टर चेंबरलेन अवाक् हो गये। बात क्या है ?

'मुझे माफ़ कर दें सर, मैंने बहुत बड़ा कसूर किया है। मैंने सेठ शिवचरण से दस्तूरी ली है। और, उसे मैं जेब के हवाले करने को था

लेकिन वैसा कर नहीं सका। खयाल ग्राया, यह पावना तो कंपनी का है। इसीलिए वह रकम ग्रापको सौंप देने को दौड़ा ग्राया हूँ।'

'तुम्हारी इस ईमानदारी से मुझे बड़ी खुशी हुई, चार्नक। मगर बीस पौंड वार्षिक वेतन से तुम्हारा चलेगा कैसे?'

'न चले, मगर मैं नमकहरामी नहीं कर सकता।'

'खूब, खूब। दस्तूरी तो खैर तुम जमा कर दो, लेकिन कोई ऐसा कारोबार करो जिसमें कंपनी के किसी स्वार्थ को चोट न लगे। वह अन्याय नहीं होगा। मैं विश्वासी नेटिवों से तुम्हारा परिचय करा दूँगा। चाहो तो कुछ पूँजी भी उधार दे सकता हूँ। तुम्हें ब्याज नहीं देना पड़ेगा। ग्रपनी सुविधा से चुका देना।'

मिस्टर चैंबरलेन की इजाजत से चार्नक ने जनाब मोहिउद्दीन के साथ ग्रपना व्यवसाय शुरू किया—इत्र का, तंबाकू का। जेब में कुछ मुनाफा जमा होने लगा।

नया बादशाह ग्रालमगीर कट्टर मुसलमान था। उसने हुक्म जारी किया, शराबखोरी बंद करो। गाँव-गाँव, नगर-नगर यह हुक्म पहुँचा। हुक्म की तामील किसने कितनी की, यह कहना कठिन है। लेकिन बादशाही हुक्म के बहाने कोतवाल का जुल्मोसितम बढ गया।

पटना शहर में उथल-पुथल मच गयी। खोजो-खोजो—कौन शराब बेचता है? एक कुहराम-सा छा गया। हिंदू-मुसलमान जो भी हो, उसे पकड़ो। बादशाह के हुक्म की तामील में कोतवाल ने कुछ हिंदुग्रों, कुछ मुसलमानों को पकड़ा। जुर्म यह कि वे शराब बेच रहे थे। पकड़े गये लोगों ने उच्च स्वर में ग्रपराध ग्रस्वीकार किया। मगर कौन सुनता है किसकी? बीच बाजार में, खुली जगह में, चार्नक की नजरों के सामने तेज तलवार से क़ैदियों का एक-एक हाथ ग्रौर एक-एक पैर काट दिया गया। लहू की नदी बह चली। धूल से मिलकर लहू के ढेले बन गये। घायल क़ैदियों को खींच-घसीटकर कूड़े की ढेरी, घूरे पर फेंक दिया गया। लहू बहते-बहते मर जायें वे। सारे पटना में विभीषिका!

बादशाह का नया हुक्म जारी हुआ—दाढ़ी छाँटो। कोई भी मुसलमान चार अंगुल से ज्यादा बड़ी दाढ़ी नहीं रख सकता। छाँटो। छाती तक लटकती दाढ़ी, कितने बहारदार रंग, कितने जतन से पली। छाँटो उसे। बादशाह के कर्मचारी क़ैंची-उस्तरा लिये रास्तों पर निकले। दाढ़ी वालों को देखते और चार अंगुल दाढी नापते। ज्यादा लंबी हुई कि बस, कच्। उस्तरे से जबरन मूँछ मूड़ने लगे। शायद मूँछों के जंगल मे अल्लाह का नाम अटक जाता है, उन तक नहीं पहुँच पाता। पूछिए मत, पटना की जो हालत हुई! चार्नक का अर्दली नूर मुहम्मद दाढ़ी गँवाने के डर से कई दिनों तक सड़कों पर निकला ही नहीं! मूँछ-दाढी के मोह से मुसलमान लोग जेंटू औरतों की तरह घूँघट काढ़कर चलते।

अजीब देश है यह हिंदुस्तान। कितनी जातियाँ, कितने धर्म, कितने नियम, कितनी प्रथाएँ! दूसरे-दूसरे धर्मों जैसा ही ईसाई धर्म। इसकी कोई खासियत भी है, यह नेटिव लोग मानने को तैयार नहीं। जेंटू लोग तो बल्कि ईसाइयों से नफ़रत करते। सेठ शिवचरण, कारोबार के चलते चार्नक से इतना मिलता-जुलता है, फिर भी धर्म नष्ट होने के डर से चार्नक के हाथ का एक लोटा पानी तक नहीं पी सकता। बनिया है शिवचरण। इन जेंटुओं की कितनी जातियाँ है—ब्राह्मण, राजपूत, बनिया। मूर्तिपूजक। विचित्र देवी-देवता। चार्नक उन लोगो के धर्म के बारे में समझने की कोशिश करता। पेपिस्टों ने जबरदस्ती बहुतेरे जेंटुओं को ईसाई बनाया था। लेकिन सुनने मे आता है, वे नये ईसाई लुक-छिपकर देवी-देवता की पूजा करते हैं। हिन्दुस्तान में छुआछूत इतनी ज्यादा है कि मुसलमान तक ईसाइयों के साथ भोजन नहीं करते, ईसाइयों का छुआ नहीं खाते। और खाने-पीने में भी कितना विचार! जेंटू लोग गोमांस और मुसलमान सूअर का मांस नहीं छू सकते। जेंटुओं के पर्व-त्यौहार में और मूर लोगों में रमज़ान में महीने-भर दिन मे उपवास होता है।

उस दिन चार्नक टॉमस ब्राउन की 'रिलिजिओ मेडिसी' के पन्ने उलट रहा था। एक स्थल तो उसे मुखस्थ हो गया है—

'मत-विरोध के कारण मैं अपने को कभी भी दूसरों से अलग नहीं रख सका या मुझसे एकमत नहीं होने के कारण मैं उसकी विचार-बुद्धि से कभी

नाराज नही हुआ। क्योकि संभव है कि कुछ दिनों में मैं आप ही अपना मत बदल लूं। धर्म पर तर्क करने जैसी विद्या मुझमे नही है। मैंने बहुत बार सोचा है, तर्क को टाल जाना ही बुद्धिमानी है... ।'

शिवचरण से चार्नक देवी-देवताओं की पुराण-कथाएँ सुनता। उसका अर्दली नूर मुहम्मद हसन-हुसैन, काबा और करबला की कहानी कहता। बड़ी ही मनोहारी कहानियाँ। चार्नक तर्क नही करता, विचार नही करता, सिर्फ सुना करता। वह इन सब कथा-कहानियों को लिखा करता और बीच-बीच में राइट ऑनरेबुल कंपनी के डाइरेक्टरों को लिखकर भेज देता।

पटना-सिंगिया चार्नक को बहुत अच्छा लग रहा है। यहाँ कासिम बाजार की कोठी की तरह कायदे-कानून का वैसा बंधन नही है। लोगों से मिलने-जुलने की सुविधा ज्यादा है। अब चार्नक अपने को काफ़ी अनुभवी समझता है। अपने पर उसे विश्वास बढ़ा है। देशी भाषा उसने बहुत-कुछ सीख ली है। यहाँ की राजनीति के बारे में कुछ-कुछ जानकारी हुई है। गरम मुल्क का पोशाक-पहनावा उसे खूब पसन्द है।

होली पर शिवचरण ने न्योता दिया। पटना के लोग खुशी में मस्त। बसंत की पूर्णिमा। होली का यह उमंग-भरा त्योहार कब से चला आ रहा है, कौन जाने। वृन्दावन में राधा-कृष्ण ने भी होली खेली थी। जेंटू लोग भी होली खेलते हैं। रंग-अबीर-गुलाल मल-मलकर औरत-मर्द दिन-भर उमगते हुए रास्तों में घूमते रहते हैं। गीत गाते हैं, नाचते हैं। उस समय उन लोगों मे अमीर-गरीब का भेद नही रहता। शिवचरण चार्नक को खींच लाया।

चार्नक ने कहा, 'लेकिन मैं तो ईसाई हूँ।'

'ईसाई हुए तो क्या ? मौज-मज़े मे हिंदू-ईसाई में भेद है क्या ?'

देशी पोशाक पहनकर चार्नक होली खेलने वालों के दल में जा जुटा। अबीर-गुलाल से लाल हो उठा वह। पीतल की पिचकारी से नेटिव लोग उस पर रंग डालने लगे। स्त्रियाँ भी थी। उल्लास की तरंग मे सबने स्त्री-पुरुष के भेद को भुला दिया था। किसी एक विचित्र-सी औरत ने कोमल हाथों से

चार्नक के कपाल पर अबीर लगा दिया। चार्नक ने भी नहीं छोड़ा। दौड़कर भागती हुई उस स्त्री के चेहरे और छाती पर अबीर लगाया उसने। इलियट का कहा याद आ गया उसे—फूलों-सी कोमल, रेशम-सी चिकनी ये स्त्रियाँ! चार्नक के सारे शरीर में सिहरन दौड़ गयी।

'अरे वाह-वाह!' शिवचरण ने कहा, 'मोतिया ने चार्नक साहब को खूब पसंद किया है।'

उस विचित्र रूपवाली स्त्री ने कहा, 'आज मुझे सब पसंद हैं, यहाँ तक कि तोदवाले शिवचरण सेठ भी।'

उसने नाचना शुरू कर दिया। ढोलक की थाप पर घूम-घूमकर नाचने लगी। गीत की एक कड़ी गायी और भीड़ ने उसे दुहराया। रँगे माथे की पृष्ठभूमि में बड़ी-बड़ी आँखों ने मोहिनी माया की सृष्टि की। चंचल आँखों की वह चितवन थिरकते पावों से भी अधिक चचल थी। फिर भी घूम-फिरकर उसकी आँखें चार्नक की आँखों पर पछाड़ खाने लगीं।

नेटिव स्त्रियों की आँखें चार्नक को बड़ी भली लगती हैं। काली-काली और बड़ी-बडी आँखें। गंगा के तट पर सूरज को प्रणाम करती हुई उस जेंटू स्त्री की आँखों को वह अभी तक नहीं भूल सका है। सामने की अबीर से रँगी हुई स्त्री की नशीली आँखें चार्नक के मन पर छाप छोड़ रही थी।

'कौन है यह मोतिया?' चार्नक ने चुप-चुप शिवचरण से पूछा।

'हीरू कहार की बेटी है,' शिवचरण ने कहा, 'जिसकी ऐसी उठती जवानी है, बाप उसे घर में रख सकता है? गुंडे उसे भगाकर पटना की रंडियों के मुहल्ले में ले आये। उसका दाम फी घटा केवल एक रुपया है।'

मामूली रंडी। महज़ एक सिक्के पर वह मिल सकती है, उसका उपभोग किया जा सकता है। इतनी सस्ती है वह! फिर भी फूलों-सी कोमल, रेशम-सी चिकनी!

अचानक डंके की चोट से होली का गीत-नाच थम गया।

नवाबी फौज आ धमकी। बहुत-से घुड़सवार। दो हाथियों पर बंदूकधारी सैनिक। माजरा क्या है? काफ़िरों का इतना नाचना-गाना, मौज-मजा नहीं चल सकता—नवाब का हुक्म था। बादशाह औरंगज़ेब काफ़िरों की इतनी ज्यादती पसंद नहीं करता।

कमर पर हाथ रखकर मोतिया सबसे आगे बढ़ी, 'बादशाह ने फ़रमान दिया है ?'

'कैफियत पूछती है ?'

'साल के अंत में एक बार उत्सव, यह आदिकाल से चला आ रहा है। पहले के बादशाहों में से किसी ने मना नहीं किया। यह होली का उत्सव बादशाह आलमगीर हरगिज बंद नहीं कर सकते।'

'बादशाह का हुक्म है, नहीं मानोगे तुम लोग ?'

भीड़ भौचक्की-सी !

मोतिया ने चिल्लाकर कहा, 'नहीं, नहीं मानेंगे। हम नाचेंगे-गाएँगे।'

फिर गुंजन। ढोलक पर थाप पड़ी। फ़ौजी सरदार हाथी की पीठ पर से चिल्ला उठा, 'बस, बंद करो यह गीत-नाच, नहीं तो हाथी से रौंद डालूँगा !'

महावत के इशारे से दोनों हाथी भीड़ की ओर बढ़ आये।

प्रलय-सी मच गयी। स्त्री-पुरुष जिधर हो सका भाग पड़े। भीड़ के दबाव से कई लोग गिरकर कुचल गये। मूर्त प्रतिवाद की तरह खड़ी रही सिर्फ मोतिया।

एक हाथी बहुत ही करीब आ गया। पल में ही शायद रौंद डाले उसे। चार्नक दौड़ता हुआ गया और हाथ पकड़कर खींचते हुए उसे लेकर बगल की गली में भाग आया।

सुनसान गली। सब अपना-अपना दरवाज़ा अंदर से बंद करके अपनी जान बचाने में लगे थे।

नगाड़ा पीटते हुए मुगल फ़ौज राजपथ से लौट गयी।

दुख से, क्रोध से मोतिया नागिन की तरह फुफकार रही थी।

'मारें तो ठाकुर न मारें तो कूकुर,' वह बोली, 'इतने-इतने लोग, अपनी जान लेकर भागे। होली आज सिर्फ़ बादशाह के हुक्म से बंद होगी ?

शहर की एक निहायत मामूली वारांगना का एक नया ही रूप आज चार्नक की आँखों के सामने आया।

सारा पटना तटस्थ बना रहा। हिंदू-मुस्लिम निर्विशेष। धर्म का धनी यह मुग़ल बादशाह जाने फिर क्या नियम चलाये, फ़तवा दे!

एक नये किस्म के कर्मचारी नियुक्त किये गये—मुहतासिब। उनका काम है, सर्वसाधारण के नैतिक चरित्र का उन्नयन।

यह ख़बर लाया चार्नक का अर्दली नूर मुहम्मद। बेचारे की हाथ-भर लंबी बादामी रंग से रँगी दाढ़ी किसी प्रकार बच गयी, लेकिन अब पीना शायद बंद हो। शराब का दाम बेहद बढ़ गया है। लुक-छिपकर बिकती है। गाँठ में उतने पैसे नहीं। नूर ने इसीलिए भंग पीना शुरू किया। मगर मुहतासिब लोग उसमें भी आड़े आये। लाठी लिये वे लोग मुहल्लों की खाक छानने लगे और जहाँ भी भंग या शराब के पात्र नज़र आते, तोड़कर चूर-चूर करने लगे। कई दिनों तक रात-दिन घड़ा फूटने की आवाज़ सुनायी देती रही।

गंगा के घाट पर मोतिया से चार्नक की फिर भेंट हुई। मोतिया ने उत्तेजित होकर कहा, 'शहर में बाईजी-मुहल्ले में बादशाह के लोग डोंडी पीट गये—बाईजी का पेशा अब नहीं चलेगा। जहाँ-जहाँ बाईजी-लोग हैं, सब शादी कर लें।'

'बड़ी ज़बरदस्त ख़बर है!' चार्नक को मज़ा आया।

'अरे बाबा, शादी कर ले, यह कहते ही शादी कौन करेगी? आख़िर मर्द तो चाहिए?' मोतिया खीजकर बोली, 'लेकिन नहीं, कोई बहाना नहीं चलेगा। अभी शादी करो। बादशाह का हुक्म है।'

एकान्त में फ़ौजियों ने प्रस्ताव किया था, 'क्यों, हम लोग मर्द नहीं हैं? हम लोगों से शादी नहीं कर सकती?'

'हाय राम! मौत आ गयी!' मोतिया बोल उठी थी।

लेकिन कौन सुनता है? बादशाह का हुक्म है, कर्मचारियों को मौका मिल गया। रुपया दो, संग दो, सेवा करो, तो दो-चार दिन छोड़ देंगे। वरना बोरिया-बिस्तरा समेटो।

जिन रंडियों ने अपनी आदत के मुताबिक़ ज़बानदराज़ी की, उनपर तड़ातड़ कोड़े पड़े। चमड़ी उधड़कर ख़ून बह आया। जहाँ उनके दलालों

ने रोकना चाहा, उन्हे काट डाला गया और बाईजी के घरों में आग लगा दी गयी।

मोतिया जो पहने थी, बस उसी हालत में भाग आयी।

चार्नक पहले तो मोतिया को पहचान नहीं सका। पहचानता भी कैसे ? उसने तो उस रोज उसे रंग-अबीर में डूबी अजीब मूरत में देखा था। आज वह अपने सही स्वरूप में, बगैर साज-सिंगार के हाजिर थी।

साँवला शरीर। अंग-अंग में जवानी का निखार। बड़ी-बड़ी काली आँखें। सिर पर लंबी चोटी। सर्वांग में यौवन का माधुर्य। चार्नक को याद आया, फूलों-सी कोमल, रेशम-सी चिकनी ! उनका बदन सिहर-सिहर उठा।

मोतिया ने ही चार्नक को पहचाना।

'जाओगी कहां ?' चार्नक ने पूछा।

'जिधर दो आँखें ले जायेंगी।'

'अरे ! अपने पिता के पास क्यों नहीं चली जाती ?'

'वह दरवाजा बंद है। हम नीची जात की हों चाहे, मगर बाप एक रंडी को अपने घर नहीं घुसने देगा। समाज है। बाप को जात से बाहर कर देगा।'

'तो फिर सेठ शिवचरण के पास ?'

'उस तोंदू कंजूस के तीन बीबी हैं। ब्याह कर उन बीबियों को ही खाना नहीं देता। फिर...' मोतिया अचानक बोल उठी, 'साहब, तुम मुझे पनाह दोगे ? मैं तुम्हारा कोई नुकसान नहीं करूँगी। खरीदी हुई बाँदी की तरह तुम्हारी खिदमत करूँगी।'

'मैं...यानी...!' इस प्रस्ताव की आकस्मिकता से चार्नक घबरा गया।

'तुम अगर पनाह नहीं दोगे, तो उस रोज तुमने मेरी जान क्यों बचायी ?' मोतिया के स्वर में उलाहना और आँखों में आँसू थे। 'अच्छा तो था, नवाब के हाथी के पैरों तले कुचलकर मर जाती, मास के कुछ पिंड गिद्धों के काम आते। साहब, कहो, दोगे पनाह मुझे ?'

किस झमेले में पड़ा चार्नक ! एक नेटिव युवती। तमाम शरीर में जवानी की उमंग ! वारनारी, किन्तु तेजस्विनी ओजमयी। एक मोहिनी

माया। मूर्तिपूजक! डाकिनी! मैं मर्द हूँ न! अँगरेज़ शिवेलरी। शरणार्थिनी के अंग-प्रत्यंग में यौवन। फूलों-सी कोमल, रेशम-सी चिकनी! आखिर जवानी की जीत हुई।

जॉब चार्नक ने मोतिया का हाथ थाम लिया। उद्भ्रांत की तरह बोला, 'मोतिया, चलो, मेरे साथ चलो।'

मोतिया को आग्रह के साथ कह तो दिया, लेकिन चार्नक उसे रखे कहाँ? पटना के जिस सरकारी मकान में वह रहता है, वहाँ जगह नहीं होगी। ऑनरेबुल कंपनी की इजाजत नहीं। लुक-छिपकर भी मुमकिन नहीं। दूसरे अँगरेज़ नेटिव औरत की मौजूदगी को बरदाश्त नहीं करेंगे। और कंपनी के मालिकों के कानों यह खबर पहुँचेगी तो क्या मुसीबत आयेगी, वही जाने। दूर देश में स्थानीय औरतों से मिलो-जुलो, मौज-मज़ा करो, वे इसे सुनकर भी अनसुनी कर जायेंगे। किन्तु कंपनी के डेरे में नेटिव औरत रहेगी, इससे मालिकों की बदनामी होगी। नेटिव लोगों के सामने हेठी होगी। असंभव है यह।

चार्नक तो अजीब आफ़त में पड़ गया।

किंतु मोतिया अत्यन्त उत्साहित हुई। वह मानो फिर से उमग उठी। गुनगुनाकर गाने लगी। बार-बार चार्नक की ओर ताकने लगी। उस निगाह में निर्भरता थी।

चार्नक को नूर मुहम्मद का ख़याल हो आया। अर्दली नूर मुहम्मद पटना इलाके का है। चार्नक का फरमाबरदार है। साहब उसे बख्शीश देता है, शराब की तलछट देता है, बात करता है उससे, पीठ ठोंकता है। प्रौढ़ नूर मुहम्मद को इसीलिए साहब के प्रति भक्ति है।

मोतिया को देखकर नूर मुहम्मद को बिलकुल अचरज नहीं हुआ, बल्कि उसे खुशी हुई कि इतने दिनों के बाद साहब सयाना हुआ।

'कोठी की फ़िक्र?' नूर मुहम्मद ने अपनी रंगी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा, 'सारे पटना की खाक छान डालूँगा। कोठी का जुगाड़ करके ही रहूँगा।'

'उसमें तो वक्त लगेगा,' चार्नक ने कहा, 'अभी इसे रखें कहाँ ?'

'शेख हुसन की सराय में,' नूर मुहम्मद ने कहा।

शहर के छोर पर शेख हुसन की सराय। निम्न कोटि के पँचमेल ग्राहक थे उसके। छिप-छिपाकर वहाँ शराब तैयार होती है। रोजगार अच्छा चलता है हुसन का। असबाबों में है—बानों से बुनी खाट, कुरसी, मोढ़ा, लोटा, कलसी। बहरहाल मोतिया को वहीं रखा गया। नूर मुहम्मद को जिम्मा दिया गया। नौ बज रहे थे। रुख़सत होकर चार्नक अपने काम पर चला गया।

आज हिसाब-किताब में जी नहीं लग रहा था। शोरे से लदी चार नावें कल ही रवाना करनी है, यह बात वह भूल रहा था। कैसे क्या हो गया, समझना कठिन है। कहाँ की कौन नेटिव युवती, जिससे परिचय ही कितना—किस घटनाचक्र से आज वह चार्नक से पनाह माँग बैठी, उसी पर निर्भरशील है। विवेक कहने लगा, यह सब ठीक नहीं। समझौते की मियाद पूरी हो आयी है, कंपनी की नौकरी से इस्तीफ़ा देने का समय निकट है, देस लौटने के दिन करीब हैं। ऐसे में यह स्त्री कहाँ से आ धमकी! चार्नक एकाएक उद्विग्न हो उठा। एकाएक ऐसा कर बैठना अच्छा नहीं हुआ। फिर सोचा, रहने दो, मुसीबतज़दा औरत है, रही ही तो क्या! नेटिव क्या आदमी नहीं होते! दो दिन रहने दो। सेठ शिवचरण से कहकर उसका कोई इंतजाम करा देना होगा। कोई-न-कोई इंतजाम हो ही जायेगा। नवाबी शासन है। आज एक किस्म का, कल दूसरे क़िस्म का। आज चकलों पर रोक लगी है, कल से बाईजीगिरी फिर नहीं हो जायेगी। चार्नक दो-चार मुहरें दे देगा, वह औरत उसी से कुछ दिन अपना काम चला लेगी। उसके बाद फिर अपने पेशे में लग जायेगी।

दोपहर तक ही नूरमुहम्मद ने एक मकान ठीक कर लिया। शहर के बाहर है, लेकिन गंगा के किनारे। दो फूस के कुटीर, बगल में छोटा-सा बगीचा। किराया बहुत ही कम। उस टोले में मोची, मल्लाह, कहार रहते हैं। मोतिया को जगह बेहद पसंद आयी।

मोतिया ने लाड़ लड़ाया, 'साहब, डेरा तो हो गया, अब अन्न-वस्त्र ?'

सच ही तो, एक ही वस्त्र में तो चली आयी थी वह।

सलाम ठोंककर नूर मुहम्मद ने कहा, 'फ़िक्र किस बात की हुजूर, सिक्का दीजिए, मैं फ़ौरन सब ला देता हूँ।'

'नही साहब,' मोतिया ने कहा, 'यह बुड्ढा किसी काम का नही। तुम्ही खरीदकर ला दो। तुम्हारा दिया हुग्रा कपड़ा मैं पहनूँगी। तुम्हारे खरीदे हुए बर्तन मे मैं पकाऊँगी।'

खूब! नाता भी जोड़ लिया। काहे का नाता?

नूर मुहम्मद ने कहा, 'चलिए साहब, बीबी की जब मर्जी हुइ है, तो कपड़े-बर्तन ग्राप खुद ही खरीद दीजिए। पास ही दुकान है। मैं साथ रहूँगा, तो दुकानदार ठग नही सकेगा। लेकिन मुझे कुछ बख्शीश चाहिए।'

लाचारी।

नेटिव ग्रौरत का कपड़ा-लत्ता खरीदने में चार्नक को बड़ा मजा ग्राया। कितना बड़ा-बड़ा सौदा किया है उसने! शोरा, सिल्क, चीनी, कस्तूरी, मलमल—थोक दर से। लेकिन जनाना पोशाक, वह भी एक नेटिव ग्रौरत के लिए! ग्रौर गिरस्ती के बर्तन-भांड़े! भूर दूकानदार क्या सोच रहा है, क्या जाने? दूसरे ही क्षण चार्नक ने सोचा, यह मैं किसी डाइन के पल्ले तो नहीं पड़ गया हूँ?

कहा जाता है, सुंदरवन की किसी शंखिनी के फंदे में फँस गया था एक पुर्तगाली युवक। पुर्तगालियों का दल नाव से जा रहा था। सूखी लकड़ी की जरूरत थी। वे लोग जंगल में उतर पड़े। कौतूहल से एक युवक गहरे जंगल मे दूर तक चला गया। देखा, एक निहायत ही खूबसूरत स्त्री है। पहली ही नज़र में प्रेम। उस स्त्री ने उँगली से इशारा किया। मंत्रमुग्ध की तरह वह युवक उसके पास गया। वह स्त्री उसे एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे एक झोंपड़े मे ले गयी। साथियों ने उस युवक को ढूंढ़ा, पर वह न मिला। वह युवक उस शखिनी के जाल में बरसों फँसा रहा। हर रोज वह तरुणी उसके लिए ग्रजीब-ग्रजीब खाद्य लाया करती ग्रौर उसे ग्रनोखी प्रेम-लीला सिखाया करती। पूरे चार साल के बाद पुर्तगालियों के एक दूसरे दल ने उस बरगद की चोटी पर उस युवक को खोज निकाला। उद्भ्रांत युवक को वे लोग नाव पर ले ग्राये। पानी में ऊँची-ऊँची लहरें मचलीं। शखिनी के ग्राक्रोश से नदी नाव-सहित युवक को निगलने को तैयार। ईश्वर

की दया से नाव किसी तरह हुगली पहुँच गयी। उस सोए हुए युवक को पुर्तगालियों ने खोज तो निकाला, पर उसे होश-हवास नहीं रहा। उसका मन सुंदरवन की शंखिनी के पास पड़ा रह गया।

यह भी क्या शंखिनी की मोहिनी कला है ?

रंग-बिरंगे कपड़े और पीतल के बर्तन-बासन पाकर मोतिया बहुत ही प्रसन्न हुई। शिशुओं जैसी उमंग। वह फौरन ही कपड़े बदल आयी। उसके साँवले-सलोने शरीर पर चार्नक मुग्ध हो गया। लेकिन...चार्नक शंखिनी के जाल में नहीं फँसेगा, नहीं फँसेगा। काम के बहाने वह लौट गया।

चीफ, मिस्टर चेंबरलेन सिंगिया से पटना आ धमके। बड़ी बुरी खबर थी। सुलतान शुजा ढाका से अराकान भागा था, वहीं उसका अंत हो गया।

'इससे तुमने क्या समझा, जॉब ?' चेंबरलेन ने पूछा। 'मतलब यह कि सुलतान की दी हुई निशानी अब बिलकुल बेकार है। अब किसा काम नहीं आयेगी। ऑनरेबुल कंपनी नये बादशाह का फरमान जुटाने की कोशिश कर रही है।'

'बादशाही फ़रमान मानता कौन है ?' चार्नक ने कहा, 'यह क्या शाहजहाँ का अमल है ? उस समय लोग फिर भी बादशाह का हुक्म मानते थे। आज तो जो जिसके जी में आता है, वही करता है। अपनी ज़रूरत होती है तो बादशाह की दुहाई देता है और काम बन जाने पर नकार देता है।'

'घूस, भेंट, नज़राना देकर सरकारी मुलाज़िमों को मुट्ठी में करना होगा, जॉब,' चेंबरलेन ने कहा।

'जितना ज़्यादा भेंट देंगे, सर,' चार्नक ने अपनी राय दी, 'उनका लोभ उतना ही बढ़ जायेगा। देख नहीं रहे हैं आप, नवाब से लेकर मीर-शहर तक नज़राने के लिए सदा तैयार बैठे हैं ? ये बस एक ही बात समझते हैं, सर—मारे तो ठाकुर न मारे तो कूकुर।'

यह बात उस रोज़ मोतिया ने कही थी। बड़ी अच्छी लगी थी—मारे तो ठाकुर न मारे तो कूकुर।

चेंबरलेन ने पूछा, 'मतलब ?'

'मतलब कि इन्हें मारिए तो ये ठाकुर की तरह पूजा करेंगे और न मारिए तो कुत्ते की तरह भोंकेंगे।'

'खूब !' चेंबरलेन ने शाबाशी दी, 'देखता हूँ, इस बीच तुमने नेटिवों की बहुत-सी बातें सीख ली हैं। अच्छा है। मैं लंदन लिखे दे रहा हूँ, तुम्हारे काम से मैं बहुत खुश हूँ। तुम अभी जवान हो। खून गरम है तुम्हारा। हम लोगों का समय समाप्त हो आया। अब पटना छोड़कर चला जाऊँगा। अब तुम और दूसरे नौजवान लोग भार संभालो। कारोबार चलाओ। हमारे किंग और हमारी कंपनी तुम लोगों का मुँह जोह रही है।'

'हमारी भी मियाद पूरी हो आयी है, सर,' चार्नक ने कहा, 'मैं भी लौट जाऊँगा।'

'एँ !' हुक्के का धुआँ छोड़ते हुए चेंबरलेन ने कहा, 'इंदोस्तान तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा है ?'

चार्नक क्या जवाब दे ? पल में याद आ गया, मुहर और मोतिया—सोना और श्यामा। क्या जवाब दे वह ?

सेठ शिवचरण के साथ चल रहे स्वतंत्र व्यवसाय में चार्नक को इन दिनों अच्छा लाभ हो रहा है। होशियार है चार्नक। जिसमें ऑनरेबुल कंपनी का नुक़सान हो, ऐसे किसी काम में वह हाथ नहीं देता। कंपनी के माल पर उसकी चौकस निगाह रहती है। किस बनिये ने क्या माल दिया, वह माल किस कोटि का है, यह सब उसकी तेज नज़र से नहीं बच पाता। कंपनी के माल का कोई नुकसान कुली भी करे तो चार्नक के पास उसके लिए क्षमा नहीं थी। तड़ातड़ कोड़ा! कोड़ा लगाये बिना नेटिव कुली ठीक-ठिकाने नहीं रहते। कोड़ा आजकल चार्नक का सदा का संगी है। यहाँ तक कि उसका सुहृद् सेठ शिवचरण भी पार नहीं पाता। उस रोज उसने एक गाँठ घटिया कपड़ा दिया। चार्नक से खूब डाँट सुननी पड़ी। आखिर कपड़े की वह गाँठ बदल दी गयी, तब कहीं छुटकारा मिला।

एक आरमेनी व्यापारी से मोल-भाव करके चार्नक ने अपने नाम से जवाहरात की खरीद-फरोख्त की। उससे भी काफी मुनाफा हुआ। हिंदुस्तान में मुट्ठी में धूल उठाओ, तो सोना हो जाता है। मगर धूल उठाना तो जानना चाहिए।

यह मोतिया ! कहाँ से उड़कर आ गयी यह औरत ! छलकते यौवन की देह, काली-काली बड़ी-बड़ी आँखें चार्नक को बार-बार याद आने लगीं। गंगा-तट की उस स्त्री की आँखों में अगाध स्निग्धता थी। मोतिया की आँखों में नशीलापन है। जानकर ही चार्नक दो दिन मोतिया के पास नहीं गया। कंधे से बोझ को उतार फेंकना ही ठीक है। उसने शिवचरण से सारी बातें खोलकर कही थी—'इस स्त्री का कोई हीला कर दो। तुम्हारे मुल्क की है। तुम्ही लोग उसका खयाल करो। मुझ पर यह जुल्म क्यों ? कहो तो उसे उसके बाप के यहाँ पहुँचा आऊँ।'

शिवचरण ने ध्यान नहीं दिया। कहा, 'अभावों की दुनिया, हीरू कहार आप ही तबाह है। तिस पर यह बिगड़ी बेटी। हीरू उसे घर में घुसने नहीं देगा।'

उसके बाद फुसफुसाकर बोला, 'साहब, इस माल को छोड़िए मत। कुछ दिन मौज कीजिए। फिर न होगा, तो किसी के हाथ बेच दीजिएगा।'

'चुप ! उल्लू कहीं का !' चार्नक ने डपट दिया, 'मैं औरत बेचकर मुहर कमाऊँगा ? जा, हट जा मेरे सामने से।'

मामला बिगड़ता देख शिवचरण वहाँ से खिसक गया।

परेशानी में डाल दिया नूर मुहम्मद ने। बुड्ढे ने कहा, 'साहब, बीवी ने सोना-खाना छोड़ दिया है। फकत आँसू बहाती है।'

चार्नक ने खीजकर पूछा, 'क्यों ?'

'आप जो चले आये और फिर उसके पास नहीं गये, इसीलिए।'

'मुझे क्या कोई काम नहीं है कि रात-दिन बीबी के मुँह के पास बैठा रहूँ ?'

'फिर भी। कम-से-कम रात-दिन में एक बार तो जाइएगा ? साहब, बीवी आपको बहुत प्यार करती है।'

'अच्छा-अच्छा, तू जा। तुझे उस्तादी नहीं करनी है,' चार्नक खीजकर बोला।

सलाम ठोंककर नूर मुहम्मद चला गया।

चार्नक को ऑल्डवर्थ की याद आयी। बड़ा अनुभवी है वह। वह इस समय रहा होता तो राय देता कि चार्नक को क्या करना चाहिए। वह अभी

भी राजमहल में है। खत लिखने का भी समय नहीं। कब जवाब आयेगा, क्या पता ?

मोतिया की कुटिया में चार्नक जब पहुंचा, तो सांझ हो आयी थी। आसमान लाल-लाल, गुलमुहर की चोटी पर भी आग। गंगा का पानी लहू-सा। नाव-बजरे के पाल भी लाल।

नये कपड़ों में बनी-ठनी मोतिया मानो चार्नक की बाट जोह रही थी। आंख-मुंह पर रोने का कोई भी चिह्न नहीं कहीं। वही प्राण-चंचल मादकता उसके यौवन-पुष्ट शरीर से छिटकी पड़ रही थी।

सादर अगवानी करते हुए मोतिया ने कहा, 'इतने दिनों के बाद ? मैंने समझा, साहब मुझे भूल ही गये।'

जवाब नहीं फूटा चार्नक के मुंह से।

'तुम्हारे लिए पूजा का प्रसाद रखा है।' एक बर्तन में मोतिया कुछ ले आयी। कहा, 'खाओ।'

मुरगे का मांस। मसालेदार। बड़ा स्वादिष्ट। ऐं! ये जेंटू लोग मुरगा खाते हैं ? और कह रही है, पूजा का प्रसाद। सेठ शिवचरण ने कहा था, हम लोग मांस-मछली नहीं छूते। मोतिया क्या भूर है ?

मोतिया ने ही शंका का समाधान कर दिया। कहा, 'आज पंचपीर पर मुरगे की बलि चढ़ाई थी। अपने हाथों पकाया है।'

'उससे क्या होता है ?'

'भला होता है,' मोतिया बोली, 'मन की मुराद पूरी होती है, इसीलिए इस इलाके में हिंदू-मुसलमान सभी जाग्रत देवता पंचपीर को मुरगा चढ़ाते हैं।'

'अंधविश्वास !' चार्नक ने उपहास किया।

'कैसे ? पूजा चढ़ाते ही तो मेरी मनोकामना पूरी हुई।'

'कैसे ?'

'तुम मेरे पास आ गये।'

अचरज से विचलित हुआ चार्नक।

कैसे सरल प्राण का निवेदन है ! इस अज्ञानी स्त्री ने उसे अपने पास पाने के लिए पंचपीर पर मुरगे की बलि दी !

जाने कहाँ से खटिया ले आयी है मोतिया। कुटिया के बाहर खुले में पेड के नीचे डाल दी। चार्नक को बैठने के लिए कहा। चार्नक खटिया पर बैठा, और मोतिया उसके पैरों के पास जमीन पर ही बैठ गयी।

मोतिया एकाएक पूछ बैठी, 'तुम मुझसे नफरत करते हो, साहब? मैं छोटी जात की हूँ, तिस पर बाजार की वेश्या।'

'मैं ईसाई हूँ, जात-पाँत नहीं मानता, लेकिन...।'

मन-ही-मन सोचा, रंडी है, इसलिए शायद कुछ घृणा करता हूँ। मगर यह औरत मुझे प्यार करती है, मुझे अपने पास पाने के लिए इसने देवता पर बलि चढाई है।

'लेकिन क्या? मन की नहीं कहोगे? शायद घृणा करते हो मुझसे?'

चार्नक ने सहसा स्वीकार किया, 'नफरत करता था तुम्हें। पर अब नहीं करता।'

'नूर मुहम्मद कह रहा था, तुम दूसरे साहबों जैसे नहीं हो। हमारे मुल्क की पोशाक-वोशाक पहनते हो। लेकिन यहाँ की औरतों से मिलते-जुलते नहीं।'

'उस बुड्ढे उल्लू ने और क्या कहा?'

'कहा है, तुम बहुत अच्छे आदमी हो।'

'कवख्त जरूर बख्शीश माँगेगा। काम करने पर ही वह बख्शीश माँगता है।'

'लेकिन मैंने तो कोई काम नहीं किया; मुझे इतनी बख्शीश किसलिए?'

'कहाँ?'

'इतने कपड़े-लत्ते, बर्तन-बासन। मैंने कौन-सा काम किया तुम्हारा?'

सच ही तो। सिर्फ़ माँगने की देर। चार्नक ने खुद ही सब ला दिया। क्यों?

साँझ उतर आयी। बसेरे में लौटी चिड़ियों की चहक खामोश हो गयी। गंगा-तट की इस कुटिया में अनोखी शांति। अंधेरा पाख। धुमैले आसमान में दप्-दप् करके तारे जलते जा रहे हैं। चार्नक के पैरों के पास नेटिव औरत की दोनों आँखें भी दप्-दप् कर रही हैं।

अस्फुट स्वर में मोतिया ने कहा, 'मैं जानती हूँ साहब, तुमने मुझे क्यों बख्शीश दी।'

चार्नक को कौतूहल हुआ। पूछा, 'क्यों?'

वह वैसे ही अस्फुट स्वर में बोली, 'मुझसे घृणा करते हो, फिर भी प्यार करते हो।'

पलक मारते ही तरुण चार्नक के हृदय का बंद द्वार मानो मतवाली बयार से खुल गया। हृदय का पुंजीभूत आवेग प्रबल वेग से बयार से मिल गया।

रुँधे श्वास से चार्नक बोल उठा, 'हाँ, तुम्हें प्यार करता हूँ मोतिया, प्यार करता हूँ।'

मोतिया चार्नक की भूखी छाती पर झुक पड़ी। एक निमिष में जाति-धर्म-रंग का भेद एकाकार हो गया।

इधर अँगरेज वणिकों का व्यापार दिन-दिन शोचनीय हो रहा है। हुगली के दीवान ने अँगरेज़ों से सालाना तीन हज़ार रुपया कर माँगा है। बालेश्वर में जहाज का लंगर डालने देने के लिए सरकारी मुलाज़िम कर माँग रहे हैं। राजनीतिक स्थिति डाँवाडोल होने से भागीरथी में लुटेरों का उपद्रव बढ़ गया है। अँगरेजों की नावें देखते ही लुटेरे लूट-पाट लेते है। बाज़ाब्ता संतरी-पहरेदार के साथ नावों को रवाना करना पड़ता है।

फिर खबर आयी, शोरे से लदी जितनी नावें चली थीं, राजमहल में मीर जुमला ने उन्हें रोक लिया है। क्रोध और अपमान से अँगरेज़ विचलित हैं। वही गुस्सा एक दिन फट पड़ा। हुगली के एजेंट ने कर्ज़ की वसूली के बहाने नेटिव की एक माल-लदी नाव को रोक रखा। नवाब ने सुना तो मारे गुस्से के आग-बबूला हो उठा। अँगरेज़ो की यह जुर्रत हो गयी! पुर्तगाली जैसे खूँखार लुटेरे तो मुगलों के रौब से ठंडे हो गये, ये भिन-भिन अँगरेज क्या है! 'तुरंत हाज़िर करो, हरजाना। नहीं तो सारी कोठियों को तहस-नहस कर डालूँगा। हुगली दखल कर लूँगा।' मीर जुमला ऐसा-वैसा आदमी नहीं है। सूबा बंगाल का नवाब। बादशाह का प्रिय पात्र। बादशाहज़ादा सुलेमान

की बगावत को उसने दवाया है, सुलतान शुजा को ग्रराकान भगा दिया है। ये ग्रँगरेज किस खेत की मूली हैं !

पटना का दारोगा बार-बार ग्राकर धमकी दे जाता है, हरजाना दाखिल करो, नही तो हाथी चलाकर कोठी को ज़मीदोज करवा दूँगा। जब भी ग्राता है तो हर बार तलवार, पिस्तौल, बंदूक, भागलपुरी कपड़ा, जिस पर नज़र पडती है, वही उठा ले जाता है। ग्रौर फिर गुर्राता है, हरजाना दाखिल करो।

पटना की कोठी मे खासा ग्रातंक-सा है। मुगलाना रवैया है, क्या पता, कब क्या हो ! ऐसे भी व्यवसाय चलता है कही ?

चार्नक को ग्राजकल काम-काज कम है। नवाब से कोई निबटारा जब तक नही हो जाता, नया कारोबार बंद है। फुरसत काफी है। फुरसत की उन घड़ियों को मोतिया खुशी की हवा से भर देती है।

मोतिया ने प्रेयसी की भाँति मुहब्बत दी है, सग दिया है ग्रौर फिर सखी की तरह ग्राशा दी है, भरोसा दिया है।

मोतिया समझदार की तरह बोली,'रामजी वन चले गये। सीता माई रावण की लका मे है। महावीरजी सहाय हुए। रामजी क्या हार गये ? नही—लडाई हुई, घनघोर लड़ाई। ग्रन्त में रावण को ही हारना पड़ा।'

'इसका मतलब क्या हुग्रा, मोतिया ?' चार्नक ने मजाक मे पूछा।

'ग्रजी, मर्द के बच्चे हो न ! लोहा लो।'

मोतिया की सयानी बातें बडी भली लगती।

'मुगलो से लडाई! ठीक है। मगर हमारे महावीरजी कौन होंगे ?तुम?'

'धत् बुद्धू !' मोतिया हँसते-हँसते लोट-पोट होकर कहती, 'मैं तो ग्रौरत हूँ।'

'फिर ? महावीरजी कौन होगा ?'

'तुम होगे साहब, तुम।'

'खूब ! मुझे हनुमान बना दिया ! तुम्हारा रामजी कौन ?'

'क्यों, पढा नही है ? मराठा वीर शिवाजी। गंगा के घाट पर सुना, उन्होंने बड़ा खौफनाक रवैया अख्तियार किया है। बादशाह को ग्रब मजा ग्रायेगा। जरा कलेजा देखो, होली का त्यौहार बंद कर दिया। मंदिर तोड़-

कर मस्जिद बनाता है।'

शिवाजी के दुस्साहस की खबर जॉब चार्नक को है। मगर वह क्या करेगा ? ऐसे छिटपुट हमले-वमले तो होते ही रहते हैं—हाथी की पीठ पर मच्छर के डंक के समान।

'मोतिया !' चार्नक ने मजा लेने के लिए कहा, 'उससे तो एक काम करो। अपने पंचपीर पर मुर्गे की बलि दो कि हमारे संकट टल जायें।'

हाथ जोड़कर मोतिया ने मन-ही-मन पंचपीर को प्रणाम किया। कहा, 'तुम लोग तो ईसाई हो। तुम क्या पंचपीर को मानते हो ?'

'अरे, मुरगा तो चढाओ,' चार्नक ने हँसकर कहा, 'फल न मिले, मुरगा-भोज तो होगा !'

'नही-नही साहब, हँसी-दिल्लगी नही। तुम मन से कहो, तो बलि दूं ?'

'खैर, मन से ही कह रहा हूँ।'

खुशी से मोतिया गीत गा उठी।

चार्नक ने गीत का मतलब नही समझा, पर सुर मीठा लगा।

मोतिया बोली, 'द्वापर युग मे कृष्णजी काले थे, राधा गोरी। कलयुग में सब उलटा है। तुम गोरे हो, मै काली हूँ।'

चार्नक ने मोतिया को सीने में भीच लिया। कहा, 'तुम प्रकाश हो, ज्योति हो !'

अँगरेजों की मद्रास-कोठी से हुगली के एजेंट को हुक्म आया, नेटिव की नाव छोड़ दो। नवाब से माफी माँगो।

हुगली के एजेंट ने नाक-कान मलकर मीर जुमला से माफी माँगी।

फिर क्या उपद्रव हो, क्या पता ?

पटना-कोठी में खबर आयी, कूचविहार में जेंटुओ ने मुगल बादशाह के खिलाफ़ विद्रोह किया है। आसाम मे भी विद्रोह। उस विद्रोह को संभालने मे नवाब की नाक मे दम है।

अँगरेजों ने मानो ज़रा राहत की साँस ली।

मोतिया ने कहा, 'यह पंचपीर को मुरग़ी चढाने का सुफल है, साहब।'

लेकिन कारोबार की हालत बदतर थी। देश में ज़ोरों का अकाल, चारों तरफ़ लड़ाई—बंगाल, असम, दक्षिण भारत में। फ़ौज की रसद जुटाने में अनाज की कमी पड़ी। आसमान में बादल नहीं। खेत सांय-सांय कर रहे हैं। धरती में दरारें पड़ गयी हैं। भूखों की टोलियाँ शहर को भागी आ रही है। भात दो, रोटी दो। राजधानी दिल्ली में भी शायद यही हाल है। पटना शहर के रास्तों पर चलना दूभर। घाट-बाट, बाज़ार निराहार भुक्खड़ों से भर गया है। भात दो, रोटी दो। दो मुट्ठी दाने के लिए कंगाल!

ताँतियों को बयाना दिया गया था। वह भी शायद बेकार गया। जो भी कच्चा माल था, रोटी के लिए उन्होंने पानी के भाव बेच दिया। वह रुपया भी डूबा।

चाबुक लेकर चार्नक ताँतियों के टोले में गया, मार-पीट करके कही कुछ वसूल हो। लेकिन सब बेकार।

ताँतियों का टोला प्राय. खाली थी। लोटा-कंबल लिये एक टुकड़ा रोटी के लिए जिससे जहाँ बना, चल दिया। करघों में मकड़े जाल बुन रहे हैं।

मोतिया ने चार्नक से कुछ मुहरें माँगी।

'मुहरों का क्या होगा?' चार्नक ने जानना चाहा।

'बाप को दूँगी। कैसा तो कर रहा है जी। बच्चों-कच्चों को लेकर उसका बुरा हाल है। मुझे ले चलो वहाँ।'

चार्नक उसके आग्रह को टाल नहीं सका।

देहात में घर था उसका। चार्नक कोठी से एक घोड़ा ले आया। मोतिया को अपने आगे बिठाकर घोड़े पर सवार हुआ। कच्चे रास्ते से दोनो रवाना हो गये।

रास्ते में बड़ा करुण दृश्य। बीच-बीच में आदमियों की लाशें पड़ी हैं। दुबले मर्द-औरत-बच्चों की लाशें। गिद्ध मास नोच-नोचकर खा रहे हैं। डर से मोतिया ने आँखें बंद कर ली।

खपरैल का घर। ग़रीबी का प्रतीक। आँगन के पास फूटी हांडी पड़ी है। पाया-टूटी खटिया।

खाँ-खाँ कर रहा है घर।

हीरू कहार शहर में पालकी ढोता था। हफ़्ते के अंत में बच्चों को

देखने के लिए घर आ जाता था। हीरू की स्त्री बहुत पहले ही मर चुकी थी। बुढ़िया माँ घर-गिरस्ती संभालती थी।

मोतिया का कलेजा धक् से रह गया।

सब कहाँ गये ! बाबूजी, बुढ़िया अम्मा—सब गये कहाँ ?

सीलन-सी दुर्गन्ध आ रही थी। सड़ी बदबू। पूरे आँगन में बेहद बदबू। कुएँ के पास और भी ज्यादा। कुएँ के पास जाकर चार्नक डर से पीछे हट आया। कुएँ में बड़ी गहराई में पानी था। पानी में कुछ लाशें तैर रही थीं। सड़कर, फूलकर बड़ी वीभत्स हो गयी थीं।

घर में घुसते ही मोतिया चीख उठी। चार्नक दौड़कर दरवाजे के पास गया। छप्पर से एक लाश झूल रही थी। वह भी सड़कर फूल गयी थी। तीखी बदबू से नाक झनझना उठती।

मोतिया गला फाड़कर रो उठी—'बाबूजी, बाबूजी !'

हीरू कहार ने परिवार सहित सदा के लिए भूख को शांत कर दिया था।

मोतिया रोती-रोती धूल में लोट गयी। उसके हाथ से छूटकर तीन मुहरें बिखर गयीं। खपरैल-घर के अँधेरे में मुहरें दमकने लगीं।

चार्नक उस शोक-विह्वल स्त्री को क्या दिलासा दे ?

समय ने ही उसे शांत किया। रोते-रोते आँख-मुँह सूज गया। बाल बिखर गये। वह कुछ-कुछ संभली।

लेकिन बूढ़ी अम्मा कहाँ ? बहन लक्ष्मी ? भाई सुन्दर ?

चार्नक ने उँगली से कुएँ की ओर इशारा किया।

फिर से रोने की शक्ति नहीं थी मोतिया में। वह उठ खड़ी हुई। उसका कौतूहल मिट चुका था। कुएँ के पास वह नहीं गयी। आँचल से आँसू पोंछने लगी। चार्नक के पास आकर आकुल भाव से बोली, 'साहब, जीते-जी तो बाप के किसी काम नहीं आ सकी। अब शव का दाह-संस्कार करना होगा।'

चार्नक ने इन लोगों का शव-दाह देखा है। श्मशान में लकड़ी की चिता सजाकर उस पर शव को लिटा दिया जाता है। ऊपर से भी लकड़ी। चिता में आग लगा दी जाती है। हवा से आग लपटें लेने लगती है। नश्वर

शरीर जलकर राख हो जाता है। जेंटू लोग मूर या ईसाई की तरह शव को क़ब्र में नही गाड़ते।

मगर छप्पर से झूलती हुई उस सडी लाश को उतारे कौन ? बदबू के मारे अंदर ही नही जाया जाता।

कोई आदमी ही कहाँ है ? सारी बस्ती ही खाली, सुनसान पड़ी है। चार्नक कुछ ठीक नही कर सका।

मोतिया संभवतः चार्नक के मनोभाव को भांप गयी, इसलिए निष्कपट कंठ से बोली, 'सोच क्या रहे हो, साहब ? आग लगा दो। इस सूने घर को आग लगा दो। उसी के साथ बाप की लाश जल जायेगी।'

चार्नक ने घर में आग लगा दी। धूप से सूखी लकड़ियाँ धू-धू जलने लगी। आग की लपटों के साथ मोतिया की पागल-सी चीख ने सुर मिलाया—'राम नाम सत्य है। राम नाम सत्य है।'

प्रजाजनों की चीख-पुकार से शायद बादशाह को सुध आयी। शहर में नियमित तादाद से ज्यादा खाना बँटने लगा। भूखों को भोजन देने के लिए नये-नये लंगर खोले गये। अमीरों को ठीक से लंगर चलाने का हुक्म हुआ।

लेकिन हुक्म और चीज है, उसकी तामील और चीज। लगर की खातिर बडा हो-हल्ला मचा। भोजन के लिए छीना-झपटी होती। धन-लोलुप अमीर लोग खाद्य के बदले धन बटोरने मे ज्यादा दिलचस्पी लेते। उन्हें कौड़ी-कौडी का लोभ था।

पटना के एक मुहल्ले में ऐसे ही एक लंगरखाने के सामने छोटा-मोटा दंगा हो गया। कई लोग मारे गये, बहुतेरे घायल हुए। फिर भी भुक्खड़ों की भीड़ नही घटी। मरे हुओं और घायलों को रौंदते हुए भूख से पीड़ित नर-नारियों का दल टूट पड़ने लगा। भूखों की भीड़ के मारे रास्तों पर लोगों का चलना बंद हो गया।

चार्नक के घोड़े को बढ़ने की गुजाइश नही थी। वह उतर पड़ा। एक हाथ में लगाम, दूसरे में कोड़ा। घोड़े की पीठ पर सवार थी मोतिया—शोक से टूटी हुई-सी।

भीड़ को ठेलते हुए चार्नक धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा, और अपनी पीठ पर मोतिया को लिये पीछे-पीछे घोड़ा। एकाएक मोतिया मानो उल्लास से चीख उठी :

'सुंदर! सुदर!'

काले रंग का हट्टा-कट्टा युवक मोतिया की पुकार पर सिर उठाकर ताकने लगा। मोतिया घोड़े पर से कूद पड़ी। भाई को लपककर गले से लगा लिया।

लेकिन युवक ने घृणा से अपने-आपको उसके आलिंगन से छुड़ा लिया। मोतिया आहत स्वर में बोली, 'सुदर, मेरे भाई, मुझे पहचान नही रहे हो? मैं तुम्हारी दीदी हूँ।'

सुदर ने तीखे भाव से कहा, 'ग़लत। मेरी दीदी मर चुकी है। तुम रंडी हो, रंडी। तेरे पाप से पागल होकर पिताजी ने सबको मार डाला। खुद भी फाँसी लगा ली। किसी प्रकार जान लेकर मैं भाग निकला। तू दीदी नही, रंडी है, रंडी।'

मोतिया गिड़गिड़ाई, 'नाराज़ नही हो, भाई मेरे। तू मेरा भाई है सुदर। तू चल, मैं तुझे खिलाऊँगी। आराम से रखूंगी।'

युवक ने उद्दीप्त गले से प्रतिवाद किया, 'भूखों मर जाऊँ, वह अच्छा, मगर तेरे पाप का अन्न मुँह में नही रख सकता।'

चार्नक ने आवाज दी, 'छोकरे, चलो। मैं तुम्हें काम दूंगा, रोटी दूंगा।'

सुंदर ने एक बार मोतिया और एक बार चार्नक की ओर देखा। उन दोनों का संबंध समझना बाकी न रहा। असीम घृणा से सुंदर चीत्कार कर उठा, 'साहब, अपनी बीवी को लेकर जाओ। यवन से भी गये-बीते फिरंगी; तुझ-सी छोटी जात का मैं अन्न खाऊँगा, तुम्हारी गुलामी करूंगा?'

चार्नक के दिमाग मे आग लग गयी। इस बदतमीज नेटिव छोकरे ने समझा क्या है? सहृदयता से बुलाने का यही जवाब है? असभ्य, बेईमान! खुद कहार है, पालकी ढोने वाला! कितनी ऊँची जात! और ऑनरेबुल कंपनी के ईसाई कर्मचारी को छोटा बताकर ऐसी नफरत! बेहिसाब क्रोध से चार्नक के हाथ का चाबुक सपासप बरसने लगा। सुदर का बदन, हाथ-

मुँह जगह-जगह से कट गया। लहू बहने लगा। उसने गरजकर कहा, 'खैर। इसका बदला मैं अवश्य ही लूँगा।'

रोती हुई मोतिया को चार्नक ने घोड़े पर बिठा लिया। खुद भी सवार हुआ और हवा हो गया।

जरूरत से ज्यादा परिश्रम के कारण मीर जुमला ढाका के पास मर गया। सूबा बंगाल में बहुत बड़ी रद्दोबदल होगी। और बंगाल से जुड़ा हुआ है पटना- कोठी का व्यवसाय। संकट के इस समय में कोठी का कर्णधार कौन होगा ?

घटना के आवर्त की यह एक चौंकाने वाली ललकार !

चार्नक उस चुनौती को कबूल करने को तैयार है। एक दिन उसने ऑनरेबुल कंपनी के कोर्ट ऑफ़ डाइरेक्टर्स को चिट्ठी लिख दी—'मेरी नौकरी की पाँच वर्ष की मियाद खत्म होने को है। मैं हिंदुस्तान में रह जाने को तैयार हूँ बशर्ते कि मुझे पटना-कोठी का चीफ़ बनाया जाये।'

चार्नक पर नौकरी का नया नशा सवार है। पदोन्नति। महज बीस पौंड वार्षिक वेतनवाला चौथा अफ़सर चार्नक पटना-कोठी का चीफ होगा ! उसके बाद कासिम बाजार, उसके बाद हुगली, उसके बाद···?

अपनी क्षमता की भावना भी उस पर हावी है। कवि ने कहा है न— 'स्वर्ग में गुलामी करने से नरक में राजा होना कहीं अच्छा है।'

चीफ़ ! छोटी ही कोठी का हुआ तो क्या ! कोठी में वह गोया राजा हो, सर्वेसर्वा। उसके लिए खास नौकर होगा, पालकी होगी, घोड़ा होगा। कैसा बोलबाला, कितना रौबदाब !

हिंदुस्तान में रहना होगा तो चीफ़ होकर ही रहूँगा।

और सिंगिया की कोठी भी मनोरम है। परिवेश बड़ा अच्छा है। सिर्फ़ चीफ ही उस कोठी में रह सकता है। चार्नक चीफ़ हो तो मोतिया को वह सदा साथ रख सकेगा।

अभी मोतिया को साथ रखने में कितनी असुविधा है ! कंपनी के सरकारी डेरे में उसे ले जाने की गुंजाइश नहीं। अलग से किराया भरना

पर उस तुच्छ तरुण कर्मचारी की यह चिंता-तरंग लंदन तक नहीं पहुंचेगी—वह सात समंदर पार है। लेकिन सात समंदर पार से पत्र का उत्तर आया। ऑनरेबुल कंपनी के कोर्ट ऑफ़ डाइरेक्टर्स ने चार्नक को पटना-कोठी का चीफ़ नियुक्त कर दिया।

दो

घड़ियाल की चोट ने आधी रात की सूचना दी। भोज की उमंग अभी खत्म नहीं हुई। मदिरा के प्यालों की खनक अभी भी उठ रही है। हँसी-ठहाके, जड़ित कंठों के रसालाप की महफ़िल जमी हुई है। बेशुमार मोम-बत्तियों के फानूस ने सरल प्रकाश बिखेर रखा है। नाच का क्रम अभी-अभी समाप्त हुआ है।

पटना के नये चीफ के पद-ग्रहण का यह उत्सव। शाम से तरह-तरह की मदिरा और खाद्य ने आमंत्रितों की भूरि-भूरि प्रशंसा अर्जित की। बत्तख, हिरन, भेड़, तीतर, मुरगा, कबूतर, बटेर—विविध पशु-पक्षियों का मसालेदार मांस बड़ा स्वादिष्ट बना था। मूर लोगों के सम्मान में सूअर और जेंटुओं की खातिर गोमांस छोड़ दिया गया। ऑनरेबुल कंपनी के भंडार से विलायती वाइन, रम, ह्विस्की की धारा बह उठी। कंपनी के वकील अलीमुद्दीन ने फ़ारस के अंगूरों की रंगीन शराब भेंट में दी थी। बनिया सेठ शिवचरण ने कश्मीर से सुरा मँगवा दी। फेन जेनसन नशे की झोंक में मेज़ के नीचे लुढ़क रहा था। खानसामा-बावर्चियों ने मिलकर उसे उठाया। मिसेज़ जेनसन का चेहरा लाल सुर्ख हो उठा था। वह बस चार्नक की ओर ताक रही थी और ही-ही कर हँस रही थी। नशे में जेम्स लायड और सैमुएल टीची में हाथापाई हो गयी। लायड ने तो टीची को मार डालने के लिए पिस्तौल निकाल ली थी। शिवचरण झट अलमारी के नीचे दुबक गया, लेकिन अलीमुद्दीन ने चालाकी से लायड के हाथ से पिस्तौल छीन ली। ख्वाजा मार्टुस आरमेनी भाषा में ज़ोर-ज़ोर से गीत गाने लगा। मदाम ला साल चार्नक के गले से लिपटकर उसे चूमने जा रही थी। बड़ी मुश्किल से उसके शिकंजे से छुटकारा मिला। अर्दली नूर मुहम्मद ने खुशबूदार अंबरी तंबाकू-भरे हुक्के की नली चार्नक के हाथ में दी। चार्नक दम लगाकर

धुम्रां छोड़ने लगा।

पटना-कोठी का नया चीफ़---वरशिपफुल जॉब चार्नक। उम्र में कम, लेकिन अनुभव में प्रवीण। राइट ऑनरेबुल कंपनी के कोर्ट ऑफ़ डाइरेक्टर्स चार्नक से बड़ी उम्मीद रखते हैं। इसीलिए पटना-कोठी की ज़िम्मेदारी उसे सौंपी। एक तो हिंदुस्तान का हाल डाँवाडोल था, तिस पर मूरों से अंगरेज़ों की झड़प होती ही रहती है पटना में। कई साल पहले नवाब ने ज़ोर-ज़बरदस्ती पटना की कोठी पर कब्ज़ा कर लिया था। फ़रमान पर भी झमेला। शुजा का निशान बेकार! नया बादशाह फ़रमान न दे तो मुसीबत।

चीफ़ की गद्दी मिलते ही चार्नक पटना के फ़ौजदार को सलाम बजा आया है। फौजदार के पास बिलकुल मूर प्रथा से कोर्निश करके जाना पड़ा। नेटिव तो हाथ रखने नहीं देता था। चार्नक ने जब एक बोतल विलायती शराब, एक थान लाल मख़मल, इस्पात की तीन तलवारें और एक नयी पिस्तौल दी, तब फौजदार की ज़बान खुली। तबाकू का धुआँ छोड़ते हुए उसने आश्वासन दिया कि वह फरमान के लिए नवाब से सिफारिश करेगा।

जॉन इलियट ने कासिम बाज़ार से चिट्ठी भेजी---'क्यों साहब, मैंने कहा नहीं था कि आप चीफ होंगे? अभी पटना के हुए, उसके बाद कासिम बाज़ार के होंगे। देखिए, उस समय भूल मत जाइएगा। आपको उस क्रीत-दासी मेरी एन की याद है? अब वह कैसी खूबसूरत निकल आयी है! उस पंच-ज्वाला के रूप के जाल में सभी जात के जवान-बूढ़े उलझ गये हैं। एन लेकिन अभी भी चार्नक का नाम लेती है। आप चाहें तो उसे खरीद सकते हैं।'

'ज़रूरत नहीं उस दोग़ली की। मेरी मोतिया ने सबको मात कर रखा है,' चार्नक ने मन-ही-मन कहा।

चार्नक ने इस बीच मोतिया को चार घाघरे, मोतियों की एक माला और सोने का एक चन्द्रहार उपहार में दिया है। रूपचंद सुनार को मोतिया के लिए चाँदी की चूड़ियाँ, बाज़ूबंद, कानों का झुमका और नाक की कील बनाने का हुक्म दिया गया है। चार्नक की ख्वाहिश थी कि सारे ही गहने सोने के हों लेकिन उतने पैसे नहीं थे। जनाब गुलामबख्श के साझे में कश्मीरी शाल का कारोबार चला पाने से सरदियों में खासा मुनाफ़ा होगा।

उस समय मोतिया को और ज्यादा खुश किया जायेगा। तंबाकू पीते-पीते मोतिया की याद आ रही है। आज के इस भोज में वह नहीं रही। अँगरेजों की पटना-कोठी के चीफ का यह सरकारी आयोजन है। मोतिया के लिए यहाँ गुंजाइश नहीं। वह चार्नक की प्रेयसी हो सकती है, पर उसके साथ कोई सामाजिक बंधन नहीं है। उसका आदर-कदर शयन-कक्ष में ही है, सरकारी भोज में नहीं। चार्नक ने पालकी से उसे सिंगिया की कोठी में भेज दिया है। काम था, इसलिए खुद उसके साथ नहीं जा सका। नूर मुहम्मद अंगरक्षक बनकर गया है।

चार्नक का मन पंद्रह मील दूर मोतिया के यौवनपुष्ट शरीर के पास ही चक्कर लगा रहा था।

मदाम ला साल ने उनकी तन्मयता भंग की। महिला अँगरेज है, पर फ्रांसीसी व्यवसायी की पत्नी है। महिला का यह तीसरा पति है। वह कप्तान निकोलस की पत्नी के रूप में हुगली आयी थी। हिंदुस्तान में यूरोपीय महिलाएँ विरल हैं। इसीलिए श्वेतांगों में उसकी चर्चा रहती है। बहुतेरे श्वेतकाय पुरुष उसकी कृपा के भिखारी हैं। महिला में उदारता की कमी नहीं। आँधी में एक दिन गंगा में नाव डूब जाने से निकोलस साहब का देहांत हो गया। शोक की अवधि भी नहीं बीत पायी थी कि मिसेज़ निकोलस मिसेज़ हारनेट हो गयी। नया पति बड़ा कड़े मिज़ाज का था। पत्नी का अभिसार वह बरदाश्त नहीं कर सका। शयन-कक्ष में पलंग के नीचे जिस दिन एक पुर्तगाली युवक पकड़ा गया, उस दिन उसने पत्नी को कोड़े लगाये। उस युवक ने तो भागकर जान बचायी, लेकिन पति ने धतूरा खाकर दूसरे दिन आत्महत्या कर ली। विदेशी की लाश लेकर शोरगुल कौन करे? बात दब गयी। महिला का वर्तमान पति मोशिए ला साल प्रौढ़ फ्रांसीसी व्यवसायी है। महिला के प्रभाव से खानदानी व्यवसायी इलाही बख्श मोशिए ला साल पर कृपालु है, इसलिए कारोबार अच्छा ही चलता है।

चार्नक की कुरसी के हत्थे पर बैठकर मदाम ला साल बोली, 'जॉब, मैंने तुम्हारी इस पार्टी को बिलकुल पसंद नहीं किया।'

चार्नक अवाक् हो गया। बोला, 'मेरा क़सूर?'

महिला ने मजाक से कहा, 'अरे साहब, पार्टी में कोई होस्टेस नहीं?

यह भी कोई दावत है ?'

चार्नक की जान में जान आयी। खैर, उसके अतिथि-सत्कार में कोई त्रुटि नहीं हुई है। उसने जवाब में कहा, 'इस हिंदुस्तान की सड़ी हुई गरमी में किस महिला को अँगूठी पहनाऊँ, कहिये।'

मदाम ला साल ने वेश्या की तरह कहा, 'हाय-हाय, पहले तुमसे परिचय रहा होता तो उस बुड्ढे से ब्याह न करके मैं ही तुम्हारे पास अँगूठी भेज देती।'

'मेरा दुर्भाग्य,' चार्नक ने कहा, पर मन-ही-मन अपने सौभाग्य की प्रशंसा की। उस गौरांगिनी के चेहरे पर नियमित व्यभिचार ने अपनी छाप डाल रखी है। रूखी चमड़ी, कर्कश स्वर, कठोर दृष्टि, सारे बदन में लालित्य का अभाव।

'कंपनी के मालिकों का भारी अन्याय है,' मदाम ने शिकायत की। 'मुल्क में योग्य पात्रों की कमी से युवतियों की शादी नहीं हो रही है। और, यहाँ, हिंदुस्तान में योग्य पात्र नेटिव युवतियों को लेकर मजे लूट रहे हैं।'

मोशिए ला साल ने टिप्पणी की, 'दूध की साध मठे से मिटाना इसी को कहते हैं।'

मदाम हठात् पूछ बैठी, 'जॉब, तुम्हारी वह जेंटू छोरी कहाँ गयी ? देखने को बड़ा जी चाहता है कि तुम मर्द लोग किस आकर्षण से फिसलते हो।'

जॉब चार्नक एकदम जल उठा। उसने कुछ कठोर स्वर से कहा, 'मदाम ला साल, मेरा अनुरोध है, दावत में आप जरा संयत भाषा का प्रयोग करें।'

'वाह जोब,' महिला जरा क्रोध से बोली, 'एकदम ही उखड़ गये ! तुम एक जेंटू लौंडिया को लेकर मजा लूट सकते हो और मैंने जरा मजाक किया कि गुस्से !'

'मेरे व्यक्तिगत मामले में दखल न दें,' चार्नक ने कड़े स्वर में आदेश दिया।

'जो महिला सामने नहीं है, पीठ-पीछे उसके बारे में आप व्यंग्य नहीं कर सकतीं।' चार्नक ने कुछ रुककर कहा।

मोतिया ! महिला ! मदाम ला साल चीत्कार कर उठी, 'जानने को बाक़ी क्या है ? पटना की एक वेश्या। नीच जात, वाहियात, ग़रीब—और वह महिला ! हुं !'

'शट अप !' चार्नक की आवाज़ सख्त और रूखी थी, 'वह असहाय युवती मुझ पर अनुरक्त है। उसने अपने सारे अतीत को धो-पोंछ दिया है। मेरे सिवाय वह और किसी को नहीं चाहती।'

'तुम जैसा तरुण प्रेमी मिलता, तो मैं भी जकडकर पड़ी रहती, जॉब,' रो पड़ी मदाम, 'उस जेंटू औरत में क्या है जो मुझमें नहीं है ? मेरा मुँह देखो, मेरी आँखें देखो, मेरी छाती देखो।'

बोलते-बोलते मदाम ला साल ने फ्रॉक को कमर तक उतार दिया। वह और क्या-क्या करती, क्या जानें ! उसका पति मोशिए आया, फ्रॉक को कंधे तक उठाकर बोला, 'मेरी प्यारी, कपड़े मत उतारो, मत उतारो। मच्छर काट लेंगे।'

मदाम ला साल ज़ोर-ज़ोर से रो पड़ी। पति से लिपटकर बोली, 'डार्लिंग, तुम मर्द हो तो चार्नक को डुएल की चुनौती दो। उसके घमंड को चूर-चूर कर दो। उसने आज मेरे प्यार के चुंबन को नकारा है।'

ला साल ने तुनककर कहा, 'मिस्टर, आपने मेरी पत्नी का अपमान किया है।'

मदाम आश्वस्त हुई। फ़ारस की रंगीन शराब का घूंट लेकर उसने प्याले को पटक दिया। उसके बाद पति का हाथ पकड़कर खींचने लगी, 'डार्लिंग, चलो, इस नरक से हम भाग चलें।'

दोनों दावत से चल दिये। व्यापारी गुलाम बख्श चार्नक के न्योते पर छिपकर शराब पीने आया था। 'तौबा, तौबा !' गुलाम बख्श ने कहा, 'आज तो खास माल का इंतज़ाम किया है, चार्नक साहब। ओह, कितनी किस्म का माल ! बादशाह के हुक्म से पटना में क्या अब माल मिलता है ? आप नाज़रीन लोग मज़े में हैं। आप लोगों के लिए सब हुक्म रद्द ! लेकिन मैं भी एक बोतल ले जाऊँगा।'

गुलाम बख्श ने साझे में कश्मीरी शाल का व्यवसाय शुरू किया है। उसे खुश रखना है।

पार्टी और नहीं जमी। एक-एक करके मेहमान रुखसत लेने लगे। मिसेज़ जानसन पी रही थी और मन्द-मन्द मुस्करा रही थी। वह हठात् उठ खड़ी हुई और बोली, 'सभी सुनिए, मैं स्वास्थ्य की कामना करते हुए पान कर रही हूँ मिस्टर और मिसेज़ चार्नक के लिए।' महिला ने प्याले को खत्म किया।

चार्नक ने तर्क करने की ज़रूरत नहीं समझी। नशेबाज़ औरत की बात पर कान क्या देना ?

मिसेज़ चार्नक ! चार्नक ने मोतिया से शादी करने की बात भी नहीं सोची है। प्रेम और संग—यही काफी है। अभाव किस बात का है? ब्याह की कोई ज़रूरत नहीं। उन दोनों का यह संबंध समाज-बंधन से परे है। विवाह के बंधन का मूल्य क्या है ? मिसेज़ निकोलस ने तो एक-एक करके तीन शादियाँ की, उनमें सामाजिक बंधन की कौन-सी मर्यादा थी ? उसने क्या कभी भी किसी पति को प्यार किया है ? लेकिन मोतिया के लिए तो चार्नक ही सर्वस्व है, अनन्य प्रेमी !

अतिथि-अभ्यागत सभी विदा हो गये। मशालची फ़ानूसों की बत्तियों को बुझाने लगे। चार्नक को मोतिया के लिए ललक हो आयी। वह उसी समय, रात में ही सिंगिया-कोठी के लिए रवाना हो गया।

ये नेटिव कुली बगैर शोर मचाये काम नहीं कर सकते। माल चढ़ाने, माल उतारने और ढोने में—हर समय शोर मचाते हैं। उनके साथ-साथ नेटिव बनिये, मुत्सद्दी भी हल्ला करते हैं। तमाम दिन हल्ला और हल्ला। कान बहरे हो जाते हैं। इस हल्ले को रोकने के लिए चार्नक ने कितनी बार चाबुक चलायी है। कुछ देर खामोशी। फिर वही हल्ला, लोगों की आदत भला छूटे कैसे ?

कोठी का लेन-देन ठीक ही चल रहा है। नये बादशाह के नाम पर उत्तर भारत में कुछ-कुछ शांति है। लड़ाई अभी दक्खिन में ही है। शांति न हो तो कारोबार चलाना कठिन है। लाख कोशिश करने पर भी औरंगज़ेब का फ़रमान नहीं मिल रहा है। बेरोक व्यापार का अधिकार

मिले बिना बादशाही कर्मचारियों की हरकत से लाभ की सुविधा नहीं।

सीधे बादशाह को ही दरखास्त दी जाये, तो कैसा रहे ? परंतु पटना के फौजदार ने चार्नक को अभी दिल्ली जाने से मना किया है। कहा है, बादशाह का मन-मिजाज अभी अच्छा नहीं है। बादशाह से साहब-किरान-ए-सानी का विरोध चल रहा है। गरम-गरम पत्राचार हो रहा है। ये फिर कौन ? बादशाह के बापजान शाहजहाँ। अब उनका यही नाम है। दक्षिण की हालत अच्छी नहीं है। काफ़िर शिवाजी बेहद तंग कर रहा है। बादशाह ने उसे दबाने के लिए राजा जयसिंह और दिलेर खाँ को भेजा है। बादशाही फरमान की जरूरत क्या ? भेंट दो, नज़राना दो। कर्मचारी लोग अँगरेज़ों की माल भरी नावों को छोड़ देंगे।

तो, अमीर-उल-उमरा शाइस्ता खाँ को पकडा जाये। उन्हें समय कहाँ ? अराकान में लड़ाई चल रही है। चटगाँव बंदरगाह को दखल करना है।

राजमहल मे फिर चौकीदारों ने शोरे की नावें रोकी थी। एक हज़ार सिक्के—रुपये—देकर नावों को छुड़ाना पड़ा। मुगलों के दीवान और दारोगा द्वारा शोषण तो जारी ही है।

हीराचंद ने अँगरेज़ों के ढाई हज़ार रुपये हड़प लिये। चार्नक ने प्यादे से उसे कोठी में पकड़वा मँगाया था। हीराचंद के लोगो ने काज़ी के पास नालिश की। घूस खिलायी। चार्नक की निगाहों के सामने हीराचंद कोठी से छाती फुलाकर निकाला। चार्नक ने भी घूस खिलायी। काज़ी के हुक्म से हीराचंद को बीस कोड़े लगे। ढाई हज़ार रुपये उसने 'माई-बाप' करके उगल दिये।

लूट-पाट आजकल बेहिसाब बढ़ गयी है। जल में डकैती, थल में डकैती। पहरेदारों के बिना नाव का चलना ही असंभव। कोठी मे चार्नक ने सिपाहियों की संख्या बढ़ा दी।

चीफ़ के काम का कोई अंत नहीं। घर के करीब ही दफ़्तर, ख़ासा खुला हुआ-सा। वहाँ बहुत-सी टेबिल और डेस्क। कर्मचारीगण बैठे-बैठे लिखते रहते है। अलमारी में खतो-किताबत के रजिस्टर, हिसाब के खाते-बहियाँ। और-और जरूरी काम। सब-कुछ को सहेजकर, ताला-कुजी लगाकर रखना पड़ता है। पिछले-चीफ़ सूची के मुताबिक एक-एक चीज़ मिला-

कर दे गये है। गोदाम में माल का स्टॉक, संदूक मे रुपये। सब-कुछ समझा दिया है।

यहाँ भी भोजन एक मेज़ पर साथ ही होता है। पद के अनुसार लोग बैठते है। अनब्याहे लोग भोजन के लिए अलग से भत्ता नही पाते। जो विवाहित है और अपने घर में ही खाना खाना चाहते हैं, उनके लिए भत्ते की व्यवस्था है। चार्नक का हाल कुछ अजीब किस्म का है। नियम के नाते उसे आम टेबिल पर कर्मचारियों के साथ ही खान-पान करना पड़ता है, हालाँकि घर मे मोतिया के सेवा-जतन पर लोभ हो आता है। इसीलिए बदहज़मी के बहाने बहुत बार उसे आम भोज में गैरहाज़िर होना पड़ता है। स्वादिष्ट भोजन चार्नक मोतिया के साथ अपने घर में करता है। लेकिन इस भोजन का सारा खर्च उसे खुद करना पड़ता है। वेतन वही है—साल में बीस पौंड, यानी एक सौ साठ रुपये। ऊपरी पावना है, इसलिए चल जाता है। लेकिन इस विषय मे चार्नक खूब सावधान है। कंपनी को नुकसान पहुँचाकर वह किसी भी तरह का मुनाफा नही कमाना चाहता। बल्कि जिन कारबारों में कंपनी ने हाथ नही दिया है, वह वैसे ही कारबारो में साझेदार होता है।

चीफ के मान-सम्मान की रक्षा का दायित्व कंपनी का है। चीफ की बहुत-सी अपनी पालकियाँ है। तीन घोड़े सदा उसी के हुक्म पर चलते है। आम कर्मचारियों के यहाँ दीया जलता है, परंतु चीफ के लिए मोमबत्ती। दीये की रोशनी मंद और धुमैली, लाल-सी होती है। मोमबत्ती की जोत स्निग्ध और उजली।

चीफ़ की जिम्मेदारियाँ कितनी हैं ! एक कोठी का प्रधान है वह। एक बहुत बड़े इलाके मे कारोबार फैला है। उसका रग-रेशा सब चीफ़ के हाथ मे। उसे निगरानी रखनी होती है कि रोज़-रोज़ का हिसाब ठीक से रखा जा रहा है या नही, गोदाम में माल हिफाज़त से रखा जाता है या नही। अँगरेज़ और नेटिव कर्मचारियो पर चौकस निगाह रखनी पड़ती है। बनिये समय पर माल देते है या नही; मुत्सद्दी, पोद्दार, तगादगीर काम में कोताही तो नही करते। हुगली या मद्रास से जो निर्देश आते है, उनका ठीक-ठीक पालन हो रहा है या नही। कितने-कितने काम है !

चार्नक काम में डूबा रहना चाहता है।

लेकिन श्राफ़त कर रखी है मोतिया ने। बल्कि यों कहिए, उसी को लेकर मुसीबत है।

उसके भाई की धमकी की चार्नक ने परवाह नही की। कही भेंट हो जाये तो उस छोकरे को उसकी उद्दंडता के लिए फिर कोड़े लगाये जायें। मोतिया अवश्य अपने नासमझ भाई के लिए सदा अफ़सोस करती है। उसकी ओर से मोतिया ने माफ़ी माँगी है। चार्नक ने ज़ुबान से तो माफ कर दिया है। पर उसके मन का गुस्सा अभी गया नहीं है।

जेंटुओं का रवैया ही ऐसा है। अपने मे तो छोटी-बडी कितनी जात, लेकिन सभी विधर्मियों से घृणा करते है। जेंटुओं की नज़र में ईसाई तो यवनों से भी अधम हैं। वह शिवचरण, जो रात-दिन चार्नक की खुशामद करता रहता है : बयाना दो, आर्डर दो, सब मंजूर। लेकिन उसे एक लोटा पानी पीने को कहो तो नही—बनिये की जात जायेगी। एक मोतिया ही व्यतिक्रम है। वह चार्नक का जूठा तक खुशी से खाती है। मूरों मे लेकिन जात का विचार नही है। मगर विधर्मी के नाते ये ईसाइयों को विशेष पसंद नही करते। उनकी बस यही कोशिश रहती है कि ईसाइयों को मुस्लिम कैसे बनाया जाये।

उधर नशेबाज़ बीवी के जोश में मोशिए ला साल ने चार्नक को डुएल की चुनौती दी है। वह झगडा भी मोतिया की वजह से है। उसने अवश्य डुएल की दिन-तारीख़ अभी मुकर्रर नही की है। फ्रांसीसियों में बात-बात में डुएल! यह द्वंद्व युद्ध तलवार का होगा या पिस्तौल का, यह भी अभी तय नही हुआ है। पिस्तौल ही ठीक है। पिस्तौल का अभ्यास चार्नक ने बदस्तूर किया है। तलवार चलाने मे वह कुशल नहीं है। इतना है कि उस कंबख्त की उम्र ज्यादा है और चार्नक जवान है। यह एक बहुत बड़ी सुविधा है। मान की ख़ातिर डुएल की चुनौती को स्वीकार करना ही पड़ेगा। चार्नक दिन-तारीख़ के इंतज़ार मे है।

मोतिया ने और एक झमेला खड़ा किया है। उसने बिलकुल उसके कलेजे से लगकर कान के पास मुँह ले जाकर अस्फुट स्वर में चार्नक को अपने मन की कामना बतायी है—माँ होने की कामना। लेकिन इतने दिनों

के संग के बाद भी अगर मोतिया को संतान की संभावना न हो तो चार्नक लाचार है। मोतिया कितने तावीज़-जंतर आजकल पहनने लगी है, कोई गिनता नहीं। बार-बार साधु-फ़क़ीरों के पास जाती है। ढेरों प्रसाद, मंतर पढ़ा पानी उसने खुद भी खाया-पिया है, चार्नक को भी खिलाया-पिलाया है। फिर भी उसकी मुराद अभी पूरी नहीं हुई है।

मोतिया को पता चला है, पटना में एक सैयद आये हैं। बड़ा नाम-धाम है उनका। औरतों में ही उनका असर ज्यादा है। अनगिनती भक्त हैं उनके। कोई जो कुछ चाहता है, कल्पतरु की तरह सैयद साहब उसकी मनोवाछा पूरी करते हैं। मोतिया ने सैयद के पास जाने की ज़िद की। चार्नक से भी चलने को कहा।

इन साधु-सैयदों में चार्नक को विश्वास नहीं। मगर प्रेयसी की ज़िद तो रखनी होगी। चार्नक ने नूर मुहम्मद से सैयद के बारे में पूछा।

बूढ़े नूर ने दाढ़ी खुजाते हुए कहा, 'आदमी वह ढोंगी है, मक्कार है। औरतों से ही कारोबार चलता है उसका।'

सुनकर मोतिया झुँझला उठी। यह शिकायत सभी साधु-सैयदों के बारे में सुनी जाती है। लाचार, न चाहते हुए भी चार्नक मोतिया को लेकर सैयद की सेवा में हाज़िर हुआ। आधी रात को।

जॉब चार्नक की पालकी शहर के केंद्र में एक बगीचे में पहुँची। यह खूबसूरत बगीचा किसी अमीर भक्त ने सैयद की खिदमत के लिए रख-छोड़ दिया है। त्रिया-राज्य हो मानो। कितनी जात की स्त्रियाँ बगीचे में घूम-फिर रही थीं। अजीब-अजीब थी उनकी वेश-भूषा। सैयद साहब की अनुरागिनियों की गिनती नहीं की जा सकती।

बड़ी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद एक खोजा ने मोतिया को बुलाया। सैयद साहब को सलाम देना है। एक कुंज में सैयद का आसन। चार्नक ने मोतिया का अनुसरण करना चाहा। खोजा ने रोक दिया, 'नियम नहीं है। बीवी अकेली ही जायेंगी।' मोतिया कुंज में पहुँची। चार्नक दरवाज़े के पास इंतज़ार करने लगा।

ज़रा देर बाद मोतिया का तीखा स्वर सुनायी पड़ा। वह आँधी की गति से निकल आयी। उत्तेजित स्वर में बोली, 'साहब, इस अभागे सैयद

की बेहयाई देखी ? मैं औरत हूँ और कहता क्या है कि कमीज़ उतारो, घाघरा उतारो। मैं क्या बाज़ार की वेश्या हूँ। इस मक्कार को दुरुस्त करो, साहब।'

जॉब चार्नक लपककर गया। एक कुंज में बिस्तर पर बैठा था सैयद—साफ़ पोशाक, खिलता रंग, आँखों में लालसा।

चार्नक ने तीखे स्वर में कहा, 'तुमने मेरी बीवी से गन्दी, बुरी बातें कही हैं!'

'झूठ!' सैयद ने कहा, 'वह देखो, रस्सी से लटक रही है कमीज़ और घाघरा। मैंने तो उसे वही उतारने को कहा। उसके मन में पाप है, इसीलिए उसने समझा, मैंने उसे उसकी पोशाक...।'

'चकमा है,' मोतिया पीछे से झनककर बोली, 'चकमा देकर बचना चाहता है, शैतान। उसकी आँखें देखकर मैं समझ गयी कि यह कम्बख्त मुझसे क्या चाहता है।'

चार्नक के तन-बदन में आग लग गयी। कमीज़ और घाघरा की धंधेबाज़ी से औरतों का सर्वनाश करने का मनसूबा! मारे गुस्से के चार्नक उस मक्कार सैयद पर टूट पड़ा। मुक्का, घूसा, लात! छिटककर सैयद धरती पर आ गिरा। उसके खोजा पहरेदार दौड़े आये। खून-दंगा होगा, इस डर से मोतिया अँधेरे में चार्नक को लेकर पालकी में भाग आयी।

गज़ब! सैयद के अनुचरों ने कोई शोरगुल नहीं मचाया। मामला इस आसानी से निपट जायेगा, चार्नक सोच भी नहीं सकता था।

लेकिन मामला निपटा नहीं। दूसरे दिन और जटिल हो गया। सैयद की शिकायत पर बादशाही सैनिकों ने आकर चार्नक को गिरफ़्तार किया। मार-पीट, दंगे के कारण। विधर्मी फिरंगी की इतनी हिम्मत! बादशाह औरंगज़ेब की अमलदारी में मुसलमानों के मान्य सैयद साहब पर हमला! सैनिकों ने चार्नक को हथकड़ी लगायी और मामूली कैदी की तरह आम रास्ते से उसे ले गये। सारे रास्ते पर भीड़ लग गयी। फिरंगियों के एक अधिकारी की गत देखकर राहगीर खूब हँसे। चार्नक बंदी बना।

वकील अलीमुद्दीन चार्नक से मिलने आया। उसने खबर दी, पटना में तो उथल-पुथल है। अंगरेज़ों का सिर झुक गया। फ़्रांसीसी लोग मौज

मना रहे हैं। मदाम ला साल ने तो नमक-मिर्च लगाकर सारी बातें कंपनी के कर्त्ता-धर्ताओं को सीधे लंदन लिख भेजी हैं। यद्यपि मदाम ने एक फ्रांसीसी से शादी की है, फिर भी वह अँगरेज़ है। चार्नक के इस दुश्चरित्र और उद्दंडता ने नेटिवों के सामने अँगरेज़ों के सुनाम को धूल में मिला दिया है। चार्नक गुस्से से गुर्राता रहा। मौका मिलने पर निंदा करने वाली उस बदचलन औरत को सबक सिखाएगा। कंपनी के मालिक जो चाहें, करें। वहाँ खबर पहुँचने में अभी काफी देर है। उसे जो कुछ करना है, उनके पहले ही करना होगा। फिलहाल तो सम्मान के साथ छूटना ही पहला सवाल है।

अलीमुद्दीन ने कहा, 'आपके हमले की बात से तो इनकार नहीं किया जा सकता।'

चार्नक ने जवाब दिया, 'नही। मगर वैसा करने का काफ़ी सबब था। उसने मोतिया बीवी का अपमान किया था।'

'सोच देखिए, लेकिन बीवी की बात का काज़ी यक़ीन करेंगे? एक तो यह जेंटू है, और यह पहले क्या थी, आप तो जानते हैं। ऐसी औरत की बात कितनी विश्वसनीय है, यह सोचने का विषय है।'

'मोतिया मुझसे झूठ नहीं बोलती।'

'काज़ी साहब इसे नहीं सुनेंगे। तर्क के नाते अगर मान भी लिया जाये कि सैयद साहब ने बीवी से बुरा प्रस्ताव किया था, तो भी कुछ आता-जाता नहीं, क्योंकि बीवी आपकी ब्याहता नहीं है।'

सचमुच ही चार्नक युक्ति के फंदे में पड़ा है। और काज़ी के पास युक्ति का दाम क्या? वह तो एक ही युक्ति समझता है, और वह है रुपया।

चार्नक ने वकील से कहा, 'जितना भी रुपया लगे, दो, लेकिन मुझे आज ही छुटकारा चाहिए।'

पूरे डेढ़ हज़ार सिक्के में छुटकारा मिला। उतने रुपये चार्नक के पल्ले थे नहीं। हुंडी लिखकर साझेदार गुलाम बहन से उधार लेने पड़े। चार्नक को क़ैद से मुक्ति मिली। लेकिन अपमान का घाव बना रह गया। कंपनी के मालिक जाने क्या करेंगे? फिर भी दिल को एक तसल्ली थी कि

मोतिया का प्रेम एकनिष्ठ है। संतान के लोभ में भी मोतिया सैयद के बुरे प्रस्ताव पर राजी नहीं हुई।

तीन अच्छी खबरों से पटना के बादशाही कर्मचारी मगन हैं। साहब-किरान-ए-सानी यानी भूतपूर्व बादशाह शाहजहाँ लंबी बीमारी के बाद गुज़र गये। लगभग आठ साल से वह आगरा के क़िले में क़ैद थे, अब दुनिया के बंधन से मुक्त हो गये। सदा के लिए। पिता के वियोग से बादशाह औरंगज़ेब शोकाच्छन्न हैं। लेकिन यह शोक आंतरिक कितना है, इस पर बहुतों को शुबहा है।

इधर मुगलों ने फिर संग्रामनगर और चटगाँव दखल कर लिया है। चटगाँव नामी बंदरगाह है। संग्रामनगर का नाम हुआ है आलमगीर-नगर और चटगाँव का इस्लामनगर। पूर्वी भारत में मुगलों को वाणिज्य व्यापार में बड़ी सहूलियत होगी।

उससे भी ज़ोरदार खबर यह कि काफ़िर शिवाजी ने राजा जयसिंह और दिलेर ख़ाँ से शिकस्त खायी है, पुत्र सहित दिल्ली में बादशाह से माफी माँगने के लिए हाज़िर हुआ है। वहाँ अपनी उद्धतता से फिर अपने ही घर में बंदी हुआ है। कोतवाल को बादशाह ने क़ाफ़िर के घर को चारों ओर से घेर लेने का हुक्म दिया है। पहाड़ी चूहा अब चूहेदानी में आ फँसा है।

'अब तो बादशाह खुशी से हमें फरमान दे देंगे,' चार्नक ने कहा।

फ़ौजदार ने सिर हिलाकर निराश कर दिया, 'दक्खिन में बीजापुर से लड़ाई है। बादशाह को भला अँगरेज़ों के मामूली फ़रमान के लिए माथा-पच्ची करने का समय है? और आप लोगों को असुविधा क्या है? जब भी कोई कठिनाई महसूस हो, मेरे पास आइये। नवाब से सिफ़ारिश करके मैं हर मुश्किल आसान कर दूँगा।'

चार्नक खूब जानता है, मुश्किल आसान करने का मूल्य क्या है! इन घाघों की भूख क़ीमती-दामी भेंटों से भी नहीं मिटती। जितना दो, उतना ही इन्हें और चाहिए।

गुलाम वख्श के चाचा दिल्ली के बड़े अमीर हैं, ज़रा कोशिश करके देखना चाहिए कि उनकी मदद से कुछ हो सकता है या नहीं?

कुछ दिनों के बाद सेठ शिवचरण उल्लास से उमगता हुआ दौड़ा आया।

'बात क्या है, सेठ ? कोई नया मौक़ा ?'

'बहुत बड़ा मौका। जानते हैं साहब, मर्द के बच्चे शिवाजी ने बादशाह की आँखों में खूब धूल झोंकी है।'

'सो कैसे ?'

'दिल्ली से निकल भागे। कोतवाल ने सुना, शिवाजी बहुत बीमार हैं। बड़ी-बड़ी टोकरियों में मिठाई आदि पूजा के लिए जाने लगीं। शुरू-शुरू में कोतवाल के आदमी टोकरियों को खोलकर देखा करते थे। बाद में देखने की कोई ज़रूरत नहीं समझी। और उन्हीं टोकरियों में बेटे के साथ बैठकर शिवाजी नौ-दो-ग्यारह।'

'आदमी तो बड़ा चालाक है।'

'चालाक जैसा चालाक ? आप देख लीजिएगा साहब, शिवाजी बादशाह की नाक में दम कर देगा। बादशाह का दिमाग़ बड़ा चढ़ गया है, ज़रा सबक मिलना चाहिए।'

उसके बाद सेठजी ने चुप-चुप कहा, 'मैंने तो साहब, यह भी सुना कि वह पटना होकर ही दक्षिण की ओर रवाना हुए हैं। काश, पहले जानता, तो उस जवांमर्द के चरणों की धूल ले लेता।'

'बादशाह के तो ढेरों गुप्तचर हैं, सुना है। उसे पकड़ नहीं सके ?'

'पकड़ते कैसे ? सुना, उन्होंने दाढ़ी-मूंछ सफ़ाचट कर ली है। सारे बदन में राख मल ली है। हिंदुस्तान के हज़ारों साधु-संतों में से एक हो गये हैं। मुग़लों के लोग पटना में साधु-संतों को देखते हैं कि खींच-तान करते हैं। कहते हैं, हरामज़ादे, तू वही पहाड़ी चूहा है।'

'तो इस स्थिति में बाज़ार का क्या हाल समझ रहे हो ?'

'दक्षिण में ज़रूर लड़ाई छिड़ेगी। शोरे का भाव बढ़ जायेगा। बादशाह को भी तो गोली-बारूद चाहिए, साहब, इसी समय सौदा कर लीजिए। नहीं तो अगले जहाज़ में माल भेजना मुश्किल हो जायेगा।'

'ठीक कह रहे हो, सेठ। तो तुमने किस माल की सोची है ?'

'गेहूं। ज़ोरों की लड़ाई होगी, तो रोटी की ज़्यादा ज़रूरत पड़ेगी।'

फिर तो गेहूँ का दाम दनादन बढ़ जायेगा। अगर काफ़ी माल छिपाकर रख सका तो मोटा मुनाफ़ा होगा। आप नये कारोबार में उतरिए न, साहब ?'

'अच्छा, सोच देखता हूँ।'

सेठ शिवचरण चला गया। गज़ब की है उसकी व्यवसाय-बुद्धि। चार्नक अक्सर उससे राय-मशविरा करता है। देश की हालत की उसे अच्छी ही जानकारी है, चार्नक सोचने लगा। रुपये की विशेष आवश्यकता है। रुपये के बिना हिंदुस्तान में कुछ नहीं किया जा सकता। गुलाम बख्श के साथ जो कश्मीरी शाल का कारोबार है, उसे उठा देना ही अच्छा है। शिवचरण की राय में अनाज के कारोबार मे गहरा मुनाफ़ा होगा।

मोशिए ला साल के डुएल की चुनौती की बात चार्नक भूल चला था। शराब के नशे में वह फ़ासीसी ललकारता है और नशा उतरने के साथ ही शायद भूल जाता है। लेकिन लगभग दो साल के बाद डुएल का समय और स्थान निश्चित करके उसने जो ख़त लिखा है, उसकी अपेक्षा नही थी। पागल है क्या वह ? फिर भी गनीमत कि लड़ाई पिस्तौल की होगी।

डुएल की सुनकर मोतिया तो रोते-रोते बेहाल। ख़ूनी लड़ाई। यह क्या है ? मोतिया ने बाजार में कुश्ती देखी है, तगड़े-तगड़े पहलवानों ने उठा-पटक की, औंधे गिरकर धरती पकड़ी, धूल उड़ाई, चित हुए। लेकिन ख़ून कभी किसी ने नही किया।

और फिर कारण भी क्या ? मनोरंजन, मज़ा, ख़ुशी नही। मोतिया का मान बचाने के लिए ही इसका सूत्रपात हुआ। 'मेरे सर की क़सम, औरत का मान क्या ! खबरदार, ऐसी लड़ाई मे मत जाना, साहब। कहाँ के एक फिरंगी ने कह दिया और उसी बात पर लड़ना होगा। मारूँ तो हाथी, लूटूँ तो भंडार। लड़ना हो तो लड़ो मुगल बादशाह से, जैसे लड़ रहा है मर्द का बच्चा शिवाजी।'

चार्नक ने मजाक मे कहा, 'मोतिया, मैं अगर मर जाऊँ, तो तुम सती होगी ? वही, तुम्हारी जेंटू स्त्रियाँ जैसे पति की चिता में जल मरती हैं ?'

'बुद्धू कही के ! मैं क्या तुम्हारी ब्याहता हूँ कि चिता पर चढ़ूँगी ? और फिर तुम म्लेच्छ हो, तुम्हारी चिता कौन जलायेगा ? तुम तो क़ब्र

में दफ़नाए जाम्रोगे। मै मगर जीते-जी कब्र मे नहीं जा सकूँगी, साहब !'

'यह तुम्हारा प्रेम है ?' चार्नक ने कपट अनुयोग किया।

मोतिया बोली, 'देखो साहब, मेरे प्रेम का तिरस्कार मत करो। मेरे प्रेम को तुम विदेशी क्या समझोगे ? तुम्हारे लिए मै धतूरा खा सकती हूँ। गगा में डूब सकती हूँ। लेकिन कब्र में ? मैं हिंदू हूँ न। लेकिन साहब, क़सम खाम्रो कि मेरी ख़ातिर तुम ख़ूनी लडाई में जान देने नही जाम्रोगे।'

'मगर यह कैसे हो सकता है ?' चार्नक ने गंभीर होकर कहा, 'डुएल की चुनौती को कबूल नही करने से कापुरुष कहलाकर मै अपने समाज में शकल नही दिखा पाऊँगा।'

'वह फिरंगी बीवी ही सारे अनर्थों की जड है,' मोतिया झुँझलाकर बोली, 'मैं जाती हूँ, पंचपीर को मुरगे के जोडे की बलि दे आती हूँ।'

मोतिया हड़बडाकर चली गयी। साथ गया नूर मुहम्मद।

चार्नक ने पिस्तौल को अच्छी तरह से देखा। उसकी लंबी नली चक-चक कर रही थी। मुट्ठे पर ड्रैगन आँका हुआ था। लंदन के बाजार मे बडे शौक से एक जलदस्यु से उसने खरीदा था। इसकी गोली ने कई आदमियों के ख़ून का स्वाद लिया है। चार्नक ध्यान से उसे साफ करने लगा।

बारूद को भी धूप मे सुखाकर ताजा कर लेना होगा।

थोड़ी देर मे मोतिया और नूर मुहम्मद लौट आये।

मोतिया का केश-वेश कुछ बिखरा-सा। कमीज कुछ फट गयी थी। घाघरा धूल-धूसर। चेहरे पर बहुत जगह खरोंच। जैसे किसी ने नोच लिया हो। कही पत्थरों पर गिर पड़ी थी क्या ?

मोतिया की आँखें सुर्ख़ किन्तु गहरे आनद से उज्ज्वल थी। नूर मुहम्मद भी दाढी खुजलाते हुए हँस रहा था। मोतिया ने कहा, 'साहब पिस्तौल को बद कर दो। अब द्वंद्व युद्ध की जरूरत नहीं रही।'

'बात क्या है, मोतिया ?' चार्नक ने अचरज से पूछा।

अर्दली ने लिफाफे में एक चिट्ठी चार्नक को दी। खोलकर चार्नक ने उसे पढा। मोशिए ला साल ने डुएल की चुनौती वापस ले ली। छोटी-सी चिट्ठी। चिट्ठी में विचार बदलने की वजह नही थी।

मोतिया के होठों पर विजयिनी की हँसी।

नूर मुहम्मद ने कहा, 'पूछिए मत साहब, बीवी ने जो लड़ाई की है। फिरंगी तो हार मान गया।'

'लड़ाई ? किसके साथ ?'

'और किसके साथ ? सारे अनर्थों की जड़ जो फिरंगी औरत है, उसी के साथ। पंचपीर साहब को जोड़ा-मुरगे की बलि चढ़ाई। पीर साहब ने मुझसे मानो कहा—री बिटिया, तू अगर साहब को बचाना चाहती है, तो खुद ही जाकर लड़। मैं औरत ठहरी, फिरंगी से कैसे लड़ूँ ? पीर ने जैसे कहा, तू बीवी से लड़। ओह, मैं भी कैसी बेवकूफ हूँ। यह बात पहले दिमाग में नहीं आयी। औरत की कुश्ती की सुनकर नूर मुहम्मद उछल पड़ा। खोज-ढूँढ़कर मुझे उस फिरंगी के घर ले गया। मैं सीधे अंदर चली गयी। देखा, वह रंग-वंग लगाकर बन-सँवर रही है। न बात, न चीत। मैं उस पर टूट पड़ी। उसके भूरे बालों का झोंटा पकड़कर झटके से उसे धरती पर पटका। वह खूब नोचने और दाँत से काटने लगी। मैं भी हीरू कहार की बेटी ! मेरा दादा डकैती करता था; मेरा बाप पालकी ढोता था। वह सुख में पला शरीर मुझसे कैसे पार पाता ! मैं उसकी छाती पर सवार हो गयी और दनादन उसे मारना शुरू किया। वह दई-मारी जोर-जोर से चीखने लगी।'

बाद का किस्सा नूर मुहम्मद सुना गया—'वह एक नजारा ही था, साहब। फिरंगी बीवी जितना चीखे, मोतिया बीवी उतना ही धुनने लगी उसे। आवाज सुनकर फिरंगी साहब आया। उसने मुझसे पूछा, माजरा क्या है। मैंने कहा, चार्नक साहब की बीवी है। फिरंगी साहब गुस्सा नहीं हुआ बल्कि मेरे साथ खड़ा-खड़ा तमाशा देखने लगा। उसकी बीवी बार-बार साहब से आरजू करने लगी। साहब कहने लगा—औरत को मारने से मेरी जात जायेगी। फ़ासीसी लोग निन्दा करेंगे, तुम्हीं बल्कि उसे पटको।'

मोतिया फुफकार उठी, 'हुं', वह फिरंगी औरत मुझे पटकेगी ? मैं हीरू कहार की बेटी हूँ। मैंने कहा—मैं तुझे मारकर गाड़ दूँगी। तू फ़ौरन अपने साहब से कह दे कि मेरे साहब से लड़ने की चुनौती वापस ले। मेरी मार के मारे उस दई-मारी का हाल बदतर था।'

नूर मुहम्मद ने कहा, 'चिट्ठी लिखकर मेरे हाथों में देते हुए साहब ने कानों मे कहा — चार्नक से कहना, मैं भी लड़ना नही चाहता था। यह औरत ही रात-दिन वही राग अलापे बैठी थी। सो चार्नक की बीवी ने जो दवा पिलायी है, मदाम अब भूलकर भी डुएल का नाम नही लेगी।'

सभी ठठाकर हँस पड़े। चार्नक ने पिस्तौल को खोल में डाल दिया। उसके बाद हँसकर मोतिया से बोला, 'बड़ी बहादुरी दिखायी, तमाम बदन तो छिल गया है। चलो, दवाई लगा दूँ।'

प्रेम से गले लगाकर चार्नक उसे विश्राम-कक्ष मे ले गया।

लदन से ऑनरेबुल कंपनी के कोर्ट ऑफ़ डाइरेक्टर्स की चिट्ठी आयी है। उस चिट्ठी मे कारोबार के ही बारे मे लिखा है। मदाम ला साल ने जो शिकायत लिख भेजी थी, उसका कही जिक्र भी नही। बल्कि चिट्ठी में इसकी तारीफ की गयी है कि चार्नक के अथक परिश्रम से पटना-कोठी का लेन-देन बढ़ा है। गिरफ्तारी की जो एक बदनामी हुई, वह बात धीरे-धीरे दबी जा रही है। बल्कि मोतिया की बहादुरी की कहानी बढ़ा-चढाकर परिचितो मे कही-सुनी जा रही है। अधीन अँगरेज कर्मचारी इस पर आपस में हँसी-मजाक करते है। आड़-ओट में वह भी चार्नक के कानों तक आयी है। कम-से-कम उसके सहयोगी प्रकट रूप से उसके प्रति कोई असम्मान नही दिखाते।

दिन बीते, महीने बीते, बरस भी बीता। कोठी का बँधा-बँधाया काम। अपना निजी कारोबार, खाना-पीना, शिकार, नौका-विहार। खास कोई परिवर्तन नही आया। पटना मे यूरोपीय समाज बहुत थोड़ा है। किसी व्यवसाय के सिलसिले में ही गोरो का आना-जाना होता है। किसी नये के आने मे कौतूहल बढ़ता है। यदि चला गया कि वह भी खत्म। इस पर विभिन्न जातियों में व्यवसाय की होड़ लगी रहती है। फ्रासीसियो से ही ज्यादा। डचो से अंगरेजों की फिर भी थोड़ी-बहुत प्रीति है। बीच-बीच में डच लोग चार्नक को न्योता देते है। दावतों में कुछ मौज-मजा होता रहता है।

इस बँधे-बँधाये-से क्रम मे कुछ तरंगें उठाता है मोतिया का साथ।

उसमें एक आतंरिक प्राण-चांचल्य है। उसके काले शरीर में जवानी का उल्लास है। उसके तीखे कटाक्ष और किलोल हँसी में मादकता है। नाच, गीत, बातों में वह समय पूरा भरे रखती है।

चार्नक उससे व्यावसायिक बुद्धि की प्रत्याशा नहीं करता। व्यवसाय की कोई चर्चा करते ही मोतिया को जम्हाई आ जाती है। किसी स्तरीय आलोचना से उसे कोई रुचि नहीं। अक्षर-ज्ञान नहीं है, किताबी शिक्षा भी नहीं। लेकिन साधारण बुद्धि उसकी प्रखर है। गल्प, गाथा, प्रवाद-प्रवचन, पहेलियाँ उसे कण्ठस्थ हैं। बातचीत के सिलसिले में चार्नक ने हिंदुस्तान के बारे में कितनी ही अजानी बातें जानी हैं—राम-सीता, राधा-कृष्ण, भीम-अर्जुन संबंधी कितनी ही कहानियाँ, पर्व-त्योहार और जन्म, विवाह, मृत्यु-संबंधी सामाजिक रीति-काण्ड।

मोतिया ने अपने को अपने समाज से हटा रखा है। उसका समाज उसी दिन जाता रहा, जिस दिन उसे गुंडे जबरदस्ती उठा लाये। व्यवसायी के हाथ नारी-देह को बेच दिया! काजी के निकट इन्साफ़ की अरजी नामंजूर हुई। देहात की किसी क्वाँरी हिंदू युवती का कौमार्य बरकरार रहे या जाये, उससे क़ाज़ी को कुछ मतलब नहीं। पटना शहर मे वह ठीक ही रहेगी—नाचेगी, गाएगी, मौज मनाएगी। चाहने वालों को आनंद देगी।

मुसीबत में डाला औरंगज़ेब ने। चकला उसी ने तो उठवा दिया; बादशाह का यह काम वैसे अच्छा था। लेकिन बादशाह के कर्मचारियों की कृपा से यह पाप-व्यवसाय क्या सचमुच ही उठ सका? बल्कि कोने-कोने मे फैल गया।

माँ बनने की साध मोतिया की अभी तक पूरी नहीं हुई। पंचपीर को बलि, साधु-फकीरों का आशीर्वाद, जंतर-तावीज—सब बेकार! समय के बीतने के साथ-साथ मोतिया निराश हो गयी। किसी ने उसे बताया, वाराणसी मे बाबा विश्वनाथ को पूजा-प्रसाद चढाने से मनोकामना पूरी होती है। गंगा की राह पटना से काशी तक का कई दिनों का रास्ता है। मोतिया को वाराणसी जाने की प्रबल इच्छा हुई।

शिवचरण एक बुरी खबर ले आया है। बादशाह औरंगज़ेब ने विश्वनाथ के मंदिर को तुड़वा दिया है। मथुरा में केशवराय के मंदिर को विल-

कुल चूर करवा दिया है। पवित्र मूर्तियों को ले जाकर आगरा में नवाब-बेगम साहिबा की मसजिद की सीढ़ियो पर चिनवा दिया, ताकि धार्मिक मुसलमान काफ़िरो की देवमूर्तियों को पाँव से रौंदकर अंदर आयें।

'इतना अधरम नही पचेगा,' सेठ शिवचरण ने कहा, 'इसका नतीजा एक दिन बादशाह को भोगना ही पड़ेगा। भवानी का वरपुत्र शिवाजी एक-न-एक दिन इसका बदला जरूर चुकाएगा।'

शिवचरण को बडी फ़िक्र हो गयी। उसने जिस शिवमंदिर की प्रतिष्ठा की है, वह भी बचेगा या नही ?

'घूस दो, नजराना दो,' चार्नक ने प्रस्ताव किया, 'सेठ, जैसे तुमने पैगोडा बनाया था, वैसे ही उसे बचाओ।'

सेठ को तसल्ली नहीं हुई। इस बार हाल बुरा है। दारा शिकोह अगर तख्त पर बैठते, तो हिंदुओं को ज्यादा सुविधा रहती। दारा बिला शक एक इंसान था। मुसलमान होते हुए भी उसमें कट्टरता नही थी। बहुत कुछ अकबर बादशाह जैसा। दारा शिकोह संस्कृत जानता था। गुसाइयों से संस्कृत में चर्चा करता था, हिंदुओं के धर्मग्रंथ पढ़ता था, उनका अनुवाद करता था। अपने उसी बड़े भाई का औरंगजेब ने धर्म के नाम पर खून कराया। उसकी लाश को हाथी की पीठ पर चढाकर दिल्ली की सड़कों पर घुमाया गया। अपने माँ-जाये भाई के लिए जिसका ऐसा नृशंस आचरण है, हिंदू लोग उससे क्या उम्मीद कर सकते हैं ? धरम-करम तो खैर गया, अब हिंदुओं का कारोबार भी टिका रहे तो ग़नीमत। नया नियम बनाकर बादशाह ने मेले तक तो बंद करा दिये हैं। उन बड़े-बड़े मेलों में लाखों-लाख का लेन-देन चलता था। जैसे तुगलकों का जमाना फिर लौट आया हो।

जॉब चार्नक चिंतित हुआ। एक तो इतनी कोशिशों के बावजूद बादशाही फरमान नहीं मिल रहा है; घूस के बिना सरकारी कर्मचारी बात ही नही करते। फिर सीधे अगर व्यवसाय पर हमला हुआ तो सब चौपट।

फिर भी जॉब हताश नहीं हुआ। हिंदुस्तान सोने का देश है और हिंदुस्तान के माथे की मणि है बंगाल। इसकी धूल-मिट्टी में दौलत बिखरी पडी है। चाहिए सिर्फ़ साहस, धीरज, परिश्रम और बुद्धि। मुगल बादशाह कितना ही कठोर क्यों न हो, उसका हुक्म तमाम मुल्क में नहीं चलता।

उसके शासन ही में जाने कहाँ दरार है। मयूर सिंहासन पर कौन बैठे, इसके लिए तो झगडा-फ़साद चलता ही रहता है। भाई भाई पर एतबार नही करता, बाप बेटे का विश्वास नही करता। विशाल देश, नद-नदी, प्रातर। फौज का भेजा जाना ही दूभर। विद्रोह तो रोज़ की बात है। कर्मचारी अक्सर बादशाह की हुक्म-उदूली करते हैं। अमीर, उमरा, ज़मीदार—सभी अपने-अपने इलाक़े मे मानो नन्हें नवाब हों। किसी तरह एक किला बनवा लो, कुछ फौज जुटा लो, बस, बगावत का झंडा उठाकर कुछ दिन खूब मौज कर लो। जब तक बादशाही फौज आये, तब तक अपनी बादशाहत कर लो। सूबा बगाल मे अगर अँगरेजों के हाथ एक किला भी रहा होता, तो वह उन बादशाही कर्मचारियों को सिखा देता; तोप-बंदूक चलाकर, छाती पर सवार हो बंगाल-बिहार मे व्यवसाय करता।

दो-एक साल में कंपनी के शोरे के कारोबार पर बड़ा संकट आया। पटना मे एक नया नवाब आया है। नाम है इब्राहीम खाँ। किताबी आदमी, काम-काज से वास्ता नही। उसके मातहत कर्मचारियों की मौज हो गयी। उन लोगों ने दोनों हाथों लूटना शुरू किया। घूस दिये बिना एक कदम भी चलना मुश्किल। आदमी दिल्ली भेजकर पैरवी करने से भी कोई लाभ नही। विधर्मी अँगरेज़ों के शोरे का कारोबार चौपट हो ही जाये, तो मुगल सरकार का क्या!

हिंदू-मुसलमानो पर वैषम्यमूलक ज़कात और व्यवसाय पर कर लगा। शुरू में मुसलमानों को ज़कात से बरी रखा गया। सिर्फ हिंदू ही कर देंगे। चालाक हिंदू मुसलमान शिखंडी आगे करके व्यवसाय चलाने लगे। सरकार को कर की मानो फाँकी देने लगे। फिर मुसलमानों पर भी नये सिरे से कर लगाया गया। हिंदुओं पर पाँच फ़ी सदी, मुसलमानों पर ढाई फ़ी सदी। हिंदू व्यवसायियों को इससे बड़ी असुविधा हुई। जेंटुओं का अँगरेज़ों के साथ काफी कारोबार था, सो अँगरेज़ों को भी कुछ नुक्सान हुआ।

चार्नक की इतने दिनों की कोशिश शायद बेकार हो जाये। पटना में अँगरेज़ो का कारोबार बैठने लगा। बड़े ही धीरज से चार्नक नाव की पतवार थामे बैठा रहा। उसके काम से खुश होकर कंपनी ने उसका सालाना भत्ता बीस पौंड और बढ़ा दिया।

मोतिया की उम्र हो रही थी। पहले जैसी उमंग भी नहीं रह गयी थी। उम्र के साथ-साथ वह बहुत कुछ गंभीर हो गयी; शरीर पर चर्बी चढ़ आयी। मोतिया मानो रोजमर्रा की जानी-पहचानी सामग्री हो, पोशाक-श्रोशाक की तरह ही प्रयोजनीय !

'कोई बाल-बच्चा नहीं होने से घर-गिरस्ती नहीं सोहती,' मोतिया ने तवाकू पीते-पीते कहा।

चार्नक ने कहा, 'मैं विदेशी खानाबदोश हूँ। बाल-बच्चों का क्या होगा ? एक बोझा ही न !'

'मुझे बड़ी साध थी,' मोतिया ने कहा, 'मेरा-तुम्हारा एक ही बच्चा होता कम-से-कम। मेरी वह साध तक पूरी नहीं हुई।'

उसके बाद चार्नक की छाती में मुँह डालकर बोली, 'साहब, मेरी सुनो, तुम एक ब्याह कर लो। तुम्हारी बीवी के जो बच्चा होगा, मैं उसे पालूंगी। वह मेरा लाल होगा, मेरी आँखों का तारा।'

'पगली !' चार्नक ने तसल्ली दी, 'मुझसे कौन ब्याह करेगी ? कोई भी मेरी, सारा, केथेरिना साठ पौंड के कंपनी के नौकर से ब्याह करने के लिए इस तपती गरमी वाले देश में नहीं आयेगी। अगर कहीं शादी कर भी ले सनक में, तो दो ही दिन में जहाज के कप्तान के साथ भाग जायेगी—यहाँ के अकेलेपन से बचने के लिए। हम दोनों तो मजे में है, मोतिया बीवी।'

'वैसी फिरंगी बीवी की क्या जरूरत पड़ी है, साहब !' मोतिया ने कहा, 'हिंदुस्तान में क्या सुदर स्त्रियों की कमी है ?'

चार्नक ने दुलारते हुए कहा, 'मेरी मोतिया क्या कम सुदरी है ?'

'बुद्धू कहीं के !' चार्नक के गाल पर हलकी-सी चपत लगाकर वह बोली, 'मोतिया सुदरी कहाँ है ? वह तो काली-कलूटी भुतनी है। सच साहब, मैं तो सोचती हूँ, मुझमें क्या देखकर लट्टू हो गये थे तुम ! न रूप है, न गुण। एक बस जवानी थी, उम्र के साथ वह भी ढलती जा रही है।'

'और मेरी उम्र मानो बढ़ ही नहीं रही है !' चार्नक ने कहा, 'वज़न मेरा कितना बढ़ गया है, पता है ?'

'फिर भी तो भीमसेन नहीं हो सके,' मोतिया ने हँसकर कहा, 'तुम

मेरे अर्जुन हो।'

'तुम्हारी द्रौपदी के कितने पति थे, मोतिया ?' चार्नक ने पौराणिक ज्ञान की जुगाली की, 'लेकिन तुम्हारा मैं अकेला ही हूँ।'

मोतिया बोली, 'तुम्हारे अगर भाई होते साहब, तो मैं उन लोगों को भी प्यार करती। तुम्हें ईर्ष्या नही होती ?'

चार्नक ने पूछा, 'और मेरा ब्याह कराने से तुम्हे ईर्ष्या नही होगी ?'

'होगी,' मोतिया ने कहा, 'फिर भी मैं तुम्हे सौत के हाथ सौंप दूंगी, इस आशा से कि वह तुम्हें बाल-बच्चे देगी।'

चार्नक अपने बाहुपाश में मोतिया की जगह दूसरी किसी स्त्री की कल्पना करने लगा। मोतिया के ठीक विपरीत। सुन्दर रंग, छरहरा बदन, कोमल बड़ी-बड़ी आँखें। बहुत दिन पहले गंगा के घाट पर सूर्य को प्रणाम करते देखी हुई उस तन्वी गोरी की याद आ गयी। उसकी स्निग्ध आँखें मन में तैर गयी।

चार्नक आवेग के साथ बोल उठा, 'न-न, मेरी मोतिया बीवी ही ठीक है।'

अंगरेज़ों की नावों के बेड़े में एप्रेंटिस होकर जोसेफ टाउनसेंड नाम का एक नया युवक आया है। गंगा में पाइलट सर्विस खोली गयी है। नदी की जाँच कर रहे है वे लोग। कहाँ भवँर है, कहाँ स्रोत है, कहाँ टापू है बालू का—सबका नक्शा बनाया जा रहा है। बड़े-बड़े जहाज़ बालू मे अटक जाने के डर से हुगली नही आते, गोकि डच लोग दस टन तक के जहाज़ को नदी मे अन्दर ले आये हैं। 'डिलिजेंस' नाम की एक बड़ी नाव बनायी गयी; उसके नाविक गगा नदी का नक्शा बनाने लगे। एप्रेंटिस हेरन की कोशिशों से गगा नदी का रहस्य बहुत कुछ खुल गया।

जोसेफ टाउनसेंड पटना के नाव-बेड़े से जुड़ा है। खासा उत्साही छोकरा। हँसमुख। ऐडवेंचर के लोभ से दौड़ा फिरता है। वह छोकरा चार्नक के प्रति अनुरक्त है। चार्नक भी उसे खूब पसंद करता है।

'चलिए सर, आपको बजरे से घुमा लाएँ,' जोसेफ ने अनुरोध किया।

मोतिया को लेकर चार्नक बजरे पर सवार हुआ।

वसंत की संध्या। नदी में पानी कम। झिर-झिर बहती धारा। बालू

का टापू चमक रहा है। बड़ा ही मनोरम परिवेश !

बजरे पर बैठकर मोतिया ने कहा, 'साहब, याद आता है आपको, ऐसी ही एक साँझ को मैंने नितांत अपने-सा आपको पाया था ?'

बखूबी याद है चार्नक को। हालाँकि बहुत वर्ष बीते, फिर भी मिलन की वह साँझ चार्नक के मन में वैसी ही रंगीन बनी हुई है।

मोतिया ने कहा, 'साहब, ज़माने से मैं नाची नहीं हूँ, गाया नहीं है। जी में आता है, आज तुम्हारे सामने नाचूँ-गाऊँ। उस टापू पर चलिए न !'

मल्लाहों ने एतराज़ किया, 'जगह अच्छी नहीं है। डाकू-लुटेरों का खतरा है। रात होने से पहले लौट चलना चाहिए।'

डाकू-लुटेरों की सुनकर जोसेफ उछल पड़ा। बंदूक उठाकर आसमान की तरफ़ ताककर बोला, 'कमबख्त आयें तो, बंदूक से खोपड़ी उड़ा दूँगा।'

मोतिया ने कहा, 'उजेला पास है। पूर्णिमा को कुछ ही दिन है। अभी-अभी चाँदनी में चारों दिशाएँ झकझक कर उठेंगी। डर किस बात का ? आप चलिए साहब, टापू पर। ऐसा लक्ष्मण प्रहरी है, रावण तक मेरा कुछ भी नहीं कर सकेगा।'

मालिक के हुक्म से मल्लाहों ने नाव को टापू के किनारे लगाया। चंचल बालिका की तरह मोतिया सुनहली बालू पर कूद पड़ी। चार्नक उतरा। हाथ में बंदूक लिये जोसेफ़ पीछे हो लिया। मल्लाह नाव पर ही रह गये।

भीगे बालू के आगे ही सूखा नर्म बालू। मोतिया बालू पर बैठ गयी। खुशी के मारे लोट-पोट। उसकी हँसी से नीरव प्रकृति गूँज उठी। मोतिया ने मानो फिर से जवानी पा ली।

अपने अफसर के प्रेमालाप को न देखने की गर्ज़ से टाउनसेंड ज़रा दूर चला गया। शायद कल्पित डकैती की खोज में उसकी सतर्क दृष्टि तट के जंगल में घूम रही थी।

हाथ पकड़कर चार्नक ने मोतिया को उठाया। अपने हाथों उसके सिर से बालू झाड़ दिया। मोतिया खींचती हुई उसे उपकूल के जंगल के भीतर ले गयी। ज़रा साफ़-सी जगह देखकर दोनों बैठ गये।

साँझ हो गयी है। चिड़ियों की चहक बंद हो गयी। पूरब आकाश में चाँद। रुपहली चाँदनी तरु-गुल्मों में निखर के आने लगी। जंगली फूलों की

मीठी महक। झींगुरों की झनकार से रात झंकृत हो रही थी। उसके साथ ही सुनायी पड़ रहा है मोतिया का प्रेम-गुंजन। मोतिया ने गाना शुरू किया। इस प्राकृतिक परिवेश में उसकी सुरीली आवाज़ अनोखी लग रही है।

मोतिया गा रही थी। नाच रही थी। उसके नाच में उद्दाम यौवन की लहक नहीं थी, जो नये यौवन में होती है। उसकी जगह परिपक्व यौवन की गंभीरता थी।

एकाएक 'मारो-मारो' की आवाज़ से वन-वीथि कांप उठी। डकैतों के हमले का मल्लाहों की आशंका ने मूर्त रूप ले लिया। मोतिया स्तब्ध हो गयी। उसने दौड़कर चार्नक की छाती में पनाह ली। चार्नक तब तक पिस्तौल निकालकर खड़ा हो गया था। अचानक एक छाया ने विद्युत् वेग से आगे आकर लाठी का प्रहार किया। अचूक निशाने से चार्नक के हाथ की पिस्तौल छिटककर दूर जा गिरी। चार्नक निरस्त्र हो गया। जंगल में और भी परछाइयाँ घिर आयीं। पहले आततायी ने लाठी उठायी, वीर-विक्रम-सा वह गरज उठा, 'जय शंकर!'

'सुंदर, सुंदर!' हैरान मोतिया चीख-सी पड़ी।

हमलावर की उठी हुई लाठी ऊपर ही थमी रह गयी।

सुंदर, मेरे भाई, मेरे लाल! छिः, तू डकैत है।'

डाकू की लाठी हाथ से छूटकर गिर पड़ी। वह दौड़ा आया। 'दीदी, दीदी!' अपने बलिष्ठ बाहु-बंधन में उसने आवेग से मोतिया को बाँध लिया। डकैत पर चाँदनी पड़ रही है; उसके चेहरे पर, कपाल पर कोड़े के दाग साफ झलक रहे हैं।

'फ़ूल, डोंट शूट,' चार्नक चिल्ला उठा।

चाँदनी में टापू पर जोसेफ़ की मूर्ति दिखायी दी। उसने सुंदर को लक्ष्य करके बंदूक तान ली थी। कहीं निशाना चूके तो मोतिया का काम तमाम हो जायेगा।

चार्नक फिर गरजा, 'फ़ूल, डोंट शूट!'

हक्का-बक्का होकर जोसेफ टाउनसेंड ने धीरे-धीरे बंदूक झुका ली।

सुदर की कहानी निहायत मामूली है। अभावों की ताड़ना से उसे डकैती शुरू करनी पड़ी है। एक छोटे-से दल का नेता है वह। भोड़ू कहार का पोता है। डकैती उसके खून में है।

'छिः सुदर,' मोतिया ने कहा, 'बाबूजी से तूने सुना नहीं, दादाजी ने कलेजे के लहू से शपथ ली थी कि उनके खानदान में आगे कोई डकैती नहीं करेगा।'

आवेगरुद्ध गले से सुदर ने कहा, 'मुझसे पाप हुआ है, दीदी '

उसके लबे बालो मे हाथ फेरकर मोतिया बोली, 'रोओ मत, मत रोओ।'

मोतिया के अनुरोध से चार्नक ने सुदर की जमात के लिए जीविका का बंदोबस्त कर दिया। वह ऐसे दुर्दांत साहसी लोगों की तलाश मे था, जो नौकरी करना चाहते है। चार्नक ने उन्हे पटना-कोठी मे सिपाहियो की नौकरी दी। सुदर को गुलामी करना क़बूल नही। इसलिए दस्तूरी के बदले वह तगादगी के पद पर लगाया गया। लाठी लेकर वह तगादे में निकलता। लाठी के जोर से तहसील-वसूली भी अच्छी ही करता। इसमें उसे जो दस्तूरी मिलती, वह डकैती की अनिश्चित आमदनी से काफी ज्यादा थी।

चार्नक मजाक में कहा करता, 'क्यों भई सुदर, मुझसे चाबुक का बदला नही चुकाया ?'

शर्म से सर झुकाकर सुदर कहता, 'वह लेन-देन तो बराबर हो गया है, साहब। आपने मना नहीं किया होता तो दूसरे साहब ने तो उस दिन मुझे मार ही डाला होता।'

लंदन से हुक्म आया, चार्नक दिल्ली जायें; कंपनी के दूत होकर नये फरमान के लिए बादशाह को अर्जी पेश करें कि कर्मचारियो का जुल्म बंद हों।

दिल्ली ! मुगलों की राजधानी। इतिहास का अनोखा रंगमंच। सर टॉमस रो गये थे जहाँगीर बादशाह के दरबार मे। कहाँ टॉमस रो और कहाँ जॉब चार्नक ! गर्व होने की बात ही है। कंपनी उस पर विश्वास

करती है। उसकी कार्य-कुशलता पर विश्वास रखती है, नहीं तो इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी क्यों देती ?

मोतिया उल्लास से अधीर हो गयी। कब दिल्ली जाऊँगी ? बहुत दूर है दिल्ली। दिल्ली का नाम ही सुना है। अच्छा, बादशाह को देख पाऊँगी ? गुलाम बख्श कह रहा था, बादशाह आजकल झरोखे से दर्शन नहीं देते। फिर कैसे देखूंगी ? खैर कोई इंतजाम करना ही पड़ेगा।

चार्नक ने दरजी को बुलवाया। नये कपड़ों का नाप दिया। वह अंगरेज़ों की राष्ट्रीय पोशाक पहनेगा। ऑनरेबुल ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रतिनिधि है वह। राजा और कंपनी का सम्मान उसी के कूट-कौशल पर निर्भर करता है। क्या पता, बादशाह खुश होकर फरमान दे दें; यदि अंगरेज़ों को व्यापार की विशेष सुविधाएँ देदें, तो जातीय इतिहास में उसका नाम सोने के अक्षरों में लिखा जायेगा। राजा इज़्ज़त बख्शेंगे, शायद हो कि नाइट्हुड का खिताब भी दे दें। सर जॉब चार्नक। सर जॉब चार्नक—अपने ही कानों में कैसा अनोखा लगा यह नाम ! जैसे वह खासा भारी-भरकम जरनैल कोई गणमान्य व्यक्ति हो। लेकिन कहाँ से क्या हो गया !

गरमी के दिन। कोठी के प्रांगण में तीसरे पहर तक माल की नीलामी हुई। स्वयं खड़े होकर जॉब चार्नक ने कंपनी के माल का नीलाम कराया। हर छोटी-मोटी बात पर भी उसकी पैनी नज़र थी, प्रचंड गरमी से पसीना-पसीना हो रहा था। शरीर क्लान्त। आराम करने की प्रबल इच्छा।

इतने में जोसेफ टाउनसेंड दौड़ा आया। बोला, 'सर, नदी के उस पार श्मशान में एक जेंटू स्त्री सती हो रही है। अपने पति की चिन्ता में वह ज़िंदा ही जल मरेगी। देखने चलिएगा ?'

सती होने की चर्चा तो चार्नक ने सुनी है, आँखों से कभी देखी नहीं है। कैसी बीभत्स प्रथा है यह, चार्नक ने सोचा, एक सुदर प्राणवंत जीवन आग की लपटों में राख हो जायेगा ! वह औरत रोयेगी नहीं ? आर्त-चीत्कार नहीं करेगी ? अपनी इच्छा से, होशोहवास रहते इस अनोखी दुनिया के पानी, प्रकाश, हवा—सबको आग की लपलपाती जिह्वा का ग्रास बना देगी ? हिचकेगी नहीं, बाधा नहीं मानेगी, दृढ़ कदमों से बढ़ जायेगी धधकती आग में ? प्रेम का आकर्षण, समाज की प्रशंसा, स्वर्ग की

आकांक्षा—किस अदम्य प्रेरणा से वह तिल-तिल वरण करेगी डरावनी मृत्यु का ? उसका अंग-अंग जलता रहेगा; सुकुमार त्वचा सिकुड़ जायेगी; काले-कजरारे केश जल जायेंगे; बड़ी-बड़ी आँखें गल जायेंगी—चार्नक कल्पना भी नहीं कर सकता। काल्पनिक बीभत्सता से तो सर्वांग सिहर उठा—और फिर कौतूहल से मन चंचल हो उठा।

'चल, देख आयें।' कौतूहल की विजय हुई।

सुंदर कहार ने कहा, 'सिपाही-प्यादे साथ ले लें। इन बाम्हनों की मर्जी समझना मुश्किल है। वे इस बात से बिगड़कर धावा भी कर सकते हैं कि म्लेच्छ लोग सती को देखने आयें हैं।'

आखिर जॉब चार्नक की जमात चली। जोसेफ़ अपनी बंदूक लेना न भूला। चार्नक ने अपनी पिस्तौल कमर में लटका ली।

पटना शहर में मुर्दे को जलाना ही गैरकानूनी है, सती-दाह तो दूर की बात। बादशाही कानून के मुताबिक़ श्मशान घाट नदी के उस पार है। रात के अँधेरे में डोंगी से चार्नक अपने दल के साथ उस पार गया।

गरमी के दिनों की गंगा, पानी कम है। उस पर हलकी-सी आभा फैल रही है। बालू का उत्तप्त टापू धुँधला-सा। उपकूल के पेड़-पौधे भूत-से खड़े हैं। दूर पर टापू में लोगों की छोटी-मोटी भीड़। चिता की आग रहस्य को घना कर रही है। काले आसमान में पुंज-पुंज धुआँ उठ रहा है। मृदंग और मंजीरे की आवाज सुनायी दे रही है। और भी निकट पहुँचने पर ब्राह्मणों का गुरु-गंभीर मंत्रपाठ सुनायी पड़ा।

सुंदर भीड़ को हटाते हुए चार्नक और उसके साथ के लोगों को बालू के एक टीले पर ले गया। फ़िरंगियों के आने को कुछ लोगों ने शायद नापसंद किया, लेकिन चूँकि तादाद में वे काफ़ी थे, इसलिए उन लोगों की आपत्ति मुखर नहीं हुई।

चिता हू-हू करके लपटें ले रही है; उसके पास, पति के जलते हुए शव के सामने जेंटू विधवा गोया दीये की निष्कंप शिखा-सी खड़ी है। अपार्थिव रूप था उसका !

पहनावे में विधवा का साज नहीं, लाल कपड़े में दुलहिन-सी सजी, सोने के गहने सोह रहे हैं, गले में सफ़ेद फूलों की माला है। जूड़े में तरह-

तरह के फूल। आग के प्रकाश में दमकता हुआ गोरा रंग, सुडौल लंबा शरीर, नुकीली नाक, धनुष-सी भौंहों की रेखा, निमीलित काली आँखें, सुंदर, स्वर्गीय आभा से भास्वर मुखड़ा ! संपूर्ण शरीर निश्चल, चंचलता का आभास तक नहीं। मुँदी आँखो वह ध्यान-मग्न नारी मानो आसन्न बीभत्स अंत का शोभन, सुंदर रूप में आह्वान कर रही हो।

चार्नक चमत्कृत हुआ, मुग्ध विस्मय से हतवाक् हो गया। पुरोहित लोग मंत्रोच्चार कर रहे हैं।

भीड़ स्तब्ध खड़ी है।

कोई स्त्री शायद शोकार्त विलाप कर उठी ! साँवली-सी एक तरुणी। कौन रो रही है ? प्रिय दासी। रोने का क्या है ? आनंद मनाओ। पुण्य-वती सतीधाम को जा रही है। खुशी मनाओ। जिस चिता पर वह आत्म-विसर्जन कर रही है, उस पूत स्थान पर पवित्र मठ बनेगा। पुण्य के लोभ से दल-की-दल हिन्दू नारियाँ आकर प्रणाम कर जाया करेंगी। रोओ मत, बिटिया। आनंद मनाओ।

वह स्त्री फिर फफककर रो पड़ी।

लेकिन उसके रोने की वह आवाज़ गोया चिता के पास खड़ी उस नारी के कानों नही पहुँच रही है। नववधू स्वामी-सहवास को जा रही है, अंतिम, अनंत शयन मे। परकाल में अनंत मिलन होगा।

पुरोहितो का मंत्रोच्चार बंद हुआ। वह चरम घड़ी शायद आ पहुँची। वह अब चिता में कूद पडेगी।

चार्नक का कलेजा असीम पीडा से मरोड़ा-सा गया। अदम्य कामना ने उसे पागल कर दिया—यह नारी उसे चाहिए, नितात निजी रूप में चाहिए। 'वह दीर्घांगी गौरी ही मेरी स्त्री होगी।'

चार्नक की पिस्तौल गरज उठी।

'जो, एटेक !' चार्नक चीखा, 'मारो, मारो इन ब्राह्मणों को।'

और जोसेफ़ टाउनसेंड की बंदूक गरज उठी।

ऐसे आकस्मिक आक्रमण से श्मशान में खड प्रलय-सा मच गया। कौन किधर भागे, कोई ठिकाना न रहा।

चार्नक दौड़ता हुआ गया, अपनी बलिष्ठ भुजाओं मे उसने उस

अभिभूत-सी नारी-मूर्ति को उठा लिया; मौत के खुले हुए जबड़े से कल्प-लोक की अपनी मानसी को छीन लाया। 'जो, वह साँवली दासी तुम्हारी है।'

दो-चार ब्राह्मण शायद बाधा देने को आये थे। चार्नक के अनुचर 'मारो-मारो' करके उन पर टूटे। श्मशान का हाल बेहाल हो गया।

उस बेहोश स्त्री को लेकर चार्नक डोंगी पर आ गया। जोसेफ टाउनसेंड भी कुछ कम नहीं। वह उस साँवली और जवान दासी को पकड़ ले आया।

रात के अँधेरे में डोंगी पटना-कोठी की ओर तेज़ी से चल पड़ी। दूर से जेंटुओं की नाकामयाब फुफकार सुनायी दे रही थी। चिता की आग अकेली, असहाय-सी लग रही थी।

चार्नक की गोद में मूर्च्छित सुंदरी का सुकोमल स्पर्श; मन में सेनापति का गर्वित आत्मप्रसाद!

वकील अलीमुद्दीन आकर सावधान कर गया। जेंटू नारी का हरण—वह भी ऐसी नारी का, जो सती होने जा रही थी, आफ़त है। काफ़िर ब्राह्मणों का कोई विश्वास नहीं। धर्म में दखल देने से वे पागल हो उठते हैं। क्या पता, हत्यारे को पीछे लगाकर खून भी करा सकते हैं। भोजन में विष-धतूरा मिलाकर भी दे सकते हैं।

वकील के कहने की चार्नक को कोई परवाह नहीं। वह विधवा अभी भी मूर्च्छित थी; शयनकक्ष में शुभ्र शय्या पर पड़ी थी। मोतिया उसकी सेवा-जतन में लगी थी। उसने उस बेहोश स्त्री के माथे पर गुलाबजल की पट्टी रखी; अपने हाथ से पंखा झलने लगी। चार्नक ने हकीम को बुलाना चाहा था। मोतिया ने मना किया, 'यह मूर्च्छा मामूली है, उत्तेजना के कारण आयी है।'

'मोतिया,' चार्नक ने आकुल होकर पूछा था, 'इसे होश तो आयेगा? आँखें खोलेगी, बोलेगी?'

'बुद्धू!' मोतिया ने दिलासा दिया, 'बेशक। देख नहीं रहे हो, जल्दी-

जल्दी निःश्वास छोड़ रही है। अच्छा साहब, तुम तो उस कमरे में जाओ, आराम करो। जैसे ही होश आयेगा, मैं खबर करूंगी।'

चार्नक बगल के कमरे मे गया तो सही, पर स्थिर नही रह सका। वह बार-बार मोतिया से पूछता रहा, 'उसे कब होश आयेगा ?'

इतने में वकील अलीमुद्दीन फिर उसे सावधान करने के लिए आया। उसने टाउनसेंड से सारी घटना सुनी। कोठी के अँगरेज भी उत्तेजित हैं। एक दल तो उसके पक्ष में है—इसलिए कि चीफ़ ने एक बहुत बड़ा काम किया है। जेंटुओं की वीभत्स प्रथा के खप्पर से एक सुंदर जीवन को बचाया है। यह शिवेलरी का जीता-जागता उदाहरण है। दूसरा दल चीफ़ की आलोचना करने लगा। ये जेंटू लोग अगर विरोधी हो गये, तो मुसीबत होगी। एक तो नवाब सरकार से यों ही नही पट रही है, उसके बाद इन लोगों से यह नया झगड़ा। कारोबार को नुकसान होगा। अलीमुद्दीन सोचने लगा, दो ही दिन के बाद चार्नक साहब दिल्ली जाने वाला है, इस बीच यह कैसा झमेला खड़ा हो गया ?

शंका, विरोध, सावधानी—चार्नक के मन में अभी कुछ भी नही आ रहा।

वह दीर्घांगी गौरी ही मेरी स्त्री होगी।

मेरी स्त्री ! शिरा-उपशिराओं में एक लहर-सी दौड़ गयी। वह परम रूपवती स्त्री, मेरी स्त्री !

मोतिया ने खबर दी, 'उसे होश आ गया।' काँपते कलेजे से जॉब चार्नक शयन-कक्ष में पहुँचा। अकेले।

वह स्त्री पलंग पर देवी-सी बैठी है। शांत, स्निग्ध, सौम्यरूप। भीगे केश बिखरकर छाती पर आ गये है। मोमबत्ती के शुभ्र प्रकाश में उसके शरीर का गौरवर्ण दमक रहा है। सारे शरीर मे स्वर्गीय दीप्ति।

धीर-स्थिर गले से उस नारी ने पूछा, 'आपने मुझे क्यों बचाया ?'

'इसलिए कि आग में इस रूप को राख होने देना नही चाहता था।'

'आप मुझे जबरदस्ती पाना चाहते हैं ? जानती हूँ, रूप के लोभ मे।' उसने मोमबत्ती को हाथ मे उठा लिया। बोली, 'लेकिन मैं इस रूप को आग मे जला सकती हूँ।'

मोमवत्ती को वह अपने मुंह के पास ले गयी। चार्नक ने झपट कर मोमबत्ती छीन ली।

उसने आवेग से रुँधे गले से कहा, 'मैं जानता हूँ, तुम रूप और यौवन को महत्व नही देती। जीवन को तुच्छ समझती हो। मगर मैं तुम पर कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नही करूँगा। तुम्हें महज़ इसलिए उठा लाया कि दूसरा कोई चारा नही था। अब तुम मुक्त हो, आज़ाद हो, अब तुम जी चाहे जहाँ भी जा सकती हो, जो जी मे आये कर सकती हो। सिर्फ एक बात का वचन दो मुझे, यह रूप तुम आग मे नही जलाओगी और मुझे सिर्फ़ दर्शन दे दिया करोगी—जिससे मैं तुम्हें देखा करूँ, आँखें भर कर देखा करूँ।'

'मै अब जाऊँ कहाँ? आपने तो लौट जाने का रास्ता नही रहने दिया। फिरंगियों ने ब्राह्मण-कन्या का हरण किया है, समाज मे भला उसके लिए जगह है? जो सती होने जा रही थी, आग के अलावा उसका क्या कोई और आश्रय है?'

'नही-नही, तो फिर तुम यहीं रहो। यहाँ तुम्हें कोई तकलीफ नही होगी। मोतिया तुम्हारा जतन करेगी। मोतिया...मोतिया!'

'जी, आयी।'

मोतिया आयी। आँसुओं से रुँधे उसके कंठ-स्वर का अर्थ चार्नक की समझ में नही आया।

'तुम इसकी जतन-सेवा नही करोगी, मोतिया?'

'ज़रूर करूँगी।' मोतिया ने कहा, 'ब्राह्मण की बेटी है, राजरानी जैसा रूप है, मै इसकी सेवा करके कृतार्थ होऊँगी।'

वगल के कमरे से वकील अलीमुद्दीन भयभीत स्वर से पुकार उठा 'चार्नक साहब, अभी-अभी बडा बुरा समाचार मिला है। ब्राह्मणों ने अभी रात में ही काज़ी के यहाँ आपके खिलाफ नालिश की है; औरत को भगाने के जुर्म मे। कोतवाल साहब फौज लेकर आया ही जानिये। फिर वह आपको गिरफ्तार करेगा।'

'अब मैं उतनी आसानी से इस वार पकड़ मे नही आ पाऊँगा,' चार्नक बोल उठा, 'डोंगी से भाग जाऊँगा। रात के अँधेरे मे ये लोग हमें

ढूंढ नही पायेंगे। आओ, क्या नाम है तुम्हारा—तुम एंजेल हो, आओ एंजेला...!'

चार्नक ने नवागता को सबल बाहुओं मे उठा लिया। उस रमणी ने कोई बाधा नही दी। उसे लेकर चार्नक बडी तेजी से घाट की ओर भागा, उलटकर देखा भी नही कि उमड़ती रुलाई से मोतिया सूनी सेज पर गिर पड़ी।

अलीमुद्दीन की तारीफ करनी चाहिए उसकी सूझ के लिए। उसने डोंगी में फल-मूल, भोजन रख दिया था। चार्नक की पोशाक और बीवी के लिए मोतिया की कमीज़ और घाघरा रख दिया। बदूक-बारूद, यहाँ तक कि एक छोटा-सा तंबू भी। जाते समय कह दिया, 'लालबाग की राह में नदी के किनारे जो जंगल है, उसी में छिप जाइयेगा। मैं वहीं आदमी भेजकर संपर्क स्थापित करूँगा। यहाँ की मुसीबत टल जाय, तो आप बीवी को लेकर लौट आइएगा।'

तारों भरी काली रात मे चार्नक उस रमणी को लेकर डोंगी से अकेला ही चला। डाँड़ की छप्-छप्। दिगन्त में प्रतिध्वनि उठ रही है। निशाचर पंछी डैना फड़फड़ाकर उड गये। दूर पर एक रोशनी-सी दीख रही है। पीछा कर रहे है क्या लोग? नदी-किनारे एक झाड़ी मे डोंगी को बाँधकर चार्नक इंतजार करने लगा। सामने बुत-सी बैठी है वह अजानी नारी; मुँह मे बोल नही। सिर्फ़ श्वास-प्रश्वास की आवाज़।

नाव करीब आ गयी। मल्लाह लोग खाना पका रहे थे। माल ढोने-वाली नाव। चार्नक ने राहत की साँस ली। सोचा, इस नारी ने अपने उद्धार के लिए शोर तो नही किया!

डोंगी फिर चली। कब तक चलती रही, ठिकाना नही। लालबाग के रास्ते में घने जगल की गहरी कालिमा नजर आयी। वहीं अज्ञातवास होगा।

चार्नक ने अँधेरे मे ही तंबू खडा किया। गरमी के दिनों की रात—मीठी, शीतल। तंबू मे उसने पत्तों से सेज बनायी। चार्नक के अनुरोध से एंजेला ने पत्तों के बिछौने पर शरण ली, चार्नक बदूक लिये तंबू के बाहर

पहरा देने लगा, और आकाश-पाताल की सोचता रहा।

यह जागृत मधुयामिनी !

दिन पर दिन गुज़रे। रात पर रात। स्त्री और पुरुष का इतने आस-पास रहना, मगर फिर भी वे कितने दूर-दूर थे !

एंजेला नदी में नहा आयी। चार्नक ने अपने हाथों उसका खाना लगाया। एंजेला ने खाया। चार्नक एकटक उसे देखते हुए उसकी रूप-माधुरी को पीता रहा।

'क्या देख रहे हो ?'

'तुम्हारा रूप !'

'यह रूप तो केवल माया है, दो दिन की छलना। रूप की अंतिम गति आख़िर वही श्मशान है।'

'दो दिन की जो भी ज़िंदगी है, आँखें भरकर यह रूप क्यों न देख लूँ ?'

'विदेशी, पागल हो तुम ? नवाब की फौज तुम्हारा पीछा कर रही है। कहीं पकड ले तो हाथी के पैरों तले कुचलवा डालेगा, या तलवार से तुम्हारे जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। तुम्हे प्राण की ममता नहीं है ?'

'वह तो तुम्हें भी नहीं है, एंजेला। तुम किस लोभ से जलती हुई चिता में प्राण देने गयी थी ?'

'सतीलोक की प्राप्ति के लिए, अक्षय स्वर्ग के लिए।'

'गनीमत, पति-प्रेम से नहीं। पति से तुम खूब प्यार करती थी, क्यों ?'

'छोड़ो भी। मैं ब्राह्मण की बेटी हूँ। स्वामी के मरने पर सती होना ही हमारा कर्त्तव्य है।'

'तुम्हारे सगे-संबंधियों ने क्या जोर-जबरदस्ती की थी ?'

'श्मशान में तुमने जबरदस्ती के आसार देखे थे क्या ? खैर, मैं तो स्वर्ग के लोभ में अपना जीवन समाप्त करने गयी थी, पर विदेशी, तुमने किस लोभ से इस मरणांतक विपदा को न्योत लिया ?'

'स्वर्ग के ही लोभ से। मेरा स्वर्ग परकाल में नहीं, इहकाल में है।'

एंजेला और कुछ नहीं बोली। वह इतना क्या सोचती है, पता नहीं।

वकील अलीमुद्दीन का विश्वासी अनुचर संवाद लेकर आया है। पटना-कोठी का हाल संगीन है। कोतवाल के बारह सैनिकों ने कोठी को

घेर लिया है। उन्होंने आते ही तलाशी ली थी, पर चिड़िया तो फुर्र हो चुकी थी। सो वे अलीमुद्दीन को ही पकड़कर ले गये। रात-दिन वहाँ पहरा बिठा दिया गया है। चार्नक के जाने पर उसको भी गिरफ्तार करके ले जाया जायेगा। सिंगिया-कोठी की ओर भी फ़ौज गयी है।

'बेशक बुरी ख़बर है। अलीमुद्दीन स्वयं क़ैद में है। अब किया क्या जाये ?'

'फ़िक्र न करें, अलीमुद्दीन तेज़ आदमी है। कोई-न-कोई उपाय निकाल ही लेगा। आप होशियारी से रहें। नवाबी फौज के शिकंजे में आ गये तो मामला संगीन हो जायेगा।'

यह अज्ञातवास कितने दिनों का है, कहा नहीं जा सकता। अलीमुद्दीन के अनुचर कुछ और रसद दे गये। रसोई के लिए बर्तन, सोने के लिए जरूरी सामान भी लाना वे नहीं भूले थे।

'एंजेला का क्या मतलब ?' उस स्त्री ने पूछा।

'देवदूती।'

'तो आप मुझे उस नाम से क्यों पुकारते है, मेरा नाम नहीं है क्या ?'

'क्या नाम है तुम्हारा ?'

'न, मैं वह नाम भूल जाऊँगी। आप इसी नाम से पुकारिये।'

'एंजेला, एंजेला, एंजेला !'

'आपकी भाषा क्या है ?'

'अँगरेज़ी।'

'मुझे अँगरेज़ी सिखा दीजियेगा ? मैं आपकी भाषा में ही आपसे बात करूँगी।'

'जरूर-जरूर। खुशी-खुशी सिखाऊँगा। कहो, आइ लव यू।'

'आइ लव यू के क्या मायने है ?'

'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।'

'बड़े लोभी हैं आप। इतने में ही प्यार भी चाहने लगे ? प्यार पाना क्या इतना आसान है ?'

'तो बताओ, तुम्हारा प्यार मैं कैसे पा सकता हूँ ?'

'मैं हिन्दू विधवा हूँ। मेरे प्यार का मोल ही क्या है ?'

'मोल नहीं है, इसलिए अनमोल है। मैं हिन्दू नहीं, ईसाई हूँ। मैं वैधव्य को नहीं मानता।'

'आपका धर्म मेरा धर्म नहीं है। ब्राह्मण-कन्या विधवा होने पर विवाह नहीं करती; धधकती आग में प्राण दे देती है।'

'उस निष्ठुर धर्म को मैं धर्म ही नहीं मानता।'

'तो क्या आप मुझे धर्म त्यागने को कह रहे हैं?'

'मैं तुम पर जबरन कुछ नहीं लादूंगा, तुम्हारी जैसी इच्छा। तुम्हारे शास्त्र में विधवा-विवाह की क्या बिलकुल मनाही है?'

'शास्त्र में मनाही है, पर देशाचरण में चलता है। देखते नहीं हैं, बिहार में छोटी जाति की स्त्रियां दूसरा ब्याह करती हैं। मैं मगर ब्राह्मण-कन्या हूँ।'

'प्रेम में कोई जात-विचार है?'

फिर खामोशी, देर तक।

जॉब चार्नक का अथाह प्रेम मानो बाधा नहीं मानना चाहता। पौरुष बागी हो गया। जी चाहने लगा, उसकी देह को पीस डाले। लोलुप पशु की तरह वह सोयी हुई उस स्त्री की ओर बढ़ा। परंतु उस सोयी मूर्ति के मुखड़े पर गहरी प्रशांति देखकर लौट आया। अपने विदेशी संगी पर उस स्त्री को परम विश्वास है।

अलीमुद्दीन का आदमी आकर फिर बता गया, हालत में अभी भी कोई सुधार नहीं हुआ है। कोतवाल के फौजी कोठी को घेरे हुए हैं। अलीमुद्दीन साहब अभी भी कैदखाने में हैं। ब्राह्मणों से बातचीत चल रही है। उनसे अगर कोई समझौता हो, तभी कल्याण है। मौका पाकर वे लोग भी दाँव लगा रहे हैं। काजी के यहाँ कोशिश-पैरवी चल रही है। और उधर हुगली से चार्नक को दिल्ली जाने का तकाजा आ रहा है। निचले अफसर जानना चाहते हैं कि दिल्ली जाने का क्या होगा? चार्नक ने खबर कर दी, 'मेरी तबीयत नासाज है। मैं दिल्ली नहीं जा सकूँगा। वहाँ कंपनी की ओर से कोई वकील नियुक्त करना होगा।'

वह आदमी ताजा शाक-सब्जी दे गया, मगर पकाये कौन ?

एंजेला अपने मन से ही रसोई करने लगी। चार्नक ने सूखी लकड़ियाँ और पत्ते ला दिये। आग सुलगा दी। पत्थर का चूल्हा बनाकर एंजेला पकाने लगी, जैसे कहीं जहाज डूब गया हो और दो नर-नारी एक टापू में आ निकले हों। चारों ओर हिंस्र सागर। किन्तु कैसा दुस्तर व्यवधान ! एंजेला के हाथों की रसोई बहुत अच्छी बनी।

रात का काला अँधेरा उतर आया। निर्वात और स्थिर रात। नदी की कल-कल और झींगुरों की झंकार। बीच-बीच में उल्लू का चीत्कार तथा सियारों का मिश्रित स्वर रात की नीरवता को तोड़ रहा है।

पेड़ के नीचे एक गलीचे पर जॉब चार्नक लेटा। एंजेला तंबू के अंदर। एक नीरव प्रेम-निवेदन।

खस-खस की आवाज। बहुत निकट ही पैरों की आहट हुई। सामने कोई धुंधली-सी मूर्ति दीखी। जॉब चार्नक उठकर बैठ गया।

'एंजेला, आओ। अभी तक सोयी नहीं !'

'नींद नहीं आयी, इसलिए उठकर चली आयी।'

'डर लग रहा है ? कुछ नहीं है वह, उल्लू और सियार बोल रहे हैं।'

'नहीं-नहीं, डर कैसा ? जिसे मरने का डर नहीं, उल्लू और सियार भला उसे कैसे डरायेंगे ?'

'आओ, बैठो।'

'बैठती हूँ। मेरे लिए आप और कब तक इतना कष्ट उठायेंगे ?'

'कष्ट ? कष्ट कहाँ ? मजे में हूँ। तुम्हें अपने पास पाया है। तुम्हारी मीठी-मीठी बातें सुनता हूँ; तुम्हारा निष्कलंक रूप देखता हूँ।'

'उठो, चलो।'

'कहाँ ?'

'तंबू में।'

'वहाँ मेरे लिए स्थान कहाँ ?'

'स्थान है। तुम क्या जानते नहीं, समझते नहीं—आई लव यू, आई लव यू !'

लगभग एक हफ्ता-भर अलीमुद्दीन का आदमी नहीं आया। रसद प्रायः ख़त्म। खाली प्रेम से पेट नहीं भरता और इस जगह को छोड़कर जाने का भरोसा नहीं होता—कहीं पटना से संपर्क टूट न जाये। और स्त्री को भी छोड़कर जाने में डर लगता है, कहीं इसे खो न बैठें।

एंजेला को कोई परवाह नहीं। वह पेड़ से आम-जामुन तोड़ लायी है। कपड़े से मछली पकड़ लायी है। नाव रोककर कुछ अनाज इकट्ठा किया है। चार्नक ने तीतर का शिकार किया।

नहाकर एंजेला निराभरण खड़ी हुई।

'अरे, तुम्हारे गहने-कपड़े ?'

'वह सब मैं नदी में डाल आयी। ब्याह की रंगीन साड़ी को बहा दिया।'

'क्यों ?'

पुरानी स्मृतियाँ धुल जायें। तुम्हारे साथ शुरू हो नया जीवन।'

'आओ, हम माला बदल लें—गांधर्व विवाह।'

एंजेला ने वनफूलों की माला गूँथ रखी थी। दो माला। एक उसने चार्नक के हाथ में दी।

माला बदलने के बाद एंजेला ने भूमिष्ठ होकर चार्नक को प्रणाम किया।

'तुम पति हो मेरे।'

चार्नक ने उसे छाती से लगा लिया।

'मेरी धर्मपत्नी हो तुम।'

'गवाह है यह सूरज, यह नदी, यह धरती।'

'गवाह है हम दोनों का प्रेम।'

एंजेला ने अदृश्य देवता को प्रणाम किया। उसके साथ हिंदुओं की तरह चार्नक ने हाथ जोड़े।

'उस दिन की बात याद आ रही है,' एंजेला ने कहा, 'मैं आग में कूदने के लिए तैयार थी कि एक आवाज़ से ध्यान टूटा। आँखें खोलकर देखा; मानो साक्षात् अग्नि-देवता देह धारण करके मेरी ओर लपकते हुए आ रहे हैं। मजबूत हाथों से मेरे काँपते हुए शरीर को उठा रहे हैं। कहाँ, इस

आग में तो जलन नहीं है ? कहाँ, मेरा शरीर झुलस तो नहीं रहा है ? तमाम बदन में मधुर आवेश क्यों ? मैं माया के आवेश में सो गयी जैसे।

'होश आया, तो देखा एक सेवा-परायण स्त्री है। उसकी आँखों में आँसू, होंठों में हँसी। वह मोतिया थी। पूछा, मैं हूँ कहाँ ? उसने जवाब दिया—कोहबर में हो। मैंने कहा, मैं तो मर गयी हूँ, अग्नि-देवता ने मुझे ग्रहण किया है। उसने कहा, यह आग मारती नहीं—तमाम ज़िंदगी हँसाती, रुलाती, जलाती है। मैंने कहा, यह बुझौवल छोड़ो। मेरे अग्नि-देवता कहाँ हैं ? और उसने तुम्हें बुला दिया। यह तो आग नहीं है, आग की तरह दमकता रंग है। गोरा फ़िरंगी—मेरा मन जहरीला हो गया। क्या चाहते हो तुम ? मेरा रूप ? मैं इसे आग में जला डालती हूँ। तुमने मेरे हाथ से मोमबत्ती भी छीन ली। ज़बरदस्ती नहीं की। बलात्कार नहीं किया। मुझे तुमने अविरोध आज़ादी दी। छिः, मेरे मन में पाप है। मैं ब्राह्मण कुल की अभी-अभी हुई विधवा हूँ। इस आग जैसे पुरुष के पास जाने के लिए जी क्यों करता है मेरा ? तुम मुझे इस अज्ञातवास में खींच लाये। मैं रोक नहीं सकी।

'इस अरण्य में मैंने तुम्हें अपने करीब पाया, जैसे किसी सपने में पाया। किन्तु आजन्म संस्कार दुस्तर बाधा बना। मैं ब्राह्मण की बेटी, ब्राह्मण कुल की विधवा। तुम दूसरे देश के, दूसरी जात के, दूसरे धरम के। मन में मेरे लडाई-सी छिड़ी। नदी में कूद पड़ी कि डूबकर मर जाऊँगी। पर, मन तुम्हारे पास आने को ललक उठा। हृदय जयी हुआ, आजन्म संस्कार ने हार मान ली। तुम मेरे स्वामी हो, मेरे अग्नि-देवता...!'

'तुम मेरी धर्मपत्नी हो...मैं ठहरा बनिया, बनिज-व्यापार करना सीखा है। मन की बात को सँवारकर नहीं कह सकता। यदि कह पाता तो बताता कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ। सिर्फ यह कहता हूँ, आई लव यू, आई लव यू।'

'पता है, हिन्दू नारी पति का नाम नहीं लेती। मैं भी तुम्हारा नाम नहीं लूँगी। मैं तुम्हें अग्नि कहा करूँगी। अग्नि !'

'एंजेला !'

दो महीने कैसे गुज़र गये, चार्नक को पता नहीं चला। सभ्यता के इतने निकट, लेकिन इतनी दूर उनका यह वन-जीवन। मिलन की मोहक मादकता—खुले आसमान के नीचे वन्य प्रकृति से मिल गया आदिम प्रेम।

दो महीने के बाद नौबत की मीठी आवाज़ सुनायी पड़ी। धीरे-धीरे वह आवाज पास आयी। बजरे पर शहनाई बज रही थी। फूल-पत्तों से सजा बजरा। बजरे की छत पर जैसे जाने-पहचाने लोग हों—जोसेफ़ टाउनसेंड, वकील अलीमुद्दीन, मोतिया। बजरा वनभूमि के करीब आया। डोंगी के पास रुका। माँझी-मल्लाह उल्लसित। अलीमुद्दीन धरती पर कूद पड़ा; टाउनसेंड हाथ पकड़कर मोतिया को बजरे से उतारने लगा। शहनाई वाला शहनाई बजा रहा था।

जॉब चार्नक उस ओर बढ़ा।

अलीमुद्दीन ने चीखकर बताया, 'सब ठीक है साहब, सब ठीक है।'

'तीन हज़ार नकद, कुछ कपड़े और तलवार भेंट में देने से सब ठीक हो गया। फौज वहाँ से चली गयी। अब लौट जाने में कोई हर्ज नहीं। मोतिया बीवी की इच्छा है, शहनाई के साथ वर-वधू का जुलूस निकले। इसीलिए यह आयोजन है।'

मोतिया रेती पर दौड़ती आयी। कहा, 'बाप रे, दो महीने तक कोहबर! अजी मोतिया बीवी क्या इतने ही दिनों में पुरानी हो गयी? उस बेचारी का जरा ख़याल भी नहीं!'

चार्नक ने कहा, 'मोतिया, एंजेला को तुम्हारे हाथों सौंपता हूँ।'

एंजेला को बाहुओं में लपेटकर मोतिया ने कहा, 'आओ बहन, सीता का बनवास अब समाप्त हुआ।'

एंजेला ने हँसकर कहा, 'बात ठीक नहीं हुई, दीदी। सीता के बनवास में रामजी साथ नहीं थे। और सीता की कोई सौत भी नहीं थी। पर मेरा यह अग्नि देवता साथ था और सौत सामने थी।'

मोतिया ने मज़ाक से कहा, 'तो मैं अग्नि देवता के दूसरी ओर खड़ी हो जाऊँ। एक ओर शुक्लपक्ष, दूसरी ओर कृष्णपक्ष।'

चार्नक ने दो बाहुओं में दोनों प्रेमिकाओं को बाँध लिया।

जोसेफ़ टाउनसेंड ने ठाँय-ठाँय बंदूक से दो गोलियाँ दागीं। प्रगल्भ की भाँति हँसकर बोला, 'एक गोली कृष्णपरी के सम्मान में और दूसरी स्वर्ण-परी के।'

चार्नक ने बनावटी क्रोध से कहा, 'रास्कल कहीं का, तूने उस बादामी परी से क्यों नहीं शादी कर ली ?'

जोसेफ ने सर खुजाकर कहा, 'सर, आपके आदेश का इंतज़ार नहीं किया।'

छोकरे टाउनसेंड ने अच्छा नाम रखा है, कृष्णपरी और स्वर्णपरी। दो प्रेमिकाओं के बीच दिन अजीब वैचित्र्य से बीत रहे हैं। जेंटू मर्द तो बहुतेरे ब्याह कर सकते हैं, मूर चार तक। मगर जिनके पास दौलत है, वे अन-गिनती उपपत्नियाँ रखते हैं। बाँदियों से भी सम्बन्ध हो जाता है। किन्तु ईसाइयों के लिए वैध विवाह एक बार का एक ही है। लेकिन हिन्दुस्तान में यह नियम कितने ईसाई मानते हैं ? उस सेबास्टिन के हरम में मात्र सात बीवियाँ हैं। हारवे के सेरागोलियो में दो नेटिव औरतें हैं। हुगली के चीफ मिस्टर मैथियस विन्सेंट के बारे में कितने ही किस्से सुने जाते हैं। पराई स्त्री को वश में करने के लिए उन्होंने ब्राह्मणों से वशीकरण, मारण, उच्चाटन तक सीखा है। और, वह चार्नक से ऊँचे ओहदे के साहब हैं।

लेकिन, चार्नक अपने को खुशनसीब समझता है। सेबास्टिन की बीवियों की तरह मोतिया और एंजेला आपस में लड़ाई-झगड़ा नहीं करतीं। उन दोनों ने खूब अच्छा निबाह लिया है। जैसे दो सखियाँ हों। चार्नक के घर शांति है।

लेकिन अशांति आयी बाहर से। चार्नक ने एंजेला को धर्मपत्नी के रूप में अपनाया है। वह उसे समाज में प्रतिष्ठित करना चाहता है। मोतिया की बाबत यह समस्या नहीं थी। केवल सहचरी के रूप में ही मोतिया प्रसन्न थी। उसे सामाजिक स्वीकृति का लोभ कभी नहीं हुआ। परंतु चार्नक ने एंजेला से विवाह किया है। गांधर्व विवाह। चर्च का समर्थन नहीं हुआ, तो क्या ! फिर भी वह धर्मपत्नी ही तो है। समाज में उसे स्थान देना होगा—

सम्मान का, मर्यादा का, प्रतिष्ठा का स्थान।

विवाह के उपलक्ष में चार्नक ने बहुत बड़ी दावत दी। पटना में बड़ा-सा एक मकान किराये पर लिया। वहीं उत्सव का आयोजन। शहर का नामी शहनाई वाला। रात-दिन नौबत बजने लगी। मीठी, लगातार धुन—एकाकी। फिर भी दूर से सुनने में अच्छी ही लगती। अलग-अलग इंतजाम हुआ दावत का—एक बेला जेंटुओं के लिए, एक बेला मूरों के लिए, रात को ईसाइयों के लिए। लेकिन ताज्जुब है, केवल मूरों को छोड़कर दावत में खास कोई शामिल नहीं हुआ। उन लोगों ने आकर बड़े शौक से मांस-मदिरा उड़ायी। नव-दंपति को तरह-तरह की भेंट दी।

लेकिन जेंटू और ईसाइयों का हाल ठीक उलटा। मात्र कुछ कृपा-पात्रों के अलावा लोग आये ही नहीं। यहाँ तक कि सेठ शिवचरण भी पेट दुखने का बहाना करके दावत में शामिल नहीं हुआ। चार्नक ने वकील अलीमुद्दीन से इसका असली कारण जाना। 'साहब, विधवा ब्राह्मणी को घर लाये हैं। तिस पर शादी की है! यह शादी किस शास्त्र के आधार पर सम्मत है? फ़िरंगी और ब्राह्मणी, गोया पोस्त और पिस्ता। इनके मिलन से खिचड़ी भी नहीं बनती, तो शादी? और जो विधवा सती होने चली थी, वह फिरंगी की गृहिणी हुई। उसके हाथ की रोटी खाने से सात जनम नरक में रहना होगा।'

ईसाइयों का यह अभियोग, खास करके महिला-समाज में। मदाम ला साल ने अलीमुद्दीन के मुंह पर ही निमंत्रण-पत्र को फाड़कर फेंक दिया था। कहा था, 'हूं, इसका नाम ब्याह है। एक प्रोटेस्टेंट एक ब्राह्मणी के साथ घर बसाये और उस जशन में मैं जाऊँ? छिः, खूब है तुम्हारे साहब की पसंद। उसकी एक ब्लैक वेन्च तो गुंडों की सरदारनी है और दूसरी शायद गिरह-कटों की गुरुमानी। सुना है, यह औरत अपने मरे पति के घर से गहना-पत्ता, कपड़ा-लत्ता चुराकर ले आयी है। उसी सोना-दाना से शायद चार्नक की कप्तानी चल रही है।'

जॉनसन साहब ने भी न्योता नहीं स्वीकारा—'मिस्टर चार्नक ने यह अच्छा नहीं किया। उपपत्नी भला धर्मपत्नी कैसे हो सकती है? वह नेटिव स्त्री ईसाई तो नहीं बनी? यह शादी हुई किस गिरजे में? किस पादरी ने

दोनों को पति-पत्नी घोषित किया, अलीमुद्दीन ?'

मिसेज जॉनसन ने चिकोटी काटी थी, 'जैसे मिस्टर, वैसी मिसेज। उन्हें धरम-करम की परवाह है कोई ? चार्नक तो नाम का ही ईसाई है, रंग-ढंग में पूरा नेटिव। वह ज्यादातर नेटिव पहनावा पहनता है, नेटिव-नदिनियों के साथ मौज उड़ाता है। साधु-संत, पीर-फ़कीर की ख़ातिर करता है। वह ईसाई कहाँ है, अलीमुद्दीन ?'

चार्नक मारे गुस्से के गुर्राता रहा। मगर उपाय क्या है ?

वह चीख उठा, 'अलीमुद्दीन, जितनी सामग्री बच गयी है खाने की, सब पटना के ग़रीब-गुरबों को बाँट दो। कम-से-कम वे लोग मेरे ब्याह को हार्दिक आशीर्वाद दे जायें।'

एंजेला ईसाई होगी ? फिर तो हो गया। ता-जिंदगी जो बुतपरस्ती करती आयी और वे प्रोटेस्टेंट जो गिरजा में मूर्ति तक नहीं रखते ? उसने कहाँ से तो हाथीदाँत की मॅडोना की मूर्ति जुटायी है ? ईसा को गोद में लिये माता की प्रतिमा। लगता है, पटना के किसी पेपिस्ट से मिली है। उसने उस मूर्ति को पूजा-घर में राम-सीता, राधा-कृष्ण, महावीरजी की पीतल की प्रतिमाओं के साथ रखा है। कहा है, 'देखो जरा, इस मातृ-मूर्ति का कितना सुंदर भाव है, ठीक जैसे माँ यशोदा कृष्णजी को गोद में लिये खड़ी हों !'

चार्नक ने उसे सुधारने की कोशिश की, 'ये मेरी माता हैं और गोद में ईसा मसीह हैं।'

'यही हमारे कृष्ण-यशोदा हैं।'

एंजेला ने मॅडोना को भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया।

रेवरेंड जॉन इवान्स पटना पधारे। प्रोटेस्टेंट चैपलेन। धर्मयाजक। अट्ठाईस साल की वयस, देखने में सुंदर, सौम्य। वे विलायत से स्त्री-सहित राइट ऑनरेबुल ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों में नीति-धर्म की प्रतिष्ठा के लिए आये हैं। हुगली में डेरा डालकर वह स्त्री के साथ कासिम बाज़ार से राजमहल होते हुए पटना आये।

सम्मानित अतिथि। उस धर्मयाजक परिवार की चार्नक ने सादर अगवानी की। एंजेला ने थोड़ी-थोड़ी अंगरेजी सीखी है। उसने भी चैपलेन

की पत्नी का स्वागत किया।

भोजन की टेबिल पर रेवरेंड साहब ने चार्नक दंपति को बहुत सदुपदेश दिये--'मिस्टर चार्नक, आप चीफ़ है। आपका आदर्श पटना के अँगरेज़-समाज का आदर्श होगा। धर्मप्राण प्रोटेस्टेंट के नाते आप पर मैं बड़ी आस्था रखता हूँ।'

'जी, कहिए, मुझे क्या करना होगा ?'

'सबसे पहले तो अपने घर को संभालिए। इस सुंदरी महिला को हमारे पवित्र धर्म में दीक्षा देने का प्रबंध कीजिए। इन्हें मैं ही दीक्षित करूँगा। मैं धर्म के अनुसार आप दोनों का ब्याह कराऊँगा।'

चार्नक ने स्त्री से कहा, 'एंजेला, रेवरेंड चाहते हैं, तुम ईसाई हो जाओ।'

वह बोली, 'मैं तो ईसाई ही हूँ। मैं तुम्हारी स्त्री हूँ। तुम्हारा धर्म मेरा धर्म है।'

रेवरेंड की स्त्री ने कहा, 'फिर पूजाघर में उन मूर्तियों को क्यों रखा है ? सच्चे ईसाई क्या मूर्तियों की पूजा करते हैं ? वह तो सिर्फ़ अधार्मिक पेगन और पेपिस्टों के लिए है।'

'मेम साहब,' एंजेला ने कहा, ''मैं मूर्ति की पूजा तो नहीं करती, मैं तो पूजा करती हूँ अपने प्राण के देवता की। मूर्ति तो सिर्फ़ प्रतिमा है, प्रतीक। मैं मूर्ख औरत हूँ। देवता को अपनी कल्पना की छवि में नहीं आँक सकती। इसीलिए सामने मूर्ति रखकर कभी उसे पुकारती हूँ सिया-राम, कभी राधा-कृष्ण और कभी यीशु-मैडोना।'

मैडम इवान्स ने कहा, 'यह सब आपको छोड़ना होगा। हमारे पवित्र गिरजे में जाकर सुबह-शाम ईश्वर की प्रार्थना करनी होगी।'

'बस, दो ही वेला ?' एंजेला ने सरल भाव से कहा, 'मैं तो यह जानती हूँ कि भगवान को हर समय पुकारना चाहिए। ख़ैर, आपके गिरजा-घर में जाऊँगी। मेरे लिए तो प्रत्येक स्थान ही पवित्र है, जैसा मेरे ठाकुर-घर, वैसा ही आपका गिरजा। मैंने तो सीखा है, सब मेरे ठाकुर हैं---पहाड़-पर्वत, नदी, आकाश, पेड़-पौधे, पत्थर-पानी, आग, मंदिर-गिरजा, मेम, पादरी, पति---सबमें हैं मेरे ठाकुर। आप अगर कहें, तो

इन मूर्तियों को मैं पानी में डाल आऊँ, जैसे कि मिट्टी की प्रतिमाओं को लोग पानी में डुबा देते हैं, पूजा समाप्त हो जाने पर। और तब रहेंगे मात्र मेरे पति—धूप-गुग्गुल और गंगाजल से आप ही लोगों की पूजा करूँगी।'

'आदमी की कोई पूजा करता है भला ?'

'ईसा क्या आदमी नहीं थे ?'

'वह भगवान के पुत्र थे।'

'भगवान के बेटी-बेटी कौन नहीं हैं, साहब ? आपको, मुझको, साहब को, मेम को भगवान ने नहीं बनाया है ?'

'आपसे तर्क करना बेकार है, मैडम ! मैं देख रहा हूँ, आपकी धर्म-शिक्षा काफी बाकी है। मैं बाइबिल दे जाऊंगा, नियम से पढ़ा कीजियेगा। पढ़ना जानती हैं न ?' रेवरेंड ने कहा।

'हिन्दी, फ़ारसी, संस्कृत जानती हूँ। अँगरेजी थोड़ी-बहुत सीख रही हूँ।'

'ठीक है। आपको मैं ईसाई बनाकर ही रहूँगा, धर्मत. आपका ब्याह कराऊँगा।'

लेकिन रेवरेंड जॉन इवान्स की इच्छा फलवती नहीं हुई। कुछ दिनों में ही वह हुगली लौट गये। लौट जाने का कारण चार्नक को उनके नौकर से मालूम हुआ। कंपनी की निहायत मामूली तनखा से धर्मयाजकों का भी चलना मुश्किल है, लिहाजा उन्होंने भी हुगली में व्यवसाय शुरू किया है। खत आया है, हुगली की चौकी पर उनकी माल-भरी चार नावों को रोक रखा गया है। कैप्टन पिट का जहाज़ माल लेकर शीघ्र ही हुगली से रवाना होगा। जल्दी हुगली लौट आना जरूरी है। अगर पिट के जहाज़ से माल भेजना हो तो माल को छुड़ाना ज़रूरी है। चिट्ठी पाते ही रेवरेंड साहब पत्नी सहित लौट गये। कारोबार और आत्म-पोषण पहले, उसके बाद धर्म-प्रचार और पापियों का उद्धार।

कैप्टेन पिट के बारे में चार्नक ने सुना। वह एक खूँख्वार इंटरलोपर है, अनधिकृत व्यापारी और कंपनी का दुश्मन। वह हुगली के एजेंट मिस्टर विन्सेंट का नाते में जामाता है। राइट ऑनरेबुल कंपनी के वेतनभोगी होते

हुए भी जो लोग उसके शत्रु के साथ कारोबार करते हैं, जॉब चार्नक उन्हें हरगिज़ बरदाश्त नहीं करता।

रेवरेंड दंपति जब बजरे पर जाने लगे तो एंजेला ने उनके चरणों की धूल ली थी।

रेवरेंड ने कहा था, 'अबकी बार तो ख़ैर जा रहा हूँ, अगली बार आकर तुम लोगों का ब्याह करा दूँगा।'

चार्नक ने कोई जवाब नहीं दिया। सोचा, लुटेरे व्यापारियों के साथ जो कारोबार करते हैं, राइट ऑनरेबुल कंपनी का वफ़ादार चार्नक उस रेवरेंड से ब्याह का फ़तवा लेने में शर्म का अनुभव करेगा।

बजरा खुल जाने के बाद चार्नक के हुक्म से पालकी पटना के बाज़ार में आयी। एंजेला को लेकर चार्नक एक हिन्दू तसवीर वाले के यहाँ गया। वहाँ बहुतेरे देवी-देवताओं की तसवीरें, मूर्ति-पट आदि थे। चार्नक ने एक नेटिव चित्रकार की आँकी सरस्वती की एक रंगीन तसवीर चुनकर निकाली। चार्नक ने उसे ख़रीद लिया, पालकी में एंजेला को उपहार दिया।

'क्या होगा इसका ?' बीबी ने पूछा।

'अपने पूजा घर में रखना। वाग्देवी की रोज़ आराधना करना जिससे ज़रूरत पड़ने पर वैसी चोखी बातें, उस दिन जैसी, पादरियों को सुना सको।'

'पादरी साहब तो चले गये, हम लोगों का धर्म-विवाह ?'

'विवाह कितनी बार होगा, एंजेला ?' चार्नक ने शिकायत की, तुम मुझे पति नहीं मानती हो ?'

एंजेला ने शर्म से पति की छाती में मुँह छिपा लिया। धीरे से बोली, 'मैंने तुम्हें पति के रूप में वरण किया है, तभी तो तुम्हारी संतान मेरे गर्भ में है।' चार्नक आनंद से हतवाक् हो गया। समय पर एंजेला ने एक कन्या को जन्म दिया। चार्नक ने उसका नाम रखा मेरी।

बीवियों के मामले को लेकर एलेन कैंचपुल से एक दिन चार्नक की ख़ूब

कहा-सुनी हो गयी। चार्नक तो उसे मार ही बैठता, अगर दूसरा अफ़सर बीच-बचाव नहीं करता।

कैंचपुल से, चार्नक की शुरू से ही अनबन चल रही है। यह छोकरा जैसा लोभी है, वैसा ही उद्दंड है। चार्नक को खबर मिली है, कंपनी के कारोबार की बाबत कैंचपुल बनियों से दस्तूरी लेता है और अपनी ही जेब में डालता है। वही मे वज़न बढ़ाकर लिखता है। जो दाम बढ़ता है, पैकारों से साँठ-गाँठ करके आप ही हड़प लेता है। यानी रातों-रात बड़ा आदमी बनने के फेर में है। भूटान से कस्तूरी आयी। उसमें कुछ कैंचपुल के कमरे से बरामद हुई। कस्तूरी की गंध क्या छिपायी जा सकती है? बेहया की तरह छोकरे ने कहा, 'मैंने उसे खरीदने के लिए रखा था। उसकी कीमत चुकाने की जुर्रत मुझमें है।' और, उसने चार्नक की नाक पर उसका दाम रख दिया।

चार्नक ने उसे बहुत समझाया।

उस ढीठ छोकरे ने झट कह दिया, 'सर, शोरे के गोदाम की सफाई में सात सौ मन धूल जो आपने बेची, उसमें पाँच सौ मन शोरा मिला हुआ था, उसका रुपया कहाँ गया?'

जॉव चार्नक नाराज हो उठा, 'साले, उसकी कैफ़ियत मै तुम्हें नहीं, अपने ऊँचे अफसर को दूँगा।'

कैंचपुल ने कहा, 'उसका बंदोबस्त मैंने कर लिया है। जल्दी ही आपको कैफियत देनी पड़ेगी। हुगली के एजेंट मिस्टर विन्सेंट के पास अब तक खबर पहुँच चुकी है।'

'वह हरामजादा मेरा ठेंगा करेगा?'—बिगड़ जाने पर आजकल चार्नक नेटिव भाषा में गाली-गलौज करता है। उसका खयाल है, नेटिवों की भाषा में गालियाँ ज़ोरदार होती हैं। चार्नक ने कहा, 'बीस साल से मैं कंपनी की सेवा कर रहा हूँ। मालिक भी मुझे गुड एंड ओल्ड सरवेंट के सिवाय और कुछ कहकर संबोधन नहीं करते।'

बेशर्म कैंचपुल ने कहा, 'इसीलिए डाइरेक्टरों ने आपको बीस साल से ईश्वर की भी परित्यक्त पटना-कोठी में निर्वासित कर रखा है।'

'चुप रह, साले!' चार्नक गरज उठा, 'जानता नहीं है, उन लोगों

ने मुझे मद्रास की कौंसिल तक में स्थान दिया था ?'

'वह तो सीढ़ी की अंतिम धाप में।' कैंचपुल ने निर्लज्ज की तरह कहा, 'कौंसिल का पंचम अफ़सर, सो फोर्ट सेंट जार्ज में ही हुआ तो क्या ?'

कैंचपुल ने चार्नक के एक ज़िंदा ज़ख्म में खोंच लगायी। चार्नक के मन में मलाल है। इतने लंबे अरसे तक उसने पटना के दुरूह कारोबार को चलाया, पर कंपनी ने क्या स्वीकृति दी ? दो बार वेतन-वृद्धि और चिट्ठियों में बड़े-बड़े विशेषण, बस। लंदन में खूंटे का जोर नहीं है अपना। इसीलिए मुझसे बहुत बाद में जो अफसर आये, वे सब एक-एक दिग्पाल हैं। वह मैथियस विन्सेंट—चार्नक के प्राय. चार साल बाद आया था। इसी बीच वह हुगली का एजेंट और बे ऑफ बंगाल का चीफ रहा। रघु पोद्दार की मृत्यु पर कंपनी के तेरह हज़ार रुपये बरबाद हुए। कंपनी का कर्ज़दार था रघु पोद्दार। विन्सेंट के हुक्म से अनतराम ने उसे कासिम बाज़ार-कोठी में बंद करके ऐसी मार लगायी कि पोद्दार मर गया। नेटिवों में बड़ी हलचल मची; नवाब के लोगों को भी हावी होने का मौका मिल गया। कंपनी को नक़द तेरह हज़ार जुर्माना देना पड़ा। विन्सेंट ने इस पर भी कसूर कबूल नहीं किया। मद्रास के गवर्नर स्ट्रेनसैम मास्टर तहक़ीक़ात के लिए आये। उन्होंने भी मामले को दबा दिया। कारण और क्या हो सकता है ? मास्टर और विन्सेंट दोनों ही अनधिकृत व्यापारियों के साथ चोरी-चोरी कारोबार करके फूल गये हैं। इसी विन्सेंट का रिश्ते में जो दामाद है, वही है अनधिकृत व्यापारी पिट। खूंटे के ज़ोर से उन्हीं में से कोई होगा गवर्नर, तो कोई एजेंट। चार्नक ने घृणा से मद्रास कौंसिल के पंचम पद को अस्वीकार कर दिया।

चार्नक को सवेरे मद्रास से चिट्ठी मिली। कंपनी के कोर्ट ऑफ डाइरेक्टर्स को होश हुआ। उन्होंने पुराने और विश्वस्त कर्मचारी जॉब चार्नक को कासिम बाज़ार का चीफ नियुक्त किया। लेकिन हाँ, उस विन्सेंट के बाद ही उसका पद है। उन लोगों ने यह भी लिखा है, विन्सेंट के अवकाश-ग्रहण के बाद चार्नक ही सर्वोच्च चीफ होगा। बे ऑफ बंगाल का चीफ़ ! चलो, ग़नीमत।

फिर भी कैंचपुल की उद्दंड उक्ति से बदन में आग लग गयी।

'अबे, पता है साले, मैं कासिम बाजार का चीफ बनाया गया हूँ, बे ऑफ़ बंगाल का द्वितीय अफसर। किसी भी दिन वहाँ जाने का परवाना आ जायेगा।'

'गवर्नर मास्टर और चीफ विन्सेंट के होते भूलकर भी यह उम्मीद न कीजियेगा। आपको पटना-कोठी में ही सडकर मरना होगा।'

'साला, हरामजादा, जानता है कि मैं तुम्हारा यहाँ से तबादला करा सकता हूँ ?'

'वह खुशी आप नहीं हासिल कर सकेंगे सर, मैं ही खुद राइट वरशिप-फुल विन्सेंट को लिखता हूँ कि किसी अच्छे चीफ के मातहत मेरी बदली कर दीजिये।' और एलेन कैंचपुल दफ्तर से बाहर निकल गया।

चार्नक क्रोध से सुलगता रहा। चार्नक ने इतने दिनों तक पटना में चीफ़गिरी की, लेकिन किसी भी मातहत कर्मचारी ने आज तक इतनी ढिठाई और दंभ नहीं दिखाया। मैथियस विन्सेंट ने एक गुट बनाया है। व्यक्तिगत स्वार्थ साधने के लिए वह अपने प्रियपात्रों को विभिन्न कोठियों में भेजे दे रहा है। वहाँ वे चोर-कारोबार कर रहे हैं। चार्नक इस पाप-चक्र को भेदकर ही रहेगा।

लेकिन ऐलेन कैंचपुल की दंभोक्ति फल गयी। १६७६ का क्रिसमस-बीत गया। फिर भी गवर्नर मास्टर और एजेंट विन्सेंट की कोई चिट्ठी नहीं आयी कि चार्नक को कब कासिम बाजार में कार्य-भार संभालना है। मजबूरन चार्नक ने सीधे लंदन चिट्ठी भेजी।

कैंचपुल पटना में रह गया, मानो चार्नक को सताने के लिए।

अँगरेज कर्मचारियों के चरित्र-गठन के लिए वेतनभोगी धर्मयाजकों ने एक नीति-संहिता बनायी थी। उसमें सदुपदेश और वर्जना की बहुतेरी बातें हैं, जैसे—रोज प्रार्थना करो; झूठ बोलना, शपथ लेना, शाप देना, शराब पीना, गंदगी, लॉर्ड के पावन दिवस को बेकार करना आदि दुराचार छोड़ो; रात के नौ बजे तक अपने कमरे में आ जाओ। जुर्माना, कैद, संपत्ति जब्त कर लेना—ऐसी सजाओं की भी व्यवस्था है। ये सजाएँ जिन्हें दुरुस्त नहीं करेंगी और जो लंपटता, व्यभिचार, गंदगी या ऐसे कसूरों के कसूरवार होंगे, उन्हें मद्रास के फ़ोर्ट सेंट जार्ज में निर्वासित किया जायेगा, जहाँ सजा

की व्यवस्था है। और यह निर्देश दिया गया है कि साल में दो बार इस संहिता को पढना होगा, मिड-समर और क्रिसमस दिवस के बाद के दो रविवार को सवेरे की प्रार्थना के बाद—जिससे अंगरेज कर्मचारी अपने निजी कर्त्तव्य के बारे मे उचित ज्ञान प्राप्त कर सकें।

क्रिसमस के बाद वाले रविवार को चार्नक ने नीति-संहिता को भाव-गंभीर स्वर से पढ़ा। पाठ शेष होने के पहले ही एलेन कैंचपुल अट्टहास कर उठा।

चार्नक ने घूरकर उसे देखा। कैंचपुल सहम गया।

'हँस क्यों रहे हो ?' चार्नक ने कड़े स्वर से पूछा, 'मैंने पढ़ने मे कही गलती की है ?'

'बिलकुल सही पढ रहे है आप, पर आपका आचरण पग-पग पर उस संहिता के नियम को भग करता है,' कैंचपुल ने व्यग्य किया। 'मैं सोच रहा हूँ, आप मद्रास के फ़ोर्ट में कब निर्वासित होंगे ?'

द्वितीय अफ़सर ने टोका, 'छिः कैंचपुल, आप यह न भूलें कि मिस्टर चार्नक हमारे चीफ है। चीफ़ के सम्मान पर आँच लाना अन्याय है।'

'चीफ अगर चीफ़ जैसा हो, तब—,' कैंचपुल ने चीत्कार किया, 'मैं पूछता हूँ, रंडी मोतिया का साथ क्या लंपटता नहीं ? ब्राह्मण की विधवा का हरण करके उसमे गर्भसंचार करना क्या व्यभिचार नही है ?'

चार्नक गरज उठा, 'चुप रह शैतान कहीं के, मेरे पारिवारिक जीवन पर विचार करने के लिए तुझे कंपनी ने नही भेजा है। मैं तुझे इसकी कैंफियत नही दे सकता। नही दे सकता तेरे अफसर उस बेईमान विन्सेंट को, जो जॉन-टॉमस की स्त्री से बुरा मतलब साधने के लिए उसके पति को जंजीर से खूंटे मे बाँधकर जुल्म करता है और बाम्हनों से मिलकर शैतानी-विद्या के प्रभाव से पागल कर देता है। मैंने समाज की एक ठुकराई हुई पतिता को उन्नत जीवन का स्वाद दिया है, मैंने एक अभागिन विधवा को निश्चित मौत के पंजे से छीन करके मर्यादा की चेष्टा की है। अगर किसी नीतिशास्त्र मे यह अपराध माना जाये, तो मै अपराधी हूँ। पर मैं उसे अपराध नही मानता और अगर इसके लिए कोई दड देने की कुचेष्टा करे तो उसे रोकने की ताकत मुझमें है।'

कँचपुल और भी कुछ कहने जा रहा था।

जॉब चार्नक चीख उठा, 'नूर मुहम्मद, मेरा चाबुक ले आ, चाबुक।'

द्वितीय अफ़सर ने कँचपुल को किसी तरह से प्रार्थना-कक्ष के बाहर निकाल दिया।

काँपते कंठ से नीति-संहिता के बाकी अंश को खत्म करके चार्नक अपने डेरे पर चला गया।

एक दिन मोतिया ने बताया, एंजेला को फिर बाल-बच्चा होने वाला है। अबकी जरूर लड़का होगा। उसकी सेहत इस बार जैसी खराब रहती है, लगता है, एक जबर्दस्त मुन्ने के आने की सूचना है। मोतिया ही बड़ी बहन की तरह उसकी सेवा-जतन कर रही है।

मेरी पूरे दो साल की हो चली। सुदर-सी लड़की। रंग माँ-बाप जैसा नहीं हुआ है। लेकिन चेहरा खूबसूरत है। पा-पा करके चलती है और तुतलाकर बोलती है। मोतिया ही उसका सहारा है। वह कृष्णपरी नहीं बोल सकती है, सो 'किसनापली' कहती है। मोतिया मजाक में कहती है, 'हाँ री बिटिया, मैं तुम्हारी मोल ली हुई परी ही हूँ।'

चार्नक और मोतिया मेरी के भविष्य की कल्पना किया करते। मोतिया कहती, 'रानी होगी यह। किसी राजपूत राजा से बिटिया की शादी कर दो।'

चार्नक कहता, 'खाँटी अंगरेज से ब्याह करूँगा इसका।'

बीवी कहती, 'तुम्हारी जाति का यही तो रवैया है! अपने घमंड में ही गये। कौन असली अंगरेज इस वर्ण-संकर से ब्याह करेगा, कहो तो।'

चार्नक ने ठट्ठा किया, 'तो किसी ब्राह्मण लड़के से इसका ब्याह करो। मैं ज़रा तुम्हारे ब्राह्मणों का कलेजा देखूँ, कौन इस दोगली लड़की से ब्याह करता है?'

तर्क का कोई निबटारा नहीं होता। दोगलों के लिए सचमुच ही यह एक समस्या है। मेरी अभी बच्ची है। अभी उसके ब्याह का सवाल उठाना ही बेकार है।

उससे बडी चिंताएं अभी चार्नक के पास है—एंजेला की अस्वस्थता और कंपनी के शोरे के चालान की।

बादशाह औरंगजेब ने फिलहाल फिर से हिंदुओं पर जजिया कर लगाया है। हर हिंदू को यह कर देना पड़ेगा। दिल्ली से लौटे हुए व्यवसायियों से पता चला, इस्लाम धर्म स्वीकार करने पर ही इस कर से राहत मिल सकती है। बादशाह का हुक्म जारी होते ही दल-के-दल हिंदू यमुना के किनारे लालकिले के झरोखे के नीचे इकट्ठे हुए—इकट्ठे हुए इसलिए कि बादशाह से आवेदन करेंगे—जजिया कर देने की क्षमता हममे नही है। मेहरबानी करके यह कर उठा लिया जाये। बादशाह ने झरोखे से झाँकी-दर्शन देने की तकलीफ तक उठाना गवारा नही किया। एक जुम्मे के दिन हजारों-हजार की तादाद मे हिंदू जनता किले से जुम्मा मसजिद जाने के रास्ते मे खडी हो गयी। मसजिद मे जाते समय बादशाह हिंदुओं का दुखड़ा सुनेगे। बट्टावाले, कपडेवाले, उर्दू बाजार के सभी हिंदू दुकानदार काम-काज छोडकर रास्ता रोककर खड़े हो गये; कल-कारखाने के मिस्त्री-मजदूर भी। बादशाह का रास्ता रुक गया। जितना ही मना किया गया, भीड का दबाव उतना ही ज्यादा बढता गया। बादशाह ने हुक्म दिया, हाथी छोड़ दो। उस भीड पर हाथी छोड़ा गया, घोडे दौड़ाये गये। सैकड़ों लोग पिस-कर मर गये। बादशाह के मसजिद जाने का रास्ता साफ हो गया। वह इबादत मे गये। मगर जजिया कर नही उठाया गया। हिंदू लोग लगातार बड़ी-बडी सभाएँ करके आदोलन करते रहे। फिर भी जजिया माफ नही किया गया।

उस आदोलन की लहर पटना की गंगा के किनारे आ पहुँची। काम-काज छोड़कर यहाँ के भी हिंदू सभाएँ करने लगे। इधर शोरे के गोदाम मे हजारों बोरे खाली पड़े है। झटपट बोरों में शोरा भरकर हुगली भेजना है, नहीं तो इस साल यूरोप के लिए जहाज मिलना मुश्किल होगा। चार्नक हिंदू कुलियों के सरदारों की खुशामद करने लगा, 'अरे भैया, हम तो फ़िरंगी हैं। मुगलो से हमारी भी नही पटती। हमने कौन-सा क़सूर किया है कि तुम लोगों ने कोठी का काम छोड़ दिया ?' मगर उनका रूठना अभी गया नही।

इधर एंजेला की सेहत दिन-दिन खराब हो रही है। खून की कमी है। उसका सोने जैसा रंग फीका पड़ गया है। बेहद कमज़ोर हो गयी है। हकीम-वैद्य भी सोच में पड़ गये हैं।

कुछ दिन पहले मद्रास से चिट्ठी आयी थी: तुरंत कासिम बाज़ार-कोठी का कार्यभार ले लो।

असम्भव। हकीम-वैद्य कहते हैं, बीबी का दो कदम चलना भी अभी ठीक नहीं, तो नदी की राह कासिम बाज़ार का सफर कैसे होगा ?

कुलियों के सरदार ने कहा है, 'चार्नक साहब रहें तो शायद कुली लोग काम पर आ सकते हैं।' पटना से उनके चले जाने से क्या होगा, कहना कठिन है।

चार्नक ने खेद प्रकट करते हुए पत्र दिया कि मैं अभी कासिम बाज़ार-कोठी की ज़िम्मेदारी लेने की स्थिति में नहीं हूँ। शोरा जब तक यहाँ से भेज नहीं दिया जाता, पटना छोड़कर जाना असंभव है।

मद्रास से सख्त चिट्ठी आयी, कोई बहाना नहीं सुना जायेगा। खत पाते ही कासिम बाज़ार का कार्यभार लो, नहीं तो चीफ़ के पद से तुम्हें बरखास्त किया जायेगा।

यह भी उसी मास्टर विन्सेंट की साज़िश है—जॉब चार्नक को परेशान और अपदस्थ करने की।

एक ओर कंपनी का शोरा और एंजेला की सेहत; दूसरी ओर, कासिम बाज़ार के चीफ की कुरसी। चार्नक दुविधा में पड़ गया, लेकिन पल-भर के लिए ही। कंपनी का शोरा बरबाद करके और एंजेला को अकेला छोड़कर वह कासिम बाज़ार की कुरसी पर नहीं बैठ सकता।

चार्नक ने मद्रास की चिट्ठी का कोई जवाब नहीं दिया। उसने शोरे की स्थिति का ज़िक्र करते हुए सीधी लंदन चिट्ठी भेजी।

बाज़ आया चीफ के पद से—शोरे के बोरे नाव पर लदवा ही देने हैं। दवा-दारू से एंजेला को चंगा कर लेना है।

कंपनी ने चार्नक का समर्थन किया।

चार्नक पटना में ही रह गया।

जजिया कर के खिलाफ हिंदुओं का आंदोलन नाकामयाब रहा। महाराज शिवाजी की मृत्यु से सब हतोत्साह हो गये। धीरे-धीरे शोरे के सब बोरे नाव पर लद गये।

एंजेला हकीम-वैद्य के इलाज और मोतिया की शुश्रूषा से दूसरी बार मौत के मुंह से निकल आयी। उसने दूसरी कन्या को जन्म दिया। इंग्लैंड की स्वनामधन्य रानी के नाम पर उसका नाम रखा गया, एलिज़ाबेथ। अंगरेज़ों जैसा रक्तिम रंग, वज़न में भारी, ख़ासा बड़ा शिशु।

चार्नक का बजरा फिर कासिम बाज़ार की ओर लौट चला। बाईस साल का परिचित पटना पीछे छूट गया, पर साथ चली पटना की महिला मोतिया, एंजेला, मेरी और एलिज़ाबेथ। आज चार्नक अकेला नहीं है। उसका परिवार ख़ासा भरा-पूरा हो गया—पत्नी, प्रेमिका, दो बेटियां! कासिम बाज़ार का चीफ़, बे ऑफ़ बंगाल का द्वितीय अफ़सर वरशिपफुल जॉब चार्नक एस्क्वायर विराट बजरे में जा रहा है। बच्चों और वनिताओं के कलरव से बजरा मुखर है।

विचित्र और विराट जुलूस। आगे-आगे लंबे-लंबे झंडे लिये चल रहे हैं चपरास पहने सिपाही। उसके पीछे बाजे वाले—ट्रंपेट और ड्रम से जिनमें आठ विलायती धुन बजा रहे हैं। उसके बाद बल्लमधारी राजपूतों की दो क़तारें, तादाद में कोई सौ। उनके पीछे रंगीन टोलियाँ और रंगीन ही कोट पहने बीस-एक अँगरेज़ नौजवान—सबके हाथों में ब्लंडरबस[1] बंदूकें। इन सबके बाद माननीय चीफ़ मिस्टर जॉब चार्नक की ख़ूबसूरत कारीगरी की नमूना बहुत बड़ी पालकी। पालकी के अंदर सुर्ख़-लाल मख़मल की पोशाक पहने जॉब चार्नक ख़ुद। उसके साथ फीका नीला गाउन पहने उसकी बीवी, गुलाबी फ़ॉकों में बच्चियाँ और देशी पहनावे में मोतिया। पीछे चले आ रहे हैं अजीबो-ग़रीब बैलगाड़ियों में कासिम बाज़ार कौंसिल के सदस्यगण। कासिम बाज़ार के सँकरे रास्ते के दोनों तरफ़ खड़े असंख्य लोग नये चीफ़ के इस भव्य आगमन को देख रहे हैं। इस जुलूस, इस रौब-दाब को देखकर नेटिव लोग स्तम्भित-से हो गये हैं।

राजमहल के दरज़ियों ने बहुत कम समय में जॉब चार्नक, उसकी बीवी और बच्चों के बढ़िया और झकाझक कपड़े सिल दिये। मोतिया ने कहा, 'मैं मर जाने पर भी अधखुली छाती वाला यह गाउन, उस पर यह कमरबंद नहीं पहन सकती।' चार्नक की बीवी का तो ख़ुद वैसा गाउन पहनकर हँसते-हँसते बुरा हाल हो रहा था। रह-रहकर आईने में अपनी पोशाक को देखती और हँस पड़ती है वह। बच्ची एलिज़ाबेथ की रुलाई से इस खिलखिलाहट पर रोक लगी। फीके नीले रंग का गाउन बीवी के गोरे रंग पर ख़ूब फब रहा है। चार्नक की पोशाक भी रौबदार है।

---

१. उस ज़माने में प्रचलित एक नये प्रकार की बन्दूक।

नहीं हुई है उसकी। उसे इसका कोई ग़म भी नही है। पंच-हाउस का कारोबार जोरों पर चल रहा है। वह एक बोतल स्कॉच दे गया।

चुप-चुप पूछा उसने, 'मेरी एन को देखिएगा, सर ? देखने पर उसकी ओर से नज़र नहीं फिरा सकेंगे। उसे अपने हरम में जगह न देने से घर सूना-सूना रह जायेगा, सर।'

चार्नक अपने ओहदे की मर्यादा के बारे मे सचेत है। वह बोला, 'नयी बीवी के लिए अब दिलचस्पी नही है, मिस्टर इलियट। मैं आप ही पुराना पड़ गया हूँ; आधी जिंदगी तो निकल गयी। इसलिए किसी नयी युवती का मोह अब नहीं होता।'

'मेरे पंच-हाउस में चलिएगा ?' इलियट ने कहा, 'आप अब चीफ़ हैं। उस छोटी-सी मधुशाला में आपका स्वागत करने की हिम्मत नही होती।'

'ख़ैर, किसी दिन आऊंगा,' चार्नक ने योंही जवाब दे दिया।

गवर्नर स्ट्रेनसैम मास्टर कार्य-मुक्त हुए, यह सुनकर चार्नक खिल पड़ा। वह आदमी बुरी तरह चार्नक के पीछे पड़ा था। हमेशा कैसे तेवर दिखाता था वह ! चीफ के पद से बरखास्त कर दूंगा ! गोया वही मालिक हो। चखिए मजा अब, गये यहाँ से। नौकरी की पाँच साल की मियाद पूरी होते ही कंपनी ने उसे छुट्टी दे दी। इसके पीछे असली कारण थे— उसका हमेशा रौब दिखाना, गरममिजाजी और ग़फ़लत। जॉब चार्नक से उसकी दुश्मनी को भी कंपनी बरदाश्त नहीं कर सकी।

चार्नक जानता है, अब विन्सेंट की बारी है। कंपनी ने तो खोलकर लिख दिया था, दूसरे एजेंटों को बरखास्त करना हो तो वह भी मजूर है, लेकिन चार्नक कासिम बाज़ार का चीफ जरूर बनेगा। अपनी शोहरत और प्रभाव से चार्नक पुलकित हुआ। वह जानता है, उसकी ताक़त का मूल स्रोत कहाँ है। कंपनी के उच्चाधिकारियों को वश में करने का सहज जादू उसे मालूम है। सोने का डंडा और चाँदी का डंडा। सोना-चाँदी, शोरा-रेशम, टस्सर, मलमल, माल-मसाला मिलने से ही कंपनी के अफसर बस में आ जाते हैं। धन-दौलत की इस भूख को मिटाओ और अपना रौब-रुतबा बढ़ाते चलो।

चार्नक ने गद्गद होकर बीवी से कहा था, 'एंजेला, मेरे सम्मान, मेरी शोहरत पर नाज नहीं होता है ?'

'बेशक होता है, अग्नि,' बीवी ने जवाब दिया, 'तुम पर ही तो मुझे गर्व है। तुम और बड़े होगे, और—और। मैं रात-दिन ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ। फिर भी कभी-कभी कलेजा धड़कता है।'

'क्यों ? तुम्हें किस बात का डर है ?'

'हमारी नीति-पुस्तकों में आया है—पुरुषस्य भाग्यं...। पुरुष के भाग्य को देवता भी नहीं जानते। आदमी की क्या बिसात ?'

'यह आशंका तुम्हारी नाहक ही है, एंजेला।'

बीवी को भरोसा देता, पर चार्नक मन-ही-मन डरता भी है। कंपनी के ऊपरवाले अधिकारियों की सनकों का कोई ठिकाना नहीं। गवर्नर मास्टर को ही देखें—संभव है कि वह चार्नक का विरोधी हो, मगर किस निर्ममता से उसे अवकाश लेने पर मजबूर होना पड़ता, हालांकि उसी मास्टर ने एक दिन शिवाजी के हमले से सूरत की कोठी को बचाया था।

'लेकिन हमारे पुण्यग्रंथ में क्या कहा गया है, जानते हो, अग्नि ?' बीवी ने कहा, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।'

यह क्या बोल गयी ? चार्नक को कौतूहल हुआ।

यह देव-भाषा संस्कृत है। ब्राह्मण की बेटी ठहरी, थोड़ी-बहुत सीख ही रखी थी।

'मतलब क्या हुआ इसका ?'

चार्नक की बीवी ने गीता के उस श्लोक की व्याख्या की।

'ब्राह्मण लोग बड़े भाग्यवादी होते हैं,' चार्नक ने कहा, 'हम काम करते हैं फल की उम्मीद से। फल के बिना कर्म के प्रति उत्साह क्या ? अगर फल की उम्मीद न रखें तो कर्म के लिए प्रेरणा कहाँ से मिलेगी ?'

ज़रूरी डाक में पत्र आया। साथ में बादशाह औरंगजेब के फ़रमान की नक़ल। इतने दिनों की कोशिश कारगर हुई। बादशाह ने कंपनी को व्यापार की इजाजत दे दी। ये सिर्फ़ सूरत में अंगरेजों की ओर से मुग़लों

को शुल्क देंगे—हर माल पर दो रुपया सैंकड़ा। जज़ियाकर डेढ़ फीसदी। आगे से केवल सूरत बंदरगाह मे ही कुल साढे तीन रुपया सैंकड़ा शुल्क देना होगा। अँगरेज़ों को कही भी कर के लिए कोई तंग नही करेगा।

हुगली मे कंपनी की कोठी में महोत्सव मनाया गया। उस उत्सव की उमंग कासिम बाज़ार तक भी पहुँची। कंपनी के कर्मचारी खुशी से बेहाल हो रहे थे। जुलूस, नाच-गाना, बाजे-गाजे, खाना-पीना, बंदूको की आवाजें। कासिम बाज़ार कोठी आनंद से मुखरित हो उठी। प्रतिद्वंद्वी डच व्यापारियों का चेहरा उतर गया। बंगाल के सूबेदार शाइस्ता खाँ के अनुचर दब गये।

राय बालचंद्र—अँगरेज़ जिसे बुलचांद कहते थे—पहुँचा हुआ आदमी है। नवाब का कर्मचारी है। काम उसका है कर वसूल करना। बेहद सयाना है, लेकिन उससे भी ज्यादा है रिश्वतखोर।

उसने पहले तो यकीन ही नही करना चाहा कि बादशाही फ़रमान की बात सच है। वह बोला, 'यह जालसाज़ी नही है, धोखेबाज़ी नही है, इसका सबूत क्या है? पहले आप इस बात का जवाब दे लीजिए, तब नाव छोड़ूंगा।'

चार्नक ने दृढता से कहा, 'हो सकता है यह फरमान की नकल हो, परंतु दीवान की सील-मोहर? आप भी नहीं पहचानना चाहते?'

बुलचांद ने कहा, 'पहले नवाब का हुक्म आये, तब आपकी बात को मानूंगा।'

चार्नक उखड़ गया। 'आपकी हिम्मत तो खूब है! आप दिल्ली के हुक्म की उदूली कर सकते हैं।'

'साहब, दिल्ली बहुत दूर है,' बुलचांद ने व्यंग्य से कहा, 'ढाका करीब पड़ता है।'

'हम बादशाह के सामने नालिश करेंगे,' चार्नक ने बिगड़कर कहा।

'तब तो हमारी गरदन जायेगी!' बुलचांद ने फिर व्यंग्य किया, 'अब काम की बात कीजिए, कितना दे रहे हैं?'

'क्यों दूंगा?' चार्नक ने कहा, 'बादशाह ने सूरत के अलावा सब

जगह बिना शुल्क दिये व्यापार करने का हमें अधिकार दिया है।'

'वह तो फ़रमान में लिखा है। लेकिन मुझे कुछ नहीं मिलेगा तो मैं भी रेशम से लदी नाव नही छोड़ूँगा।'

उधर बालेश्वर मे 'इंडिया मैन' इंतज़ार कर रहा है। इस समय नाव नही भेजी गयी तो इस साल का जहाज़ नहीं पकड़ा जा सकेगा। लाचार चार्नक ने पूछा, 'आपका अनुचित दावा कितनी रक़म का है ?'

'सरकार के लिए हज़ार रुपये और मेरी दस्तूरी पांच सौ।'

'ख़ैर, यह मैं अपनी जेब से ही दूंगा,' चार्नक ने कहा, 'लेकिन याद रखिए बुलचाँद, शोषण की भी एक सीमा होती है।'

'पहले रुपया तो निकालिए, फिर जितना जी चाहे, गाली-गलौज कर लीजिएगा,' बुलचाँद ने निर्लज्जता से कहा।

चार्नक ने मान लिया, आखिर रुपयों का बंदोबस्त करना ही होगा।

बँगले पर लौटा, तो मोतिया आगबबूला हो रही थी।

'साहब, तुम इसका कोई किनारा करो।'

'किस बात का किनारा ?'

'बुलचाँद के आदमियों ने आज हम लोगों का वह अपमान किया जैसे कभी नही हुआ। बादशाह ने फ़रमान दिया है। हम लोगों को कितनी खुशी हुई। सोचा, यों ही ख़ुशी मनाएँ ? देवता को पूजा-सामग्री चढ़ाना चाहिए। यह सोचकर दो राजपूतों को साथ लेकर हम दोनों बहनें पालकी से नदी-किनारे के शिवालय मे गयी, पालकी मंदिर के सामने रुकी। वहाँ बुलचाँद का नायब था। उसने तुम्हारी पालकी देखते ही हमे पहचान लिया। और, राजपूतों से गाली-गलौज करने लगा। कहा, शर्म नही आती तुम्हे, फ़िरंगियो का नमक खाते हो और फिरंगी की बीवियों को लेकर शिवालय मे आये हो ? मंदिर अपवित्र हो जायेगा। लौटा ले जाओ पालकी। बहन तो डर गयी। बोली, चलो दीदी, लौट चलें। मैंने झिड़क दिया। जब आ गयी हैं तो पूजा किये बिना लौट जाने से साहब का अमंगल होगा। मैं ज़बरदस्ती मंदिर में चली गयी। पुजारीजी तो

दक्षिणा पाकर खुश हो गये। मगर बुलचांद के आदमी हम दोनों को भला-बुरा कहने लगे, राजपूतों को मारा-पीटा भी।'

जॉब चार्नक को जैसे क्रोध से आग लग गयी। लेकिन बुलचांद को सबक़ सिखाना उसके बूते से बाहर है। क्षुब्ध मन से बोला, 'अब मंदिर मत जाना। क्या ज़रूरत है झमेला बढ़ाने की?'

कोठी के आनन्द-प्रमोद में भी चार्नक अनमना हो गया। पंच के लिए जीभ ललचायी। जॉन इलियट का न्योता था। सो पालकी-चपरासी बिना साथ लिये वह अकेला ही निकल पड़ा।

अँधेरा रास्ता। शहतूत के खेतों के पास से गंगा की ओर चला गया है 'ओल्ड इंग्लंड' पंच-हाउस का रास्ता। चार्नक को कुछ-कुछ याद पड़ रहा था। महीने-भर के लगभग हुआ, वह कासिम बाज़ार आया है। चीफ का रुतबा रखते और फ़र्ज़ पूरे करते-करते ही दिन निकल गये। आज इसीलिए अकेले रास्ता चलने में अच्छा लग रहा है। एक दिन ऐसा था, जब अकेलेपन का एहसास ज़हरीला हो उठा था। अब बीच-बीच में अकेला रहने मे अच्छा ही लगता है। वह अपना लेखा-जोखा आप ही लगाने लगा। पाँच बरस की नौकरी पर वह कासिम बाज़ार आया था। उसके बाद चौथाई सदी बीत गयी। अभी तक चार्नक उसी पुराने कासिम बाज़ार मे है। लंदन का धुआँता आसमान धुंधला हो आया होगा। इधर हिंदुस्तान की मिट्टी की गंध अच्छी लगने लगी है, सोंधी-सोंधी। हवा में टटके फूलों की खुशबू। अँधेरे प्रकाश मे तारे मोतियों जैसे चमचमाते हैं।

लंदन के लिए कभी-कभी जी ललक उठता है। टेम्स की छाती पर बडी-बड़ी नौकाएँ क्या अभी भी वैसे ही चंचल हैं? 'इंडिया मैन' के मस्तूल अभी भी वैसे ही भीड किये हुए हैं? नदी के किनारे तंदुरुस्त बच्चे क्या अभी भी उसी तरह आपस में लड़ते-झगड़ते हैं?

कंपनी—कारोबार—एंजेला—मोतिया—बच्चियाँ! लंदन की टेम्स नदी का किनारा दूर खिसक गया। नज़रों के आगे गंगा-तट की नावों की रोशनी चमक उठी। नाव-बजरे की भीड़। माँझी-मल्लाह रसोई बनाने में व्यस्त हैं।

अपने मन मे डूबा चल रहा था चार्नक। पंच-हाउस इतनी दूर तो

नहीं है कोठी से ? क्या राह भूल बैठा ? ठीक ही तो है। वह रही डचों की कोठी, गोदाम। वह ठीक उलटी राह चला आया है। इस रास्ते से मंजिल दूर है, नदी की राह जाने से नजदीक।

'ऐ मांझी, भाड़े पर चलोगे ?'

एक छोटी-सी डोंगी पर दो आदमी खाना खा रहे थे।

'क्यों नहीं साहब ? आइए नाव पर। जरा देखिए, कीचड़ से बच कर आइए।'

चार्नक नाव पर चढ़ा। चलो, 'ओल्ड इंग्लैंड' पंच-हाउस।'

डोंगी में रोशनी जल रही थी।

'कौन हो तुम ?'

'मैं हूँ अनंतराम। हुजूर का गुलाम।'

'क्या करते हो ?'

'कंपनी का नौकर था। फ़िलहाल बेकार हूँ।'

'नौकरी क्यों छूटी ?'

'साहब ने रघु पोद्दार की बात शायद सुनी होगी। मैंने ही उसे मारा था।'

याद आ गया। रघु पोद्दार कंपनी का क़र्जदार था। अनंतराम ने उसे ऐसा पीटा कि मारे शर्म के वह जहर खाकर मर गया। नेटिव लोग बिगड़ उठे। कंपनी को तेरह हजार रुपये का दंड भरना पड़ा था।

'मैं हुकुम का बंदा हूँ,' अनन्तराम ने कहा, 'विन्सेंट साहब ने मारने का हुक्म दिया था। मैंने रघु को डंडे से पीटा। मास्टर साहब के फ़ैसले में विन्सेंट साहब तो बेक़सूर बनकर छूट गये, मैं बरखास्त कर दिया गया।'

विन्सेंट का नाम सुनते ही चार्नक खीज गया। अनंतराम से सहानुभूति हुई। वास्तव से इस बेचारे के साथ अन्याय हुआ है।

'ठीक है, कोठी पर मुझसे मुलाक़ात करना।'

पंच-हाउस की रोशनी झलकी। अभी भी वहाँ हुल्लड़ हो रहा था। अँगरेजी गीतों की धुनें सुनायी पड़ रही थी। नारी-कंठ भी सुन पड़ रहा है—उमगता सुर।

डोंगी घाट पर लगी। चार्नक किराया देने लगा। अनंतराम ने लेने

से इंकार किया। बोला, 'हम यहाँ आपका इंतजार करेंगे, साहब।'

'कोई ज़रूरत नहीं। मैं पैदल ही लौट जाऊँगा।'

'राह-बाट ठीक नहीं है। अकेले मत आया-जाया कीजिए।'

'शुक्रिया। तुम मुझसे मिलना।'

चार्नक के अचानक ही चले आने से पंच-हाउस में आश्चर्य छा गया। इलियट था नहीं, लेकिन जेम्स हार्डिंग था। उसी ने चार्नक का सादर स्वागत किया।

जो स्त्री गा रही थी, वह दौड़ी-दौड़ी आयी।

उम्र का अंदाज़ करना कठिन। खूब चटकदार औरत। सुर्ख लाल, फ्रॉक के नीचे उठी हुई छातियों की रेखाएँ स्पष्ट। अधमैला रंग और बादामी चोटी। नीली आँखों की धूसर पुतलियाँ मानो कुछ-कुछ पहचानी-सी। उसके अंगों की बनावट में जैसे एक वन्य माधुर्य हो।

'मैं हूँ मेरी एन,' वह युवती बोली।

चार्नक की पुरानी स्मृति जाग उठी। बचपन में इसी एन ने चार्नक से लिपटकर प्रेम-निवेदन किया था। उस युवती को भी वह घड़ी याद हो आयी। उसके होंठों पर एक मुस्कराहट खेल गयी।

'इतनी बड़ी हो गयी हो तुम!' चार्नक ने बुजुर्गों के लिहाज़ से कहा, "इलियट ने तुम्हारे रूप के बारे में कुछ अतिरंजना नहीं की थी।'

'आप मेरे पहले प्रेमी हैं,' वह बोली।

चार्नक हँस उठा। 'बच्ची का प्रेम मैं अभी भी नहीं भूला हूँ, एन।' उसके बाद प्रसंग बदलने के लिए कहा, 'रुक क्यों गयी, सुनाओ अपना गाना।'

'ऐसा हो सकता है भला? पहले आपका स्वागत कर लूँ,' मेरी एन ने कहा।

पंच का पात्र लेकर उसने अपने हाथ में लाये जग से शराब ढाल दी।

पंचमेल के खरीदारों की भीड़। जाति-जाति के लोग। यूरोपीय, दोगले भी। फिरंगियों के पंच-हाउस में नेटिव लोग घुसने की हिम्मत नहीं करते।

जेम्स हार्डिंग ने कहा, 'मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि आप जैसे

'बड़े आदमी पंच-हाउस में क़दम रखेंगे।'

'बड़ा किस बात मे हूँ मैं ?' चार्नक ने विनय दिखायी, 'मैं यह भूल नही गया हूँ कि किस प्रकार मैं एक-एक कदम आगे बढ़ा हूँ।'

'आप हमारे आदर्श हैं,' एक दूसरे अँगरेज युवक ने कहा।

कितने नये चेहरे। आजकल बहुतेरे अँगरेज आ गये हैं। चार्नक के शुरू के दिनों में थे ही कितने अँगरेज़ !

हार्डिग ने परिचय कराया। छोकरे का नाम नेलर है। सिल्क के कारखाने में एप्रेंटिस होकर आया है।

तुम लोगों से मिलना-जुलना चाहता हूँ,' चार्नक ने कहा, 'मैं चीफ़ हूँ, मगर मैं आदमी भी हूँ। स्वजाति के नवयुवकों को देखकर बड़ी खुशी होती है।'

नेलर ने कहा, 'पहले का चीफ़ तो हमे आदमी ही नहीं समझता था।'

मेरी एन ने एक अँगरेज़ी गाना शुरू किया—बड़ी मधुर आवाज ! युग के बाद नारी-कंठ से अपनी जबान का गीत सुना। खूब अच्छा लगा।

मेरी एन और हार्डिग मिलकर नाचने लगे। नेलर हाथ से ताल देने लगा। नाच खासा जम गया। चार्नक भी ताली बजाने लगा।

नाच खत्म हुआ कि हार्डिग चार्नक की टेबिल के पास चला आया। 'नाच कैसा लगा आपको ?'

'खूब अच्छा।'

'सर, मुझे कोई काम-काज दीजिए, नही तो नाच के ये पाँव निकम्मे हो जायेंगे।'

चार्नक खुश है। ऐसे उत्साही युवकों की दरकार है उसे।

'ठीक है, तुम मेरे पास आना। मेरा जो निजी कारोबार है, उसी में काम करना।'

जेम्स हार्डिग गद्‌गद हो गया।

समय अच्छा कटा। रात बढ़ने लगी। चार्नक ने उन लोगों से विदा ली।

हार्डिग और नेलर चीफ के पीछे आने लगे।

'नही-नही, तुम लोग मौज करो। रास्ता मेरा जाना हुआ है।' चार्नक

अकेला ही निकल पड़ा। अँधेरा है। फिर भी इस बार वह रास्ता नहीं भूलेगा।

बगल की झाड़ी में फुसफुसाहट की आवाज़ हुई। चार्नक सहमा। साँप है क्या ? या साँप से भी कुछ भयकर ?

नारी की खिलखिलाहट भरी हँसी !

'कौन ?'

'आपकी पहली प्रेमिका, मिस्टर।'

'मेरी एन ? अँधेरे में क्या कर रही हो यहाँ ?'

'पंच हाउस से खिसक आयी। आपकी राह देख रही थी।'

'क्यों ?'

'यह जानने के लिए कि आप क्या मुझे पसंद नही करते ?'

'पसद क्यो नही करूँगा ? कितनी सुंदर हो गयी हो तुम !'

'तो मुझे आप इलियट से खरीद लीजिए।'

'मेरे पास बहुतेरे अर्दली व चपरासी पहले से ही है, किसी क्रीतदासी की जरूरत नही है !

'आप प्यार नहीं न करते, मुझे !'

'प्यार की बात बेकार है। तुम जानती हो, ब्याह कर चुका हूँ। अपनी पत्नी को मैं खूब प्यार करता हूँ।'

'भला यह खबर भी मैं नही रखती ? जेंटू विधवा ने आप पर जादू कर रखा है। इसलिए इंगलिश गर्ल की ओर आप पलटकर भी नही ताकते।'

यह दोगली युवती अपनी रगो मे अँगरेज़ी खून के अभिमान को नही भूली है ! चार्नक ने कहा, 'क्या बचपना कर रही हो मेरी एन, जाओ, लौट जाओ।'

'मैं लौट जाने के लिए नही आयी हूँ, मिस्टर। इतने दिनों से आपकी बाट जोहती रही। आपको कभी भूल नही पायी। मुझे एक चुम्बन दो। मुझे आलिंगन मे बाँधो। मुझे...।'

'तुम शराब के नशे मे हो। तभी ऐसा प्रलाप कर रही हो।'

'मुझे शराब ने नशे में नहीं डाला, डाला है आपने।' मेरी एन ने व्याकुल होकर चार्नक का हाथ पकड़ लिया। खीचने लगी उसे। 'चलो,

आज की रात मेरे साथ बिताओ।'

जॉब चार्नक ने हाथ छुड़ा लिया। दृढ़ता से आदेश दिया, 'जाओ!'

एन साँपिन-सी फुफकार उठी, 'मैं तुम्हारी बीवी का खून कर दूँगी। गोली से उसे मार डालूँगी। फिर तुम्हें छीन लाऊँगी, मिस्टर।'

बात से बात बढ़ती है। पागल के प्रलाप पर कान देना बेकार है। खामखा का तर्क-कुतर्क बंद हो। ठुकराई हुई एन रोने लगी। चार्नक तेज़ी से अपनी कोठी की ओर चला। उसे लगा, भारी बूटों की आवाज़ कानों में आ रही है। कोई शायद उन दोनों की बात छिपकर सुन रहा था। तो सुने!

बादशाही फ़रमान बेकार हुआ। भाषा के दाँव-पेंच से शाइस्ता खाँ ने फ़रमान की ऐसी व्याख्या की कि सूबा बंगाल में भी अँगरेजों को साढ़े तीन रुपया सैकड़ा के हिसाब से शुल्क देना होगा। इसमें जजिया कर शामिल है। जजिया कर सिर्फ हिंदुओं पर ही नहीं है, अँगरेज भी उससे बरी नहीं है। बंगाल लौटते ही शाइस्ता खाँ ने अँगरेजों से जजिया कर की माँग की। केवल राहदारी, पेशकश और फरमाइश जैसे कर माफ़ हुए हैं। वह भी नाममात्र को। नवाब के कर्मचारी मौक़ा पाते ही डरा-सताकर कर वसूल लेते हैं।

बुलचाँद ने जॉब चार्नक को बुलवाया। ललकारकर नवाब का हुक्म सुना दिया। कहा, 'दूसरे फिरंगी बनिये कर दे रहे हैं अपनी इच्छा से, और आप नहीं देंगे, यह हो सकता है भला?'

'वे अनधिकृत व्यापारी हैं। ऑनरेबुल ईस्ट इंडिया कंपनी से उनका कोई ताल्लुक नहीं।'

बुलचाँद ने कहा, 'हमें कंपनी से कोई मतलब नहीं। हमें सिर्फ रुपये से मतलब है। जो रुपया दें, वही हमारे मित्र हैं।'

'इस नाजायज़ लोभ का नतीजा किसी दिन आपको भी भोगना पड़ेगा,' चार्नक ने कुछ सख्त आवाज़ में कहा।

'जैसे पाप का फल आपको भी एक दिन भोगना पड़ेगा,' बुलचाँद ने

जवाब दिया।

'मतलब ?' चार्नक ने जानना चाहा।

'हिंदू मंदिरों को फ़िरंगी और उनकी रखैलें कलुषित करें, इस पाप को भी हम बरदाश्त करें ?' बुलचाँद का स्वर कठोर हो आया।

'राय बुलचाँद, आपको अगर ज़रा भी विवेक होता, तो आप उन महिलाओं के बारे में भद्रता से बोलते। आप लोगों के पत्थर की उन प्रतिमाओं की वे अभी भी पूजा करती हैं, इसीलिए मंदिर गयी थीं। आपके नायब ने उन लोगों से गाली-गलौज किया है, आपने भी उनका अपमान किया है, इसलिए कि आप जानते हैं, हम बनिये हैं। हममें शक्ति भी हो तो साहस नहीं होता। लेकिन मुगल बादशाह ने विश्वनाथजी के मंदिर को तोड़कर मस्जिद बनवा दी, मथुरा में केसरबाई के मंदिर को तहस-नहस कर दिया, उसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने की हिम्मत आपमें नहीं है, बल्कि पैसों के लोभ से बादशाह की गुलामी करते हुए अपनी जाति, अपने धर्म का सर्वनाश होता देखते जा रहे हैं। छिः !'

बुलचाँद के मानो अंतर में चोट लगी। 'आह, आप इतना गुस्सा क्यों हो रहे हैं ?' वह बोला, 'मैं तो आपसे मज़ाक कर रहा था।'

'महिलाओं से मज़ाक करने की मर्यादा भी शायद आप लोगों के नीतिशास्त्र में है !'

'भूल हो गयी, मैं स्वयं ही जाकर अपने नायब की ओर से आपकी बीवी से माफ़ी माँग लूँगा। सुना है, आपकी ब्राह्मण-पत्नी बहुत ही सुंदर हैं।' बुलचाँद की लोभी आँखें चमक उठीं, 'उसके रूप का दर्शन करके धन्य होऊँगा।'

'मेरी पत्नी आपके सामने नहीं आयेगी।'

'फिरंगियों की बीवियाँ हिंदू-मुसलमान सरीखी परदानशीन कब से हो गयीं ?'

'जब से बुलचाँद जैसा बेहया माँ के गर्भ से धरती पर आया।'

पराई बीवी को घर से निकालने के बहुतेरे उपाय बुलचाँद को मालूम हैं।

और चार्नक को भी पता है कि अपनी बीवी की इज्ज़त किस तरह से

रखी जानी चाहिए। ज़रूरत पड़ने पर जान तक लेने और देने में उसे हिचक नहीं होगी।

'खैर, इन फिजूल की बातों को छोड़िए। सात दिनों के अंदर सरकारी शुल्क और जजिया कर दाखिल नहीं हुआ तो शोरा और रेशम से लदी आपकी नावें ज़ब्त कर ली जायेंगी। इसके अलावा मकसूदाबाद-कासिम बाज़ार में ढिंढोरा पिटवा दूंगा कि अँगरेज़ कंपनी के साथ कोई कारोबार न करे।'

'सात दिनों में रुपये दाखिल हो जायेंगे, मगर हमारे प्रतिवाद के साथ।'

चार्नक बड़ी सावधानी से चल रहा है। एक तरफ कंपनी के कर्मचारियों में गुटबंदी, दूसरी तरफ सरकारी अमले की ऐसी ज़ोर-ज़बर्दस्ती। उसके ऊपर अपने परिवार तथा व्यापार की दुश्चिंता। सुदर कहार पटना के कारोबार का बक़ाया वसूल लाया है। गुलाम बख़्श और सेठ शिवचरण ने पाई-पाई चुका दी है। एक सिर्फ हीराचंद ने डेढ़ हज़ार रुपये हड़प लिये। फिर भी मोटी रकम चार्नक के हाथ में आ गयी। मकसूदाबाद के विभिन्न कारबारों में उसने उन रुपयों को लगाया। कोठी के बहुतेरे कर्मचारियों से दोस्ती होने के नाते हार्डिंग अक्सर कंपनी की पब्लिक टेबिल पर भोजन करता है। यह नियमानुकूल नहीं है, फिर भी चार्नक ध्यान नहीं देता।

अनंतराम समझदार आदमी है। पहले कंपनी का कर्मचारी था। चार्नक बहुत बार उससे राय-मशविरा करता। कंपनी के कारोबार का कुछ भार उस पर भी डाला है। अनंतराम को उसकी दस्तूरी मिलती है।

मोतिया का धरम-करम ज्यादा बढ गया है। चीफ के बँगले में गुसाईं-बाबाजी लोग ज्यादा आने-जाने लगे हैं। खोल[1]-करताल के साथ उनका भजन-कीर्तन मोतिया को मुग्ध करता है। चार्नक को यह सब पसंद नहीं। उसके सहयोगी अँगरेज़ कर्मचारी खीझते हैं। लेकिन मोतिया की ख़्वाहिश के खिलाफ कुछ कहना-करना चार्नक के वश की बात नहीं।

चार्नक की बीवी प्रायः बच्चियों में व्यस्त रहती है। सेहत अभी ठीक है। मातृ-पद ने उसके मनोहर रूप पर, अनोखी कमनीयता पर एक प्रलेप

१. मिट्टी का बना मृदंग।

लगा दिया है। चार्नक के प्रति उसका प्रेम मानो भरी हुई गंगा की धारा जैसा शात और गंभीर है।

मेरी बड़ी ही चंचल बच्ची है। उसने अँगरेज़ी, फ़ारसी, हिंदी, बगला, उर्दू—कई भाषाओं में बोलना सीख लिया है। अक्सर वह भाषा की खिचड़ी तैयार करके लोगों के हँसने का मसाला जुटा देती है।

एलिज़ाबेथ थोड़ा-थोड़ा चलना सीख रही है।

एंजेला और मोतिया—दोनों ही की साध है कि अब एक बेटा हो। उनके खयाल मे पुत्र कन्या की अपेक्षा ज्यादा काम्य है। पुत्र नरक से त्राण दिलाता है। बेटे की आशा मे उन दोनों ने पूजा-अर्चन शुरू कर दिया है। पंचपीर की पूजा इस इलाके में नही चलती। इसी उद्देश्य से मोतिया ने मुरगे की बलि चढाई। मगर उनकी आशा के फलवती होने का कोई लक्षण नही दिखायी देता।

निकम्मे बुलचाँद की बकवास को चार्नक ने सहज भाव से नही लिया। वह लोभी-लंपट हर काम मे कुशल है। इसलिए चार्नक ने राजपूत रक्षकों की संख्या बढा दी। दो बेकार बलवान पुर्तगाली नौजवानो को अपना अंग-रक्षक नियुक्त किया। वे सदा बीवी की पालकी पर पहरा देते।

हुगली के उच्चाधिकारी विन्सेंट से अनबन चलने लगी। विन्सेंट ने भरपूर कोशिश करके भी कंपनी की जरूरत के मुताबिक लाख जुटाकर भेजने में कामयाबी नही पायी। कंपनी के मालिक लोग खीझे। उन लोगों ने सीधे चार्नक से कहा। चार्नक ने जुगाड़ करके अच्छी किस्म का लाख बहुत सस्ते दामों में खरीदकर जहाज़ मे भेज दिया। ऊपर वाले अधिकारी बेहद खुश हुए। विन्सेंट की ईर्ष्या और बढ गयी।

संभवत: रात-दिन चार्नक को तंग करते रहने की नीयत से विन्सेंट ने एलेन कैचपुल की बदली कासिम बाज़ार कर दी। आते ही उसने चीफ़ के बँगले मे बाबाजी लोगों के भजन-कीर्तन का खुलेआम विरोध किया। चार्नक की बीवी अपनी रोज की पूजा में शंख फूंकती है। कैचपुल उसे भी बरदाश्त करने को तैयार नही। इस नाहक के टटे से बचने के लिए चार्नक ने वहाँ से कुछ हटकर एक एकात जगह में चीफ के लिए नया बँगला बनवाने का हुक्म दिया। कैचपुल ने इसका भी विरोध किया। वह बार-बार यह कहने

लगा कि हुगली के एजेंट और कौंसिलर की इजाजत के बिना कंपनी के पैसे से यह विलास-भवन बनवाना गलत है। उसके इस विरोध को अनसुना करके चार्नक ने गंगातट पर पक्के नये बँगले का निर्माण कार्य जारी रखा। नेटिव कारीगरों की मेहनत और चार्नक के निर्देश से कुछ ही समय में प्रशस्त बँगला बनकर तैयार हो गया। विलास की साज-सामग्री से नये बँगले को सजाया गया। बड़ी धूमधाम से चार्नक ने गृह-प्रवेश का उत्सव संपन्न किया।

अब कैंचपुल जेम्स हार्डिंग के पीछे पड़ा। हार्डिंग नियम के खिलाफ़ कंपनी की पब्लिक टेबिल पर खान-पान करता है। उसका यह विरोध नियम-सगत था। अपने मालिक चार्नक के समर्थन से हार्डिंग ने कैंचपुल और उच्चाधिकारी विन्सेंट को भद्दी गालियाँ दीं।। प्रतिद्वंद्वी भी कुछ कम नहीं निकला। गरमागरम बहस के बाद हाथापाई की नौबत आ पहुँची। साथियों ने किसी प्रकार बीच-बचाव किया। कैंचपुल ने चार्नक के पास हार्डिंग के खिलाफ शिकायत की, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। हार्डिंग ने पहले की भाँति ही पब्लिक टेबिल पर खान-पान जारी रखा।

कैंचपुल खुलेआम चार्नक की झूठी-सच्ची शिकायतें करता फिरा।

चार्नक ने उसका प्रतिवाद नहीं किया। मन में सोचा, उसके समर्थक विन्सेंट को ज़रा रुखसत हो लेने दो, मैं बे ऑफ बंगाल का सर्वेसर्वा हो लूँ, फिर इस मुँहज़ोर ढीठ युवक को सबक सिखाऊँगा। लेकिन चार्नक की यह इच्छा पूरी नहीं हुई। मैथियस विन्सेंट बड़े अपमान के साथ हटाया गया, लेकिन चार्नक हुगली के एजेंट और बे ऑफ बंगाल के चीफ का पद नहीं पा सका। कंपनी के कोर्ट ऑफ़ डाइरेक्टर्स ने अपना पिछला वायदा नहीं रखा। मैथियस विन्सेंट की जगह पर चार्नक नहीं, डाइरेक्टरों के अन्यतम विलियम हेजेस नियुक्त किये गये। कुटिल-सी भद्रता दिखाते हुए कंपनी ने सफ़ाई दी—हेजेस की नियुक्ति चार्नक के प्रति विश्वास और निर्भरता की कमी के कारण नहीं, बल्कि निहायत ही ज़रूरी अन्य आधारों पर हुई है। साथ ही यह भरोसा भी दिया कि मिस्टर हेजेस के बाद चार्नक को ही वह पद दिया जायेगा।

उम्मीद पर पानी फिर जाने से चार्नक मायूस हुआ। विन्सेंट गया,

खैर, कोई बात नहीं, लेकिन चार्नक की उम्मीद पर पानी फिरा, इससे कॅचपुल के गुट ने खुशी मनाई। हार्डिंग को उन लोगों ने धमकी दी, 'आने दो नये एजेंट को, उनसे कहकर तुम्हें कंपनी की पब्लिक टेबिल से भगाता हूँ।'

चार्नक टूट-सा गया। डाइरेक्टरों से ऐसे विश्वासघात की उसने आशा नहीं की थी। तबीयत की नासाजगी के बहाने दो दिन उसने कोठी का कोई काम नहीं किया।

एंजेला ने कहा, 'अग्नि, तुम बहुत थक गये हो। आराम की जरूरत है तुम्हें।'

चार्नक ने क्षुब्ध होकर कहा, 'अब आराम—आराम का ही मौका आ गया है। मैं यह नौकरी ही छोड़ दूंगा।'

'तुम पागल हुए हो, अग्नि,' एंजेला ने कहा, 'कितनी बड़ी-बड़ी मुसीबतें तुम पर आयी हैं और आगे भी आयेंगी। इससे इतना मायूस होने से चलेगा? अजी, बड़े पेड़ों को ही तो अंधड़ों की मार लगती है। बहुत दिन से तुम्हें नितांत अकेले में नहीं पाया है; चलो, हम दोनों बजरे से कुछ दिन घूम आयें।'

'बच्चियाँ कहाँ रहेंगी?'

'दीदी के पास।'

'हाँ-हाँ, चलो एंजेला, कोठी की दूषित आबोहवा से भागकर दो दिन बाहर रह आऊँ।'

चार्नक ने एक छोटा-सा बजरा किराये पर लिया। कोठी के किसी आदमी को साथ में नहीं लिया। मोतिया के बहुत आग्रह पर केवल सुंदर कहार को साथ ले लिया।

बजरे में तीन दिन मानो सपने-से बीत गये। कैसा सुख-स्वप्न! एंजेला की इतनी निकटता, मधुर प्रेम-कूजन और उष्ण साग्रह मिलन ने चार्नक के थके, उदास चित्त को पुनरुज्जीवित किया। गोया उसके लिए यह दूसरी मधुयामिनी हो!

बालू के टापू पर खेमा डाला उन्होंने। हलकी चांदनी रात। शीतल-

मंद-समीर। निश्चल, निष्कंप प्रकृति उनके इस घनिष्ठ साहचर्य की गवाह बनी।

शायद गंगा की छाती पर हलके-हलके डोलते हुए बजरे के छोटे-से प्रकोष्ठ के सीमित दायरे ने उनके सुख-सान्निध्य को गाढ़ा कर दिया था।

चार्नक आशा टूटने की जलन, पदलिप्सा के दंशन को भूल-सा गया। एंजेला की गोरी बाँहों में बँधकर, तेल लगे चिकने केशों के सुवासित अरण्य में मुँह छिपाकर उसके वक्षस्थल की कोमलता का अपने वक्ष से अनुभव करके चार्नक ऊँची आशा के निर्दय नाश को भूलने लगा।

साँझ हो चली थी। बजरे के मल्लाह रात की रसोई के लिए लकड़ी लाने गये थे। बजरे की छत पर तकिये के सहारे गलीचे पर अधलेटा पड़ा था चार्नक, एंजेला सामने बैठी थी। वह सुर में गंगास्तोत्र गा रही थी—

देवि सुरेश्वरी भगवति गंगे।
त्रिभुवन तारिणी तरल-तरंगे।

चाँदी की नगाली से चार्नक खुशबूदार अंबरी तबाकू में धीरे-धीरे दम लगा रहा था। तंबाकू की खुशबू और नीला धुआँ आसमान में उड़कर लोप हो जाता था। बजरे के एक किनारे सुदर कहार का काला मजबूत शरीर गंगा के रक्तिम जल की पृष्ठभूमि में साफ दीख रहा था। दो-एक पाल-वाली नावें मंथर गति से जा रही थीं। थका-थका-सा एक डच जलयान माल लेकर निकल गया। जहाज़ का झंडा धुँधला होते-होते दूर खो गया।

चार्नक ने कहा, 'यह नदी जाकर समंदर से मिली है। तुमने समंदर देखा है, एंजेला?'

'नहीं। कैसा होता है समदर?'

''कैसे बताऊँ? विशाल...नीला...।'

'शरत् के इस आकाश से भी?'

'ज़रूर। और सफेद बादलों जैसा उसका फेन। देखोगी समंदर?'

'बेशक देखूंगी। तुम्हारे साथ।'

'तुम सात समंदर पार चलोगी, जहाँ मेरा मुल्क है?'

'हूं। जो तुम्हारा, वही मेरा भी मुल्क है। कैसा है तुम्हारा मुल्क?'

देश की तसवीर धुँधली-सी हो गयी है। एक सदी की चौथाई हो

गयी चार्नक को देश छोड़कर हिंदुस्तान आये हुए। यहाँ के उज्ज्वल आकाश, ज्योति, हवा, नदी, फूल, पत्तो से उसकी आँखें चौंधिया गयी है।

चार्नक ने कहा, 'अपनी ही आंखों देख लेना। लेकिन जहाज पर चढ़ने मे तुम्हें डर नही लगेगा, जब ताड़-सी उछलती तरगें उसे लीलने को उछलेंगी ?'

'तुम साथ रहोगे, तो मुझे किस बात का डर ?'

एक डोंगी ने इस बातचीत में बाधा पहुँचाई। वह डोगी तड़ाक से आकर चार्नक के बजरे से लगी। बजरा काँप उठा।

मुदर कहार गाली दे बैठा, 'अबे ऐ उल्लू, अंधा है ? साहब का बजरा है, देख नही रहा है ?'

'साहब का बजरा देखकर ही तो आया,' डोंगी से किसी ने कहा।

डोगी मे पांच आदमी थे। पहनावे मे फौजी पोशाक। हाथ मे भाला।

सुदर को सदेह हुआ। बोला, 'कौन हो तुम लोग ? क्या चाहते हो ?'

उन लोगों ने बड़े कर्कश स्वर में कहा, 'हम लोग कोतवाल के आदमी हैं। बीबी से काम है।'

'बीबी से ?' चार्नक उछल उठा, 'क्या काम है ?'

'कैद करना है,' उनमें एक सरदार-से लगने वाले ने कहा, 'गिरफ्तारी का परवाना है।'

'किसका परवाना ?' चार्नक बजरे में उन लोगों के सामने आ गया।

'कोतवाल का। यह रहा साहब, देखिए। बीबी अपनी ससुराल के गहने लेकर भाग आयी है। इसी...।'

चार्नक ने परवाने को अपनी आँखों देखा। कोतवाल की सील-मुहर।

फिर उन ब्राह्मणों का षड्यंत्र ! कई साल पहले नक़द तीन हजार रुपये चुकाकर चार्नक ने पटना में इस झमेले को चुका दिया था। लोभी ब्राह्मणों ने इतने दिनो के बाद कासिम बाजार तक धावा बोल दिया।

'खबरदार !' चार्नक चिल्लाया और पलक मारते उसकी पिस्तौल सरदार की ओर तन गयी। दूसरे ही क्षण पाँच भाले उधर से चार्नक की छाती के पास तक आ पहुँचे।

सरदार ने दृढ स्वर में कहा, 'शाहब, पिस्तौल की गोली से आप एक को ही मार सकेंगे। लेकिन बाक़ी चार भाले आपका खातमा कर देंगे।'

चार्नक क्षण-भर के लिए सन्न रह गया। सरदार की ललकार ग़लत नहीं थी। अब मौत में संदेह नहीं।

तब तक एंजेला उसके पीछे आ खड़ी हुई। बोली, 'मुझे जाने दो तुम। जुर्म का जवाब मैं क़ाज़ी को दूंगी।'

'जय शंकर!' ज़ोरों की हुंकार हुई।

और उसके बाद एक क्षण-भर मानो प्रलय-सी हो गयी। कहाँ से, कैसे, चार्नक समझ नहीं पाया। ज़रा देर में ही बात समझ में आयी।

आगन्तुक जब चार्नक से उलझे हुए थे, सबसे छिपकर सुंदर कहार जाने कब बजरे की छत पर चढ गया था। साहब-बीबी पर मुसीबत आयी देखकर एक जबरदस्त हुंकार के साथ वह आगंतुकों पर कूद पड़ा। चार्नक और उसकी बीवी के बीच से होकर सुंदर का भारी शरीर तेज़ी से आगंतुकों के बीच जा कूदा। उसके शरीर के भार से डोंगी खिसक गयी। बजरे से वह कई हाथ दूर सरक गयी और अपने को सम्हाल न पाकर दो जने पानी में गिर पड़े। एक आदमी सुंदर की देह के दबाव से घायल होकर लेट गया। दूसरा सुंदर के खूंखार घूंसे की चोट से डोंगी पर ही लुढ़क गया। तब तक एक ने बिगड़कर सुंदर का काम तमाम कर देने के इरादे से भाला उठा लिया।

चार्नक की पिस्तौल गरज उठी। अचूक निशाना। भाले वाला चीख़ता हुआ छिटककर पानी में जा गिरा। मल्लाह डोंगी को लेकर भाग जाने की ताक में था, पर उसकी गरदन पकड़कर सुंदर डोंगी सहित उसे चार्नक के पास खींच लाया। पानी में गिरे हुए हमलावरों का कहीं पता नहीं था।

इस बीच चार्नक के माँझी-मल्लाह आ पहुँचे। वे पानी में गिरे हुओं को ढूंढ़ने लगे। डोंगी पर घायल पड़े दो जनों को होश आया। कमर की पीड़ा से एक आततायी का चेहरा फक हो गया था। दूसरा मुँह का लहू पोंछते हुए ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा, 'हाय अल्लाह, नाव में दानव है, यह जानता होता तो कौन साला आता? रायजी की बख्शीश लेकर क्या

जान गँवाने आया हूँ ?'

'रायजी कौन ?' चार्नक ने पूछा।

पीडा से कातर गले से उस घायल ने बताया, 'हरामज़ादा बुलचाँद। मुहर का लोभ दिखाकर साले ने जहन्नुम में ढकेल दिया।'

'यानी तुम लोग कोतवाल के आदमी नहीं हो ?' चार्नक ने पूछा।

'कोतवाल की गुलामी कौन साला करे ? हम मकसूदाबाद के जवान हैं। साले बुलचाँद ने हमे चकमा दिया कि फ़ौजी पोशाक पहनकर जाली परवाना दिखाते ही बीवी चुपचाप डोंगी में आ जायेगी। किसी के बदन पर खरोच तक नहीं लगेगी। और यहाँ साले मेरे दो दाँत उखड गये और एक हिलने लगा है।'

बुलचाँद की शैतानी चार्नक के सामने पानी की तरह साफ हो गयी। उफ, कैसा जालसाज है यह आदमी ! फिरंगी के पैसे से उसकी प्यास नहीं मिटी। अब फिरंगी की बीवी पर लोभी निगाह डाल रहा है। उसने

. . . .

उथले पानी में कीचड से मल्लाहों ने एक लहू-लुहान शरीर को निकाला—चार्नक की गोली से मरा हुआ व्यक्ति।

'हरामजादे बुलचाँद को यासीन की मौत की कैफ़ियत देनी पड़ेगी,' घायलों में से एक ने रौब से कहा।

लाश को देखकर चार्नक के जी में उथल-पुथल हुई—मैं आदमी का हत्यारा हूँ, वह चाहे आततायी ही हो। चार्नक के हाथ की पिस्तौल ने मनुष्य के लहू का स्वाद चखा है। उसकी गोली से पहली बार एक सबल शरीर धूल में लोट गया। क्षोभ, अभिमान, घृणा, खुशी—सबकी खिचडी बन गयी चार्नक के मन में।

आततायी माफी माँगने लगा।

झमेला बढाने से क्या हासिल ? चार्नक ने उन्हें छोड़ दिया। वे लोग मरे हुए साथी की लाश को डोंगी मे रखकर चले गये।

भाले से सुंदर के कंधे पर घाव लगा था। अब तक चार्नक ने यह देखा नहीं था। मशाल की रोशनी मे वह घाव दीख पड़ा; लहू बह रहा

था। चार्नक की बीवी ने स्वयं उसकी शुश्रूषा की।

सुंदर की आँखों में पीड़ा का ज़रा भी आभास नहीं—होंठों पर तृप्त हँसी की झलक थी। उसने कहा, 'मैं उस समय बहुत छोटा था, जानते हैं साहब, अपनी दीदी को मैं गुंडों के चंगुल से छुड़ा नहीं सका था। आज मैं जवान मर्द हूँ, इसलिए मैंने अपनी छोटी दीदी को बचाया। कंधे पर यह जो लगा है, वह घाव नहीं—विजय का चिह्न है।'

इस सरल-प्राण हिंदू युवक के प्रति चार्नक का मन कृतज्ञता से भर गया।

एंजेला ने कहा, 'अग्नि, बँगले को लौट चलो। कोठी के सर्जन से सुंदर का इलाज कराना होगा। जल्दी करो।'

चार्नक का बजरा कोठी की ओर लौट चला।

तीन दिन के नौका-विहार से चार्नक का मन उत्फुल्ल और ताज़ा हो उठा। एंजेला मानो सारे उत्साह का उत्स है। चार्नक अब अधीर नहीं रहेगा, हिम्मत नहीं खोयेगा। हेजेस के जाने के बाद ही उसकी पदोन्नति सही। दिन ही कितने बाक़ी है? अब तक जब वह धैर्य रख सका है तो कुछ दिन और क्यों नहीं रख सकेगा?

सुंदर कहार के लिए उसे चिंता नहीं रही। सर्जन के इलाज और दो दीदियों की शुश्रूषा से उसका ज़ख्म जल्दी से ठीक होने लगा।

चार्नक की बीवी फिर गर्भवती हुई।

विलियम हेजेस ने जॉब चार्नक को मीर दाऊदपुर बुलवा भेजा। एलेन कैंचपुल को भी। वे की कौंसिल का अन्यतम अफ़सर जॉनसन उन्हें नये अध्यक्ष से मिलाने के लिए बुला ले गया। कैंचपुल को बुलवाने में एक कारसाज़ी थी। वनी रहे। चार्नक अब अधीरज नहीं होगा।

1682 के बीस अक्तूबर के आसपास हेजेस से चार्नक की कोलकापुर में पहली मुलाकात हुई। शाम के छः बज रहे थे। नदी के किनारे मशाल की रोशनी में हेजेस उन लोगों की प्रतीक्षा में था। बजरे के किनारे लगते ही चार्नक ने नये चीफ़ की अभ्यर्थना की। उसके आचरण की स्वाभाविक

ईर्ष्या बाहर प्रकट नहीं हुई। उसने कोशिश से अपने प्रतिद्वंद्वी को पूरी तरह परखा। न, डरने की कोई बात नहीं। हेजेस का भारी-सा मुखड़ा केवल आत्म-संतोष से भरा-पूरा था। आँखों में कूटबुद्धि की झलक नहीं थी, बोली में दृढ़ता थी। औपचारिक भद्रता के बाद यह तै हुआ कि हेजेस और जॉनसन सीधे नवाब से भेंट करके वाणिज्य संबंधी सुविधाएँ माँगें, कर्मचारियों द्वारा शोषण की शिकायत करें। बुलचाँद और उसके अनुचर हुगली के परमेश्वरदास की बर्खास्तगी के लिए विशेष आग्रह करें।

मिसेज़ सुजाना हेजेस भी वहाँ मौजूद थी। उसने परमेश्वरदास की ढिठाई के बारे में विस्तार से बताया कि कैसे उसके पति ने उसके मनसूबों को बेकार किया था।

मिसेज हेजेस के स्वर में खासे गर्व की पुट थी। उसके शरीर के रक्तिम वर्ण से उसके रुपहले बाल मानों मेल नहीं खाते थे। भूरी आँखों में दंभ का अस्तित्व साफ़ झलकता है। गले में हीरे का बेशक़ीमती हार, कानों में हीरे के फूल प्रकाश में जगमगाते हैं।

जॉब चार्नक ने सावधान कर दिया, 'इतने कीमती जवाहरात पहनकर यहाँ चलना खतरनाक है। रास्ते में डाकुओं का खतरा बना रहता है।'

मिसेज हेजेस ने हाथ से हार को झट ढँकने की कोशिश की।

मिस्टर हेजेस ने भरोसा दिलाया, 'मिस्टर चार्नक तुमसे मज़ाक कर रहे हैं। तुम यह न भूलो कि हमारे साथ अँगरेज सैनिक, सीनियर अंगरक्षक और बहुत-से राजपूत हैं।'

मिसेज हेजेस आश्वस्त हुई। बोली, 'मगर ऐसा भयावह मज़ाक तो अन्याय है।'

हेजेस के तीन बच्चे साथ हैं। विलियम, छः साल का, लेकिन बड़ा दंभी। सुजाना और रावर्ट, लगभग साल-साल भर के। जुड़वाँ। वे रोने लगे कि मिसेज हेजेस नाव पर जा रही हैं।

चार्नक उसके पीछे गया। दूर से उसे सुनायी पड़ा, एलेन कैचपुल धीमे-धीमे हेजेस से चार्नक की शिकायत कर रहा है—चार्नक की बीवी, चार्नक के कारोबार और उसके बँगले के बारे में। कैचपुल को शायद यह खयाल

कान भर रहा है।

फिर कंपनी के काम से हेजेस हुगली चला गया।

एलेन कैंचपुल का गुट अंदर-ही-अंदर कुछ साजिश कर रहा है। हेजेस साहब कंपनी के दो कर्मचारियों को हटाने पर तुल गया है। कैंचपुल यह खबर देकर चार्नक को धमका गया।

इसके बाद की घटना से हेजेस का मंतव्य जाहिर हो गया। घूस लेने के जुर्म में हुगली के फ्रांसिस एलिस की पदच्युति हुई। घूस लेना चार्नक की नीति के खिलाफ़ है! पर इस जुर्म में तो लगभग सभी कर्मचारी बरखास्त हो सकते हैं।

कासिम बाजार लौटते ही हेजेस नेलर के पीछे पड़ा। नेलर चार्नक का प्रिय पात्र है। इस युवक से चार्नक की इलियट के शराबखाने में भेंट हुई थी। अनधिकारी व्यापारियों के साथ कारोबार करने के क़सूर में नेलर की सपत्ति जब्त की गयी; नौकरी तो गयी ही। कागज़-पत्तर से नेलर का कसूर साबित हो गया। वह युवक इतना बेईमान है, चार्नक ने कभी सोचा भी नहीं था। हेजेस प्रकारांतर से अपने इस विश्वास को भी जतला गया कि उसे इसमें चार्नक की साँठ-गाँठ लगती है।

अब जेम्स हार्डिंग की बारी आयी। वह चार्नक का वेतन-भोगी अनुचर है। हेजेस उसके पीछे पड़ गया।

नेलर की घटना से चार्नक का मन क्षुब्ध हो गया था। वह हार्डिंग को होशियार कर देना चाहता था, ताकि वह कंपनी की पब्लिक टेबिल पर खान-पान न करे। ऐसी बात पर हेजेस को मौका देने से क्या फायदा? हार्डिंग ने नियम के खिलाफ काम तो किया ही है। इलियट की मधुशाला में हार्डिंग जरूर मिलेगा। चार्नक वहीं जा धमका।

मधुशाला में आज ग्राहक नहीं थे।

मेरी एन आयी। चार्नक को देखकर वह उमग गयी। उस रात के बाद चार्नक की उससे आज ही भेंट हुई है। चार्नक उसे टालना चाहने लगा।

मेरी मुस्कराती हुई आयी। 'क्यों मिस्टर, आज कैसे रास्ता भूल गये?'

'वक़्त कहाँ मिलता है ?' चार्नक ने कहा। 'ग्राज क्या मधुशाला बंद है ?'

'जी। ग्रापके ऊपर वाले सख्त ग्रधिकारी के डर से,' मेरी ने व्यंग्य किया, 'मिस्टर इलियट ने कुछ दिन पंच-हाउस को वंद रखने के लिए कहा है।'

चार्नक लौटने लगा। मेरी एन राह रोककर खड़ी हो गयी।

'इतने दिनों के बाद ग्राये। जरा पंच तो पी जाइए।'

'जेम्स हार्डिंग यहाँ ग्राता है ?'

'रोज़ ही। बद रहने पर भी नही मानता। ग्रभी-ग्रभी शायद ग्राने वाला होगा।'

'तो जरा रुक जाता हूँ। उससे ख़ास ज़रूरी काम है।'

'हाँ, यह हुई भद्र तरुण जैसी बात !' मेरी एन ने कहा, 'वैठिए ग्रापके लिए पंच लाती हूँ।'

प्याले को ग्रागे वढ़ाकर मेरी एन ने जग से पंच ढाल दी। बोली, 'मैंने ग्रापको मधुशाला मे इतने ग्रकेले मे कभी नही पाया। इस समय यहाँ बस, मैं हूँ ग्रौर ग्राप है।'

चार्नक ने जवाब नही दिया, पंच की चुसकी लेने लगा।

एक कुरसी खींचकर मेरी एन चार्नक के पास वैठ गयी।

'उस दिन मेरी हरकत से ग्राप वेशक वहुत नाराज़ हुए,' मेरी एन ने कहा, 'ग्रापकी बीवी के बारे मे मैंने कुछ ऐसा-वैसा कह दिया हो, तो माफ़ कर दीजिए।'

'नहीं-नही, ऐसा-वैसा भला क्या ?'

'मैंने गुस्से मे कह दिया था, खून कर दूँगी। मैं एक मामूली क्रीतदासी हूँ, मेरी इस ढिठाई को माफ़ कर दीजिए।'

'माफ़ तो उसी दिन कर दिया था,' चार्नक ने कहा।

मेरी एन ग्राश्वस्त हुई। उसने कुरसी को ग्रौर क़रीव खीच लिया।

'ग्रजीब है मिस्टर ग्राप, गोया इस हद तक बूढ़े हो गये हैं कि कान के पास के बालो में सफ़ेदी दीखने लगी है।'

'ग्राखिर, उम्र नही बढ़ रही है ?'

'मगर चेहरे पर वही बचपना बरक़रार है। अभी भी वह चेहरा याद आ रहा है। मैंने आपको करीब खींचकर चुम्बन लिया था। कहा था, तुम को प्यार करती हूँ।'

'उस समय तुम थी ही कितनी बड़ी ?'

मेरी एन ज़रा देर ख़ामोश रही। टेबिल पर दोनों कुहनियाँ टिकाकर अपने मुँह को ज़रा आगे करके वह चार्नक को एकटक देखने लगी।

मेरी की नाक फूल गयी। साँस जल्दी-जल्दी चलने लगी। आँखों में लालसा स्पष्ट उभर आयी।

'मिस्टर, मैं आपको अभी भी प्यार करती हूँ।'

'ऐसा मत कहो, एन।'

'क्यों न कहूँ ?' मेरी एन बोली, 'आज मैंने तुम्हें अकेले में पाया है। एक, सिर्फ एक रात तुम मेरे पास रहो।'

पंच के प्याले को खाली करके चार्नक उठने लगा, लेकिन नहीं उठ पाया। लोभी बाघिन की तरह मेरी चार्नक के बदन पर झपट पड़ी। ज़बरदस्ती उसके गले से लिपट गयी। चुबनों से उसके मुँह को भर दिया। चार्नक जितना ही अपने को उसकी जकड़ से छुड़ाने की चेष्टा करता, मेरी एन उद्भ्रांत की नाईं उतना ही उसे अपने आलिंगन में कस लेती। उस कामातुरा के शरीर में कितनी ताकत है ! आखिर चार्नक ने उसे झटक कर अपने को उसके काम-भरे बंधन से छुड़ाया। मेरी एन फ़र्श पर छिटक कर गिर पड़ी। चोट खायी नागिन जैसी फुफकारने लगी वह। फिर उठने की कोशिश करने लगी।

इतने में हार्डिंग का गंभीर स्वर सुनायी पड़ा, 'उस छोकरी को मेरे ज़िम्मे सौंपकर आप अपने घर चले जाइए, सर। उस रोज़ की तरह इसने आज भी आपको अपमानित करने की हिमाकत की है।'

हार्डिंग कब आया था, चार्नक को पता नहीं चला।

हार्डिंग ने दोनों भुजाओं से मेरी एन को उठा लिया। एन चीखने लगी, हाथ-पाँव पटकने लगी, अपने बाल नोचने लगी।

हार्डिंग ने कठोर स्वर में कहा, 'शैतान, इतना करके भी तेरी साध न मिटी।'

हार्डिंग ने और क्या कहा, चार्नक सुन नहीं पाया। तब तक वह पंच-हाउस के बाहर चला आया था। अँधेरे में मेरी एन की चीख खो गयी, उसके बाद चार्नक के कानों में उस कामातुरा की रुलाई-मिली हँसी सुनायी दी—मत्त, तृप्त हँसी।

एलेन कैंचपुल के गुट ने चार्नक के विरुद्ध हेजेस को दरखास्त दी। और-और अभियोगों के साथ उन सबका यह अभियोग भी था—कंबख्त हार्डिंग ने मिस्टर इलियट की क्रीतदासी के साथ सहवास किया है। जार्ज पिटमैन इसका चश्मदीद गवाह है। हेजेस ने कंपनी की टेबिल पर हार्डिंग को भोजन करने से मना किया और चार्नक को खास तौर से उसे शह न देने की हिदायत की।

चार्नक को अपदस्थ करने के लिए हेजेस मानो हाथ धोकर पीछे पड़ गया। उसने अनंतराम के जरिए चार्नक को झूठा साबित करने की कोशिश की। नेलर के बारे में भी चार्नक के झूठ बोलने की गवाही सैमुएल लेंगले ने दी।

कैंचपुल के साथी इतने से भी संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने फिर हार्डिंग के खिलाफ नालिश की। हेजेस ने हार्डिंग का कोठी में आना तक रोक दिया। चार्नक ने मात्र सात दिन की मुहलत ली, ताकि हार्डिंग हिसाब-किताब लिखकर पूरा कर दे।

सोमवार को हेजेस राय बुलचाँद से मिलने के लिए मकसूदाबाद गया। अब चार्नक नये हमले के मुकाबले के लिए तैयार होने लगा।

एलेन कैंचपुल आभास-सा दे गया कि हमला किस किस्म का होगा। बुलचाँद ने शायद हेजेस से कहा है कि चार्नक चोर है। वह केवल बनियों और नेटिवों से ही रुपया नहीं लेता, बल्कि कंपनी को भी धोखा देता है। चार्नक के रहते कंपनी की उन्नति की कोई उम्मीद ही नहीं। उस चोर को आप बरखास्त कीजिए। हेजेस ने उससे कहा है, 'सबूत-गवाह मिल जाये तो फिर तो मैं दे ही मारूँ उसे।' इस पर बुलचाँद ने शायद कहा है, 'जी, गवाह तो मैं सैकड़ों जुटा दूँगा।'

चार्नक हँसा। कोई भी गवाह अगर यह साबित कर देगा कि मैंने कंपनी को ठगा है, तो मैं उसी वक्त पदत्याग कर दूँगा।

कोठी का यह अन्तर्द्वन्द्व उस दिन के अग्निकाड के कारण दबा रहा।

कासिम बाजार में दोपहर को आग लगी। ग्रीष्म की चिलचिलाती धूप। घर-मकान तो यों ही आग हो रहे थे। मक्सूदाबाद की ओर से आग फैलने लगी। देखते-ही-देखते अँगरेजों की कोठी के बहुतेरे घर राख हो गये। अस्तबल, रसोईघर, स्रोस्टर का घर। इनके अलावा बहुत-से कच्चे घर जल गये। सैमुएल लैंगले ने किसी तरह से रेशम और ताफ़्ता के गोदाम को बचा लिया। गोदाम की खिड़की में दो-दो बार आग लगी थी। लैंगले ने दोनों ही बार बुझा दी। आग ने कंपनी का कम-से-कम दो हजार रुपये का नुकसान हुआ।

अग्निकांड के इस अवसर पर इलियट की क्रीतदासी मेरी एन भाग गयी। पता चला, उसने इस्लाम धर्म क़बूल कर लिया है, अब्दुल अज़ीज़ नाम के किसी व्यापारी से शादी कर ली है और नाव से अपने पति के साथ हुगली की ओर चली गयी है।

इलियट ने चार्नक के पास जाकर अपना दुखड़ा रोया—पंच-हाउस तो ख़ैर बच गया, लेकिन उस दईमारी क्रीतदासी की बेईमानी ने ही उसे डुबो दिया। मेरी एन चली गयी। पंच-हाउस में अब भला ग्राहकों की भीड़ क्या होगी?

दूसरे दिन हेजेस ने फिर नेलर का पचड़ा शुरू किया। चार्नक ने लाख कहा, कि नेलर की इन हरकतों का उसे पता नहीं था, पर हेजेस इस पर किसी तरह ऐतबार नहीं कर रहा था, नेलर को नौकरी छोड़कर हज़ार रुपये के मुचलके पर हुगली चले जाने का हुक्म हुआ।

हेजेस ने फिर हिसाब की बही देखी। शिकायत की कि तांतियों के ज़िम्मे बयाने की काफी रकम पड़ी है जिसकी वसूली नहीं हुई। इस बात को पकड़कर हेजेस ने बयाना बंद कर देने का हुक्म दिया। असली मतलब सिर्फ़ चार्नक का अधिकार छीन लेने का था। चार्नक ने सोचा, काश, हेजेस को मालूम होता कि बग़ैर बयाने के यहाँ के ग़रीब किसानों का काम नहीं चल सकता। ख़ैर, देखा जाये, बात कहाँ तक बढ़ती है?

एंजेला ने पति को तीसरी बेटी भेंट दी। नाम रखा गया कैथेरिना।

एलेन कैंचपुल के साथियों ने हेजेस दंपति के सम्मान में एक दावत दी। डच कोठी के चीफ और उनकी स्त्री को भी न्योता दिया गया। विलियम त्रिकमैन और उनकी स्त्री कुछ दिनों के लिए हुगली से आये हैं। त्रिकमैन की बदली बालेश्वर में दूसरे अफसर के पद पर होगी। उन्हें भी न्योता दिया गया। कासिम बाजार-कोठी के सारे अंगरेज कर्मचारी पत्नियों सहित आमन्त्रित किये गये। लेकिन चार्नक को उसके नाम से अकेले ही निमत्रण भेजा गया। उसकी बीवी के लिए नहीं। यह भूल जानकर की गयी, इसमें संदेह नहीं। चार्नक ने तय कर लिया, वह न्योता स्वीकार नहीं करेगा।

चार्नक की बीवी ने उनके इस निश्चय का विरोध किया। बोली, 'अग्नि, दावत में तुम तो जाओगे ही, मैं भी चलूंगी।'

'अरे, सो कैसे ? तुम्हें तो न्योता ही नहीं दिया गया है।'

'हम लोगों के यहाँ ऐसा नियम है कि गृहस्वामी को न्योता परिवार-सहित ही समझा जाता है। मैं दावत में जाऊँगी। समझ नहीं रहे हो तुम, मुझे छोड़कर वे हम दोनों के विवाह को ही अस्वीकार करना चाहते हैं। मैं समाज में अपने दावे को प्रतिष्ठित करूंगी।'

एंजेला के संकल्प ने चार्नक को अचंभा हुआ। लेकिन उसने बाधा नहीं दी। अच्छा ही होगा, फैसले का समय आ गया है। प्रश्न को भी साफ-साफ जानने की जरूरत है। मातहत, मुलाज़िम तथा उनकी पत्नियाँ आदर दिखाती हैं। उसमें आंतरिकता कितनी है, इसको कभी-कभी साफ-साफ समझना कठिन हो जाता है। आज की दावत में अलग-अलग स्तर के स्त्री-पुरुषों का जमघट होगा। उनके सामने आज सबकी एक बड़ी परीक्षा हो जायेगी।

दावत में मिसेज चार्नक का आना बड़ा अप्रत्याशित रहा। पहनावे में लाल बनारसी साड़ी, अंगों में बेला फूल के गहने, जूड़े में जुही की माला, पान से रँगे होंठ, आँखों में काजल। लंबा, गोरा शरीर, शांत, सौम्य, लेकिन दमकता हुआ। झिझक नाम-मात्र को नहीं। दावत में आये लोगों में आश्चर्य की सिहरन-सी फैल गयी। चार्नक के साथ यह जीती-जागती

ग्रीक प्रतिमा कौन है ? अभ्यागतों का कल-गुंजन सहसा मौन हो गया।

चार्नक ने स्वय ही परिचय दिया।

'मिसेज चार्नक।'

सारी भोज-सभा मुखरित हुई। चार्मिंग, क्वीयर, एक्सोटिक, पेगन ! चारों ओर से छिटपुट टिप्पणियाँ सुनायी दीं।

सौजन्य से हेजेस एक महिला के आगमन से खड़ा होने जा रहा था। मिसेज हेजेस ने तनी आँखों के इशारे से उसे बैठे रहने का आदेश दिया। फरमाबरदार पति बैठा-का-बैठा रह गया।

चार्नक ने कहा, 'मिसेज चार्नक के लिए कोई कुर्सी नहीं है, मिस्टर कैचपुल ?'

ऐसे खुले हमले के लिए कैंचपुल तैयार नही था। वह आगा-पीछा करने लगा।

बे ऑफ बंगाल के तीसरे अफसर बेयर्ड अपनी कुरसी छोड़ने लगे।

मीठे किंतु दृढ स्वर मे चार्नक की बीवी बोली, 'आपके सौजन्य के लिए कृतज्ञ हूँ। इस भोज-सभा मे मैं अनाहूत हूँ। मेरे लिए न्योता नही था। फिर भी मैं आयी, इसलिए कि यह दावत माननीय हेजेस परिवार के सम्मान मे दी गयी है। मैं यहाँ खाने के लिए नही आयी हूँ, आयी हूँ माननीय अतिथियो के प्रति सम्मान दिखाने।'

मिसेज हेजेस कुरसी से उठ खडी हुई। दंभ से बोली, 'ऐसी महिला से बोलने मे भी नफरत होती है। डार्लिंग, मैं किसी रखैल के साथ एक मेज पर बैठकर खाना नही खा सकती।'

जॉन बेयर्ड ने ज़रा पैने स्वर से कहा, 'बे ऑफ बंगाल के चीफ की पत्नी से हम कुछ तो सौजन्य की आशा कर सकते है। मिसेज चार्नक पद की मर्यादा में हीन नही हैं। मिस्टर चार्नक का स्थान मिस्टर हेजेस के बाद ही का है। मिसेज चार्नक जाति से ब्राह्मण हैं, हिंदुओं में श्रेष्ठ जाति। वह यहाँ मौजूद सभी महिलाओं से सुंदर है, कीमती जवाहरात की बहार से उनके रूप को पालिश की जरूरत नही पड़ती। जहाँ तक मुझे मालूम है, इस देश की भाषा पर उन्हे अच्छा दखल है। ऐसी एक महिला का अपमान करना सभी शिष्टाचार से बाहर है।'

कीमती जवाहरात की माला पर हाथ फेरकर मिसेज हेजेस ने बिगड़कर कहा, 'तीसरे अफ़सर से शिष्टाचार सीखने का समय मुझे नहीं है। जो आदमी सर जोशिया से चीफ़ तथा उसकी ब्याहता स्त्री के सम्बंध में भद्दी भाषा में निंदा करते हुए छिपकर खत लिखता है, मुझे उससे शिष्टाचार सीखना होगा ?'

बेयर्ड को चोट पहुँची। उसने पूछा, 'चिट्ठी की बात आपको कैसे मालूम हुई ?'

हेजेस ने पत्नी को रोकना चाहा, 'डार्लिंग, हुँह, छोड़ो भी।'

मिसेज हेजेस का स्वर झनझना उठा, 'छोड़ूँ क्यों ? बात जब निकली है तो साफ़ ही हो जाये। मिस्टर जॉनसन ने तीसरे अफ़सर की चिट्ठी अपनी आँखों नहीं देखी है।'

'स्पाई !' बेयर्ड घृणा से बोला, 'अधिकार के लोभ से हेजेस इस हद तक गिर गये हैं कि स्पाई के ज़रिए कंपनी के अधिकारियों के यहाँ भेजी गयी मेरी गोपनीय चिट्ठी तक देखने में उन्हें झिझक नहीं हुई ?'

'आप यह जान लें, तीसरे अफ़सर,' हेजेस बोला, 'झूठी निंदा-भरी वह चिट्ठी कभी भी सर जोशिया के हाथों नहीं पहुँचेगी। मैंने वह पत्र भेजने को मना कर दिया है।'

'आपकी यह हिम्मत कि आप कंपनी के चेयरमैन को लिखा व्यक्तिगत पत्र तक उड़ा लेते हैं ? इसका नतीजा आपको जल्दी ही मिलेगा।' जॉन बेयर्ड गुस्से से काँपने लगा।

इस पर जॉन थेडर और रिचर्ड बारकर आगे आये। ये दोनों कासिम-बाज़ार-कोठी के दूसरे और तीसरे अफ़सर हैं। चार्नक के विरोधी। बेयर्ड के विरोधी। बेयर्ड के इस आचरण का उन्होंने घोर विरोध किया। कहा, 'खैर, अगर चार्नक की अनाहूत बीवी की उपस्थिति को क्षम्य भी माना जाये, तो भी मिस्टर बेयर्ड किस लिहाज़ से यों खुलेआम हेजेस-दंपति के अपमान की हिम्मत कर रहे हैं !'

ज़मीन पर पाँव ठोककर मिसेज हेजेस ने कहा, 'मैं इस नरक में एक क्षण भी नहीं रहूँगी।'

चीफ़ की पत्नी जाने को तैयार हो गयी। कुंठा के साथ चार्नक की

बीवी ने कहा, 'नहीं-नहीं, आप मत जाइए। अपराध मुझसे हुआ है। मेरी मौजूदगी आप लोगों की खीझ का कारण हुई है। मेरा काम हो चुका, मैं जाती हूँ। अग्नि, आओ, मेरे साथ घर चलो।'

पति का हाथ पकड़कर चार्नक की बीवी वहाँ से निकल गयी। साथ-ही-साथ जॉन वेयर्ड भी दावत से उठकर चला गया।

बड़ी रात तक वेयर्ड के साथ चार्नक की बातें होती रहीं। चार्नक बहुत खुश हुआ। वेयर्ड जैसा एक साहसी और क्षमता वाला मित्र मिला। दोनों सलाह करने लगे, किस प्रकार से क्या कुछ करना चाहिए? चार्नक ने कहा, 'हेजेस के पाँव तले की ज़मीन को खिसका देना होगा।'

'कैसे?'

'थेडर, बारकर, कैंचपुल की नौकरी खत्म करा देने का गुप्त हथियार मेरे पास है। उसी हथियार का इस्तेमाल करना होगा। ये लोग विन्सेंट के गुट में थे, अब हेजेस के गुट में हैं। इन्हें खिसकाया जाये तो हेजेस अकेला हो जायेगा।'

वेयर्ड ने कहा, 'मैं भी ऊपर अफसरों को यह लिखता हूँ कि हेजेस कैसे मेरे गोपनीय पत्रों को दबा देता है।'

नूर मुहम्मद और सुदर कहार रात मे ही रेशम के व्यापारियों और तांतियों के घर-घर गये—मणिराम पोद्दार, पाँचू पोद्दार, रामचरण पोद्दार, वृंदावन पोद्दार और चासू विश्वास के यहाँ।

वे सब लाल कपड़े की बँधी हिसाब-बहियाँ ले-लेकर हाजिर हुए। थेडर और बारकर के खिलाफ़ उन्होंने हेजेस के पास शिकायत की। इन दो साहबों ने उनसे फी सेर तीन-चार तोला रेशम ज्यादा लिया है, दो-एक करके अच्छे रेशमी कपड़े मार लिये हैं। बही-खाता देखिए, गोदाम के रेशम को तोलिये, और ज्यादा वजन निकले तो दाम दीजिए।

दोनो साहब रंगे हाथों पकड़ गये। इस मुसीबत से बचने के लिए उन दोनों ने हेजेस को दरख्वास्त दी कि हमारी बदली दूसरी कोठी मे कर दी जाये। कासिम बाज़ार-कोठी में बड़ी गुटबंदी है।

पक्का सबूत पाने के बावजूद हेजेस से उनकी नौकरी नहीं छीनी, बदली कर दी। एलेन कैंचपुल चालाक ठहरा। वह ताड़ गया कि अब मेरी

बारी है । सो, उसने खुद ही अपनी बदली करानी चाही । तुरंत इजाज़त भी मिल गयी । वह हेजेस का संगी था मालदह में । वहाँ से हुगली । मानो पदोन्नति हो गयी ।

हेजेस से अनबन में और भी कटुता आ गयी । उन दिनों की याद करके चार्नक को बेचैनी होती । उस पर सीधा आक्रमण करने की जुर्रत हेजेस को नहीं थी । सिर्फ़ व्यंग्य और कुत्सा उसके हथियार थे । खाली घड़े की आवाज़ के समान । व्यंग्य-भरे पत्राचार । हेजेस के संदेहशील स्वभाव और अधिकार के दुरुपयोग ने उसके बहुत दुश्मन पैदा कर दिये । चार्नक-चेयर्ड तो हैं ही । पदच्युत एलिस पत्नी के साथ कासिम बाज़ार आ पहुँचा । चार्नक के समर्थन में उसने हेजेस के आदेश की निरर्थकता साबित की । अन्यतम कर्मचारी जेम्स वाटसन ने सख्त होकर सुना दिया, 'हेजेस किसी की नौकरी खत्म करने के अधिकारी नहीं है ।' चार्नक ने कैंबपुल की पदोन्नति के खिलाफ़ प्रतिवाद किया । हेजेस के हुक्म के खिलाफ़ चार्नक ने जेम्स हार्डिंग को कासिम बाजार-कोठी में फिर से बहाल किया । ढाका के पुनसेट और मालदह के हारवे ने भी हेजेस के खिलाफ़ विद्रोह की घोषणा की ।

चार्नक छाती फुलाकर कहता फिरा, 'हेजेस के दिन खत्म हो आये हैं । उसकी कुर्सी जाने ही वाली है ।'

कंपनी के मुलाज़िमों में परस्पर कलह ऐसा बढ़ा कि खीझकर नवाब शाइस्ता खाँ तक ने मंतव्य दिया : अंगरेज जाति बड़ी झगड़ालू है ।

राय बुलचांद अचानक गुज़र गया । उस चुगलखोर और घूसखोर ने मकसूदाबाद में आखिरी साँस ली । नवाब के हुक्म से बुलचांद की सारी संपत्ति मुगल सरकार द्वारा जब्त कर ली गयी । उसका इकलौता बेटा बादशाह की फ़ौज में एक मामूली सैनिक बना दिया गया । विरासत की जायदाद के एवज में महज़ दो घोड़े और एक हज़ार रुपये उसे मिले । नवाब के लोगों ने उसकी माँ के जवाहरात छीन लिये । बुलचांद के घर को खोद-खोदकर उन लोगों ने बहुत रुपये खोज निकाले । सिर्फ बिस्तर के नीचे से ही निकले साढ़े चार लाख ! कचहरी से दो लाख । इसके सिवा उसकी तिजारत में लगे रुपये भी नवाब के लोग सूद समेत बनियों से वसूल लेंगे । उसके नौकर परमेश्वरदास को हुगली के फ़ौजदार ने गिरफ़्तार कर लिया ।

काफिर की गुलामी का पुरस्कार, रुपये के लोभ का यही नतीजा हुआ।

लेकिन बुलचाँद की मृत्यु से कोई विशेष खुशी की बात नहीं है। एक बुलचाँद गया, दूसरा आयेगा। नये सिरे से घूस लेगा, नये सिरे से शोषण शुरू करेगा।

बिजली की गति से खबर फैली। हेजेस की कुर्सी छिनी! मद्रास के
बेलियम हेजेस को पदच्युत
नष्ट हो गयी। हेजेस की
जगह पर तृतीय अफसर बेयर्ड को बहाल किया गया। मालिकों ने फिर चार्नक को दिये गये वायदे को पूरा नहीं किया। इस बार कोई बहाला दिखाने की भी जरूरत नहीं समझी गयी।

दो-दो बार आशा भंग हुई। चार्नक मायूस हो गया।

मोतिया ने कहा, 'मेरे ही पाप से तुम्हारा यह अपमान हुआ है। मैं पापिन हूँ, अधर्मी हूँ। जब तक मैं तुम्हारे साथ रहूँगी, तब तक शायद तुम्हारा मंगल नहीं होगा।'

'तुम पागल हुई हो, मोतिया बीवी।'

''पागल नहीं हुई हूँ साहब, मैं ठीक ही जानती हूँ, मेरी दृष्टि ही अशुभ है। गुंडे मुझे पकड़ ले गये, मैं अपना कौमार्य बचा नहीं सकी। अपने चरित्र को बचाने के लिए मैं जहर तो खा सकती थी, गंगा में तो कूद सकती थी। परंतु लालसा का जीवन अच्छा लगा था। मैं नाची, गायी, हँसी। हिंदू, मुसलमान, पारसी, फिरंगी, जवान-बूढ़े, अंधे-लँगड़े—सबके साथ सहवास किया। नित्य नये पुरुष मुझे तरह-तरह के आनंदों का स्वाद देते रहे।'

'उस पाप का प्रायश्चित्त क्या तुमने नहीं किया है, मोतिया?' चार्नक ने पूछा। 'इक्कीस वर्षों से तुम मेरे प्रति एकनिष्ठ हो। मैंने कोई जबरदस्ती नहीं की, मैंने तुमसे शादी नहीं की, कोई सामाजिक सम्मान नहीं दिया, फिर भी तुमने भूले से भी किसी पर-पुरुष की ओर नहीं निहारा। यहाँ तक कि क्षमतावाले सैयद के बुरे प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया। तुम मेरे सुख की साथी, दुख की हमदर्द हो। तुमने मुझे साथ दिया, साहचर्य दिया, प्यार दिया। मेरी धर्मपत्नी से तुमने ईर्ष्या नहीं की, सखी सरीखी मान उसको दुलार दिया। उसकी बच्चियों को अपनी बच्चियों की तरह पाला-पोसा।

फिर भी तुम यह कहना चाहती हो कि तुम्हारा पाप नहीं गया ?'

'तुम किसी भी तरह मुझे भरमा नही सकोगे, साहव,' मोतिया की आवाज मे दृढ़ संकल्प की झलक मिली, 'तुम्हारी भलाई के लिए ही अब मैं विदा लूंगी।'

'एँ, कहाँ जाओगी ?'

'नवद्वीप। मैं वैष्णवी बनूंगी।'

'समझ गया। उन गुसाँइयों ने तुम्हारा दिमाग खराव कर दिया है। मैं अब उन्हें अपने यहाँ नही आने दूंगा।'

'उनका कोई दोष नही है, साहव। उन लोगों ने मुझे नये जीवन का स्वाद दिया है। मैं जीवन के ये बाकी कुछ दिन नाम-स्मरण मे विताना चाहती हूँ। तुम मुझे अब बाँधकर मत रखो।'

मोतिया की आँखें चमक उठी। अपार्थिव दृष्टि। सुदूर की किसी माया ने उसे पुकारा है। चार्नक की क्या मजाल कि उसे रोके !

मोतिया ने निहोरा किया, 'जाने से पहले सिर्फ़ एक रात मैं तुम्हें अपने पास पाना चाहती हूँ, साहव। उस रात की स्मृति मेरा अंतिम पाथेय होगी।'

वह भी क्या रात थी ! चार्नक मिलन की उस अंतिम रात की माया को कभी भूल नही सकेगा। मोतिया सजी-सँवरी। अजीव पहनावा, आँखों में काजल की रेखा, होंठों और गाल पर हलका-हलका आलता। सुगंधित तेल से जूड़ा और इत्र से अग-अग सुरभित। आसन्न प्रौढ़त्व की सीमा पर पहुँचकर उसने मानो नवयौवन पाया। सिर्फ़ एक रात के लिए। हास्य-लास्य, सग-समादर में पोड्शी जैसी चंचल, जीवनमयी। बुझने से पहले दीप की दमकती अन्तिम लौ-सी। वह निविड़ मिलन भास्वर हुआ।

मोहमयी वह रात वीती। सुख से थके प्रेमी के चरणों की धूल ली मोतिया ने। अवाक् चार्नक के सामने ही उसने अपने हाथो से अपने लंबे घुंघराले वालों को काटा। आभरण निकाल फेंके, उतार दिये रंग-बिरंगे कपड़े। टसर की धोती पहनी, पीली मिट्टी का तिलक लगाया और गले मे कंठी डाल ली। स्निग्ध प्रकाश मे उद्भासित हो उठा उसका यह श्याम रूप।

मोतिया ने विदा ली। एंजेला रोयी, मेरी रोयी, एलिजाबेथ रोयी। चार्नक की आँखों में बाढ़-सी बह उठी। लेकिन सूखी आँखों से हंसते हुए विदा ली मोतिया ने—नवद्वीप के लिए। केवल छोड़ गयी लंबे इक्कीस सालों की स्मृति।

सुंदर मोतिया के साथ चला।

मोतिया नहीं है। एंजेला नन्हीं कैथेरिना के लिए परेशान। रात-दिन निराशा और हताशा की शिकार। नवाब के नये मुलाजिमों के बढ़ते हुए जुल्म। पैंकार-महाजनों ने बकाये के लिए काजी के पास नालिश की। घूस के बल पर कब तक क्या कुछ रोका जायेगा? चार्नक ने ढाका में नवाब शाइस्ता खाँ के पास अपील की। अपील खारिज हो गयी। फिर से विचार की दरखास्त दी गयी। चार्नक को ढाका पकड़ लाने के लिए नवाब ने हुक्म भेजा। इस हुक्म का मतलब क्या है? चार्नक यह जानता है। मुगलों के कैदखाने का अनुभव है उसे। नवाब के हाथों में एक बार पड़ जाने से कभी छुटकारा नहीं। स्थानीय फ़ौजदार और ढाका के प्रभावशाली लोगों की मदद से चार्नक ढाका जाना अभी तक किसी तरह टालता जा रहा है। वह नवाब के पास अर्जी-पर-अर्जी भेज रहा है। मकसूदाबाद का क़ाजी चार्नक पर विश्वास नहीं करता। उसी के हुक्म से कोतवाल की फौज ने चार्नक को अपने ही घर में नजरबन्द कर रखा है। मुगल सरकार ने हुगली की कोठी से कासिम बाज़ार की चिट्ठियों का आना-जाना रोक दिया है। कासिम बाज़ार के बनियों ने कंपनी से कारोबार करना बन्द कर दिया है। कोठी का काम ठप्प पड़ा है।

अपने ही घर में चार्नक सपरिवार बंद है। दिनों से नहीं, महीनों से।

हुगली के बीमार चीफ बेयर्ड की मृत्यु हो गयी। गोपनीय चिट्ठी आयी चार्नक को—हुगली जाकर प्रधान का पद सम्हालो। इतने दिनों की आशा पूरी हुई। फिर भी साहिल पर आकर चार्नक के भाग्य की किश्ती डगमगा गयी।

हुगली-कोठी का नया चीफ राइट वरशिपफुल जॉब चार्नक एस्क्वायर

कासिम बाज़ार में मुग़लों की फ़ौज के हाथों बंदी है। दिनों से नहीं, महीनों से।

एकाध रुपये नहीं, तेंतालीस हज़ार रुपये! रुपया दो, छुटकारा खरीद लो। कहाँ है उतना रुपया? कौन देगा उतना रुपया? कैसे होगी मुक्ति?

बँगले के फाटक पर एक पालकी आकर रुकी। पहले अनदेखी पालकी। अनदेखे कहार। मगर पालकी और कहारों पर वैभव की छाप। मालिक ज़रूर धनी है। ज़रूर कोई मूर होगा, क्योंकि बादशाह के हुक्म से कोई हिंदू पालकी की सवारी नहीं कर सकता।

पहरे पर तैनात मुगल सैनिकों ने पालकी को आने दिया। पालकी से उतरी नीले सिल्क का बुरक़ा पहने एक नारी। नूर मुहम्मद उसे अपने साथ एंजेला के कमरे में ले गया।

'कौन है यह मूर-रमणी?'

'जनाब अब्दुल अज़ीज़ की बेगम। बीवी से मिलने आयी है।'

चार्नक को अब्दुल अज़ीज़ का परिचय याद नहीं आया। हो सकता है, बेगम एंजेला की पूर्व-परिचिता हो। ग़नीमत है। संगी-साथी से हीन एंजेला को बातचीत करके कुछ खुशी होगी।

नूर मुहम्मद चला गया।

ज़रा देर में एंजेला आयी।

'बगल के कमरे में चलो,' उसने पति से कहा, 'तुम्हारी एक परिचिता मिलने आयी है।'

'मेरी परिचिता?' चार्नक अचंभे में आया। पर्दानशीन किसी मूर-रमणी से कभी परिचय हुआ था, उसे याद नहीं आया।

एंजेला ने हँसकर कहा, 'चलो तो सही।'

अजनबी स्त्री के लाल जूतों का जोड़ा दरवाज़े पर पड़ा था।

कमरे में दाखिल होते ही चार्नक ने देखा, बुरक़ेवाली कैथेरिना को दुलार रही है। उसके मेंहदी रँगे हाथों में क़ैद होकर कैथेरिना रो पड़ी।

'बड़ी शैतान है छोरी,' बुरक़ेवाली बोली, 'चाची की गोद से माँ की गोद जो मीठी लगेगी; जा माँ की गोद में।'

एंजेला ने बच्ची को गोद में लिया। वह चुप हो गयी। एंजेला ने उसे झूले पर सुला दिया। बुरक़ेवाली झूले को झुलाने लगी।

कौन है यह रहस्यमयी? चार्नक ने आवाज़ पहचानने की कोशिश की। वह अजनबी औरत चार्नक के सामने खड़ी हुई।

एंजेला ने कहा, 'बैठो, बहन।'

बारीक काम वाले कश्मीरी गलीचे पर दोनों बैठीं।

'पहचानते हैं मुझे?' उस रमणी ने पूछा।

'कैसे पहचानूं?' चार्नक ने कहा, 'बुरक़े के अंदर नजर तो नहीं जाती!'

'मैं पर्दानशीन जो हूँ,' वह बोली, 'आपके सामने तो मैं बुरक़ा नहीं उतार सकती। बहन के सामने उतारा था। मेरी आवाज़ से भी नहीं पहचान रहे हैं?'

कि बिजली-सी कौंध गयी परिचय की। लगा, इसी आवाज़ ने एक दिन कहा था—मिस्टर, मैं आपकी पहली प्रेमिका हूँ! मिस्टर, मैं अभी भी तुम्हें प्यार करती हूँ।

'आप—तुम मेरी एन हो?' आश्चर्य से चार्नक ने पूछा।

'वही थी,' रहस्यमयी बोली, 'अब मैं बेगम गुलनार हूँ। मिस्टर इलियट के यहाँ से भागी हुई क्रीतदासी हूँ, इसलिए सिपाहियों से गिरफ्तार तो नहीं कराइएगा?'

'मैं खुद ही बंदी हूँ, तुम्हें गिरफ़्तार करने-कराने की ताकत कहाँ है?'

'कभी कर सकते थे। जो खुद पकड़ाई देने आयी थी, उसे आपने बार-बार लौटा दिया था।'

'इसीलिए तुम बंदी चार्नक का मजाक उड़ाने आयी हो?'

मेरी एन शर्मिंदा हुई। वह बोली, 'नहीं-नहीं, हुगली में मैंने आप लोगों के नजरबंद होने के बारे में सुना। मैं इंगलिश हूँ। मेरी और

आपकी नसों में एक ही लहू बहता है। खबर मिलते ही मैं परेशान हो गयी। जैसे भी हो, आपको छुड़ाना ही है। मेरे पति अब्दुल अज़ीज़ ने तिजारत में बहुत कमाया है। वह हुगली से मकसूदाबाद वापस आये। उनकी इजाज़त लेकर मैं आपकी बीवी से मिलने आयी हूँ। मेरे पति जानते हैं कि मुसलमान की स्त्री होते हुए भी मैं अँगरेज हूँ। लिहाज़ा किसी दूसरे अँगरेज़ से जान-पहचान हो ही सकती है। कोतवाल का हुक्म लेकर मैं आपके बँगले पर आयी—आपके छुटकारे का कोई उपाय निकालने के लिए।'

यह दोगली औरत कह क्या रही है? यह इंगलिश है! बचपन की आधी सच्ची, आधी झूठी धारणा को यह अभी तक भूल नहीं सकी है! पर, मेरी मुक्ति की यह क्या व्यवस्था करेगी?

'नहीं-नहीं,' चार्नक ने कहा, 'मैं तुमसे रुपया नहीं ले सकूँगा। और रुपया भी दो-चार नहीं, तैंतालीस हज़ार! तैंतालीस हज़ार से कम में काज़ी हमें नहीं छोड़ेगा।'

'मैं भी इतना रुपया कहाँ पाऊँगी? मेरे पति बड़े कंजूस हैं।'

तो? मुक्ति का उपाय है, शिवाजी की तरह चालाकी। किसी प्रकार से पहरेदारों की आँखों में धूल झोंकना होगा। छिपे-छिपे अगर कोई हमारा स्थान ले सके, तभी हम भाग सकते हैं।

मेरी एन ने प्रस्ताव किया, 'कोतवाल का हुक्म लेकर मैं अपनी दोस्त तुम्हारी बीवी से अक्सर मिलने आया करूँगी। मेरे साथ बुरके वाली हब्शी एक क्रीतदासी आया करेगी। लंबा-चौड़ा शरीर, पर रंग मैला। साथ में विभिन्न उम्र के तीन बच्चे रहेंगे। हब्शी क्रीतदासी रंग मलकर आपकी पोशाक पहनेगी, मैं बीवी-चार्नक बनूँगी और बच्चियों की जगह वे बच्चे रहेंगे। हम नक़ली मियाँ-बीवी साँझ के झुटपुटे में बरामदे में खड़े होंगे। आप और बीवी बुरका पहनकर छद्मवेशी बच्चियों को लेकर पालकी से नदी के घाट पर चले जायेंगे। वहाँ तेज़ी से चलने वाली नाव खड़ी रहेगी। आप लोगों को लेकर हुगली-कोठी जायेगी। बड़ा मज़ा आयेगा। ऐसे नाटक करने में मुझे बड़ा मज़ा आता है।'

बीबी ने कहा, 'मगर यह कैसे हो सकता है? माना, हम छूट जायेंगे।

मगर आप लोगों का क्या होगा ? काज़ी को जब यह पता चल जायेगा कि भागने में आपने हमारी मदद की है, फिर तो आप लोगों को सख्त सज़ा मिल सकती है।'

मेरी एन ने कहा, 'अब्दुल अज़ीज़ अच्छी हैसियत वाले व्यवसायी हैं। उनकी प्यारी बेगम के छूटने की बहुतेरी तरकीबें हैं। आप हमारी फ़िक्र न करें।'

'लेकिन आप बच्चे कहाँ पायेंगी ?' मेरी एन से चार्नक की बीवी ने पूछा।

'मेरी बाँदियों के बच्चों की क्या कोई कमी है ?' एन बोली।

रहस्यमयी नारी ! मुहब्बत में ठुकराई हुई, धर्मांतरित, फिर भी इस दोगली औरत का आधा अंग्रेज़ी रक्त विपदा की बीहड़ राह पर इसे खींचे ले जा रहा है। लेकिन क्या केवल रक्त का ही गर्व ? कासिम बाज़ार में और भी तो बहुतेरे अँगरेज़ हैं ? जेम्स हार्डिंग, थेडर, बारकर। उन सबके लिए तो मेरी एन दौड़ी नहीं आयी ? वह सपरिवार चार्नक को छुटकारा दिलाने के लिए आयी है। आख़िर क्यों ?

मेरी के स्वर में कोई उत्ताप, कोई आकुलता नहीं। बड़ा ही स्वाभाविक था वह स्वर। लेकिन बुरक़े की आड़ में उसका मुखड़ा भी क्या ऐसा ही भाव-लेशहीन है ? उस पर क्या हृदय की गोपन भावना आ-जा नहीं रही है ? चार्नक जाने भी कैसे ? मेरी परदानशीन है।

ऐसा ही करेगा चार्नक। हुगली कोठी का चीफ राइट वरशिपफुल जॉब चार्नक एस्क्वायर औरत का बुरक़ा डालकर ही परिवार सहित चोर की नाईं कासिम बाज़ार से छिपकर भागेगा। विदाई का कोई आयोजन नहीं होगा। ट्रम्पेट नहीं बजेगा, झंडा नहीं फहराया जायेगा, प्यादे-राजपूत सिपाही मार्च नहीं करेंगे, बंदूकों से आवाज़ें नहीं दागी जायेंगी। वह मुक़ाबला करके रिहाई नहीं पायेगा—पायेगा अपनी ठुकराई हुई एक दोगली स्त्री की कृपा से। वह मेरी एन के एहसान को कैसे चुकायेगा ? चार्नक मानो छुटकारे की, राहत की साँस अभी से ही लेने लगा। वह बेहिचक, बेझिझक मेरी एन की चाल के अनुसार कासिम बाज़ार से भागने को तैयार हो गया।

मेरी एन की योजना सफल हुई। चार्नक सोच भी नही सका था कि इस आसानी से भागना सभव होगा। गगा की अँधेरी छाती पर नाव हुगली की ओर दौड़ पडी। विश्वासी मल्लाहो ने डाँड सभाल रखी थी। सरपट भागने लगी नाव। रात के अँधेरे मे जहाँ तक संभव है, दूर निकल जाया जाये। दिन मे कही जगल-झाडी, नाले-नहर मे छिपकर रहा जा सकेगा। रात मे फिर दौड। कोतवाल के लोग पीछा भी करेंगे, तो ढूँढ नही पायेंगे।

नाव के अदर अभी भी चार्नक और बीवी बुरका डाले हुए है। क्या पता, किसी नाव के लोग देख लें, पहचान लें, कोतवाल को खबर कर दें ? पिस्तौल मे गोलियाँ भरकर चार्नक ने तैयार ही रखा है। मौका पड़ने पर वगैर जान लिये वह पकड़ मे नही आयेगा।

चार्नक को हब्शी औरत का मर्दाना वेष याद आ रहा है। लबे-तगडे शरीर पर उसने चार्नक का पहरावा ओढ़ा। कोट, पतलून और टोपी मे उसे दूर से पहचानना मुश्किल था। खास करके रात के अँधेरे में।

और मेरी एन ? उसने बुरका उतार दिया था। शांत, अपलक आँखो से वह चार्नक को निहार रही थी। उसका वह उद्दाम जगली आकर्षण कहाँ गया ? चार्नक की बीवी ने उसके बादामी बालो का जूड़ा बाँध दिया। अपनी साडी और साये से उसने उसकी कमीज और गरारा बदल लिया। जेंटू नारी का पहनावा अपनाकर जब उसने बुरके वालियों को विदा किया, कौन कह सकता था कि वह नकली है, चार्नक की बीवी नहीं है ?

चार्नक की नकली बीवी ! नाटक का यह पात्र बनकर मेरी एन मस्त उठी थी। विदाई की घड़ी मे उसने चार्नक से कोई बात नही की। चार्नक के बुरके मे आँखो के आगे जो जालियाँ थी, उसने सिर्फ उन्हीं पर अपनी निगाहे टिका रखी थी।

चार्नक ने बुरक़ा उतारा। बड़ी गर्मी लग रही थी। बच्चियाँ सो रही थी। एजेला ने भी बुरका उतार दिया। रोशनी में वह साफ

दिखायी देने लगी थी। मेरी एन की कमीज़ और ग़रारे में वह अनोखी लग रही थी।

चार्नक ने धीरे-धीरे एंजेला को अपनी बाँहों में खींच लिया। अस्फुट स्वर में बोला, 'बहुत अच्छी स्त्री, बहुत अच्छी स्त्री !'

एंजेला और मेरी एन इस समय चार्नक के मन में एक हो गयी हैं, और उस पर खामोशी-सी छा गयी है।

'क्या सोच रहे हो ?' बीवी ने पूछा।

'कहाँ, कुछ भी तो नहीं,' चार्नक ने कहा।

'मैं जानती हूँ, तुम जरूर उस औरत के बारे में सोच रहे हो।' स्त्री का मन, स्वामी की चिन्ता को उसने ठीक से पकड़ लिया।

'ठीक ही कहा तुमने, मैं मेरी एन के बारे में ही सोच रहा हूँ। पता है तुम्हें, मैंने उसे दो-दो बार ठुकराया। वह मुझसे मुहब्बत करने आयी थी। मैंने उसे तरह नहीं दी।'

'जानती हूँ, उसने मुझे बताया है। वह तुम्हें सचमुच ही प्यार करती है। भला तुम्हें प्यार किये बिना रहा जा सकता है ?'

'सिर्फ मुहब्बत की ही वजह से उसने इतनी बड़ी विपदा मोल ले ली। और मैं ? अपनी जान बचाने के लिए कायर की तरह भाग आया।'

'चलो, हम कासिम बाज़ार लौट चलें। मुझे यह डर लग रहा है कि कहीं वह बेचारी आफत में न पड़ जाये ! मुगलों का कोई विश्वास नहीं। बड़े बेरहम हैं वे। यदि उस औरत के साथ कुछ बुरा हुआ तो मेरे दुख की सीमा नहीं रहेगी।'

'लौट ही चलो। मगर इन बच्चियों का क्या होगा ?'

'इन्हें दीदी के पास रख जायें तो कैसा रहे ? उसने घर-गिरस्ती से मोह तोड़ लिया है, पर बच्चियों का मोह नहीं छोड़ सकेगी। दीदी का घर यहाँ से कितनी दूर है ?'

'हम नदिया के आस-पास आ गये हैं। ठीक है, इन्हें मोतिया के पास ही रख जायें। तुम भी नदिया में ही रह जाओ न ?'

'पागल हो गये हो, मेरा स्थान तो तुम्हारे ही साथ है।'

नवद्वीप पहुँचकर चार्नक ने अब्दुल अजीज की नाव छोड़ दी। मोतिया

का आश्रम ढूंढ निकालने में देर नही लगी। नदी के किनारे एक छोटा-सा कुंज बनाया है उसने। रात-दिन पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन में ही डूबी रहती है। इन लोगों को देखकर मोतिया खिल उठी।

वह बोली, 'इसमें बात ही क्या है ? मेरी बच्चियां मेरे साथ रहेंगी। यह तो खुशी की बात है।'

फिर भी चार्नक ने बच्चियों के लिए एक दाई ठीक कर दी।

मोतिया ने कहा, 'साहब, बाघ की मांद में घुसने जा रहे हो। साथ सुदर भाई को रख लो। क्या पता, कब कौन-सी विपदा किधर से आये !'

'खैर, यही सही।'

बीवी बोली, 'तुम तो साहब को जानती हो दीदी, मैं साथ नहीं रहूंगी, तो देख-भाल कौन करेगा ?'

मोतिया बोली, 'किंतु तुम स्त्री हो। रास्ते में बहुत संकट है।'

'स्त्री किसने कहा,' बीवी बोली, 'मैं मर्द का बाना पहनूंगी। बड़ा मजा आयेगा। बुरका पहनकर साहब औरत बना था, कुरता पहनकर मै मर्द बनूंगी। कोई पहचान नही सकेगा मुझे।'

'बुद्धू कही की !' मोतिया बोली, 'अरी, तेरा यह रूप कुरते से ढंकेगा ?'

'रंग लगाकर मैं शक्ल बदल लूंगी।'

चार्नक ने कहा, 'ठीक कहा, एजेला। मुझे भी भेष बदलने की ज़रूरत है। नकली दाढ़ी लगाकर मैं भी मूर व्यापारी बनूंगा।'

एक दूसरी नाव से सुदर कहार को साथ लेकर चार्नक और उसकी बीवी—सब कासिम बाज़ार लौट आये। दोनों ही मूर व्यवसायी के रूप में थे। चार्नक की बीवी एक खूबसूरत जवान लग रही थी। काले बालों को छिपाने के लिए उसने टोपी पर पगड़ी लपेट ली थी। मोटा कपड़ा बांधकर उसने उन्नत स्तनों को समतल बनाने की चेष्टा की। चार्नक के चेहरे पर कलफ लगी लाल दाढ़ी, होठ के ऊपर सफाचट। दोनों अफगान-से लग रहे थे।

उलटी धार मे नाव मंथर गति से बढ़ने लगी। सुंदर का उत्साह मल्लाहों की गति को तेज़ नही कर सका। कासिम बाज़ार के मुख्य घाट के

क़रीब ही जब नाव लगी तो तीसरा पहर हो रहा था।

सुदर ने कहा, 'आप लोग नाव पर इंतज़ार करें। मैं जाकर ज़रा सुराग लगाकर आता हूँ।'

बीवी का धीरज टूट रहा था। वह बोली, 'न, हम सभी चलें। यों ही बड़ी देर हो चुकी है। क्या पता, इस बीच क्या घट चुका हो!'

वे लोग घाट से पहले ही उतर पड़े। मल्लाहों को वहीं इंतज़ार करने के लिए कहा। कीचड़ में होकर वे किनारे पर आये। उसके बाद शहतूतों के खेत से बड़ी सावधानी से कासिम बाज़ार-कोठी की ओर बढ़े।

दूर पर ऊंची की कोठी पर पताका फहरा रही थी। अंदर से गाने-बजाने की आवाज़ आ रही थी। इस आनंद-उमंग का कारण साफ़ ज़ाहिर था। अँगरेज़ों को कासिम बाज़ार से बोरिया-बसना समेटना पड़ा। रेशम के कारोबार की होड़ जैसे कुछ दिनों के लिए रुक गयी।

रास्ते में छोटी-सी एक बस्ती मिली। नयी शक्लें देखकर गाँव के कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया। बच्चे और स्त्रियाँ मुसलमानों के पहरावे में इन दोनों को देखकर डर गयीं और घर में छिप गयी। दो-एक बड़ी उम्र वाले लोग भीत और संदिग्ध दृष्टि से, दूर से उन्हें गौर से ताकने लगे।

सुदर कहार ने उन लोगों की शंका मिटायी और आगे बढ़ा। लेकिन ज़रा ही देर में जो मुख़्तसर खबर मिली, वह भयानक थी।

मुग़लों की फौज ने हठात् बिगड़कर अँगरेज़ कोठी के पहरेदार को काट डाला है। बच्चों को पकड़कर ले गये हैं। लूट-पाट में लगे हैं लोग; जिसे भी सामने पाते है, बेरहमी से पीट रहे हैं। अँगरेज स्त्री-पुरुष जान लेकर भाग खड़े हुए है। दो-एक जने किसानों की पनाह में थे। मुग़लों ने उन्हें पकड़ लिया और उनपर बड़ा ज़ुल्म किया।

चार्नक ने पूछा, 'बीबी का क्या हुआ!'

सुदर बोला, 'यह खबर कोई नहीं बता सका।'

चार्नक की बीवी ने कहा, 'कोठी के आसपास चलो। वहाँ ज़रूर खबर मिलेगी।'

डरते-डरते वे कोठी की तरफ़ बढ़े। दूर से कोठी पर झंडा नहीं दिखायी दिया। झंडे का डंडा टूट गया है। कोठी के पास पहुँचने पर मुग़लों के

जुल्म के कई चिह्न दिखायी पड़े।

रास्ते के किनारे एक गढे मे एक राजपूत की लाश नजर आयी। वह अँगरेज़ों की कोठी में दरवान का काम करता था। सियारों ने उसकी लाश को नोच खाया था।

कोठी का तोरण टूटा हुआ है। भिरी से अदर किया गया तहस-तहस नज़र आ रहा है। न आदमी, न आदमज़ाद। टूटी लकड़ियाँ बिखरी पडी हैं। फटे कागज-पत्तर, कपड़ों के टुकडे हवा में इधर-उधर उड़ रहे हैं। गोदाम का टूटा दरवाजा हवा से कभी खुलता है, कभी बंद होता है। बडी भद्दी-सी आवाज के साथ। रास्ते के कुछ कुत्ते आँगन मे सूँघते फिर रहे हैं, शायद कुछ जूठन की तलाश मे।

गोदाम मे कीमती माल ज्यादा नही था। जो क़ीमती रेशमी, टसर-गरद के कपडे थे, खतरे की आशंका से चार्नक ने उन्हें वहुत पहले ही हुगली भेज दिया था। वह माल तो अब बालेश्वर के रास्ते में होगा। फिर भी नुकसान कुछ कम नहीं हुआ। कोठी में रहनेवालो के लिए भी चार्नक को चिंता हुई। अफसोस से उसका मन भर आया। कोठी का प्रधान होते हुए भी वह अपने अनुचरों को छोड़कर भाग खड़ा हुआ, इसके लिए उसे पछतावा होने लगा।

चार्नक की बीवी ने दिलासा दिया, 'क़ैद मे रहकर भी तुम क्या कर पाते ? तुम्हारे छुटकारे से मुग़लो से कोई समझौता हो जाना संभव है।'

तेज़ कदम बढ़कर वे चीफ के बँगले की ओर वढे। लेकिन फाटक के पास पहुँचते ही सन्न रह गये। वीभत्स दृश्य !

फाटक के दोनों ओर दो भालों की नोक पर दो नर-मुड साँझ के झुट-पुटे में भी उन्हें साफ दिखायी दिये। क्षत-विक्षत काले मुड सर के बाल भेड़ों-से ऐंठे हुए। डरी हुई विस्फारित आँखें। दूसरा ...!

चार्नक की बीवी ने चीख़कर चार्नक की छाती में सिर छिपा लिया। बीवी की आँखों ने दूसरा मुड भी पहचान लिया।

विखरे बादामी केशो की पृष्ठभूमि मे वहुतेरे कटे घावो से लहूलुहान अधमैला-सा वह मुखड़ा चार्नक का खूब पहचाना हुआ है। अधखुली नीली आँखों में धुमैली पुतलियाँ...!

धनी मूर व्यवसायी जनाब अब्दुल अज़ीज़ की बेगम के नाते भी मेरी एन ऐसी मौत के हाथों बच नहीं सकी।

चार्नक की बीवी फफककर रो पड़ी।

चार्नक अस्फुट स्वर में चीख उठा, 'इसका बदला मैं लूंगा अवश्य।'

चार्नक के गालों पर आँसू ढुलकने लगे।

सुंदर ने याद दिलायी, 'यहाँ ज्यादा देर तक रुकना खतरे से खाली नहीं। कहीं मुगलों ने देख लिया तो गजब हो जायेगा।'

चार्नक से कहा, 'कितना भी गजब हो चाहे, इन दोनों औरतों को दफनाना ही होगा। कम-से-कम इनके प्रति इतना सम्मान तो मुझे दिखाना ही है।"

मगर यह एक समस्या थी। कटे मुंड तो आँखों के सामने है, इनके धड़ कहाँ हैं! आसपास निगाह दौड़ाई। कोई कब्र नहीं दिखायी पड़ी। बँगले के अंदर देखना चाहिए। अंदर कोई पहरेदार तो नहीं है? बीवी को सुंदर की निगरानी में छोड़कर चार्नक सावधानी से अंदर दाखिल हुआ।

साँझ के अँधेरे में यह प्रेतपुरी खौफनाक हो उठी है। मुग़ल सैनिकों ने खुलकर लूट मचायी है। जहाँ-तहाँ उस लूट के करतब साफ़ दीख रहे हैं, मानो इस इलाक़े से होकर एक भयंकर आँधी गुजरी हो।

बगीचे के एक ओर हब्शी बाँदी का कबंध नजर आया। उसके पहनावे में अभी भी चार्नक की ही पोशाक। फटी-चिटी। जहाँ-तहाँ जमा हुआ खून। वह पोशाक मानो चार्नक का उपहास करने लगी। नाम-गोत्रहीन एक काली विदेशिनी शायद हुगली के प्रधान, राइट ऑनरेबुल कंपनी के चीफ जॉब चार्नक से ज्यादा हिम्मतवर निकली। चार्नक श्रद्धा से उस धड़ के सामने नतमस्तक हुआ।

लेकिन मेरी एन का धड़ कहाँ है? अँधेरा धीरे-धीरे गाढा होने लगा। फौरन ढूंढकर निकाल लेना है। चार्नक ने यहाँ-वहाँ देखा। वह देहावशेष कहीं नहीं मिला। फिर वह घर के अंदर गया। मुग़ल सैनिकों ने कोई भी कीमती चीज नहीं छोड़ी है। सब ले गये। जिन वजनी चीजों को उठा ले जाना आसान नहीं था, उन्हें तोड़-फोड़कर बिखेर दिया है। कागज-पत्तर सब इधर-उधर कर दिये हैं।

शयन कक्ष मे पहुँचा। चार्नक को धुँधली रोशनी मे मेरी एन का धड़ नजर आया। लहूलुहान, बिखरी सेज के एक किनारे पडा। पहनावे में लहू से रँगा कपड़ा। साफ समझ में आया, हत्यारे सैनिकों ने पहले उस अभागिनी की देह से अपनी अकथ्य लालसा तृप्त की है।

चार्नक ने नाश को उठा लिया। शीतल, कठोर कबंध के स्पर्श मे उसका सारा शरीर एकबारगी सिहर उठा। जिन्दगी का वह उफान कहाँ गया, जिसने उससे कभी चार्नक को प्रेम से आलिंगन किया था? लालायित बाँहें काठ जैसी कठोर, चंचल चरण निश्चल और निष्प्राण!

सोचने का वक्त कहाँ है? चार्नक तेजी से कबंध को लेकर शयन-कक्ष से बाहर निकला।

बगीचे में ही दोनों का गाड़ना होगा।

अगल-बगल दोनों लाशों को चार्नक ने लिटा दिया। तेजी से बाहर निकला। सुंदर ने कुछ काम कर रखा था, भाले की नोक मे उसने दोनो मुडो को उतार लिया था। हब्शी बाँदी का सर सुदर के हाथ मे था, मेरी एन का सर बीवी की गोद मे। चार्नक ने दोनो भालों को खीच लिया। उसी भाले से मिट्टी खोदने लगा, वक़्त नही है।

मुडो को ले जाकर बगीचे मे ठीक जगह पर रखा, सुदर और चार्नक दोनो मिलकर खोदने लगे। नर्म मिट्टी खोदने मे आसानी हुई। चार्नक की बीवी ने मृत स्त्रियों की वेश-भूषा को यथासभव ठीक कर दिया।

अँधेरा हो गया। तारों की रोशनी मे चारो ओर धुँधला-सा। उसी मे मिट्टी खोदने की खस-खस आवाज। गरमियों की वायुहीन रात मे पसीने-पसीने होकर उन्होंने कब्र खोद डाली। हब्शी बाँदी की कब्र जरा लबी-चौड़ी खुदी। मेरी की दरमियानी आकार की। दोनों कब्रे काफी गहरी खोदी गयी, नही तो सियार-कुत्ते मिट्टी खोदकर शवों को नष्ट कर देंगे।

सुदर ने हब्शी बाँदी की लाश को क़ब्र मे सुलाया, चार्नक ने मेरी की लाश को। उसके सख्त हुए कबंध को चार्नक ने अतिम बार ललककर गले से लगाया। कटे मुड के शीतल ललाट पर आखिरी बार उसने एक प्रेम-

चुंबन अंकित कर दिया। ठुकराई हुई प्रेमिका के प्राणहीन मुखमंडल पर आँसुओं की कुछ बूँदें चू पड़ी।

कब्र पर उन लोगों ने जब मिट्टी डाली, तो चार्नक की बीवी की रुलाई फूट पड़ी!

चार

•

लेफ़्ट-राइट-लेफ़्ट—लेफ़्ट—लेफ्ट—, 'बाउटटर्न । लेफ़्ट-राइट-लेफ़्ट—लेफ़्ट—लेफ़्ट-राइट ह्वील । लेफ्ट-राइट-लेफ्ट—लेफ्ट—लेफ्ट...।

हुगली के प्रागण में अँगरेज़ी फ़ौज क़वायद कर रही है। तादाद में तीन सौ। पँचमेली फौज। अँगरेज़ हैं, उम्र के नये। मसें भीग रही हैं। पुर्तगाली और दोगलों की ही संख्या ज्यादा है। पुर्तगालियों का कारोबार प्रायः खत्म हो गया है। बहुतेरे पुर्तगालियों ने अँगरेज़ों की फौज में नौकरी कर ली है। किराये के सैनिक के रूप में राजपूत और ग्वाले भी फ़ौज में भरती हुए हैं। पहनावे में नीले पाड वाली लाल पोशाक। हाथ में मस्केट। पंक्तिबद्ध सैनिक कवायद कर रहे हैं। बिगुल बज रहा है, ड्रम बज रहा है। बहुत-से मस्केट एक साथ ही गरज उठे। तोप-बंदूक की आवाज़ से हुगली शहर कांप रहा है।

चंदन नगर मे भी अँगरेज़ी सेना की चौकी है। वहाँ भी कवायद, युद्ध के बाजे और बंदूकों की निशानेबाज़ी जारी है।

स्लूप और विभिन्न तरह की नावें भी युद्ध के साज से सजायी जा रही हैं। सशस्त्र नावों के बेडों से रह-रहकर छोटी तोपें और बंदूकें गरज उठती हैं।

पूरी अँगरेज़ी फ़ौज का कर्नल जॉब चार्नक।

बनिया जॉब चार्नक पद के अधिकार से सेना का भी अधिनायक है। लड़ाई का कोई अनुभव नहीं है। केवल अदम्य साहस और काफ़ी शान। इन सबके अलावा है दुर्जय प्रतिहिंसा की भावना। मुगल मुलाज़िमों का लगातार ज़ुल्म और शोषण भुलाया नहीं जा सकता। भूल नहीं पाता वह बंदी जीवन की ग्लानि, नारी-हत्या के नृशंस दृश्य!

मेरी एन का कटा सर जब-तब उनकी आँखों में तैर जाता है, ज़ख्मों

से भरा कबंध मन में साफ़ खिंच ग्राता है। चार्नक में प्रतिहिंसा की ज्वाला ग्रौर तीव्र हो उठती है।

संतोष है कि कंपनी की नींद ग्राखिर टूटी। इतने दिनों के बाद ऊपर के ग्रधिकारियों को समझ ग्रायी। इंग्लैंड के राजा महामहिम जेम्स द्वितीय ने बहुत-से गोलंदाज़ ग्रौर सैनिकों को जहाज़ों में भरकर पूर्वी भारत की ग्रोर भेजने की ग्रनुमति कंपनी को दी है। पाँच जहाज ग्रौर तीन फ्रीजेट सैनिकों को लेकर बालेश्वर ग्रा रहे हैं। लंदन में युद्ध-समिति की बैठक चल रही है। कंपनी के उच्चाधिकारी सात समंदर पार से मुगलों के खिलाफ़ लड़ाई का संचालन करेंगे। लेकिन बंगाल का नायक रहेगा जॉब चार्नक। जहाज जब बालेश्वर में लंगर डालेगा, तो चार्नक दल-बल के साथ जहाज़ में रहेगा। वहाँ से सूबा बंगाल के नवाब के पास चर्म-पत्र जायेगा। ग्रंतिम रूप से चेतावनी दी जायेगी कि हरजाना दो, बेरोक व्यापार का ग्रधिकार दो, शोषण बंद करो, या युद्ध के लिए तैयार रहो। समुद्र की उत्ताल तरंगों में मुगलों के युद्धपोत ब्रिटिश जहाज़ों का मुकाबला नहीं कर सकेंगे। वहीं ग्रँगरेज़ों का जोर है। इसलिए ब्रिटिश जहाज एक ग्रोर बंबई से मक्का जाने वाले जहाज़ों पर हमला करेंगे, दूसरी ग्रोर बंगाल की खाड़ी में उनके वाणिज्य-पोतों से दखल-छेड़ की जायेगी। इसके बाद ग्रँगरेज़ों का जहाज़ी बेड़ा चटगांव जायेगा। चटगांव समृद्ध बंदरगाह है। कई साल पहले मुगलों ने ग्रराकान के राजा से छीन लिया था। ग्रँगरेजी फ़ौज चार्नक के नेतृत्व में चटगांव पर क़ब्ज़ा करेगी। चार्नक उस बंदरगाह का पहला गवर्नर होगा। इस बार पैने नाखूनों के ग्राघात से मुगल-हाथी को ब्रिटिश-सिंह का रौब-रुतबा समझा देना होगा। कंपनी ने बहुत बरदाश्त किया है, ग्रब नहीं। सिर्फ तोपों के गोलों से मुग़लों की उद्धतता पर चोटें करनी होंगी। लड़ाई की यही योजना है।

हाँ, कंपनी के डाइरेक्टरों ने सावधान रहने को कहा है। विशेष सतर्क रहो। बच्चों ग्रौर स्त्रियों पर हमला न हो ग्रौर हम[illegible] क्ष लोगों

अभिनय भी होता है।

फ़ौज के साथ मिस्टर चार्नक जायेंगे। वहाँ की भाषा और आचार-व्यवहार से उन्हे दीर्घ परिचय है। उनकी सहायता जरूरी है।

लेकिन याद रखिये कि शांति ही हमारा चरम लक्ष्य है, गरचे हम विवश होकर मुगलो से लड़ने का फ़ैसला कर रहे है। युद्ध कितना ही न्यायोचित क्यों न हो, उसमें प्रायः लूट-पाट और खून-खराबी होती है। हमने ऐसा पहले भी नही किया है; यह काम हमारे स्वभाव के विरुद्ध है। या तो हमे भारत का कारोबार छोडना होगा या मुगलों से लडना होगा, दूसरा कोई उपाय नही है। अँगरेज जाति की प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए हमें भारत मे महामहिम राजा की तलवार म्यान से निकालनी ही पडेगी।

कंपनी का यह सब निर्देश हुगली में बहुत पहले पहुँच चुका था। जॉब चार्नक उस समय कासिम बाजार मे कैद था।

हम मजबूर होकर लड़ाई लड़ रहे हैं, शांति ही हमारा लक्ष्य है।

लेकिन जॉब चार्नक लडाई लडेगा प्रतिहिंसा के लिए। बहुत दिनों का रुँधा आक्रोश अब फूट पड़ने के लिए व्याकुल है। रणकुशलता नही है तो क्या, साहस और दृढ़-निश्चय तो है।

पहाड़ों की गुफ़ाओ मे रहकर मराठा शिवाजी ने मुगलों की गद्दी को हिला नही दिया था? सागर की तरंगों का सहारा लेकर ब्रिटिश जहाज भी मुगलो की शक्ति को झुका सकेंगे। गहरे आत्मविश्वास से चार्नक का संबंध पक्का होता गया।

हुगली आने के समय से चार्नक ने कोठी का सारा भार मजबूत हाथों मे थाम लिया। कासिम बाजार से उसका निकल भागना मुगल सरकार के लिए विशेष हलचल का कारण हुआ। लेकिन हुगली की सुरक्षित कोठी पर वे सीधे हमला करने की हिम्मत नही कर सके। हुगली से समुद्र ज्यादा दूर नहीं। नदी की राह चार्नक समुद्र में जा रहेगा, इसकी भी प्रबल संभावना है। इसके अलावा अँगरेज़ों के समर्थक हिंदू बनियों ने भी नवाब से सिफ़ारिश की। नवाब भी कंपनी के व्यापार की बाबत शुल्क के लोभ से एकाएक कोई कड़ा कदम उठाने के पक्ष मे न था। डराकर जितना काम

निकल सके, उतना ही ठीक।

इधर अँगरेज़ों की इस तैयारी की खबर से मुगल सरकार हाथ-पर-हाथ धरे नही बैठी रही। उसने हुगली मे भागीरथी के किनारे ग्यारह तोपें लगायीं, सैनिकों की संख्या भी बहुत बढ़ा दी। तीन-चार सौ घुड़सवार और तीन-चार हज़ार पैदल सैनिक अब्दुल गनी के अधीन तैनात किये गये। फौज के बलबूते पर फौजदार भी लडने को तैयार हुआ। तरह-तरह से अँगरेज़ों के व्यापार में वह रुकावट डालने लगा; अँगरेज़ी फौज की रसद रोकने के लिए बाज़ार के दूकानदारों पर दबाव डालने लगा।

इस तरह डराने-धमकाने का युद्ध शुरू हो गया।

चार्नक जानता था कि शीघ्र ही किसी दिन उसे हुगली छोड़ना होगा। फिर भी जितना समय मिले, उतना ही अच्छा। कंपनी के शोरे के चौदह हज़ार बोरे और ढेरो माल हटाने का समय मिलेगा। परंतु इतना माल हटाने लायक जलयान हुगली मे अँगरेज़ों के पास नहीं थे।

चार्नक धीरज धरकर प्रतीक्षा करने लगा, ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े के आने की। इसी बीच फौज की परेड होने लगी, रण के बाजे बजने लगे और मस्केट का गर्जन होने लगा।

बारूद की ढेरी मे सचमुच ही एक दिन चिंगारी जा पडी।

जिसका वायदा था, वह नौ-बेड़ा कहाँ? कहाँ है वह विशाल सेना? एक युद्धपोत रास्ते में ध्वंस हो गया। दो तो स्वदेश की सीमा पार नहीं कर सके, उनमे से एक बहुत ही बड़ा जहाज़ था। दूसरे जहाज़ किसी प्रकार से हुगली की ओर बढ़े।

चार्नक मुसीबत मे पड़ गया। छोटा-सा नौ-बेड़ा और मुट्ठी-भर पँचमेल सेना लेकर वह विराट् मुगल-शक्ति के साथ कैसे जूझेगा? और, किराये के पुर्तगाली सैनिकों पर पूरा भरोसा भी तो नही किया जा सकता। भाग्य के परिहास पर चार्नक को हँसी आयी। चार सौ सैनिकों का अधिनायक मुगल फ़ौज के खिलाफ लोहा लेने को तैयार हो गया। चटगाँव का भावी गवर्नर! इससे तो कंपनी अगर उन सबकी राय मानती, अगर भागीरथी के मुहाने पर किला खड़ा करने देती, तो चार्नक तोप के गोलों से मुगलों के वाणिज्य-पोतों को तबाह कर देता। उस दशा

में समझौता किये बिना उनके लिए कोई चारा नहीं रहता। अब तो यह हाल कि कासिम बाजार गया, हुगली की कोठी भी जाने को हुई। चटगाँव की कौन सोचे!

चार्नक को खबर मिली, फौजदार के सिपाहियों ने तीन अँगरेज सैनिकों को कैद कर लिया है। वे तीनों सैनिक रोज के नियम के मुताबिक रसद लाने के लिए सवेरे बाजार गये थे। हिंदू दूकानदारों ने फ़ौजदार की मनाही के बावजूद मुनाफे के लालच से माल-मसाला दिया था। इतने में फ़ौजदार के सिपाही आ पहुँचे। उन लोगों ने सारा सामान छीन लिया; सैनिकों को मारा-पीटा। उसके बाद हाथो मे रस्सी बाँधकर फौजदार अब्दुलगनी के पास ले गये।

चार्नक को अपने बंदी-जीवन की याद आयी। मारे गुस्से के वह जल उठा। उसने फौरन फ्रांसिस एलिन, कैप्टन आरबुथ नॉट आदि प्रभावशाली अँगरेजों की बैठक बुलायी। तय पाया कि मुगलो का सामना करना होगा और कैदियों की रिहाई करानी होगी।

चार्नक ने कैप्टेन लेसली को उसी क्षण हुक्म दिया कि जाओ, फौजियों की एक कंपनी लेकर उन बंदियो को जीवित अथवा मृत छुड़ा लाओ। यदि कोई धावा करे, तो जवाबी हमले से न चूकना। यदि वैसा कुछ न हो तो अपनी ओर से खून-खराबी की जरूरत नही।

फ़ौज की एक टुकडी लेकर कैप्टन उसी क्षण बंदियों को छुड़ाने के लिए निकल पडा।

तीनों कैदी अँगरेज सैनिक कहाँ है?

अब्दुल गनी के घुड़सवारों और पैदल सैनिकों ने इसका जवाब अँगरेजो की टुकड़ी पर हमला करके दिया। जॉब चार्नक के हुक्म के मुताबिक अँगरेजों ने उनका मुकाबला किया। तलवारें बजने लगीं, मस्केट गरजे। कुछ देर जूझने के बाद मुगलों के पाँव उखड गये। उनमें हताहतों की संख्या सात थी। अँगरेजो मे कोई हताहत नहीं हुआ।

अँगरेजो के अचानक प्रतिरोध से मुगल फौज चौकी। तमाम हुगली में अफवाहों की बाढ़-सी आ गयी। अब अँगरेज शायद और कोई तगड़ा हमला करें।

अंगरेज़ों की कोठी के आसपास उनकी जितनी छावनियाँ थीं मुग़लों ने उनमें आग लगा दी। फूस के छप्परों में धू-धू करके आग लपक उठी। नीयत उनकी यह थी कि लाख के घर की तरह अंगरेज़ों को उसी में जला मारें। अनुकूल हवा से आग एक के बाद दूसरे घर को जलाते हुए अंगरेज़ों के पुराने गोदाम तक जा पहुँची। उस गोदाम में कंपनी का शोरा और दूसरा कीमती सामान था। उस कीमती सामान के साथ गोदाम जल गया। कंपनी का बहुत नुकसान हुआ।

इतना ही नहीं, भागीरथी के किनारे मुगलों ने जो ग्यारह तोपों की चौकी बनायी थी, वहाँ से उनकी तोपें लगातार गरजने लगीं। गंगा की छाती पर गोले गिरने लगे। अंगरेज़ों के जहाज़ी बेड़े ने गोलों की मार से किसी तरह जान बचायी। लेकिन सामने अन्य बाधाएँ मुँह बाए खड़ी थीं। मुगलों की फौज कहीं अंगरेज़ों की कोठी पर टूट पड़े तो कोठी तो नष्ट-भ्रष्ट हो ही जायेगी। अब बैठे रहने का कोई उपाय नहीं।

चार्नक ने अंगरेज़ी सेना को चंदन नगर से हुगली ले आने का हुक्म दिया। तोपों की उस चौकी पर क़ब्ज़ा करना ही होगा। चार्नक के पास मुट्ठी-भर सेना थी। मगर तेज़ी और साहस पर काफी कुछ निर्भर रहता है। जैसे भी हो, दुश्मन के हौसले को पस्त करना ही पड़ेगा।

कैप्टन रिचर्डसन के अधीन अंगरेज़ी फ़ौज की एक टुकड़ी मुगलों की उन तोपों के अड्डे की ओर बढ़ी। लेकिन ज़रा ही देर में बड़े सख्त मुकाबले के कारण उन्हें लौट आने पर मजबूर होना पड़ा। एक अंगरेज़ सैनिक को जान से हाथ धोना पड़ा; बहुतेरे घायल हो गये।

फिर भी हिम्मत हारने का समय नहीं। तोपों के उस अड्डे पर किसी भी कीमत पर दखल करना ही होगा। चार्नक की अनुमति लेकर कैप्टन आरबुथ नॉट ने और एक टुकड़ी फ़ौज लेकर उस चौकी पर धावा किया। दुश्मनों ने यह बिलकुल नहीं सोचा था कि अंगरेज़ों की पीछे हटी हुई सेना इतनी जल्दी फिर हमला करने की हिम्मत करेगी। आरबुथ नॉट ने जान की बाज़ी लगा दी। सैनिक उसकी हिम्मत से प्रेरित हुए। इस बार के हमले में मुगलों के गोलदाज़ टिक नहीं सके। बहुतेरे हताहत हुए। बाक़ियों के पाँव उखड़ गये। तोपें छोड़कर वे भागे। तोपों को निकम्मा

बनाकर विजयी अँगरेज़ सैनिकों ने मुगल सेना का पीछा किया। सामने जो मिला उसी की मारपीट की; जो कुछ मिला उसमें आग लगा दी। देखते-देखते अँगरेजी फौज मुगल फ़ौजदार के महल तक पहुँच गयी। खबर मिली, फौजदार जान लेकर, भेष बदलकर नदी की राह भाग निकला है। सारा हुगली शहर अँगरेज़ों के क़ब्ज़े में आने को हो गया। नायक के न होते हुए भी मुगल सेना मुकाबला करती रही। तादाद में वे बहुत ज्यादा थे। चार्नक ने हुक्म दिया, गोलाघाट मे नदी के ऊपर केच और स्लूप नावो से शहर पर तोपो से गोलाबारी करो। जल-थल—दोनों पर आक्रमण। लेकिन भाटा आ गया। हवा विपरीत थी। साँझ तक नावें शहर तक नही बढ पायी। साँझ के अँधेरे मे शहर के बीचोंबीच पहुँचे। तोपों की गरज और आग से हुगली के लोग सन्त्रस्त हो उठे। अँगरेज़ी बेडे ने मुगलो के एक जहाज़ पर कब्ज़ा कर लिया। तमाम रात, तमाम दिन नदी से हुगली पर गोलाबारी जारी रही। नदी के किनारे के घर-मकान चूर-चूर हो गये। आग की लपटें चारों ओर उठने लगी। तोपो की गरज, आग की लपट, आर्तों की चीख, विजय के रणवाद्यो ने आकाश-वातास को गुँजा दिया। अँगरेज सैनिकों ने मौक़े-मौके से उतरकर तट के घरों मे लूटपाट की। उसके बाद मुगलों के घर-द्वार मे आग लगा दी।

फ़ौजदार के सिपाहियों ने जिन तीन अँगरेज़ों को क़ैद कर लिया था, वे गारद तोड़कर कोठी में भाग आये थे। उनमें से एक बेतरह पिटा था, बहुत घायल था। वह मर गया। संघर्ष मे एक और भी आहत हुआ था। दुश्मनों के प्रायः साठ सैनिक खेत रहे। उनमे से तीन तो ऊँचे तबके के थे। घायल तो बहुत-से लोग हुए।

हुगली का फौजदार अब्दुल गनी चालाक आदमी था। उसने डचों की मारफ़त शांति की बातचीत शुरू की। सारे शहर में लोगों की ज़बान पर अँगरेज़ों की बहादुरी का बखान था। जॉब चार्नक के नेतृत्व की ख्याति चारों ओर फैल गयी। हुगली को दखल तो शायद किया जा सकता था, मगर मुगलों की विशाल सेना के मुक़ाबले उसे बचाने की फ़ौजी ताकत चार्नक के पास नही थी। कुल चार-एक सौ सैनिक। उनमें

मे वेतनभोगी पुर्तगाली तो बिलकुल बेकार थे। कंपनी का हुक्म था, चटगांव पर दखल करना होगा। विलायत से जिन युद्धपोतों के आने की बात थी, उनमें से दो आये, जिनमें एक की मरम्मत की जरूरत थी। ऐडमिरल निकल्सन उसे मरम्मत के लिए हिजली ले गया। फ्रीजेट डायमंड डूब गया। बाकी जहाज कब पहुँचेंगे, कोई ठिकाना नहीं। मौका पाकर प्रतिद्वंद्वी डचों ने बरानगर में अड्डा बनाया। यह तो हाल है। चार्नक ने सोचा, भले-भले शांति स्थापित करना ही बुद्धिमानी का काम है। और इसी सुयोग में हुगली से माल कहीं सुरक्षित जगह पर खिसका देना होगा।

शांति इस शर्त पर कायम हुई कि रसद और जन-मजूर जुटाने में फौजदार अँगरेजों को तंग नहीं करेगा।

दोनों ही पक्ष यह जानते थे कि यह शांति अस्थायी है। इसीलिए नदी के मुहाने पर मुगलों के जहाजों पर कब्जा कर लेने में अँगरेज नहीं झिझके। हिजली के करीब जिस स्थानीय जमींदार ने मुगलों के खिलाफ विद्रोह का ऐलान किया था, चार्नक ने उससे भी मित्रता कर ली। उस जमींदार ने नदी के मुहाने पर किला बनाने में रसद, माल-मसाला, मजदूर आदि से अँगरेजों को मदद का आश्वासन दिया। चार्नक का बहुत दिनों का सपना पूरा होने की उम्मीद हुई। उसने इस प्रस्ताव को खुशी-खुशी मान लिया। उसने शोरा भेज दिये जाने के बाद ही हिजली में अड्डा बनाने की सोची। सोचा, बाद में सशस्त्र संघर्ष से मुगलों में वह खौफ पैदा कर देगा। हुगली के कुछ प्रमुख नागरिकों को पकड़कर भी खासी रकम वसूल करेगा।

इधर नवाब शाइस्ता खाँ चुप नहीं बैठा था। हुगली में अँगरेजों की इस हरकत को सुनकर उसने पटना-कोठी पर हमला करने का हुक्म दे दिया था। मुगलों की फौज ने पटना-कोठी को लूट लिया, लोग-बागों को पकड़ ले गयी। बड़मल ने बहुत अनुरोध नहीं किया होता तो शायद नवाब ढाका के अँगरेज प्रधान मिस्टर वाट को गिरफ्तार कर लेता। नवाब ने तीन जमींदारों के अधीन तीन सौ घुड़सवार हुगली की ओर भेज दिये।

अब माल बचाकर खिसक जाने के अलावा उपाय क्या था ? रात-दिन परिश्रम करके चार्नक ने हुगली से शोरा रवाना कर दिया ।

ऐसी हालत में चटगाँव पर दखल कैसे किया जाये ? वहाँ शायद पाँच-छः सौ घुड़सवार और पैदल सैनिक सदा तैनात रखते हैं मुगल। इसके अलावा नावों का छोटा-सा बेड़ा भी है। चार्नक ने मद्रास के फोर्ट सेंट जॉर्ज को चिट्ठी लिखी। जन-बल चाहिए, और जहाज भी। यूरोप से जितने भी शिप आयें, सब यहाँ भेजें, वरना हममें से किसी का निस्तार नहीं ।

इधर मुगल फौजदार काफी डर गया था। उसने चार्नक की खुशामद शुरू की। अजी, झड़प क्यों ? जो झगडा है, समझौते से उसका निवटारा कर लें। बादशाह का फरमान पाने में मैं मदद करूँगा। तब तक नवाब के परवाने पर बिना शुल्क के व्यवसाय की कोशिश करो। चार्नक अब उसकी बातों में आने वाला नहीं। उसने विभिन्न मदों में मुगलों से छियासठ लाख पचीस हजार रुपये हरजाने का दावा किया। शायद अँगरेजों को खुश करने के लिए, नवाब ने फ़ौजदार अब्दुल गनी की बदली कर दी। वह रवाना हो गया ।

चार्नक जानता था, उसका यह रौब-दाब टिकाऊ नहीं। मुगलों पर विश्वास करना कठिन है। किसी भी क्षण मुगल फौज स्थल-मार्ग से आकर हुगली की कोठी पर दखल कर सकती है। इसलिए किसी ऐसी सुरक्षित जगह रहना चाहिए, जहाँ मुगल फौज आसानी से आक्रमण न कर सके। जल-मार्ग से अँगरेजों को काफी सुविधा है। भागीरथी के मुहाने के आसपास चौकी क़ायम की जाये, तो कैसा रहे ?

सो, बीस दिसंबर, सोलह सौ छियालीस को चार्नक ने सब-कुछ समेट कर हुगली से मुहाने की ओर प्रस्थान किया। पीछे हटने पर भी नेटिवों में इज्जत बनी रही, चार्नक को इसी बात की सात्वना रही ।

चार्नक का जहाज सूतानूटी के घाट पर आ लगा। कंपनी के एजेंट ने वहीं अड्डा गाड़ दिया ।

भागीरथी के पूरब-पार में सूतानूटी। चार्नक को जँच गया। नदी के किनारे ऊँची जगह। ज्वार-भाटा आता। बड़े जहाजों के आने में कोई

कठिनाई नहीं। हाट में सूत के पिंडों (नूटी) की खरीद-बेच होती। यह कारोबार यहाँ बहुत दिनों से चलता था। पुर्तगालियों के ग्रमल में व्यवसाय के केंद्र के रूप में विठूर खूब जम गया था। बसाक ग्रौर सेठों के कुछ परिवारों ने फ़िरंगियों के साथ कारोबार करने के लोभ से नदी के पूरब-पार गोविंदपुर में डेरा डाला था। जंगल साफ करके उन्होंने वहाँ घर बनाये थे। गोविंदजी के मंदिर की प्रतिष्ठा की थी। उन्हीं लोगों ने यहाँ से कुछ मील उत्तर सूतानूटी में हाट लगाना शुरू कर दिया था। सूतानूटी के दक्षिण में कालिकाता। ग्रकबर बादशाह के ज़माने में भी इसकी ख्याति थी। विठूर का गौरव काफी दिन पहले से फीका पड़ चुका था। सरकार ने उसका नाम भी बदल दिया था—मुकवा थाना। विदेशी तिजारत के कारण सूतानूटी की हाट खासी जम गयी। ताँतियों का जमघट। मछेरे नदी में मछली मारते फिरते। उपजाऊ ज़मीन। ग्रास-पास खंदक-खाई, जंगल-झाड़ी। पशु-पक्षियों का शिकार किया जा सकता है। खाद्य की कमी नहीं। रसद के लिए मुगल फ़ौजदार से लड़ने की नौबत नहीं। खासी ग्रच्छी जगह थी।

हाँ, ग्राबादी बहुत कम थी। ज्यादातर फूस के घर। झोंपड़े। होगला[1] के झोपड़े भी काफ़ी। स्थानीय जागीरदार मजूमदार बाबू का पक्का कचहरी-घर ग्रच्छा बड़ा-सा बना था।

चार्नक की बीवी को यह जगह पसंद ग्रायी। खुली जगह। हुगली की तरह भीड़-भरी, तंग नहीं। यहाँ पैदल भी घूमा जा सकता है। हुगली में पालकी पर निकलना पड़ता था। साथ में ग्रर्दली। ग्राजादी से घूमने-फिरने की ज़रा भी सहूलियत नहीं थी। तिस पर डच, फ्रांसीसी, पुर्तगालियों की भीड़—उनकी संदिग्ध ग्रौर ईर्ष्या-भरी दृष्टि बचाकर चलना मुश्किल होता था। हुगली में सिपाही-सवार के साथ मुगलों का फ़ौजदार रहता है। राह-बाट में चलना-फिरना भी खतरे से खाली नहीं। सूतानूटी ग्रच्छी जगह है। बीवी इसी बीच नाव से गोविंदजी की पूजा करने गोविंदपुरी गयी थी। सेठ-बाबुग्रों को खबर मिली, उन लोगों ने

1 जल में उत्पन्न एक वनस्पति, जिसके पत्तों से छप्पर बनाये जाते हैं।

खूब खातिर की। चार्नक साहब की बीवी; ऐसे-वैसे की गृहिणी है भला! साहब ने तो घोलाघाट में मुगलों को पानी पिलाके मारा है।

चार्नक की बीवी की उनके घर की स्त्रियों से जान-पहचान हुई। बंगाल में इतने दिनों तक रहकर बीवी ने बंगला बोलना अच्छा ही सीख लिया है। लिहाज़ा उन औरतों से बात करने में असुविधा नहीं हुई। वे बीवी को कालीघाट में काली का दर्शन करा लायी। पीठस्थान जाग्रतदेवी का।

बीवी ने बकरों के जोड़े की बलि चढ़ाई। मन-ही-मन प्रार्थना की, ऐ काली मैया, मेरे स्वामी और संतान का मंगल करना। मेरे साहब की मनोकामना पूरी करना।

बीवी ने पति को महाप्रसाद पकाकर खिलाया। भक्तिपूर्वक उसके कपाल पर सिंदूर का टीका लगाया। बोली, 'पंडों ने कहा है, माँ-काली का सिंदूर लगाने से जीत निश्चित है। सेठ की गृहिणी क्या कह रही थी, पता है? कह रही थी, सुना है चार्नक साहब ने आतिशी शीशे में सूरज की रोशनी के सहारे मुगलों के घर-द्वार जला दिये थे हुगली में। हाय, गजब! यह सही है क्या? इस अजीबोगरीब क़िस्से को सुनकर मैं तो हँसते-हँसते बेहाल। मैंने बात को न स्वीकार किया और अस्वीकार भी नहीं।'

चार्नक ने हँसकर कहा, 'मैंने बसाक बाबू से क्या सुना, जानती हो? मूर लोगों ने नदी के आर-पार एक जंजीर लगा रखी थी लोहे की, ताकि हमारे जहाज़ भाग न सकें। और मैंने तलवार के एक वार से उस जंजीर को काट दिया और जहाज़ों को लेकर चला आया। ये बंगाल के लोग ग़ज़ब की अफ़वाहें उड़ाते हैं।'

'बुरा क्या है,' बीवी ने मजाक में कहा, 'कभी तुम्हारी जांबाज़ी की कहानियाँ किसनजी की ही तरह लोगों की जबान पर रहेंगी।'

चार्नक ने कहा, 'सुनती हो एंजेला, हुगली की लड़ाई की शुरुआत के बारे में यहाँ क्या खबर फैली? जानती हो?

'यह कि मैंने बनारसी बाग़ खरीदा था। बगीचे के पेड़-पौधों को काटकर नयी कोठी बनवाई। दो-तीन तल्ले की कोठी। कोठी के घरों की

छीनी होने को थी कि हुगली के जितने प्रमुख सैयद-मुग़ल थे, सब तौबा-तौबा करते हुए फ़ौजदार के पास दौड़े गये। माजरा क्या है? तो, ये जो कोठियाँ अँगरेज़ बनवा रहे हैं, इतने ऊँचे-ऊँचे घर—जब उनकी छत पर लोग चढ़ेंगे, तो किसी मुग़ल हरम की आबरू बची रहेगी? बेगमों को वे आँखों से निगला करेंगे। कैसी शर्म की बात है! जनाब, फ़िरंगियों के ऊँचे कोठे को तोड़कर ज़मींदोज़ कराइए। बस, फिर क्या था, फ़ौजदार ने फौरन हुक्म दिया, घर बनाना बंद करो। कोई मिस्त्री फ़िरंगी का मकान नहीं बना सकता। इसी पर झगड़ा शुरू हो गया।'

बीवी ने कहा, 'सच! लोगों के मुँह से कैसी-कैसी अजीबोगरीब बातें सुनने को मिलती हैं, मगर कुछ भी कहो, मैं तो प्रार्थना करती हूँ, यह घर बनानेवाली अफवाह सच्ची हो जाये।'

'क्यों?'

'अरे वाह! आखिर यों खानाबदोश की तरह कब तक भटकते फिरेंगे? आज पटना, कल कासिम बाजार, परसों हुगली, नरसों सूतानूटी! और भी जाने कहाँ-कहाँ बोरिया-बिस्तर लेकर चक्कर काटना पड़ेगा, क्या पता! अगर दो-तीन मंजिल का कोई सुंदर-सा मकान होता! देखा न, कच्चे घर में यहाँ डेरा डालना पड़ा है, सरदियों में भी धरती से पानी निकल आता है। इतनी गीली जगह है। बच्चियों को भी सरदी-खाँसी हो गयी। यहाँ गंगा-किनारे कोई दो-तीन तल्ले का मकान होता तो बड़ा अच्छा होता!'

'तो, क्या मेरी इच्छा नहीं है, एंजेला? लेकिन भविष्य का ठिकाना नहीं। मुग़लों से लड़ाई अभी चुकी नहीं। अंत तक हम बंगाल में टिकेंगे भी या नहीं, संदेह है। समझौते की बात चल रही है। निबटारा नहीं हुआ तो सूतानूटी से डेरा-डंडा उठाना पड़ेगा। काश, यहाँ एक क़िला बनवा पाता! बड़ा अच्छा होता। नदी की ओर तोपें [illegible] । मुग़लों के नाव-जहाज़ हमसे डरते [illegible] नदी पार [illegible]
हमला करना भी आसा[illegible]
दलदल है। दक्खिन की [illegible]
नहीं पा सकती। क़िला [illegible]

मगर उसका अवसर ही कहाँ ?'

दूर पर बंदूक की आवाज हुई। बंदूक किसने छोडी ? जरा देर में चार्नक की बड़ी बेटी मेरी उमंग से दमकती हुई दौड़ी आयी। हाथ में उसके मरी बत्तखों का एक जोडा। उसके पीछे-पीछे बंदूक लिये चार्ल्स आयर हाजिर हुआ।

'पापा, पापा !' मेरी ने मारे खुशी के कहा, 'देखो, मिस्टर आयर ने कितनी सुदर बत्तखों का शिकार किया है ! मेरे सामने ही गोली मारी। बत्तखें पानी मे गिर पडी। मिस्टर आयर कीचड में घुसकर उठा लाये।'

चार्ल्स आयर ऑनरेबुल कंपनी का राइटर है। भारत आये लगभग दस-ग्यारह साल हुए। इस अरसे में बालेश्वर, ढाका, मालदह—कई कोठियों में घूम-घूमकर अच्छा अनुभव प्राप्त किया है। पचीस-छब्बीस की उम्र होगी। उत्साही युवक। चार्नक उससे खूब संतुष्ट रहता है। और आयर चार्नक की बीबी की बड़ी खातिर करता है। मौका मिलता है, तो चार्नक की बच्चियों से गप-शप भी लगाता है।

'वेल डन, माइ बॉय,' चार्नक ने आयर को शाबाशी दी।

आयर ने शर्मीली मुस्कान के साथ कहा, 'धन्यवाद, सर !'

मेरी ने खुशी से कहा, 'माँ, आज बत्तख का रोस्ट बनाना होगा। मिस्टर आयर को आने के लिए कह दूँ ?'

चार्नक की बीबी बोली, 'मेरी इजाजत के पहले ही तो तुमने न्योता दे दिया, मेरी !'

'ठीक है, ठीक है,' चार्नक ने कहा, 'आज रात तुम हमारी टेबिल पर खाना, आयर।'

'थैंक यू, सर,' उसने फिर कहा, 'यह मेरा परम सौभाग्य है। तो मैं पोशाक बदलकर आता हूँ।'

मेरी ने कहा, 'नहीं-नहीं मिस्टर आयर, आपको जाना नहीं है। मैं पकाना सीख रही हूँ। बावर्चीखाने में रोस्ट बनेगा, आप मेरी मदद कीजिए।'

बीबी बोली, 'अरे, यह क्या ? देख नहीं रही हो, उसकी पोशाक कीचड़-पानी में खराब हो गयी है। उसे अभी अपने घर जाने दो, मेरी।'

ग्रायर बोला, 'बस मैं गया ग्रौर ग्राया।'

'ठीक है,' मेरी ने कहा, 'देखिए, भूलिएगा नहीं। जल्दी लौट ग्राइएगा।'

'नहीं-नहीं।' ग्रायर चला गया।

बत्तखों को लेकर मेरी भागकर रसोई में गयी।

मेरी की उम्र कुल ग्राठ साल की है। लेकिन ग्रभी भी उसका रूप ग्राकर्षक है। उसका रंग चार्नक की तरह उतना लाल नहीं है। फिर भी एक गुलाबी ग्राभा है रंग में। मुखश्री बहुत-कुछ माँ जैसी उज्ज्वल। काले केश, नीली ग्राँखें!

मेरी को देखने से चार्नक की ग्राँखों में ग्रौर एक शिशु की छवि झलक उठती है। वह है दस साल की मेरी एन। उस दोगली लड़की ने बहुत दिन पहले चार्नक से प्रेम-निवेदन किया था। मेरी तरुण ग्रायर के प्रति साफ़ ही ग्राकृष्ट है। ग्रष्टवर्षीया के प्रेम में गहराई है या नहीं, कौन जाने? दस साल की मेरी एन ने तो ठुकराए जाने के बाद भी ग्रंत में प्रेमी के लिए ग्रपनी जान देने में ग्रागा-पीछा नहीं देखा। ख़ैर, छोड़ो यह किस्सा, चार्नक ने सोचा।

कंपनी का बहुत-सा माल बालेश्वर भेजा जा चुका है। व्यक्तिगत व्यवसाय का कुछ माल ग्रभी भी जहाज़ में है। सूतानूटी में सब-कुछ उतार लेने का भरोसा नहीं होता। किसी भी घड़ी यहाँ से रुख़सत होना पड़ सकता है। जहाँ तक बने, माल को बेच ही देना चाहिए। कारोबार ही जाता रहा, फिर युद्ध भी बेकार है। कारोबार की सुविधा के लिए ही तो लड़ाई है। लिहाज़ा माल का लेन-देन चलते रहना चाहिए।

चार्नक ने ख़रीद-फ़रोख़्त की एक जगह ढूंढ़ निकाली है। सूतानूटी के दक्षिण में कालिकाता ग्राम। पूरब में बैठकखाना ग्रचल। वहाँ पीपल का एक विराट पेड़ ग्रपनी शाखा-प्रशाखाएँ फैलाए हुए है। जगह-जगह के सौदागर ग्राकर इसकी छाया में बैठते है, बैठकखाना में विश्राम करते हैं। पास के जंगल में डकैतों का उपद्रव। डकैतों से बचने के लिए व्यापारी बैठकखाना से ही दल बनाकर वहाँ ग्राते हैं।

जॉब चार्नक बैठकखाना में उस पीपल के नीचे बैठने लगा। वह

बहारी पालकी पर चढकर रोज वहाँ जाता, साथ में रंगदार पोशाक वाले अंगरक्षक रहते। उसी पेड़ तले बैठकर हुक्का पीते हुए चार्नक ने व्यापारियों से माल लेने-देने का डौल बैठाया। चार्नक की बहादुरी, रौब-दाब, व्यावसायिक ईमानदारी ने बनियों को प्रभावित किया। खरीद-फ़रोख्त अच्छी चल पड़ी। व्यापारियों ने अनुरोध किया, हुगली लौटने की क्या ज़रूरत है ? कालिकाता-सूतानूटी में ही रहिए न, व्यवसाय चल निकलेगा। कारोबार के लिहाज़ से कालिकाता की स्थिति केंद्र में थी । यहाँ विदेश से व्यापार की बड़ी सुविधा नजर आयी। लेकिन मुहाने पर नयी कोठी क़ायम करके कंपनी व्यवसाय को अनिश्चित भविष्य पर तो छोड़ना नही चाहती। उसका मौजूदा लक्ष्य चटगाँव बंदर पर दखल करना है।

चार्नक इसीलिए सेना की क़वायद चलाए जा रहा है। नदी के किनारे विराट खुली जगह। उसकी गोद मे ही झाड़ियाँ और होगला जंगल। उसी खुली जगह मे फौज की क़वायद होने लगी। नाव-बेड़े से तोपो का अभ्यास बंद नहीं हुआ।

क्रिसमस आया। चार्नक ने इस उत्सव को धूमधाम से मनाने की तैयारी की। सूतानूटी मे कोई स्थायी कोठी तो थी नही। कुछ अस्थायी कुटियो मे हुगली की कौसिल के सदस्य रह रहे थे। सैनिक ज्यादातर जहाज, नाव या बजरो मे रहते थे। रहने की इस तरह असुविधा ही थी। थोड़ी-सी जगह में भीड़-भड़क्का। तिस पर गंगा मे ज्वार-भाटे की परेशानी। कब ज्वार आकर किनारे की नावों की आफ़त कर देगा, कोई ठिकाना नही। फिर भी इसी दशा में बड़े दिन का उत्सव होगा । कवायद जारी रहेगी। जहाजो को रोशनी से सजाया गया। तोपों की आवाज़ हुई, और आतिशबाज़ी दागी गयी। रात मे खीची हुई पंच और शीराजी। जगल से कई हिरन मार लाये गये। चिड़ियों का भी काफ़ी शिकार किया गया, मछेरे बड़े-बड़े कछुए पकड़ लाये । मछलियों की तो गिनती ही नहीं। जमाने से इतना अच्छा खान-पान नहीं हुआ। भोजन के बाद गीत-नाच, खुशी-मौज की लहरें चंचल रही।

नवाब शाइस्ता खाँ ने ढाका से मिस्टर वाट्स को सूतानूटी भेज दिया है। साथ में मित्र बड़मल मल्लिक बरकदार और मीर पनचर । चार्नक

से स्थायी संधि की शर्तों पर बात करनी थी।

सूतानूटी मे ही वह विचार-सभा हुई। कई दिन बातचीत चलती रही। आखिरकार बारह शर्तों पर नवाब के प्रतिनिधि राजी हो गये। शर्तें कंपनी के लिए सुविधाजनक थी।

नवाब के समर्थन के एक शर्तनामे पर लोगों ने हस्ताक्षर कर दिये। नवाब की सम्मति के लिए दोनों आदमी ढाका गये। जवाब न आने तक चार्नक सूतानूटी में ही रह गया। बड़मल ने खबर दी, नवाब ने शर्तें मंजूर कर ली हैं। नवाब का परवाना बस आने ही वाला है। 1687 की खबरों से आशा बँधती थी।

लेकिन चार्नक ने अपने चर से सुना, परवाने के बदले शाइस्ता खाँ ने दो हज़ार घुड़सवारों के साथ बख्शी अब्दुल समद को हुगली भेजा है। अँगरेजों से मुगलों के असम्मानजनक शर्तों पर राजी होने के लिए नवाब ने अपने प्रतिनिधियों को खूब फटकारा है और शर्तें नामजूर कर दी है।

और, बंगाल के सभी फ़ौजदारों को नवाब का हुक्म आया कि अँगरेज़ कंपनी को धक्का देकर निकाल बाहर करो। खबरदार, उन्हें कारोबार मत करने देना।

अब लड़ाई के सिवाय चारा क्या रहा?

कर्नल जॉब चार्नक के हुक्म से अँगरेज़ कंपनी की रणभेरी फिर बज उठी। चार्नक ने सूतानूटी से डेरा उठा लिया।

उसके बाद की घटनाएँ तेजी से घटीं। 9 फ़रवरी को चार्नक के नेतृत्व मे सेना ने गोविंदपुर के दक्षिण में बादशाह की नमक-मंडी को जला दिया।

11 तारीख को नदी-पार उन्होने मुगलो के थाना-किले पर क़ब्ज़ा कर लिया। अँगरेजों के एक सैनिक का पाँव गया, और कुछ लोग ही घायल हुए। मुग़लों के अधिक लोग हताहत हुए। बहुत-सा गोला-बारूद अँगरेज़ों के हाथ लगा।

निकल्सन के मातहत चार्नक ने आधे जहाज़ी-बेड़े को हिजली भेज दिया। अँगरेजों के खौफ से मुग़लों के दुर्गरक्षक पहले ही भाग खड़े हुए।

सो, उसे तहस-नहस करके जॉब चार्नक फ़ौज के साथ सत्ताईस तारीख़ को हिजली जा पहुँचा।

एक केच नाव ने ही हुगली के मुहाने को रोक रखा। तीन जहाज़ बालेश्वर की ओर रवाना हुए। बाक़ी जहाज़ों को चार्नक ने हिजली की कई चौकियों पर तैनात कर दिया।

हिजली में मुगलों का नाम-मात्र का ही क़िला था। बिलकुल कमज़ोर। पतली दीवारें। यहाँ तक कि हुगली की कोठी भी इससे कहीं पक्की और मज़बूत थी। क़िला नदी के किनारे से कोई पाँच सौ गज़ के अंदर था, एक उपवन के मध्य किनारे पर कच्चे घरों का झुंड। सेना के संचालन में बड़ी असुविधा थी।

चार्नक ने आते ही किले के चारों ओर खाई खोदने का हुक्म दिया। स्वयं खड़ा होकर वह काम की निगरानी करने लगा। दीवारों को ऊँचा किया गया। नदी के तट पर तोपों की एक चौकी तैनात हुई।

हिजली के बाशिंदे अँगरेज़ों के डर से भागने में व्यस्त। दिन की रोशनी में आसानी नहीं थी, इसलिए रात को अँधेरा ओढ़कर नदी पार कर जाते। वे लोग स्वयं जाते तो कोई हानि नहीं थी। गाय-बैल तक भगा ले जाने की कोशिश करने लगे। चार्नक ने नदी पर पहरेदारों का इंतज़ाम कर दिया कि लोग भाग न सकें। गिनती करके देखा गया, टापू में लगभग तीन हज़ार गाय और बैल हैं।

बालेश्वर से भी शुभ समाचार आया। अँगरेज़ी फ़ौज ने शहर पर दख़ल कर लिया है। लूट से उन्हें बड़ा लाभ हुआ है। दो दिन की लड़ाई में शहर जलकर ख़ाक हो गया। लेकिन शहर को दख़ल किये रहना संभव नहीं, इसलिए जहाज़ सब हिजली लौट आये। मुग़लों के दो जहाज़ अँगरेज़ों के हाथ पड़े। एक जहाज़ में चार हाथी भी थे।

देखते-देखते मई का महीना आ गया। रसद की कमी पड़ने लगी, चावल लगभग ख़त्म था। अकाल के डर से हिजली के बहुत लोग भाग गये थे। बहुतेरों ने मुग़लों के प्रलोभन से घर छोड़ दिये थे। मज़दूरों की कमी से किले का काम भी पूरा नहीं हुआ। अचानक एक दिन नदी पार कर बस्ती पर आक्रमण करके अँगरेज़ डेढ़ हज़ार मन चावल लूट लाये।

बाद में मुगलों ने टापू को घेर लिया। रसद मिलना असंभव हो गया। गोमांस और मछली थोड़ी-बहुत मिल पाती। लगभग दो सौ सैनिक बीमार पड़े थे। रोज़ कुछ-न-कुछ मर भी रहे थे।

चार्नक-परिवार में भी बीमारी घुस गयी। चार्नक की बीवी ने बुख़ार से खाट पकड़ी और कैथेरिना भी बीमार!

उधर, नदी के उस पार मुगलों ने दूर तक मार करने वाली तोपें लगायी। उनके गोलों से अँगरेज़ी जहाज़ों का चलना दुश्वार हो गया। अँगरेज़ी फौज ने अचानक एक दिन तोपों के उस अड्डे पर हमला कर दिया। मुगल फौज भाग गयी, परंतु तोप-अड्डे को बचाये रहना संभव नहीं था, इसलिए अँगरेज़ी सेना बड़ी तोपों को निकम्मा करके छोटी तोपों को साथ लेकर लौट आयी। दूसरे दिन मुग़लों ने फिर बड़ी तोपें लगाकर दुश्मनों की गतिविधियों को सीमित रखा।

तब तक नवाब का बख़्शी अब्दुल समद लगभग बारह हज़ार फ़ौज लेकर हुगली आ धमका। नवाब ने उसे यह अधिकार दे रखा था कि चाहे लड़कर हो या समझौते से, अँगरेज़ों की रण-पिपासा को शांत करना है। उस विशाल फौज के डर से वे देशी ज़मीदार भी, जो अँगरेज़ों के पक्ष में थे, उधर जा मिले। मुगलों की तोपें जगह-जगह से गोले बरसाती जा रही थीं। टापू में भी महामारी फैली। रोज़ बहुतेरे सैनिक, नाविक, कर्मचारी नाना रोगों के शिकार होने लगे। देखते-ही-देखते प्रायः दो सौ लोगों को क़ब्र के हवाले करना पड़ा। हिजली को बचाने के लिए चार्नक के पास मात्र सौ आदमी थे, और इसे हथियाने के लिए मुगलों के पास कई हज़ार।

चार्नक की बीवी के बुख़ार छूटने का नाम नहीं। इन्हीं कुछ दिनों की बीमारी से वह मुरझा गयी। कैथेरिना कुछ ठीक हुई। मेरी को भी बुख़ार आ गया।

चार्नक चारों ओर से परेशान!

अट्ठाईस मई को तीसरे पहर जो ख़बर मिली, वह ख़ौफ़नाक थी। मुग़लों ने भयंकर हमला शुरू किया है। सात सौ घुड़सवार और दो सौ गोलदाज़ों ने नदी पार करके अँगरेज़ों की तोपों पर क़ब्ज़ा कर लिया है।

वहाँ पच्चीस-एक सैनिक थे, उन्होंने इतनी बड़ी सेना देखी तो पीछे हटने को मजबूर हुए। कामयाबी के जोश में मुगल फ़ौज हिजली के खास क़िले की ओर बढ़ने लगी। अँगरेज़ों के एक खुफिया ने आकर यह बुरी खबर दी थी। मुगलों ने लेफ़्टिनेंट रिचर्ड फ्रांसिस को तो काट ही डाला; उसके बीमार स्त्री-बच्चों को गिरफ़्तार कर लिया। अस्तबल लूटकर वे घोड़े-हाथी ले गये। नगर के एक हिस्से में आग लगा दी। उनके इस अचानक हमले से अँगरेज किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। मुगल फ़ौज हिजली क़िले की बाहरी परिधि तक बढ आयी। वहाँ अगर उनको रोका नहीं गया तो किसी भी क्षण किले का पतन हो जायेगा।

चार्नक खुद लडाई मे कूद पड़ा। जो भी थोडी-सी सेना थी, उसी को लेकर उसने मुगलों पर हमला किया। साँझ से आमने-सामने की लड़ाई होने लगी। अँधेरे में मुगल ज़रा बेकायदा पडे। अँगरेज़ो के ज़बरदस्त जवाबी हमले से मुगल फ़ौज टिक नही सकी। नष्ट-भ्रष्ट और निरुत्साहित होकर वे लोग भोर के उजाले मे पीछे हट गये।

साँस लेने का मौका फिर मिल गया।

हताहतों का लेखा-जोखा लगाने पर चार्नक की आँखें तो जमी-की-जमी रह गयी। मुगलों की उतनी वडी फौज के मुकाबले सेना बहुत कम; जहाज़ों पर नाविक नही के बराबर। कैप्टन निकल्सन का बड़ा जहाज़ तोप के गोले की मार से छेद हो जाने से बेकार हो गया। ऐसी हालत मे किला छोड़कर भागा भी नहीं जा सकता। इसमें सिर्फ किला ही हाथ से नही जायेगा, कंपनी के कुछ जहाज़ों पर भी दुश्मन क़ब्ज़ा कर लेंगे।

चार्नक बड़ा मायूस हो गया।

रोगशय्या पर पड़ी बीवी ने उसका उत्साह बढ़ाया, 'तुम्हारा कौन-सा क़सूर है ? तुमने तो सब-कुछ भरसक किया। आगे भगवान मालिक है। मैंने कालीघाट में काली मैया की पूजा की है। तुम्हारी जीत निश्चित है। मैं तो उठ नही सकती हूँ, मेरे ठाकुर-घर मे कालीजी का सिंदूर है, तुम खुद ही लगा लो। तुम्हारा ज़रूर ही मंगल होगा।'

काली-माँ पर एंजेला को कैसा गहरा विश्वास है ! रणरंगिनी काली की प्रतिमा को चार्नक ने कभी भी भली आँखों से नहीं देखा। उस मूर्ति की

याद आते ही उसके मन में कैसी तो एक वितृष्णा हो आती है। लेकिन एंजेला के धर्म-विश्वास ने चार्नक के मन को नया बल दिया। दुविधा-जड़ित पाँवों वह एंजेला के ठाकुर-घर की ओर बढ़ा। जूते उतारकर कमरे में गया। सामने ही सिंदूर की डिबिया थी। अपने हाथों उसने कपाल पर सिंदूर लगाया।

एकाएक एक निविड़ प्रशांति से चार्नक का मन भर गया।

वह एंजेला की खाट के पास गया। एंजेला ने पति के ललाट पर लगे सिंदूर को देखा। उसकी आँखें दमक उठीं।

चार्नक की बीवी ने कहा, 'मेरा एक अनुरोध मानोगे ?'

'क्या ?'

'मुझे एक गोली-भरी पिस्तौल दे दो।'

'क्या होगा उसका ? लड़ाई लड़ोगी तुम ?'

'नहीं, ब्राह्मण की बेटी हूँ। क्षत्राणियों की तरह लड़ना नहीं सीखा है, पर मरना सीखा है। मैंने सुना, कैप्टन फ्रांसिस की स्त्री को मुगल लोग क़ैद कर ले गये। मैं बंदी नहीं हो सकूँगी। उसके पहले पिस्तौल से मौत के गले लग जाऊँगी।'

'ऐसा क्यों कहती हो, एंजेला !' चार्नक ने कहा, 'मैं तुम्हें मौत के जबड़े से निकाल लाया हूँ, अब अपने हाथों तुम्हारे हाथ में घातक हथियार मैं नहीं दे सकता।'

चार्नक की बीवी मुस्कराई। 'मैं जानती थी, तुम यही जवाब दोगे। मैंने खुद ही अपना खातमा कर लेने का इंतजाम कर लिया है।'

'ऐं !'

'हाँ, यह देखो कटार।' एंजेला ने तकिए के नीचे से साँप जैसा आँका-बाँका एक तीखा हथियार निकाला। दिन की रोशनी मे वह झलमला उठा। बोली, 'रक्षा के इस एकमात्र साधन को तुम मुझसे छीन मत लेना।'

नहीं, चार्नक ऐसा नहीं करेगा। मुगलों के हाथों लांछित होने से आत्म-हत्या सौ-गुना वरण करने योग्य है। सुना जाता है, राजपूत रमणियाँ जौहर व्रत करती थी। एंजेला का व्रत सार्थक होना हो तो !

चार्नक की बीवी ने धीमे से कहा, 'मेरा और एक अनुरोध मानोगे ?'

'वह क्या ?'

'इन बच्चियों को जहाज में भेज दो। मैंने सुना है, कैप्टन फ्रांसिस के बच्चों को भी मुग़ल पकड़ ले गये हैं। मैं यह नहीं चाहती कि तुम्हारी बच्चियाँ मुग़लों के हरम में पलें और बड़ी होने पर बाँदी बनकर जीवन बिताएँ। उन्हें जहाज में भेज दो।'

'माफ़ करो, एंजेला,' चार्नक बोला, 'यह नहीं होगा। अपनी बच्चियों को मैं अगर जहाज में भेज दूँ, तो मेरे साथियों का मनोबल टूट जायेगा। अवश्यंभावी विपदा के डर से वे लड़ ही नहीं सकेंगे।'

'ठीक कह रहे हो,' बीवी बोली, 'बीमारी से मैं बहुत कमजोर हो गयी हूँ। हृदय भी तो है माँ का। बच्चों की सुरक्षा के लिए विचलित हो गयी थी। नहीं-नहीं, उन्हें जहाज में मत भेजो। वे मेरे ही पास रहें। यदि मुगल फौज कहीं क़िले को फ़तह कर ले, तो मरने से पहले मैं अपने हाथों इन्हें भी मार...।'

एंजेला की सजल आँखें दृढ़ संकल्प से झलमला उठीं।

मुगल फ़ौज ने फिर क़िले पर धावा कर दिया। चार्नक दौड़कर अपने फौजी डेरे में पहुँचा। तोपें गरजने लगीं। मुग़लों ने किले को तीन तरफ़ से घेर लिया। नदी के बीचोंबीच ऊँची जगह पर चार्नक ने दो तोपें रखवायीं। तोपों से लगातार गोलों की वर्षा होने लगी। मुग़ल फ़ौज नदी में आगे नहीं बढ़ सकी। अभी वही एक रास्ता खुला था। उसी राह से कुछ लोग, गोला-बारूद, बंदूकें किले में पहुँचीं। इतने संकट में भी चार्नक कंपनी के माल के बारे में न भूला। ज़रा मौक़ा मिला कि क़िले से माल निकालकर उसने जहाज पर लादने का हुक्म दिया। ज़रूरत होगी तो माल लेकर जहाज रवाना हो जायेगा।

रात-दिन अविराम पानी गिर रहा है। राह-बाट, पानी-ही-पानी ! उस बारिश में ही दोनों ओर से गोले दग़ते रहे।

लगातार करारी मेहनत से चार्नक के बहुत-से लोग बीमार हो गये। चार्नक की बीवी ने किसी भी हिदायत को स्वीकार नहीं किया। अपनी बीमारी की परवाह न करके वह बीमार सैनिकों की सेवा में जुट गयी।

सेवापरायण उस देवी को अपने बीच पाकर सैनिकों में उल्लास-सा उमड़ पड़ा।

इस समय हिजली के क़िले में जन-बल इतना क्षीण हो गया था कि मुगल फ़ौज यदि जमकर हमला कर देती तो किले का बचाव कठिन हो जाता। युद्ध-सबंधी समिति की सलाह से चार्नक ने कुछ पीछे हटना तय कर लिया। रोगियों में से बहुतों को जहाज़ में जगह दे दी गयी। बजरे हुगली नदी में तैनात रहे। ज़रूरत होगी, तो उनसे फिर पीछे हटने का काम लिया जायेगा।

इस प्रकार से चार दिन, चार रातें बीतीं। किले मे सौ से भी कम सैनिक—तोप महज़ दो ही थीं।

दुर्योग की घिरी घोर घटा में हल्की-सी आशा की रेखा दिखायी पड़ी—मिस्टर डेनहम के अधीन यूरोप से एक जहाज़ आ पहुँचा। डेनहम ने सत्तर सैनिकों के साथ असीम साहस से बढ़कर दुश्मनों पर हमला कर दिया। उनसे कुछ तोपें छीन ली, उनकी छावनी में आग लगाकर वे किले में लौट आये। इससे मुगल फ़ौज काफी डर गयी। अब जैसे भी हो, चार्नक को दुश्मनों का मनोबल तोड़ना होगा।

गहरी रात तक समर-सभा की बैठक चलती रही। नाना जन, नाना मत! आखिर यह प्रस्ताव पारित किया गया कि मुगलों को चकमा देना होगा। चकमा यह कि किले से एक-दो करके अँगरेज़ नाविक चुप-चाप तोपों की ओट से जाकर नदी के किनारे जमा होंगे। वहाँ से बंदूकें तानकर सब ड्रम-ट्रंपेट बजाते हुए मार्च करते आयेंगे। दूर से दुश्मनों को लगेगा, वे सब जहाज़ से ही आ रहे हैं। इस प्रकार एक ही टुकड़ी से बार-बार ऐसा कराके उन्हें कही बढ़ी-चढ़ी संख्या का धोखा देना होगा। यदि यह चाल चल गयी, तो इस बार जान बचेगी, वरना—!

योजना के मुताबिक काम शुरू हुआ। उसी कायदे से बाजा बजाते हुए अँगरेज़ सैनिक आने लगे। दुश्मनों ने सोचा, एक-एक करके बहुतेरी टुकड़ियाँ आ रही हैं, चली आ रही हैं...!

दोनों ओर की गोलाबारी में अँगरेज़ों के सोलह आदमी मरे, मुगलों के और ज्यादा।

फिर भी, रात तक अँगरेज़ों का यह नाटक चलता रहा।

चार्नक ने उत्कंठा से उनींदी रात बितायी।

इस रुकावट के छठे दिन शुभ संवाद आयेगा या विभीषिका की काली छाया घेर लेगी।

चार्नक की बीवी ने सारी रात पूजाघर में प्रार्थना करते हुए बितायी।

दूसरे दिन सवेरे अँगरेज़ लोग दंग रह गये। मुगल फौज ने शांति की पताका फहरा दी!

युद्ध-विराम की माँग!

संधिवार्ता के लिए जॉब चार्नक ने एक दूत भेज दिया।

दूत लौटा। नवाब का बख्शी अब्दुल समद सुलह चाहता है। संधि-वार्ता के लिए एजेंट किसी ज़िम्मेदार व्यक्ति को भेजे।

रिचर्ड ट्रेंचफ़ील्ड ने कहा, 'इजाज़त दें, तो मैं जाने को तैयार हूँ।'

चार्नक ने कहा, 'इतनी आसानी से मुगलों पर ऐतबार नहीं किया जा सकता। यह संधि का प्रस्ताव उनकी चाल हो सकती है। सो, वे अगर किसी वज़नी मूर को ज़ामिन के रूप में भेज दें, तो हम ज़िम्मेदार प्रतिनिधि भेज सकते हैं।'

ज़ामिन की बात पर दोनों ओर से वाद-विवाद चला। आख़िर मुग़लों का ज़ामिन क़िले में अँगरेज़ों के कब्ज़े में रहा। संधि की शर्तें लेकर ट्रेंच-फ़ील्ड अब्दुल समद से भेंट करने के लिए चला गया।

कई दिनों में दोनों ओर को मान्य सम्मानप्रद संधि हुई, लेकिन नवाब के अनुमोदन की शर्त पर। अब्दुल समद ने भरोसा दिया कि नवाब का परवाना ज़रूर मिल जायेगा।

इस संधि की मुख्य शर्त थी कि मुगल अँगरेज़ों को पहले की तरह व्यापार करने देंगे, और अँगरेज़ पुरानी कोठियों में वापस जाकर व्यापार जारी करेंगे। नवाबी परवाना पाने के बाद अँगरेज़ देशी बनियों का ज़ब्त हुआ माल और जहाज़ लौटा देंगे।

फिर भी इज़्ज़त रह गयी! अँगरेज़ों के सैनिक इतने कम हो गये थे कि संधि के अलावा और कोई उपाय ही नहीं था।

शर्त के मुताबिक़ जॉब चार्नक ने हिजली के किले में जो ज़ब्त माल था, मुगलों के हाथों में सौंप दिया। ग्यारह जुलाई को मुगलों ने किले का गोला-बारूद वापस लिया। जॉब चार्नक के लोग ड्रम बजाकर माल के साथ जहाज़ पर पहुँचे।

चार्नक उलूबेड़िया पहुँचा। वहाँ से एक छोटे थाने पर। अब्दुल समद का आदेश आये बिना जहाज़ का थाना-किले के उत्तर में जाना नही हो सकता।

कई दिनों के बाद नवाब का परवाना आया। बड़ा निरर्थक-सा। चार्नक उससे बिलकुल संतुष्ट नही हुआ। साफ़ समझ में आ गया कि मुगलों के खिलाफ लडाई का अभी अंत नही हुआ है।

वकील के जरिए नवाब से बातें चलती रहीं।

नये सिरे से लड़ाई जारी करना अभी मुमकिन नही था। पिछले साल-भर मे लडाई में अँगरेज़ों के प्राय: चालीस आदमी काम आये थे, पर बीमारी से मरने वालों की तादाद थी पचास। यूरोप से न ही कोई और नया जहाज़ आया, न कोई फ़ौजी टुकड़ी। लोगों की कमी से बंगाल में जहाज चलाना भी दूभर होगया। कारोबार की हालत इससे भी बदतर थी।

चार्नक ने भागीरथी के पश्चिमी तट पर उलूबेड़िया में तीन महीने बिताये। जगह बिलकुल सुविधाजनक नही थी। नदी के पूरब-पार से सूतानूटी का इलाक़ा मानो उसे हाथों से इशारा करता हो। हाथों का शोरगुल, बैठकखाना की मजलिस। पीपल की छाँह में व्यापारियों का जमघट मानो उसे सानुरोध बुला रहा हो।

आखिर चार्नक सपरिवार फिर सूतानूटी लौट आया।

चार्नक का युद्ध का शौक मिट चुका। सात समंदर पार से सेना लाकर मुगलों की विराट शक्ति से लोहा लेना क्या आसान बात है? चार्नक थक गया था, अवसाद से भी भर गया। पिछले कई महीनों का परिश्रम और उद्वेग उसके चेहरे पर एक छाप छोड़ गया। पहले से वह बहुत दुबला हो गया। बालों में सफेदी झाँकने लगी।

लड़ाई का क्या अंजाम हुआ? मुगलों को चोट पहुँचाकर चार्नक की

जलन ज़रूर कुछ घटी। पर व्यापार का हाल पहले से अधिक डाँवाडोल हो गया। नवाब एक बार संधि का ज़िक्र करता है, फिर तुरंत संधि-भंग करता है। मुग़ल कर्मचारी मार खाने से झुकते हैं और मार बद होते ही तन जाते हैं। हुगली, मालदह, कासिम बाज़ार में फिर से कोठी क़ायम करना अभी ख़तरे से ख़ाली नहीं। कभी भी मुग़लों से ठन सकती है। उन जगहों में फिर से पूँजी लगाना मौजूदा हालत में बेवकूफ़ी है। इस लिहाज़ से सूतानूटी बहुत-कुछ निरापद है। भागीरथी का मुहाना यहाँ से ज्यादा दूर नहीं। आफ़त आये, तो जहाज़ों से भाग निकलना सहज है। पर युद्ध से क्या लाभ हुआ ?

चार्नक की बीवी बोली, 'मुग़लों ने समझा कि मेरे अग्नि में तेज है। तुम्हारी वीरता के बारे में कितनी किवदंतियाँ सुनी जा रही हैं !'

'लेकिन वह ख्याति बेकार है,' चार्नक ने क्षुब्ध होकर कहा। 'पता है एंजेला, हमारे मालिकों की क्या चिट्ठी आयी है ?'

'बेशक तुम्हारी बहादुरी की तारीफ़ होगी,' एंजेला बोली।

चार्नक ने कहा, 'बिलकुल नहीं। उन्होंने मुझ पर यह अभियोग लगाया है कि मैं युद्ध-विरोधी हूँ। मेरा कसूर यह है कि मैंने चटगाँव पर हमले का समर्थन नहीं किया। इतनी छोटी-सी सेना लेकर हम हुगली-हिजली पर कब्ज़ा नहीं बनाये रख सकते, तो चटगाँव कैसे फतह कर सकते हैं ? मैंने मालिकों की गलती बताई, तो वे आगबबूला हो गये—तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम महामहिम राजा और हमारे हुक्म के विरुद्ध दलीलें पेश करते हो, गलती निकालते हो ? शांति के प्रति तुम्हारे झुकाव का असली कारण है लोभ और कायरता। तुम अपने कारोबार के लिए बंगाल लौट जाना चाहते हो केवल रुपये पीटने के लिए। सुनी एंजेला, मालिकों की शिकायत सुनी ? बत्तीस साल के लंबे अरसे तक एकनिष्ठ सेवा करने के बाद मालिकों से यह शिकायत सुनने की नौबत भी आयी !'

'ऐसी नौकरी की जरूरत क्या है ?' बीवी बोली, 'तुम नौकरी छोड दो। इस देश के बारे में तुम्हें जितनी जानकारी है, उससे तुम ज्यादा ही कमा लोगे। हमारी छोटी-सी गिरस्ती, हँसते-खेलते चल जायेगी।'

'वह नहीं हो सकता, एंजेला,' चार्नक ने कहा, 'मैं अनधिकृत व्यापारियों

से घृणा करता हूँ। मैं शुरू से अंत तक उनके कार्य में बाधा देता आया हूँ। अब आखिरी उम्र में मैं स्वयं वही कुछ नही करना चाहता, अपनी वफ़ादारी पर आँच नही आने दे सकता।'

'तो, करोगे क्या ?'

'सारी बातें खोलकर लिखूंगा मैं, और चटगाँव को जीतने की एक आखिरी कोशिश करूंगा,' चार्नक ने कहा, 'देखूं, चटगाँव का गवर्नर होना किस्मत मे लिखा है या नही ?'

बीवी ने हँसकर कहा, 'देखती हूँ, तुम भी आखिर किस्मत को मानते हो।'

चार्नक ने हँसकर कहा, 'यह बला तो संक्रामक है। तुम लोगो के पल्ले पड़कर मै भी कुछ-कुछ भाग्यवादी हो गया हूँ। तुम्हारे देव-द्विज में भक्ति सीखी है। माँ-काली का सिंदूर लगाया है। पंचपीर को मुरगे की बलि दी है। इन कारणों से पादरी लोग तो मुझसे बेहद खफा है। चूंकि मैं राइट वरशिपफुल जॉब चार्नक हूँ, इसलिए कुछ बोलने की उनकी हिम्मत नही पड़ती। उस दिन चैंपलेन और चार्ल्स आयर को मैंने आड़े हाथों लिया कि तुम लोग बहक रहे हो, इंडियन हुए जा रहे हो। चैंपलेन कोई शिकायत करने आया था, मैंने उस पर ध्यान नही दिया।'

बीवी ने कहा, 'यह चार्ल्स लड़का अच्छा है। उसे जमाई बनाया जाये तो अच्छा ही हो। तुम्हारी मेरी की उम्र कम है तो क्या हुआ, इसी बीच वह डील-डौल की हो गयी है। वह आयर को चाहती भी है।'

'पगली हो गयी क्या ?' चार्नक ने कहा, 'तुम नौ साल की उस नन्ही-नादान का ब्याह करने को कहती हो ?'

'क्यों, हमारे देश मे तो गौरीदान अच्छा माना जाता है।'

'नही-नही, मुझे यह पसंद नही।' चार्नक बोला, 'और आयर मेरी से उम्र मे बहुत बड़ा है।'

'मेरी भी बेटी है मेरी। वह ग्रायर को चाहती है।'

'नौ साल की बच्ची प्यार का क्या अर्थ समझ सकती है ?'

'इस देश की लडकियां कम उम्र मे ही सयानी हो जाती हैं।'

'लेकिन ग्रायर के इरादे को तो हम नही जानते। वह तो पक्का अंगरेज़ है। मिश्र ख़ून की एक लडकी को वह क्यो व्याहना चाहेगा ? मैं उसका अफ़सर हूं, लेकिन इस नाते मै उसके कंधे पर नौ साल की एक लड़की को तो नहीं लाद सकता।'

'ख़ैर, देख लेना, किसी दिन ग्रायर ख़ुद ही अपने मन की कहेगा। कुछ भी हो, किन्तु उस छोकरे की पदोन्नति होनी चाहिए।'

तब तक अर्दली आकर एक चिट्ठी दे गया।

कंपनी के कोर्ट ऑफ डाइरेक्टर्स की चिट्ठी है। इस बार सुर बड़ा नर्म है। चार्नक की वफ़ादारी और विश्वस्तता की भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी है। उसके युद्ध-संचालन में कोई खामी नही निकाली गयी है। फिर भी उन लोगों ने चिकोटी काटने मे कसर नही रखी।

उन्होंने लिखा है—'तुम्हारी ग़लती से हिजली में हमारी फ़ौज उस दुर्दशा में पड़ी थी। अब्दुल समद ने जिन सम्मानजनक शर्तों पर सुलह की, उसमें तुम्हारा कोई हाथ नहीं था। वह सब सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा और चंदन नगर के अपने जनरल की बदौलत हुआ। इंडिया में क्रन्दन की लहर अभी आयी है। या तो मुग़लो से संधि हो, या हमारा सर्वनाश ! मुगलों ने जनमत के दबाव से ही संधि की है।'

जॉब चार्नक मन-ही-मन हँसा। जनमत का दबाव ! ये मुगल जनमत की परवाह थोड़े ही करते है। सूरत की लड़ाई शुरू होने पर नवाब शाइस्ता खाँ ने फिर सधि भंग कर दी। चार्नक की न तो लड़ने की जुर्रत है, न ही रिश्वत देने की। अब वकील के ज़रिए नवाब के यहाँ पैरवी के सिवाय चारा ही क्या है ?

कंपनी ने उलूबेड़िया मे डेरा डालने को लिखा है। वहीं अँगरेज़ों का सुशासित नामी उपनिवेश कायम हो। वहाँ नदी का गहराव ज्यादा है। वहाँ डॉक बनाओ ताकि बड़े-से-बड़े जहाज़ों की मरम्मत हो सके। बादशाह का फरमान लेकर वहाँ सुरक्षित दुर्ग बनाओ, जैसाकि मद्रास मे फ़ोर्ट सेंट

जॉर्ज है।

नहीं, चार्नक को उलूवेड़िया में उपनिवेश पसंद नहीं। उलूवेड़िया पर जब जी चाहे, मुगल स्थल-मार्ग से आकर आक्रमण कर सकते हैं। सूतानूटी ही उपयुक्त स्थान है। चार्नक ने सूतानूटी की वकालत करते हुए चिट्ठी भेजी।

आखिर चार्नक की बात मंजूर हुई। कंपनी ने लिखा—'ठीक है, हमारे एजेंट चार्नक को जब सूतानूटी पसंद है, तो वहीं कोठी कायम करें। मगर, जितना संभव हो कम खर्च किया जाये। आशा है, व्यवस्था इस ढंग की होगी कि नगर का सारा कर-शुल्क कंपनी में ही जमा हो।'

लेकिन शाइस्ता खाँ का नया हुक्म आया कि अँगरेज़ लोग हुगली लौट जायें। खबरदार, सूतानूटी में कोई पक्का मकान नहीं बने। लड़ाई की एवज़ हरजाने में मोटी रकम दाखिल करो, नहीं तो मुगल फौज अँगरेज़ों के साज़ो-सामान की मनमानी लूटपाट करेंगे।

चार्नक के पास आदमियों की कमी है। और, नवाब के हुक्म को मानना भी संभव नहीं। सूतानूटी छोड़कर वह नहीं जा सकता। नेटिवों से ज़मीन खरीदकर यहीं कोठी बनानी होगी। सूतानूटी के ही किनारे बड़े-बड़े जहाज़ आकर लगेंगे। बहुत बड़ा बंदरगाह बन जायेगा। कालिकता की खाली ज़मीन में किला बनाना पड़ेगा। बड़ी-बड़ी इमारतें आसमान में सिर उठाएँगी। भीड़ से हाट-बाज़ार भरे होंगे। एक नयी महानगरी की नींव पड़ेगी। हुगली शहर बहुत घिचपिच है, नदी में गहराई नहीं। वहाँ मुगलों की ताकत ज्यादा है। वहाँ चार्नक का सपना साकार नहीं होगा।

अतः नवाब की खुशामद के अलावा कोई उपाय नहीं। कौन जायेगा? आयर।

चार्नक आयर को अच्छी नज़रों से देखता है। आयर अब कौंसिल का सदस्य भी है। उसकी प्रतिष्ठा है। चार्नक के मनसूबे को वह ठीक-ठीक समझता है। वही ढाका जायेगा। कौंसिल का और एक सदस्य भी उसके साथ रहेगा। दोनों मिलकर नवाब को समझा-बुझाकर राज़ी करेंगे ताकि अँगरेज़ सूतानूटी में ही रह सकें, कालिकता-ग्राम में उपनिवेश कायम कर सकें।

चार्नक की बीवी चिंतित हुई, 'आखिर बाघ की मांद में आयर को ही भेजा जायेगा ?'

चार्नक ने कहा, 'आयर पर मुझे भरोसा है। उसमें मैं भविष्य की संभावना देखता हूँ। मैं तो जिंदा नही रहूँगा, वही कभी इस नये कालि-कता का गवर्नर होगा।'

बीवी बोली, 'यह तो खैर बाद की बात है, लेकिन उसे जमाई बनाने का अरमान है मेरा। उसका अगर कुछ बुरा हुआ तो मेरे दुःख की सीमा न होगी।'

'एंजेला,' चार्नक ने कहा, 'उम्र बढ़ने के साथ-साथ तुम्हारा मनोबल भी क्या दुर्बल पड रहा है ? सात समंदर पार से हम विपत्तियो का सामना करने के लिए हिंदुस्तान आये हैं। शांति की जिंदगी बसर करने का मौका कहाँ है ? हर पल लडाई छिडी हुई है—घर, बाहर। हमें जूझकर अपने लिए स्थान बनाना होगा। मैं चाहता हूँ, मेरा भावी जामाता विपदा के भय से भाग न आये, बल्कि विपत्ति मे कूद पड़े। देख नही रही हो, आज-कल हमारा क्या हाल है ? कारोबार बंद है, कोठी को समेट लेना पड़ा है, आदमियों की कमी है, संतरी लोग बीमार है। हालत नाजुक हो गयी है। नवाब के यहाँ दूत-कार्य की सफलता पर ही हमारा भविष्य बहुत-कुछ निर्भर करता है। इसलिए भरोसे के ही आदमी को भेजना होगा, या तो फिर मुझे ही जाना होगा।'

'नहीं-नहीं,' चार्नक की बीवी ने ऊबकर कहा, 'तुम पर ही तो नवाब को ज्यादा गुस्सा है। वह एक बार तुम्हे चगुल में पा जाये, तो...। खैर, आयर ही जाये। मै कालीघाट मे पूजा-सामग्री भेज रही हूँ।'

इतने में मेरी दौड़ी आयी।

'पापा, सुना, मिस्टर आयर ढाका जा रहे हैं ?'

'हाँ।'

'मैं भी जाऊँगी।'

'धत्, पगली ! तू तो निरी बच्ची है। कैसे जायेगी वहाँ ?'

'क्यो, मिस्टर आयर तो जा रहे हैं।'

'वहाँ क्या छोटे बच्चे जाते हैं ?'

'वाह रे, मैं छोटी हूँ ? मेरी उम्र नौ साल की नहीं है ?' मेरी ने पूछा।

'नौ साल की उम्र में क्या लड़कियाँ बूढ़ी हो जाती हैं ?' चार्नक ने पूछा।

'हो ही तो जाती है। तुम्हारे नये अर्दली रामहरि पाठक की लड़की की उम्र सिर्फ़ सात साल की है। उसकी माँ तो हरदम रामहरि से कहती रहती है कि लड़की बड़ी हो गयी, बड़ी हो गयी, इसका ब्याह कर दो,' मेरी ने गंभीर होकर कहा।

बीवी ने कहा, 'ओ, तुम्हारा भी क्या शादी करने का इरादा हो रहा है ?'

मेरी बोली, 'इरादा ? मैंने तो शादी कर ली।'

'किससे ? कब ?' चार्नक की बीवी ने पूछा।

'खूब ! तुम लोग नहीं जानते हो ?' मेरी ने जरा लाड़ से कहा, 'मेरी शादी तो कब की हो चुकी।'

'कौन है री तेरा दूल्हा ?'

'मिस्टर आयर। उस रोज कैथेरिना के साथ दूल्हा-बहू का खेल खेल रही थी। मिस्टर आयर आया। हम लोगों से बड़ा मजाक करने लगा। बोला, लड़की भला दूल्हा होती है कहीं ? मैंने कहा, तो मर्द तो तुम्हीं हो, तुम्हीं दूल्हा बनो।'

'आयर ने क्या कहा ?'

'बोला, ठीक है। तुम्हीं मेरी दुलहिन हो। बस, मैंने तुरंत गले का हार उसे पहना दिया। उसने हार फिर मेरे गले में डाल दिया। अब मैं मिसेज मेरी आयर हूँ। लेकिन माँ, तुम कैथेरिना को समझा दो।'

'क्यों, उसने क्या बिगाड़ा ?'

'वह कहती है, मैं भी आयर से ब्याह करूँगी। मैंने उसका झोंटा पकड़कर उसे खूब पीटा है। पापा, तुम कैथेरिना के लिए दूसरा दूल्हा खोज दो। मैं मिस्टर आयर के साथ ढाका जाऊँगी।'

चार्नक ने गंभीर होकर कहा, 'मेरी, तुम अभी बच्ची हो। तुम्हारा ढाका जाना ठीक नहीं।'

'नहीं-नहीं, मैं जाऊँगी । जाऊँगी ही मैं,' मेरी ने ज़िद की ।

चार्नक ने अबकी डाँट दिया, 'छिः, ज़िद नहीं करते ।'

'नहीं-नहीं, मैं जाऊँगी ।' आँसू-रुँधे गले से एक बार फिर कहती हुई मेरी भाग गयी ।

उसे समझाने के लिए बीवी पीछे-पीछे गयी ।

दूसरे दिन आयर और उसके साथी ढाका के लिए रवाना हो गये ।

दिन बीते, मगर ढाका से सफलता की कोई खबर नहीं मिली । चार्नक मगर बैठा नहीं रहा । सूतानूटी के पास छप्पर डालकर कंपनी का एक बहुत बड़ा गोदाम बना डाला । पक्का मकान बनवाने का हुक्म नहीं है; इसलिए मिट्टी का घर ही बना । चार्नक ने अपने लिए फूस का घर बनवाया । खासा ऊँचा छप्पर । धूप-हवा के आने-जाने के लिए बहुत-सी खिड़कियाँ रखीं । बड़े कमरे को दो हिस्से में बाँटा गया । गोबर-मिट्टी लेपकर दोनों कमरे काफ़ी साफ़-सुथरे हो गये । एक सोंधी-सी गंध महसूस होती रहती है ।

खिड़की के पास ही चंपा-फूल का एक पेड़ है । फूलों से लद गया है पेड़ । उसकी हलकी-हलकी ख़ुशबू मस्त बना देती है । आँगन में आम का एक पेड़ भी है । चार्नक की बीवी ने फूलों के और भी बहुत-से पौधे लगा लिये हैं ।

'पक्के मकान का तुम्हारा सपना इस सबसे साकार हो गया, क्यों, एंजेला ?' चार्नक ने कहा ।

'मैं जानती हूँ, किसी दिन साकार होगा ही ।' बीवी के स्वर में विश्वास था ।

कौंसिल के दूसरे सदस्य, एलिस की कुटिया भी बन गयी ।

मगर मिट्टी की कुटिया में कितने दिन रहा जा सकता है ? और ये नेटिव लोग जरा तड़क-भड़क पसंद करते हैं । एक रौबदार परिवेश बनाये बिना उनके मन पर प्रभाव नहीं डाला जा सकता ।

चार्नक ने कौंसिल की बैठक बुलायी । नये शहर के नक़्शे पर विचार हुआ । सदस्य लोग तो हँसी-मज़ाक में पड़ गये । नवाब की क्या मर्ज़ी होगी, इसका पता नहीं—और नक़्शे पर विचार ! मगर एजेंट का हुक्म जो ठहरा ! इस बीच एक अच्छी खबर मिली—शाइस्ता खाँ सूबा बंगाल को

छोड़कर चला गया है। अब बहादुर खाँ नवाब है; नया नवाब अँगरेजों के आवेदन-निवेदन पर राजी हो भी सकता है।

चार्नक ने खुद ही एक नक़्शा तैयार किया है। नदी के किनारे एक पक्का बाँध। जहाज यही पड़ाव डालेंगे। उसी के पास फ़ोर्ट। हिजली में मिला सबक चार्नक को भूला नहीं है। नदी के किनारे ही किले के होने से मुगल अँगरेजों को दबा नहीं सके। अब वहाँ पर बँगला बनवाना होगा, जहाँ होगला का जंगल है। नदी के किनारे-किनारे एक रास्ता होना चाहिए। स्थानीय लोगों की आबादी को अँगरेजों के टोले से ज़रा दूर रखना होगा। लेकिन एक रास्ता सीधे बैठकखाना तक जायेगा। कोठी, गोदाम, ऑफ़िस, गिरजा, मैदान, तालाब, बाट-घाट—नक़्शे में इन सब की ही व्यवस्था है। और वह क्या ? वह है काली मंदिर ! कालीघाट का मंदिर पीठस्थान है। लेकिन दूरी पर है। नाव से जाना पड़ेगा या जंगल की राह। आसपास मंदिर का होना बेजा नहीं। इसलिए बीवी की इच्छा से नक़्शे में मंदिर की गुंजाइश रखी गयी।

कौंसिल में नक़्शे पर चर्चा ही हुई, किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा जा सका। नवाब का हुक्म न आने तक कोई निर्णय लेना बेकार साबित हो सकता है।

20 सितंबर, 1688 को एक अप्रत्याशित धक्के से नगर की नींव डालने का सारा सपना चूर हो गया।

कैप्टन हीथ—रक्तिम वर्ण, साढ़े छः फुट लंबा, बलवान शरीर—धूमकेतु की तरह सूतानूटी में आविर्भूत हुआ।

वे ऑफ बंगाल की अँगरेज़ सेना का सबसे बड़ा सेनापति नियुक्त हुआ है कैप्टन हीथ। ऐडमिरल भी यही। कंपनी के बोर्ड ऑफ़ डाइरेक्टर्स ने खुद उसे मनोनीत किया है। गुपचुप ही सब-कुछ हुआ। जॉब चार्नक को अपनी पदावनति की पहले खाक भी खबर नहीं मिली। उसका मन विषाक्त हो गया। हेजेस, बेयर्ड, हीथ। पहले दो मरतबा पदोन्नति में बाधा ही पड़ी थी, इस बार तो एकबारगी पदावनति ही हुई। नौकरी की मुसीबत ही यही है; दूसरों की चाह-मर्जी पर भविष्य निर्भर करना है। चार्नक अब अप्रसन्न था। उमर भी नहीं रही। पहले-सी ज़िद और

उत्साह भी नहीं। एक दिन बड़े-बड़े मनसूबे बांधकर उसने हेजेस का हौसला पस्त किया था, बेयर्ड सर्वोच्च अधिकारी होते हुए भी चार्नक का मुँह जोहता था। उस समय चार्नक के मन में अपार साहस था, थी आगे बढ़ने की दुर्दम आकांक्षा। परंतु आज नाना आफतों के, नाना दुर्भाग्यों के फलस्वरूप वह थक गया है, झुकने लगा है। आज अवांछित को रोकने की शक्ति उसमें नहीं रही।

मजबूर होकर चार्नक ने हीथ का स्वागत किया। इस नियुक्ति का मतलब बहुत साफ़ है। सेना के अधिनायक पद से चार्नक को हटा दिया गया है और हीथ को उसके ऊपर मनोनीत किया गया है।

आते ही कैप्टन हीथ ने समर-सभा बुलायी। उसने जानना चाहा, सूतानूटी में फ़ोर्ट कहाँ है?

'मुगल बादशाह की मनाही है। फ़ोर्ट इसलिए बनाया नहीं गया,' चार्नक ने बताया।

'तो फिर सूतानूटी के लिए आपने इतनी सिफ़ारिश क्यों की थी?' हीथ बोला।

'इसकी वजह मैंने कोर्ट को विस्तार से बतायी है। सूतानूटी-कालिकता का क्षेत्र एक स्वाभाविक क़िला है। नदी, दलदल, जंगल ही इसकी सुरक्षा के साधन हैं।'

'वह सब फिजूल की बातें है,' हीथ ने कहा, 'फोर्ट नहीं है, लड़ाई कैसे मरेंगे? सूतानूटी छोड़कर जाना होगा। यह रही कोर्ट की चिट्ठी।'

'इससे क्या! नये नवाब से समझौते की संभावना है। अभी सूतानूटी छोड़कर जाना ठीक नहीं होगा।' समर-सभा के ज्यादातर सदस्य चार्नक के पक्ष में थे।

हीथ गरज उठा, 'भाड़ में जाये नवाब! सूतानूटी छोड़ना ही पड़ेगा। यह बड़ी वाहियात जगह है, रोगों की जड़। इसे जितनी जल्दी हम छोड़ सकें, उतना ही अच्छा।'

'किन्तु...।'

'रहने दीजिए अपना 'किंतु'। अँगरेजी फौज का अधिनायक मैं हूँ, आप नहीं। मेरा हुक्म मानने पर आप मजबूर है। मैं 10 नवंबर तक का

छोड़कर चला गया है। अब बहादुर खाँ नवाब है; नया नवाब अँगरेज़ों के आवेदन-निवेदन पर राज़ी हो भी सकता है।

चार्नक ने खुद ही एक नक़्शा तैयार किया है। नदी के किनारे एक पक्का बाँध। जहाज यहीं पड़ाव डालेंगे। उसी के पास फ़ोर्ट। हिजली में मिला सबक चार्नक को भूला नही है। नदी के किनारे ही क़िले के होने से मुगल अँगरेज़ों को दबा नहीं सके। अब वहाँ पर बंगला बनवाना होगा, जहाँ होगला का जंगल है। नदी के किनारे-किनारे एक रास्ता होना चाहिए। स्थानीय लोगों की आबादी को अँगरेज़ों के टोले से जरा दूर रखना होगा। लेकिन एक रास्ता सीधे बैठकखाना तक जायेगा। कोठी, गोदाम, ऑफिस, गिरजा, मैदान, तालाब, बाट-घाट—नक़्शे मे इन सब की ही व्यवस्था है। और वह क्या ? वह है काली मंदिर ! कालीघाट का मंदिर पीठस्थान है। लेकिन दूरी पर है। नाव से जाना पड़ेगा या जंगल की राह। आसपास मंदिर का होना बेजा नही। इसलिए बीवी की इच्छा से नक्शे मे मंदिर की गुंजाइश रखी गयी।

कौंसिल में नक्शे पर चर्चा ही हुई, किसी निर्णय पर नही पहुँचा जा सका। नवाब का हुक्म न आने तक कोई निर्णय लेना बेकार साबित हो सकता है।

20 सितंबर, 1688 को एक अप्रत्याशित धक्के से नगर की नींव डालने का सारा सपना चूर हो गया।

कैप्टन हीथ—रक्तिम वर्ण, साढ़े छः फुट लंबा, बलवान शरीर—धूमकेतु की तरह सूतानूटी मे आविर्भूत हुआ।

वे ऑफ बंगाल की अँगरेज सेना का सबसे बड़ा सेनापति नियुक्त हुआ है कैप्टन हीथ। ऐडमिरल भी वही। कंपनी के बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स ने खुद उसे मनोनीत किया है। गुपचुप ही सब-कुछ हुआ। जॉब चार्नक को अपनी पदावनति की पहले खाक भी खबर नही मिली। उसका मन विपाक्त हो गया। हेजेस, बेयर्ड, हीथ। पहले दो मरतबा पदोन्नति मे बाधा ही पड़ी थी, इस बार तो एकबारगी पदावनति ही हुई। नौकरी की मुसीबत ही यही है; दूसरो की चाह-मर्जी पर भविष्य निर्भर करता है। चार्नक अब अवसन्न था। उमर भी नही रही। पहले-सी जिद और

उत्साह भी नहीं। एक दिन बड़े-बड़े मनसूबे बाँधकर उसने हेजेस का हौसला पस्त किया था, वेयर्ड सर्वोच्च अधिकारी होते हुए भी चार्नक का मुँह जोहता था। उस समय चार्नक के मन में अपार साहस था, थी आगे बढ़ने की दुर्दम आकांक्षा। परंतु आज नाना आफतों के, नाना दुर्भाग्यों के फलस्वरूप वह थक गया है, झुकने लगा है। आज अवांछित को रोकने की शक्ति उसमें नहीं रही।

मजबूर होकर चार्नक ने हीथ का स्वागत किया। इस नियुक्ति का मतलब बहुत साफ़ है। सेना के अधिनायक पद से चार्नक को हटा दिया गया है और हीथ को उसके ऊपर मनोनीत किया गया है।

आते ही कैप्टन हीथ ने समर-सभा बुलायी। उसने जानना चाहा, सूतानूटी में फ़ोर्ट कहाँ है?

'मुगल बादशाह की मनाही है। फोर्ट इसलिए बनाया नहीं गया,' चार्नक ने बताया।

'तो फिर सूतानूटी के लिए आपने इतनी सिफारिश क्यों की थी?' हीथ बोला।

'इसकी वजह मैंने कोर्ट को विस्तार से बतायी है। सूतानूटी-कालिकता का क्षेत्र एक स्वाभाविक क़िला है। नदी, दलदल, जंगल ही इसकी सुरक्षा के साधन हैं।'

'वह सब फिजूल की बातें हैं,' हीथ ने कहा, 'फ़ोर्ट नहीं है, लड़ाई कैसे मरेंगे? सूतानूटी छोड़कर जाना होगा। यह रही कोर्ट की चिट्ठी।'

'इससे क्या! नये नवाब से समझौते की संभावना है। अभी सूतानूटी छोड़कर जाना ठीक नहीं होगा।' समर-सभा के ज्यादातर सदस्य चार्नक के पक्ष में थे।

हीथ गरज उठा, 'भाड़ में जाये नवाब! सूतानूटी छोड़ना ही पड़ेगा। यह बड़ी वाहियात जगह है, रोगों की जड़। इसे जितनी जल्दी हम छोड़ सकें, उतना ही अच्छा।'

'किन्तु...।'

'रहने दीजिए अपना 'किंतु'। अंगरेजी फौज का अधिनायक मैं हूँ, आप नहीं। मेरा हुक्म मानने पर आप मजबूर हैं। मैं 10 नवंबर तक का

समय देता हूँ। चटगाँव जाने की तैयारी कीजिए। हम चटगाँव पर क़ब्ज़ा करेंगे।'

हीथ की इस अकड़ ने चार्नक के मुंह पर गोया चाबुक मारा। क्रोध से उसकी आँखें सुर्ख हो आयी। उसने ज़रा व्यंग्य से कहा, 'कुल तीन सौ तो सैनिक हैं आपके पास, उनमें से ज्यादातर पुर्तगाली। उनसे चटगाँव पर दखल क्या संभव होगा?'

'मैं कैप्टन हीथ हूँ, नौ-सैनिक। आपकी तरह व्यवसायी नहीं हूँ। इतना सोचना मेरे स्वभाव में नहीं। चटगाँव को हम लेकर रहेंगे।'

व्यवसायी! हीथ की वक्रोक्ति में कैसी तो एक खरोंच है, जो बदन में जलन पैदा करती है। जॉब चार्नक बोल उठा, 'इतने दिनों तक उसी व्यवसायी ने बंगाल में, बिहार में कंपनी के अस्तित्व को क़ायम नहीं रखा? इसी व्यवसायी ने हुगली में, हिजली में लड़ाई नहीं लड़ी? आप अपने साहस की बड़ाई कर रहे हैं कैप्टन हीथ, लेकिन मुट्ठी-भर सैनिकों से क्या इस व्यवसायी ने हज़ारों-हज़ार मूरों को अब तक दबाये नहीं रखा?'

'वरशिपफुल मिस्टर चार्नक,' कैप्टन हीथ ने व्यंग्य से कहा, 'उस व्यावसायिक बुद्धि के ही कारण आज हम लोग सूतानूटी के कीचड़ में फँसे हुए हैं, मूरों के जूतों की ठोकर खाने के बावजूद भी दूत भेजकर नवाब के तलुए चाट रहे हैं! अब आपकी वह बच्चों के खेल-सी लडाई नहीं होगी। अब देखिएगा कि लड़ाई किसे कहते हैं! अराकान के राजा से दोस्ती करके हम चटगाँव पर जरूर दखल कर सकेंगे। 10 नवंबर तक का समय मैं दे रहा हूँ। सूतानूटी से बोरिया-बिस्तर समेटिए। यह मेरा हुक्म है।'

नहीं चाहते हुए भी चार्नक कैप्टन हीथ के हुक्म की तामील में लग गया।

कई दिनों से रात-दिन काम चल रहा था। जो माल मौजूद था, उसे बैठकखाने के पीपल-तले मिट्टी के भाव बेच दिया। मौक़ा देखकर देनदारों ने बयाने के रुपये मार लिये। खैर, अभी तो नसीब में नुकसान-ही-नुक़सान लिखा है। सेठ-बसाकों के अगुए अनुरोध करने आये, 'चले क्यों जा रहे हैं? नवाब कोई समझौता जरूर करेगा। आप लोगों जैसे अच्छे व्यवसायी के चले जाने से बंगाल का बाज़ार चौपट हो जायेगा।' जॉब चार्नक ने

उनकी कुछ नहीं सुनी। उपाय भी क्या था ? कैप्टन हीथ का हुक्म जो था।

पर सूतानूटी-कालिकता छोड़कर जाने में कैसा एक मोह होने लगा। आँगन में रजनीगंधा फूली है। बड़ी अच्छी लगती है उसकी खुशबू। आसमान में रुई-धुने-से बादल। कुहरे से दूर के पेड़-पौधे धुँधले हो गये हैं। उत्तर की हवा में कभी-कभी नोनादह की सुँटकी मछली की गंध बसकर आ रही है। यह गंध भी बड़ी जानी-पहचानी-सी है। गंगा के उथले पानी में नाव से मछेरे मछली पकड़ रहे हैं। बीच-बीच में जहाज़ की मरम्मत की ठक्-ठक् से चीलें चौंक उठती हैं।

रात आ गयी, सियारों की चीखों से रात की खामोशी टूट रही है। जॉब चार्नक अँधेरे में अपलक आँखों ताकता रहा। भावी महानगरी की कल्पना अँधेरे को लुप्त किये दे रही है।

बीवी ने मोमबत्ती जला दी। कुटीर कुछ आलोकित हो गया। रस्सी की खाट पर लेट गया चार्नक। कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। पति के शिकन पड़े कपाल पर बीवी हाथ फेरने लगी। एक गर्म आँसू बीवी के हाथ से छू गया।

चार्नक की आँखों में आँसू ?

नगर की नींव डालने का सपना आँसुओं से धुल-पुंछ रहा था।

10 नवंबर के पहले ही अँगरेज़ों ने सूतानूटी छोड़ दिया। नवाब बहादुर खाँ ने बातचीत के लिए मल्लिक बरकरदार को हुगली भेजा। यह खबर पाकर कैप्टन हीथ ने डेरा-डंडा समेटने का हुक्म दिया। इसी मल्लिक ने ही तो एक बार चार्नक को चकमा देकर संधि की थी ? न, अब संधि नहीं। युद्धं देहि। सब चलो चटगाँव।

8 नवंबर को अँगरेज़ों का नौ-बेड़ा बालेश्वर की ओर रवाना हुआ। चार्नक-परिवार जिस जहाज़ पर सवार हुआ, उसका नाम है 'द डिफेंस'। काफी मजबूत, दरमियाने आकार का जहाज़। सीधे लंदन से आया है।

चार्नक की बीवी और बच्चों की यह पहली समुद्र-यात्रा थी। चार्नक ने सोचा था, उन्हें किसी सुरक्षित जगह रख जाता, तो अच्छा था। मोतिया

की याद आयी थी। नवद्वीप के शांत परिवेश में अज्ञातवास में रहते। परंतु बीवी ने पति की बात को हँसकर उड़ा दिया। पति का पथ ही हिंदू-नारी का गंतव्य है।

जहाज के एक छोर पर एक छोटे-से कमरे में चार्नक की बीवी लेटी थी। समुद्र-दर्शन के कौतूहल का शीघ्र ही अन्त हो गया। लहरों की चपेटों से जहाज के हिलते रहने के कारण चार्नक-परिवार के सभी सदस्य अस्वस्थ हो गये। बार-बार उल्टी करके सबने खाट पकड़ी। चार्नक ने कहा, 'तुम लोगों को बल्कि मद्रास भेज देने का इंतजाम कर देता तो ठीक था।'

बीवी ने हँसकर कहा, 'उससे समंदर में डूब मरना ही अच्छा होता।'

'क्यों ?'

'देख नहीं रहे हो, तुम्हारे गौरव में ही मेरा गौरव है। जब तक तुम बे-अंचल के सर्वेसर्वा थे, तब तक मेरी कुछ खातिर-तवज्जह भी थी। यहाँ तक कि मेमें भी मेरा अदब करती थी। पर, आज जब तुम्हारे ओहदे का गौरव जाता रहा, इसलिए मेरा गौरव भी म्लान पड़ गया है। कैप्टन हीथ और उसके चेले-चामुंडे साफ़ ही मुझसे घृणा करते हैं। इस पर अगर मद्रास चली जाऊँ, जहाँ तुम नहीं रहोगे, तो वहाँ तुम्हारी जाति के लोग मुझे बहिष्कृत ही कर देंगे।'

एंजेला ने बात कुछ गलत नहीं कही थी। कैप्टन हीथ का अभद्र आचरण एंजेला की नजरों से छिप नहीं सका था। पुरानी गाथा की ही पुनरावृत्ति हो रही थी। कैप्टन की भोज-सभा में सम्मिलित होने के लिए निम्न स्तर की गोरी महिलाओं को न्योता मिलता था, पर चार्नक की बीवी को नहीं। मिसेज़ ट्रेंचफील्ड तो खुलेआम बीवी को अपमानित करने की कोशिश में है।

चार्नक जानता है, किसी प्रकार का भी प्रतिवाद बेकार है।

अँगरेजों का नौ-बेड़ा बालेश्वर में आ लगा। कैप्टन हीथ पुलकित हो गया। दो फ्रासीसी जहाजों को जबरदस्ती छीन लाया गया है। इस कारण कैप्टन हीथ ने बहुत बार बालेश्वर के मुगल प्रतिनिधि के पास दूत भेजा। यह दूत-कार्य किसलिए, इसका नतीजा क्या है, जॉब चार्नक कुछ भी नहीं जान सका। हीथ चार्नक की बिलकुल साफ़ उपेक्षा कर रहा है।

यह उपेक्षा और भी तब साफ़ हो गयी, जब एजेंट चार्नकसे राय-मशविरा बिना किये कैप्टन हीथ छोटी-छोटी नावों पर सैनिकों को लेकर बालेश्वर पर आक्रमण करने के लिए जाने लगा। जॉब चार्नक महज़ द्रष्टा—निरपेक्ष द्रष्टा रह गया।

आँखों में लंबी दूरबीन लगाकर जॉब चार्नक देख रहा था। गोल काँच से थोड़ा-बहुत ही देखा जा रहा था। हीथ ने नावों को बालू के टीले से लगाया। पेशेवर अंगरेज़ और पुर्तगाली सेना बालू पर उतरी। सरदियों के इस कुहरे में उनकी लाल पोशाक साफ़ दिखायी पड़ रही है। बालू के टीलों को पार करके वे आगे बढ़े। उधर अपनी छावनी से मुगल फौज ने गोले बरसाना शुरू कर दिया। अँगरेज़ भी जवाबी हमला करने लगे। मुग़लों की वह चौकी ख़ास मजबूत नहीं थी। अँगरेज़ सेना तादाद में भी ज्यादा थी। वे सीढ़ी लगाकर किले की दीवार को फाँदने लगे। कुछ देर ज़ोर का आमने-सामने का मुकाबला हुआ। बारूद के धुएँ ने कुहासे पर एक अस्पष्ट परदा-सा डाल दिया। कुछ साफ़-साफ़ नहीं दिखायी दे रहा था। खैर, जान में जान आयी, मुगल फ़ौज भागने लगी। विजयी अँगरेज़ों के ड्रमों की आवाज़ दूर से सुनायी पड़ने लगी।

दूसरी एक फ़ौज लिये नाव पर कैप्टन हैडक प्रतीक्षा कर रहा था। इशारा मिलते ही वह फ़ौज लेकर हीथ की सहायता के लिए कूद पड़ेगा। हैडक की नाव जॉब चार्नक के जहाज से टकरायी।

हैडक नाव से ही जहाज पर आ गया। वह चार्नक से चुपचाप कहने लगा, 'यह काम अच्छा नहीं हुआ, वरशिपफुल मिस्टर चार्नक।'

'कौन-सा काम ?'

'रेतीले स्थल पर बनी उस चौकी पर क़ब्ज़ा करना क़तई उचित नहीं हुआ।'

'क्यों ? अपने साहसी कैप्टन की जीत पर तो हम सबको ही खुश होना चाहिए।' चार्नक के स्वर में कुछ व्यंग्य था।

'यह जीत कहाँ है ?' हैडक ने कहा, 'मैंने हीथ से उस चौकी को छोड़कर सीधे शहर पर हमला करने को कहा था। उन्होंने मेरी बात पर कान ही नहीं दिया। उधर, शहर में हमारे देश के लोगों का क्या हाल हो

रहा होगा, यह ईश्वर ही जाने। मूरों ने उनकी पकड़-धकड़ कर ली और अब तक उन सबका सफ़ाया कर दिया होगा। इस चौकी के बदले हमने नगर पर आक्रमण किया होता, तो शायद उन्हें बचा पाते।'

'आपकी सलाह तो अच्छी थी,' चार्नक ने कहा, 'आपकी बात पर कैप्टन हीथ को ध्यान देना चाहिए था।'

'कैप्टन क्या किसी की सुनते हैं?' हैडक ने कहा, 'देखिए न, आप जैसे अनुभवी, विचक्षण आदमी से भी युद्ध के मामले में कोई राय नहीं ली।'

निष्फल आक्रोश से चार्नक का कलेजा ऐंठ गया। हैडक का कहना गलत नहीं था। एजेंट जॉब चार्नक आज असमर्थ है, शक्तिहीन। कैप्टन हीथ जान-बूझकर ही उसकी उपेक्षा कर रहा है। चार्नक किससे शिकायत करे? मालिकों के हुक्म से ही हीथ की उद्धतता असह्य होने पर भी सहनी पड़ रही है।

चार्नक ने कहा, 'ख़ैर, इसे छोड़िए। अब नगर पर आक्रमण कब होगा?'

'यह कैप्टन हीथ की मर्ज़ी पर है,' हैडक बोला।

लेकिन ज्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ा। तट पर से ट्रंपेट की आवाज़ आयी। मार्च करने का संकेत हुआ। कैप्टन हैडक फौज के साथ बालू की तरफ बढ़ा। जॉब चार्नक ने दूरबीन लगाकर देखा, अंगरेज़ी फ़ौज मार्च करती हुई शहर की तरफ़ बढ़ रही है। पर-झाड़ियों की आड़ में वे फिर दिखायी नहीं पड़े।

चार्नक निकम्मा-सा बैठा है। बीच-बीच में चहलक़दमी करता है। वह अभी भी एजेंट है, पर युद्ध के संचालन का भार उस पर नहीं है। बालेश्वर के इतने पास है, पर मानो कितनी दूर है वह! वहाँ लड़ाई हो रही है लेकिन उसकी कोई ख़बर उसके पास नहीं पहुँचाई जा रही। हीथ ने कहा था—'मैं आपकी तरह व्यवसायी नहीं हूँ।' व्यवसायी को लड़ाई की ख़बर की क्या ज़रूरत?

एक दिन बीत गया।

दो दिन, तीन दिन...चार दिन

वलियाड़ी मे फिर जीवन की हलचल।

नेटिव कुलियों के सिर पर लद-लदकर माल आ रहा है। नाव पर लद रहा है। वह नाव माल को जहाज़ पर पहुँचा रही है। ढेरों क़ीमती माल! कपड़ा, ग़लीचे, पीतल-काँसे के बर्तन। सोने-चाँदी के गहने।

तो क्या कैप्टन हीथ बालेश्वर में सौदा कर आया?

नाव के मल्लाहों से पूछने पर असली बात मालूम हो गयी।

'सौदा नहीं, लूट का माल है। हमारा भी हिस्सा होगा, हम लोगों ने क्या लड़ाई नहीं की?' नाविकों की आँखें लोभ से चमक रही थीं।

'लूट का माल? हम क्या डकैत हैं?'

नाव पर पहुँचाए जा रहे माल पर एक अँगरेज संतरी पहरा दे रहा था। वह दमक उठा, बोला, 'डकैत कैसे? हमने क्या लड़ाई नहीं लड़ी है? बालासोर के मूर गवर्नर मिर्ज़ा अली कुंदर का घर हमने लूटा है। वहीं का माल है सब।'

चार्नक ने कहा, 'मिर्ज़ा हम लोगों का दोस्त है। क्या उसी का घर लूटा है?'

'कैप्टन का हुक्म था,' संतरी ने कहा, 'मूर कैसे मित्र हो सकता है? सिर्फ़ लूट नहीं सर, गवर्नर के घर की औरतों तक को हम लोगों ने मार-काट डाला है।'

चार्नक गरज उठा, 'तुम अँगरेज हो? तुमने नारी-हत्या की?'

'माफ कीजिए, सर,' संतरी ने कहा, 'हत्या करने की क़तई इच्छा नहीं थी। जिस मूर छोरी को मैंने पकड़ा था, उससे ज़रा मौज-मज़ा लेने का मन था। पर वह छोरी मुझे पास तक नहीं भटकने दे रही थी। मेरे कंधे के मास को काट खाया। ज़ख्म कर दिया। गुस्से में मैंने बंदूक के कुंदे से उसका काम तमाम कर दिया। गवर्नर के यहाँ की कोई भी स्त्री हमारे हाथों से नहीं बच पायी।'

एक दूसरी नाव पर कुछ संतरी एक भीमकाय हिंदू को पकड़कर लिये आ रहे थे। उसे नाव पर रोक रखना ही कठिन हो रहा था। संतरियों से उठा-पटक की नौबत में नाव के उलटने की नौबत आ गयी। संतरियों ने बड़ी मुश्किल से उसे एड़ी-चोटी बाँधकर नाव पर डाल लिया।

उस काले बलिष्ठ आदमी के बदन में बहुत जगह घाव लगे थे। कई जगह चमड़ी उधड़ गयी थी, लहू बह रहा था। साफ समझ में आ रहा था कि उसे आसानी से नहीं पकड़ा जा सका है।

वह आदमी जहाज पर छिटककर गिरा। घायल चीते की नाईं उसकी लंबी साँस चल रही थी। बड़ी लाल आँखों से नफरत की आग बरसने लगी। संतरियों ने उसके हाथ-पाँवों में मोटी जंज़ीरें डाल दीं।

तलवार से कोचकर एक संतरी ने कहा, 'कुत्ते की औलाद, कैप्टन के आने तक जंज़ीरों में बँधा पड़ा रह। देखना, होंय कैसे ज़बरदस्त मालिक हैं!'

वह आदमी असीम घृणा से थू-थू करने लगा। 'बेईमान, बदतमीज़ अँगरेजो! जहन्नुम में भी तुम्हें जगह नहीं मिलेगी। अपने मित्र मिर्ज़ा साहब का घर लूटने में तुम्हें शरम नहीं आयी? उनकी औरतों की बेइज़्ज़ती, उन्हें ज़ख्मी करने में तुम्हारा कलेजा नहीं काँपा, हरामज़ादो?'

जॉब चार्नक आगे बढ़ आया। इस क़ैदी में ओज है। बेशक यह कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं है। कुत्ते की तरह इसे जंज़ीरों में बाँध रखना ठीक नहीं।

चार्नक ने ज़रा देर उसे सिर से पैर तक देखा। उसके बाद हुक्म दिया, 'संतरी, इस आदमी को खोल दो!'

संतरी आपस में एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

एक ने साहस बटोरकर कहा, 'हुज़ूर, यह आदमी दानव है। हमारे तीन आदमियों को इसने ज़ख्मी किया है।'

'ज़ख्मी किया होगा,' चार्नक ने कहा, 'मेरा हुक्म है, खोल दो उसे।'

'जैसा हुक्म, हुज़ूर।'

जंज़ीरों से छूटकर वह आदमी संदिग्ध विस्मय से चार्नक की ओर देखने लगा।

'कौन हैं आप? क्या चाहते हैं मुझसे?' उसने पूछा।

'तुम आराम करो और स्वस्थ होओ,' चार्नक ने भद्रता से कहा।

'अँगरेजों के संस्पर्श में मैं स्वस्थ नहीं हो पाऊँगा। आप मुझे यहाँ से चले जाने दीजिए।"

'कहाँ जाओगे ?'

'जहाँ मेरे मालिक मिर्ज़ा साहब हैं।'

'तुम उनके...?'

'खोजा हूँ। नौकर।'

'मेरी ओर से मिर्ज़ा साहब से माफी माँग लेना,' चार्नक ने कहा, 'उनके परिवार पर जो अत्याचार हुआ है, उसके लिए मैं शर्मिंदा हूँ।'

'आप कौन है ?'

'मैं एजेंट हूँ। जॉब चार्नक।'

'सलाम, हुजूर! आप ही चार्नक हैं ? आपने हुगली में, हिजली में लड़ाई की थी ? सलाम। आप वीर है, योद्धा है। लेकिन आपकी फ़ौज ने इतने दिनों तक बालेश्वर को नरक-समान क्यो बना डाला ? इन लोगों ने न केवल मेरे मालिक का घर तहस-नहस किया, बल्कि इतने जवानो, इतनी औरतों का सर्वनाश किया कि कहा नही जा सकता। सोचता था, अँगरेज़ व्यापारी है, वीर है। अब देखता हूँ, ये डाकू हैं, शैतान है।'

'तुम्हारा गुस्सा वाजिब हो सकता है, मगर यह मत भूलो कि मूरो ने भी हम पर कम ज़ुल्म नही ढाया है। हमारी स्त्रियो को कैद किया है, उनकी अस्मत लूटी है, उन्हें हरम मे बाँदी बनाकर रखा है।'

'बजा है। उसके लिए मैं भी दुखी हूँ,' उस आदमी ने कहा, 'मेरे मालिक मिर्ज़ा साहब यही कहते है कि हिंसा से हिंसा नही जाती, जाती है दोस्ती से, प्रेम के आदान-प्रदान से। वह सूबा बंगाल की सारी खबर रखते थे। कहा करते थे, इतने दिनों के बाद अँगरेज़ों में एक समझदार आदमी आया है। वह है जॉब चार्नक। सूतानूटी-कालिकता मे यदि वह शहर और बंदरगाह बना दे तो नदी के मुहाने पर एक बहुत बड़ी आढ़त हो जायेगी, जिसके सामने बालेश्वर फीका पड़ जायेगा। कहते थे, जॉब चार्नक यह जानता है कब लड़ना चाहिए, कब सुलह करनी चाहिए। लेकिन आपके चेलों की करतूतों से मेरे मालिक की वे धारणाएँ धुल गयी है।'

'तुम गलती कर रहे हो, खोजा। जिन लोगों ने बालेश्वर को लूटा है, वे मेरे चेले नही है, बल्कि सच तो यह है कि मैं उनके हाथों नजर-बंद हूँ।'

मेरी ग्रायी। कहा, 'पापा, माँ बुला रही हैं।'

चार्नक ने वंदी खोजा की शुश्रूषा का हुक्म दिया। जहाज़ के सर्जन पर उसका भार सौंपकर चार्नक कमरे में लौट गया।

'वरशिपफुल मिस्टर जॉब चार्नक,' व्यंग्य-भरे, रुँधे कंठ से वीवी ने कहा, 'ग्राप ही ग्रॉनरेवुल ईस्ट इंडिया कंपनी के एजेंट हैं?'

चार्नक हैरत में ग्राया। एंजेला के गले से ऐसा स्वर उसने कभी नहीं सुना था—खासकर एक ग्रपरिचित महिला के सामने। ग्रस्त-व्यस्त वेश में एक नेटिव स्त्री। पर, ईसाई। पेपिस्ट। गले में पवित्र क्रूस।

चार्नक ने कहा, 'यह क्या मज़ाक है, एंजेला!'

'मज़ाक नहीं,' चार्नक की वीवी दृढ़ स्वर में बोली, 'विचार का समय ग्राया है। मैं माननीय एजेंट महोदय से विचार करने की प्रार्थना करती हूँ, बशर्ते कि वह ग्रभी भी एजेंट के पद पर हो।'

'तुम जानती हो, मैं ग्रभी भी एजेंट हूँ।'

'तो फिर मेरी शिकायत पर विचार हो।'

'काहे का विचार?'

'यह जो ईसाई महिला यहाँ ग्रायी है, मैं उसकी ग्रोर से न्याय की माँग करती हूँ।'

'कौन हैं यह?'

'मिसेज़ टॉमस। वालेश्वर के एक ईसाई व्यापारी की धर्मपत्नी। फ़िलहाल क़ैद है। बाँदी।'

'बाँदी?'

'हाँ। ग्रापके कैप्टन हीथ के हुक्म से इन्हें, इन्हें ही क्यों, इन जैसी ग्रौर भी वहुतेरी ग्रभागिनों को ग्रकथ्य ग्रत्याचार के बाद बाँदी बनाकर ग्रापके सैनिक जहाज़ पर ले ग्राये हैं।'

'एँ!'

'ग्राप इन्हीं से वह सब सुनिये,' चार्नक की वीवी ने उस स्त्री को संबोधित करके कहा, 'ग्राप ग्रपने ही मुँह से उन जघन्य ग्रत्याचारों की कहानी कहिए।'

आंसू-रुंधे अस्पष्ट स्वर में मिसेज़ टॉमस बोली, 'कहूँ भी क्या अब, जो होना था, सो तो हो ही चुका।'

'फिर भी कहिए आप, माननीय एजेंट महोदय सुन लें कि इनकी सुसभ्य अँगरेज़ी फ़ौज नृशंसता में मूरों-मुग़लों से कम नहीं है।'

उस ईसाई औरत ने अपनी दुर्दशा का जो दुखड़ा रोया, संक्षेप में वह यों था :

'मैं बालेश्वर के एक वर्णसंकर व्यापारी की स्त्री हूँ। घर में पति और एक जवान बेटी है। सब सुख से थे। लेकिन सुख का वह संसार एक दिन की विभीषिका में ही चूर-चूर हो गया।

'ख़बर मिली, अँगरेज़ी फ़ौज ने बालेश्वर पर हमला किया है। मुग़ल गवर्नर शहर छोड़कर भाग गया। अराजकता फैल गयी। गोरे सैनिकों ने लूट-पाट शुरू कर दी। उनके हमले से ईसाई टोला भी बरी नहीं रहा। मेरा पति मुकाबले को आया। उसे जान से हाथ धोना पड़ा। मैं अपने पति की छाती पर लोट गयी। पड़ोस की महिलाओं ने मुझे गिरजे में पहुँचा दिया—इस विश्वास से कि अँगरेज़ गिरजे की पवित्रता को नष्ट नहीं करेंगे। सारी रात प्रार्थना में बीती।

'लेकिन दूसरे दिन सवेरे अँगरेज़ सैनिकों का एक दल गिरजे में घुस गया। अपनी कामलिप्सा की तृप्ति के लिए उन्होंने स्त्रियों की माँग की। पादरियों ने उन्हें समझाने की कोशिश की। पादरियों पर बंदूकों के कुंदों का वार हुआ। उनकी बोली बंद हो गयी।

'और तब दल-के-दल अँगरेज़ और पुर्तगाली गिरजे में घुस आये। उनकी आँखों में कामुकता झलक रही थी।

'ईसाई महिलाएँ चीख उठीं। धर्म के नाम पर, माता मरियम के नाम पर, पवित्र क्रूस के नाम पर आरज़ू-मिन्नत की। पर, सब बेकार, निष्फल।

'नारियों पर पाशविक अत्याचार होने लगा। मैं भी उनकी ज़्यादतियों से बच नहीं पायी। असह्य पीड़ा से गिरजे में बेहोश होकर गिर पड़ी।

'कब होश आया, पता नहीं। आँखें खुलीं तो देखा, मुझे एक नाव से समुद्र पर ले जाया जा रहा है। ज़बर्दस्ती का शिकार, साथ में और भी कई स्त्रियाँ थीं। अँगरेज़ संतरी पहरे में जहाज़ में ला रहे थे, बाँदी के रूप में

उन्हें बेचने के लिए।'

'वह औरत, वह औरत कहाँ गयी ?' लेकिन कोई बता नही सका।

चार्नक की बीवी बोली, 'जहाज में लाते ही इनकी शक्ल देखकर मुझे संदेह-सा हुआ। मैं जबरदस्ती इन्हें कमरे में खीच लायी। अब माननीय एजेंट महोदय इसकी जाँच करें, न्याय करें।'

चार्नक ने क्षुब्ध स्वर से कहा, 'उपहास क्यों कर रही हो, एजेला ? तुम्हें पता है, इस समय मेरी जुर्रत कितनी है। मैं फ़िलहाल इतना ही कर सकता हूँ कि यह तुम्हारी रक्षा में रहें। लड़ाई बंद होने पर इनकी बेटी की खोज करूँगा।'

चार्नक की बीवी कुछ नर्म पड़ी। बोली, 'इनकी मदद करो। देख नही रहे हो, कैप्टन के अत्याचार से तुम्हारी जाति के सुनाम पर कालिख पुत रही है !'

'ठीक कह रही हो,' चार्नक ने कहा, 'इसका कोई उपाय करना होगा। मैं एलिस, पिची—इन सबसे सलाह लेता हूँ।'

'डिफेंस' जहाज के बड़े कमरे मे बैठक हुई। जॉब चार्नक तो रहे ही, और रहे फ्रांसिस तथा जेरेमिया पिची। दोनों ही कौंसिल के सदस्य हैं। हीथ की अधीनता में अँगरेज सैनिकों ने जो पाशविक अत्याचार किये हैं, उन पर विमर्श हुआ। यहाँ तक कि प्रतिद्वंद्वी डचों ने भी उन जुल्मो का विरोध लिख भेजा। अँगरेज सैनिकों द्वारा गिरजे की लूट की निंदा की गयी। परंतु उपाय क्या ? लड़ाई का नायक हीथ है। उसके खिलाफ कुछ करने का अर्थ है विद्रोह, म्युटिनी।

जॉब चार्नक पीछे हट गया। वह विद्रोह नही करेगा। परपरा को वह नही तोड़ेगा। इसीलिए तो शाइस्ता खाँ कहता था, अँगरेज जाति बड़ी झगडालू है ! इतने दिनों तक अर्पित सेवा करने के बाद अब जीवन के संध्याकाल में ऑनरेबुल कपनी द्वारा नियुक्त सेनापति की खिलाफत करना असंभव है !

एलिस ने कहा, 'कैप्टन को कम-से-कम हमारा प्रतिवाद जताना तो जरूरी है।'

पिची ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

चार्नक की सम्मति थी : उसे मालूम है, इस प्रतिवाद का कोई नतीजा नही निकलेगा। उससे अच्छा है, सारी बातें कोर्ट ऑफ़ डाइरेक्टर्स को लिख भेजी जायें। चार्नक का विश्वास है, उससे शायद कोई सही रास्ता निकले।

इतने में कैप्टन हीथ और कैप्टन हैडक सभा में आ धमके।

'क्या साजिश हो रही है?' हीथ ने पूछा। वह अपने-आप कहता गया, 'आप सब व्यवसायी हैं, आप सिर्फ़ जमघट करना, बातें करना ही जानते हैं। और मैं एक सैनिक हूँ, सीधा वार करना ही जानता हूँ।'

'और यह भी जानते हैं कि लूट-पाट कैसे की जाती है,' जॉब चार्नक ने गंभीरता से कहा, 'किस प्रकार गिरजे की पवित्रता नष्ट की जाती है, कैसे स्त्रियों पर बलात्कार किया जाता है!'

'वह सब लड़ाई का अंग है,' हीथ ने कहा, 'आप व्यापारी हैं, तोल-वज़न करके चल सकते है। हम लोगों के पास उतना समय नहीं। फिर भी आप लोगों के मुँह से धर्म की चर्चा सुनकर मैं बड़ा हैरान हो रहा हूँ, वार्शिपफुल मिस्टर चार्नक!'

'इसमें हैरान होने की क्या बात है?'

'इसलिए कि आप तो ग़ैर-ईसाई हैं,' हीथ ने कहा, 'आप ईसाई धर्म के किसी आचार-विचार को नही मानते। जेंटुओं की तरह पूजा-पाठ करते हैं। यहाँ तक कि जेंटू-स्त्री के साथ गिरस्ती चलाते हैं। आपके मुँह से धर्म-चर्चा!'

'अपनी धर्मपत्नी पर इस प्रकार की फबती मैं बरदाश्त नही करूँगा,' चार्नक ने कहा, 'आप ज़रा संभलकर बोलें, कैप्टन।'

कैप्टन हैडक ने इस व्यक्तिगत कलह को आगे नहीं बढ़ने दिया। रोकते हुए उसने कहा, 'वेल, हम नाहक ही झगड़ रहे हैं। इधर नवाब ने परवाना भेजा है। उसने यह कहा है, कैप्टन हीथ के प्रस्ताव को मंजूर किया जा सकता है, बशर्ते कि उसका समर्थन एजेंट स्वयं अपने पत्र मे करें।'

चार्नक कुछ संतुष्ट हुआ। मतलब, नवाब कैप्टन हीथ का एतबार नही करता। जॉब चार्नक का समर्थन चाहता है। चार्नक ने कपट विनय के साथ कहा, 'अच्छा! नवाब आखिर एक मामूली बनिये से संधि करना चाहते

हैं ? नहीं-नहीं, मैं क्यों पत्र लिखने लगा ? हमारे माननीय कैप्टन गोलों के बल पर संधि संपन्न कर लें।'

'कर लूंगा,' हीथ ने दंभ से कहा, 'जब चटगांव में असली खेल दिखा के आऊंगा। अभी नवाब के नाम खत लिख दें।'

'आपका इरादा क्या है ?' चार्नक ने पूछा।

'युद्ध की पोशीदा बातें मैं व्यवसायियों के सामने जाहिर नहीं करता,' हीथ ने कहा।

'तो फिर संधि का भार मैं ही लेता हूं,' चार्नक बोला, 'मेहरबानी करके संधि के मामले में दखल देने न आयें।'

'बहुत खूब, देखा ही जाये, आपकी दौड़ कितनी दूर तक है ?' हीथ ने व्यंग्य किया।

चार्नक ने संधि की शर्तों के साथ पत्र लिखा। अब यह पत्र लेकर बालेश्वर के गवर्नर के पास कौन जाये ?

चार्नक ने कहा, 'मिस्टर रैवेनहिल और गवर्नर का खोजा, जिसे आप दास बनाकर लाये हैं। वह मिर्जा अली कुदर का प्रिय पात्र है। उससे संधि का काम आगे बढ़ेगा।'

वैसा ही हुआ। बात संधि की चलने लगी, पर नवाब का हुक्म आये बिना गवर्नर संधि की शर्तों को नहीं मान सका।

दूत के काम मे रैवेनहिल बालेश्वर में अटक गया।

कि 23 दिसंबर को हीथ ने हुक्म दिया, 'लंगर उठाओ, चटगांव चलो।'

चार्नक ने रोका, 'संधि की बात अभी पूरी नहीं हुई है।'

'अजी रखिए अपनी संधि !' हीथ ने आदेश दिया, 'मैं प्रधान हूं, मेरा हुक्म है। लंगर उठाओ, और चटगांव की ओर बढ़ो ?'

'मगर रैवेनहिल तो बालेश्वर में पड़ा रह जायेगा ?'

'रहे पड़ा,' हीथ ने कहा, 'दो सौ रैवेनहिल भी पड़े रहें, तो भी मेरा हुक्म इधर से उधर नहीं हो सकता।'

हीथ के हुक्म से अंगरेजों का जहाजी बेड़ा हठात् लंगर उठाकर पूरब की ओर रवाना हो गया।

25 दिसंबर। बड़ा दिन। इस बार समुद्र में ही बड़े दिन का उत्सव मनाया गया। बेड़े के जहाजों को रंगीन पताकाओं से सजाया गया। तोपों की आवाज़ ने शांत सागर को आलोडित कर दिया। मल्लाह, सैनिक—सब शराब के नशे मे चूर हो गये। बहुतों ने गाना शुरू किया। कई निम्न कोटि की गोरी औरतें मर्दों का हाथ पकड़कर नाचने लगीं।

जॉब चार्नक के मन में कोई उमंग नहीं। केबिन के सामने एक रेलिंग पकड़कर वह खड़ा था। दुनिया-भर की फ़िक्र जैसे दिमाग़ को जकड़ रही हो। अतीत, वर्तमान, भविष्य—सब घिचपिच हुए जा रहे थे। अगले दिन क्या रूप लेकर सामने आयेंगे, क्या पता ? सब-कुछ अनिश्चित है।

मोतिया की याद हो आयी। मन अकुला गया। मोतिया शायद अभी भी नवद्वीप मे है। किस आसानी से उतने दिनों के संबध को चुकाकर मोतिया ने हंसते हुए विदाई ली! उससे फिर मुलाकात होगी या नहीं, कौन जाने ?

हेजेस का घमंडी चेहरा आँखों में नाच गया। वह मुखड़ा मानो एजेंट चार्नक की हँसी उड़ा रहा है। एलेन कैंचपुल उसकी पदावनति देखकर उमग उठा है।

रेलिंग पर जोर से मुक्का जमाकर चार्नक बोल उठा, 'मैं एजेंट हूँ। मैं वरशिपफुल जॉब चार्नक हूँ।'

चोट से हाथ झनझना उठा। चार्नक चौंका। ध्यान आया, वह महज नाम का ही एजेंट है। ऐडमिरल कैप्टन हीथ उसे एजेंट मानता ही नहीं। उसके उकसाने से मातहत कर्मचारियों ने भी मानो उसकी अवज्ञा शुरू कर दी है।

मेरी रोती हुई आयी।

'आज उत्सव के दिन रोना कैसा ?' चार्नक ने पूछा, 'बहनों से लड़ाई हो गयी ?'

मेरी फूट-फूटकर रोने लगी।

'मेरी, क्या हुआ है बिटिया ?' चार्नक ने दिलासा देने के लिए कहा। 'आयर को मिलने के लिए जी मचल रहा है ?'

मेरी ने रुलाई से रुंधे गले से कहा, 'मुझे आयर के पास भेज दो, पापा

मैं यहाँ एक पल भी नही रह सकती।'

'ठीक तो है बिटिया, हम चटगांव चलें। वहाँ से ढाका ज्यादा दूर नही है। प्रायर से तुम्हारा ब्याह करके हनीमून के लिए ढाका भेज दूंगा।'

'जानते हो, पापा,' मेरी ने लाड़ से कहा 'आज मिसेज ट्रेंचफ़ील्ड ने सब औरतों के सामने क्या कहा? बोली, कि प्रायर मेरी से हरगिज ब्याह नहीं करेगा। इसलिए कि मै बास्टर्ड हूँ। बास्टर्ड का क्या मतलब होता है, पापा? जरूर कुछ बहुत बुरा होता होगा। नही तो वह मुझसे ब्याह क्यो नहीं करेगा?'

मिसेज ट्रेंचफ़ील्ड को बड़ा घमंड हो गया है! मेरी को खुलेआम जारज कहने में उसे झिझक नही हुई!

'बास्टर्ड के क्या मानी है, पापा?'

'वह तुम नहीं समझोगी, बिटिया,' चार्नक बोला, 'मिसेज ट्रेंचफ़ील्ड बड़ी वाहियात महिला है। उसकी बातों पर हरगिज कान मत देना।'

'मैं सचमुच ही बास्टर्ड हूँ, पापा?'

'झूठ, बिलकुल झूठ। प्रायर से तुम्हारा ब्याह जरूर होगा। और तब तुम देखोगी कि इस बदचलन औरत की बात सफ़ेद झूठ है। खैर, जाओ, क्रिसमस पार्टी की तैयारी करो।'

'नही पापा, मैं पार्टी मे नही जाऊँगी। तुम नहीं जानते, वह शैतान औरत किस कदर मेरा अपमान करती है। मुझे कहती है—जेंटू, पैगन, युरेशियन।'

'मैं ट्रेंचफ़ील्ड से डाँटकर कह दूंगा कि वह अपनी झंझटी बीवी को दुरुस्त करे।'

मेरी चली गयी।

वास्तव में जाति-धर्म-वर्ण की समस्या प्रबल हो गयी है। लड़कियाँ सुपात्रों को ही देनी होगी।

मिसेज टॉमस को लेकर चार्नक की बीवी आयी। कृत्रिम उत्साह से चार्नक ने कहा, 'क्यों श्रीमतीजी, आज क्रिसमस है, साज-सिंगार नही किया?'

'न, आज सजने-सँवरने का जी नहीं हुआ,' बीवी बोली।

'सचमुच ही क्या तुम बड़ी-बूढ़ी हुई जा रही हो ?' चार्नेक बोला।

मिसेज टॉमस बोली, 'मैं जानती हूँ, मेरे लिए मिसेज चार्नेक ने साज-सिंगार नहीं किया। माना, मैंने सब-कुछ खोया है। पर बीवी भी तो मरी मिलती है। ऐसे साज, ऐसी तब्दीली—फिर क्यों न सजें-सँवरें ?'

बीवी ने टोका, 'ये बेकार की बातें हैं। मैं तो दूसरी भूमि पर रहने वाली हूँ, बंदर के शोर-शराबे में तबीयत ठीक नहीं रहती। इसीलिए उस ढंग से नहीं सँवरी। साहब, तुम मिसेज टॉमस से कहो कि उनकी लड़की को ढूँढ़कर निकाला जायेगा।'

चार्नक के जवाब देने से पहले ही विषाद की मूर्ति मिसेज टॉमस बोली, 'मुझे झूठा भरोसा मत दीजिए। मैं जानती हूँ, या तो मेरी लड़की मर चुकी है या उसे किसी बंदर में बाँदी बनना पड़ा है। उससे तो उसकी मौत बेहतर थी !'

'नहीं-नहीं, मिसेज टॉमस,' चार्नेक ने दिलासा दिया, 'आपकी लड़की को मैं जरूर ढूंढ निकालूंगा।'

चार्नेक अपने इस वायदे पर स्वयं ही विश्वास नहीं कर सका। पता है, यह निरर्थक औपचारिक आश्वासन है।

'आप जाइए, मिसेज टॉमस,' चार्नेक ने कहा, 'क्रिसमस पार्टी के लिए तैयार होइए।'

मिसेज टॉमस फीकी हँसी हँसी। बोली, 'मैं तो पागल हूँ। आपकी प्रोटेस्टेंट पार्टी में मेरे लिए जगह नहीं होगी। और फिर, मेरा उत्सव तो खत्म हो चुका। पतिहीना, संतानहीना के लिए कैसा उत्सव !'

'आज खुशी का दिन है, इतना दुख न कीजिए,' चार्नेक ने कहा, 'आपकी उम्र कम है। देखने में आप सुंदर हैं, स्वस्थ हैं। जाने कितने लोग आपसे अब भी ब्याह करना चाहेंगे।'

'पर मैं तो अपने पति से मिलना चाहती हूँ,' मिसेज टॉमस बोली, 'देख लीजिएगा, मैं शीघ्र ही उससे मिलूंगी।'

बड़े दिन की उस रात ही मिसेज टॉमस की मृत देह पायी गयी। 'डिफेंस' के लोग जब बड़े दिन की खुशी में मस्त थे, जहाज के पाल के ऊँचे खूंटे में रस्सी लगाकर झूल गयी वह ईसाई मेटिव महिला।

आखिर खुला चटगाँव का अध्याय।

1689 की पहली जनवरी को अँगरेज़ो का नौ-बेड़ा चटगाँव रोड पर जा लगा। नाव से उतरकर गुप्तचर लोग बंदरगाह का सुराग लगाने गये। जो खबरें लाये, वे आशाजनक नहीं थीं। जॉब चार्नक ने जैसा सोचा था, ठीक वैसा ही था। बंदरगाह काफ़ी सुरक्षित है। अकारण ही वहाँ के राजा से कुछ साल पहले मुगलों ने चटगाँव छीन लिया था। दुश्मन क़रीब ही है, इसलिए मुगलों की सतर्कता मे कमी नही है।

21 जनवरी को अँगरेज़ो के नौ-बेडे मे युद्ध संबंधी बैठक हुई। एक ओर कैप्टन हीथ, दूसरी ओर अपने दल के साथ एजेंट चार्नक। अँगरेज़ो के सैनिको की कुल संख्या—एक सौ पंद्रह यूरोपीय और एक सौ उनहत्तर पुर्तगाली। इस जुरंत पर मुगलों से लोहा नही लिया जा सकता। उससे बेहतर है—नवाब से संधि कर लेना। अराकानियो के खिलाफ़ मुग़लों का साथ देने का प्रस्ताव किया जाये। हीथ ने इसका विरोध किया। मगर वह एकदम अकेला रह गया था। किसी ने भी उसका समर्थन नहीं किया। चार्नक की ओर से कहा गया 'केवल प्रस्ताव करने से ही काम नही चलेगा। नवाब का उत्तर आने तक इंतजार करना होगा।' हीथ ने कहा—'देखा जायेगा। मुगलों से ईमानदारी बरतने की कोई मजबूरी नही है।'

मुगलों के बख्शी ने सागर-तट पर खेमा खड़ा किया है। अँगरेज़ो को सादर बुलाया। नये सिरे से रसद की व्यवस्था कर दी है। चटगाँव में व्यापार करने का प्रस्ताव लेकर एक जर्मन प्रतिनिधि को भेजा है। मुगलों से समझौते का यही तो बेहतरीन मौका है।

लेकिन हीथ ने इस सुअवसर को भी खो दिया। ज्योंही खबर मिली कि मुगलों ने नये सिरे से पांच सौ घुड़सवारो को चटगाँव भेजा है, ऐडमिरल के हुक्म से वैसे ही अँगरेजी बेडा लंगर उठाकर अराकान की ओर भाग पड़ा।

वहाँ भी हीथ की कोशिश नाकाम रही। काफ़ी भेंट पाने के बावजूद अराकान के राजा ने मुग़लों के विरुद्ध हीथ की मदद के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

हीथ ने अराकान के विद्रोही राजकुमार से राजा के खिलाफ़ साँठ-गाँठ

की। परंतु इससे भी कोई खास मतलब नहीं निकला।

फिर लंगर उठाओ!

अब किधर?

मद्रास—मद्रास। फ़ोर्ट सेंट जॉर्ज के निरापद आश्रय में।

चटगांव जीतने का सपना काफूर हो गया। एक से दूसरे बंदर में अँगरेज़ी जहाज़ी-बेड़ा चक्कर काटता रहा। कहीं जगह नहीं मिली। बड़े धीरज और परिश्रम से अँगरेज़ों का जो व्यापार प्रायः आधी सदी में जम गया था, ऐडमिरल हीथ के दंभ और अदूरदर्शिता से वह एकदम खत्म हो गया।

चलो, मद्रास।

मद्रास पहुँचते ही हीथ की सारी डींग-फुफकार जाती रही।

पर जॉब चार्नक उतावला हो रहा था। सूबा बंगाल के नवाब के यहाँ से कोई खबर नहीं आयी। मकसूदाबाद, हुगली, सूतानूटी, बालेश्वर से व्यापार के सारे सूत्र छिन्न-भिन्न हो गये। आयर आदि विश्वस्त कर्मचारी अभी भी नवाब के चंगुल में पड़े हैं। उनका क्या हाल होगा, कुछ ठिकाना नहीं। इधर मद्रास में भी चार्नक का भविष्य अनिश्चित सा था। पूर्व भारत में कोई कोठी नहीं, फिर भी चार्नक मात्र नाम को तो एजेंट है ही। जैसे वह गद्दी से उतारा गया राजा हो! सिंहासन-हीन बादशाह! कंपनी के पूर्वभारत के दफ्तर का ढांचा सही-सलामत है। कौंसिल है। कर्मचारी हैं। परंतु कोठी नहीं, कारोबार नहीं। सिलसिला जारी रखने के लिए चार्नक के अधीनस्थ कर्मचारी कवायद भी करते हैं। वे दिखाना चाहते हैं कि वे बहुत बड़ा काम जारी रख रहे हैं। हकीक़त यह कि कवायद किये बिना उनका खाना नहीं हजम होता। बिना काम के बैठे-बैठे आखिर कब तक तनखा ली जाये? फोर्ट सेंट जॉर्ज में इन बेकारों को कोई काम नहीं दिया गया। जॉब चार्नक खुद भी दुविधा में है।

मद्रास की विस्तृत वेलाभूमि धूप में झकमक कर रही है। जहाँ तक आँखें जाती हैं, तटरेखा चली गयी है, दूर जाकर कहीं खो गयी है, बहुत दूर।

भीगे वालुका-तट पर बंगोपसागर की तरंगें पछाड खा रही हैं। यूरोप के जहाज़ विशाल उपसागर और अंतहीन आकाश के नीचे जलयानों के खिलौने-से लगते हैं। धीवरो की नावो के पाल क्षितिज मे बिंदु-से दीखते हैं। तट पर मछेरी-डोंगियों की लड़कियाँ क़तार में खड़ी हैं। कही समुद्री मछली के लोभ से किनारे लगी नावो के चारों ओर काले लोगों की भीड़। मछली-खोर चिड़ियाँ मँडरा रही हैं। और वहाँ, फ़ोर्ट सेंट जॉर्ज पर अँगरेज़ों की पताका फड़फड़ा रही है।

चार्नक एक बालू के टीले पर बैठ गया। रह-रहकर सूतानूटी और कालिकता का नक्शा देखता और सोचता है कि कैसे होगला का जंगल उजाड़कर नया शहर बसाया जाये, जो शहर पूरब का श्रेष्ठ शहर होगा, जो शहर एक दिन बंबई, मद्रास को भी हेच कर देगा।

कुछ छोटे-छोटे केंकड़े रेत पर घूमते-घूमते चार्नक के पास आ पहुँचे थे। हवा में झंडे के फड-फड कर उठते ही वे भाग गये। एक दिन ऐसा भी आयेगा कि कुली-मजूर-राज-मिस्त्री के कलरव से होगला-वन के बाघ दुम दबाकर भाग जायेंगे।

सचमुच ही एक दिन खबर आ गयी। शुभ संवाद! सूबा बंगाल के नवाब इब्राहीम खाँ ने खुद चार्नक को चिट्ठी लिखी : बंगाल लौट आओ। नवाब ने बंदियों को रिहा कर दिया है, अब चार्नक को सादर बुलावा भेजा है। इब्राहीम खाँ से उसका पहले से ही परिचय है। पटना मे रहते हुए इस कंबख्त ने अँगरेज़ों को बहुत सताया था। पर इस समय वह बड़े आदर से अँगरेज व्यापारियो को बंगाल लौटा लाना चाहता है। इतनी आसानी से राज़ी हो जाना उचित नही लग रहा। चार्नक ने जवाब दिया—खुद बादशाह का फ़रमान चाहिए, तभी बंगाल मे कारोबार शुरू करेंगे।

नवाब ने लिखा—बादशाही फरमान में बड़ी देर होगी, मैं भरोसा देता हूँ; भय-आशंका की कोई बात नही। बंगाल लौट आइए।

चार्नक बंगाल लौटेगा। जरूर लौटेगा। सूतानूटी-कालिकता की पुकार को वह टाल नही सकता।

जहाज का नाम है : 'द प्रिंसेस'। विलायत से मद्रास आया है। खासा मजबूत है। उसी 'द प्रिंसेस' पर सवार होकर जॉब चार्नक दल-बल सहित बंगाल की ओर रवाना हुआ। यात्रियों के मन में नयी आशाएँ जगने लगीं।

चार्नक ने मद्रास को बिलकुल पसंद नहीं किया। कितना समय हुआ, मद्रास कौंसिल के निम्नस्तर की सदस्यता को उसने अस्वीकार कर दिया था। आखिर उसी मद्रास में आकर जमकर बैठना पड़ा। गवर्नर येल से तो चखचख होती ही रहती थी। अब मद्रास छोड़कर जाने का मौक़ा आया तो जैसे उसकी जान में जान आयी। उसे लगा, जैसे सुबह का भूला शाम को अपने घर लौट रहा हो।

जहाज में माल-वाल भी बहुत ले लिया गया। बंगाल में नये सिरे से व्यवसाय करना होगा। जहाज बड़ी-बड़ी तोपों से सुरक्षित है। समुद्र में हमले का डर रहता है। फ्रांसीसियों से भी झगड़ा है।

बालेश्वर में चार्नक ने जहाज बदला। 'द प्रिंसेस' जैसे बड़े जहाज से हुगली नदी में प्रवेश करना खतरे से खाली नहीं। सो, चार्नक परिवार के साथ केच मदपोल्लम पर सवार हुआ।

इस इलाक़े का सब-कुछ जाना-पहचाना-सा लगता है। यह रहा हुगली नदी का मुहाना, जहाँ नदी के मटमैले पानी से सागर का नीला पानी मेल-मिलाप कर रहा है। सागर, द्वीप, डाकू, नदी, सुंदरवन, हिजली—सभी मानो खूब देखा-भाला है।

अगस्त बीत रहा है। बारिश अभी भी गिर रही है। आसमान में घने बादल। बीच-बीच में मूसलाधार वृष्टि। हुगली नदी के उथले पानी में भँवरें पड़ रही हैं। ऐसे दुर्योग में भी चार्नक मानो नये दिन की धूप से

नहायी उज्ज्वलता को आँखों के सामने देख रहा है।

यह है थाना-क़िला। अभी-अभी उस दिन चार्नक ने थाने को दखल किया था। मुग़ल फिर उसमें जमकर बैठ गये हैं।

थाना-क़िले में मुग़लों की तोपें खाली आवाज़ कर उठीं। चार्नक की तोपों ने जवाब दिया। यह आवाज़ मानो दो मित्रों द्वारा एक-दूसरे की पीठ थपथपाना हो! इसके पीछे मिताई का बंधन है।

जॉब चार्नक ने स्टैनली और मैक्रिथ—इन दो साहबों को हुगली की कोठी पर दखल लेने के लिए भेज दिया।

मदपोल्लम मंथर गति से सूतानूटी की ओर बढ़ने लगा।

रविवार, 24 अगस्त, 1690। स्मरणीय दिन। दोपहर को उसका जहाज़ सूतानूटी घाट पर आ लगा।

चार्नक तीसरी बार सूतानूटी आया है। पिछली दो बार की यात्रा विफल हुई थी। अबकी ज़रूर सफल होगी।

मगर कैसा दुर्दिन! बारिश और मूसलाधार बारिश। नदी का पानी फूल-फूलकर गरज रहा है। आसमान में बादलों का भयानक आतंक। चार्नक बहुत-बहुत दुर्योग में आया है और जैसे फिर पीछे हटने को है। लेकिन आज हरगिज़ वह पीछे नहीं हटेगा। इस दुर्योग में ही नये शहर की बुनियाद डाली जायेगी, उस शहर की जो मद्रास को भी मात करेगा।

घनघोर वर्षा में नाव, केच, छोटी-छोटी डोंगियाँ मदपोल्लम से आकर टकराने लगीं। जहाज़ पर की छोटी नाव को उतारा गया। जॉब चार्नक, एलिस, पिची जैसे प्रमुख अँगरेज़ घाट की ओर बढ़े। किनारे नेटिव व्यापारी प्रसन्न थे कि अँगरेज़ लोग फिर लौट आये। एक बड़े पेड़ के नीचे ढाक और ढोल बज रहे थे, शहनाई की आवाज़। हाथी की सूंड जैसे सिंगे का शब्द। नेटिवों को भी आज के भयंकर दुर्योग की कोई परवाह नहीं। अँगरेज़ व्यापारियों को जॉब चार्नक लौटाए लिये आ रहा है।

घाट पर भीड़। सेठ बाबू हैं, बसाक बाबू हैं। थाना-क़िले के किलेदार ने अँगरेज़ों की अगवानी के लिए अपना प्रतिनिधि भेजा है।

जॉब चार्नक खुशी-खुशी कीचड़ [illegible] थपथ घाट पर [illegible] लोगों ने उसे घेर लिया। लोगों का [illegible] चा

लगा। वह किसी की पीठ थपथपाने लगा; किसी से हाथ मिलाने लगा। एक प्राणमय आत्मीयता। भीड़ में से कोई एक चार्नक की तरफ़ आने लगा! सुंदर कहार है न?

'सुंदर?'

'साहब!' सुंदर जॉब चार्नक से लिपट गया।

चार्नक ने आग्रह से पूछा, 'मोतिया? मोतिया की क्या खबर है?'

सुंदर चुप रहा। उसकी आँखें डबडबा आयी।

चार्नक का कलेजा धक् कर उठा। 'सुंदर, कैसी है मोतिया?'

सुंदर ने सिर झुकाकर कहा, 'दीदी नहीं रही!'

'मतलब?'

'दीदी अचानक चल बसी। क़ै-दस्त से।' सुंदर कहता गया, 'साहब, आपको बहुत ढूंढ़ा, आपको खबर देने की बहुत चेष्टा की, मगर आपका पता ही नहीं चला। मैंने भी सोच लिया था, अब आपसे कभी भेंट नहीं होगी। लेकिन ईश्वर की कृपा, आप फिर लौट आये। साहब, दीदी की अंतिम इच्छा थी कि बाकी जीवन मैं आपकी सेवा में रहूँ।'

मोतिया नहीं रही! जॉब चार्नक के कलेजे को दलती हुई उथल-पुथल-सी मच गयी। परंतु अभी दुख से मायूस हो जाने का समय नहीं था। चलें, छावनी की ओर चलें।

मगर कहाँ है छावनी?

जिन कच्चे मकानों में अँगरेज़ रहते थे, उनमें से ज्यादातर गिर चुके थे। कोई भी रहने लायक नहीं रहा था। शायद नवंबर में ही, जब ये लोग कालिकता छोड़कर चले गये, मल्लिक, बसाक और यहाँ के लोगों ने सब-कुछ लूट लिया था। जो कुछ उठाकर नहीं ले जाया जा सका, उसे जला दिया गया।

जॉब चार्नक की कुटिया किसी क़दर खड़ी थी। मरम्मत करा लेने से काम चल जायेगा। सुंदर कहार ने गर्व करके कहा, 'साहब, आप नहीं थे। मैं आपके घर की देखभाल करता था। मरम्मत कराने के पैसे नहीं थे। फिर भी जोड़-तोड़कर किसी तरह से इसे खड़ा रखा है।'

मिस्टर जेरेमिया पिच की कुटिया की हालत भी दयनीय हो रही थी।

एलिस का घर तो गिर ही गया है।

नये सिरे से सबको बनवाना पड़ेगा।

नया शहर बसाना होगा।

पुराने घर-झोपड़े गिरें, उनकी जगह पर बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी होंगी।

लाचार उस दिन वहाँ पहुँचे अँगरेजों को नाव पर ही रहना पड़ा।

नवाब ने अभी तक पक्का मकान बनवाने की इजाज़त नही दी थी। फिलहाल कच्चे मकान ही बनवाये जायें।

गोदाम, रसोई, भोजन-घर, कपड़ों की चुनाई का घर, कर्मचारियों का वास-स्थान, सब नये सिरे से बनवाना पड़ा। एजेंट और पिची के मकानों की मरम्मत कराकर किसी तरह काम चलने लगा। सेक्रेटरी के कमरे की भी जैसे-तैसे मरम्मत करायी गयी, किंतु एलिस वाले घर को तो नये सिरे से बनवाना ही पड़ेगा।

जब तक कोठी बनाने लायक ठीक जगह न मिल जाये, फूस और मिट्टी के घरों से ही काम चलाना है।

ऐसी ही स्थिति मे फ्रांसीसियों के विरुद्ध चार्नक को युद्ध की भी घोषणा करनी पड़ी। लेकिन बहरहाल, युद्ध का नही, शहर को खड़े करने की ओर ही अधिक ध्यान है।

एक नया उपनिवेश बसाना आखिर बच्चों का खेल तो नही। कितनी समस्याएँ। कौंसिल की बैठक बुलाकर, चार्नक उन सबके समाधान मे जुट गया।

चार्नक की बीवी अब बेटी के ब्याह के लिए पीछे पड़ गयी।

चार्नक न नही कर सका।

नये उपनिवेश में यह विवाह-समारोह!

चार्ल्स आयर ढाका से लौट आया है। ब्याह के प्रस्ताव से वह धन्य हो गया। मेरी को वह वास्तव में प्यार करता है। उसे पत्नी-रूप में पाकर उसका जीवन सार्थक ही होगा।

फिर क्या था!

उन दोनों का ब्याह हो गया। सूतानूटी-कालिकता में कई दिनों तक

धूमधाम होती रही। विवाह में उत्सव की व्यवस्था कौंसिल के सेक्रेटरी कैप्टन हिल ने की। हिल की स्त्री अँगरेज़ महिला है। उसने मेरी को अपने हाथों विलायती दुलहिन के रूप में सजाया। ईसाई प्रथा से विवाह हुआ। एक फूस के घर में गिरजा था, वहीं। एजेंट की लड़की का ब्याह, गिने-माने सब लोगों ने उत्साह से साथ दिया। राजा का झंडा फहराया गया। गोरे सिपाहियों ने बैंड बजाया। बंदूक-तोपों की आवाज़ें हुईं। उससे भी बड़ी बात, पंच और शीराज़ी पीकर सब लोट-पोट होते रहे। सिर्फ़ मिस्टर ब्रेडाइल इस समारोह में जी खोलकर साथ नहीं दे सके।

ब्रेडाइल को ईर्ष्या होना स्वाभाविक था।

चार्नक जब खानाबदोश की तरह जहाँ-तहाँ की खाक छान रहा था, तो ब्रेडाइल आयर के साथ दूत-कार्य के लिए ढाका में था। एकाएक आयर की क़िस्मत चमक गयी। एजेंट का दामाद! ब्रेडाइल को ईर्ष्या होनी ही थी।

नशे की झोंक में वह एजेंट से ही झगड़ बैठा।

झगड़े का सूत्रपात हुआ चार्ल्स किंग को लेकर।

हुगली में चार्नक ने जब लड़ाई का एलान किया, ब्रेडाइल उस समय पटना का चीफ़ था। नवाब ने उसे गिरफ़्तार कर लिया। किंग एक भागा हुआ सार्जेंट था। किंग ने ब्रेडाइल का पहरावा पहनकर उसके बदले में अपने को गिरफ़्तार कराया; ब्रेडाइल भाग निकला।

किंग अभी भी पटना में मुग़लों के कैदखाने में सड़ रहा है। नवाब ने उसके छुटकारे के लिए डेढ़ हज़ार रुपये की माँग की है।

किंग ने जॉब चार्नक को लिखा है, 'रुपये नहीं मिले तो मैं मूर हो जाऊँगा।' जॉब ने महीने में बीस-पचीस रुपया देना ठीक किया है, पर कंपनी की तरफ़ से भागे हुए सार्जेंट को छुड़ाने की मनाही है।

चार्नक को सहसा मेरी एन की याद आ गयी।

किंग भगोड़ा भले ही हो, है तो आखिर अँगरेज़ ही। जैसे भी हो ब्रेडाइल को उसे क़ैद से छुड़ा लाना होगा।

ब्रेडाइल ने साफ़ इनकार कर दिया, 'मैं इस मामले में सिर नहीं खपाता।'

'डेढ़ हज़ार रुपये देने से ही तो काम बन जायेगा,' चार्नक ने कहा।

ब्रेडाइल ने जवाब दिया, 'रुपये मैं कहाँ से लाऊँ? मुझे तो किसी एजेंट ने दामाद नहीं बनाया है।'

'कहना क्या चाहते हो, ज़रा साफ़-साफ़ कहो, मिस्टर ब्रेडाइल ?' चार्नक ने पूछा।

'आज नहीं,' ब्रेडाइल ने कहा, 'जिस दिन आप राइट वरशिपफुल जॉब चार्नक नहीं, सिर्फ़ मिस्टर चार्नक होगे, उस दिन कहूँगा। पर आप यह याद रखें, वह दिन आने में ज़्यादा देर नहीं है। पुरानी कंपनी अब उठ रही है और नयी कंपनी, समझिए, आ ही चली। उस समय आपकी कितनी क़द्र रहती है, वह मुझे देखना है।'

जॉब चार्नक गुम होकर बैठ रहा। ब्रेडाइल का कहना ग़लत नहीं। पुरानी कंपनी के उठ जाने की बात चार्नक ने भी सुनी है। चार्नक का जो भी ज़ोर-ज़ार है, पुरानी कंपनी के डाइरेक्टरों पर ही है। कहीं नयी कंपनी के डाइरेक्टर चार्नक को पदच्युत कर दें, तो!

ब्रेडाइल दावत में ठहाका लगाने लगा, 'मद्रास की अदालत में उस समय आपका बूता देख लूँगा।'

कैप्टन हिल ने आकर नशे में चूर ब्रेडाइल को कमरे से बाहर कर दिया। परन्तु चार्नक के आनंद का नशा तब तक उतर चुका था।

नगर बसाने का काम मन-माफ़िक आगे नहीं बढ़ रहा है। सिर्फ़ कुछ कच्चे मकान खड़े हुए हैं। फोर्ट तैयार होने की बात तो दूर, मुग़ल पक्का मकान भी बनाने की इजाज़त नहीं दे रहे हैं। एक बना-बनाया पक्का मकान खरीदा गया। लेकिन उसे ठीक ढंग से सजाया-सँवारा नहीं जा सका है।

अनुचरों में भी उत्साह की कमी है। किसी तरह दिन कट जाने से मानो मतलब रह गया है। शहर बसाने की माथा-पच्ची कोई मोल नहीं लेना चाहता।

बैठकखाना के पीपल-तले से सड़क का काम कुछ आगे बढ़ा। लेकिन नेटिव कुली लोग बाघों के उपद्रव से बहुत डर गये हैं। चार्नक ने बाघ मारने के लिए संतरी तैनात किया है। दो बाघ अब तक मारे भी गये हैं।

बाघों से भी भयंकर हैं साँप। होगला का जंगल काटने-उजाड़ने में

सांपों के काटने से ही कितनों ने जान गँवायी है। प्रायः दो-चार सांप रोज मारे जा रहे हैं। इसके अलावा डकैतों का खतरा अलग से बना रहता है।

सूतानूटी को केंद्र करके नेटिवों की बस्ती पहले से ही थी, अब ब्लैक टाउन उधर ही बन रहा है। अंगरेजों का मूल केंद्र बन रहा है कालिकत्ता ग्राम। दक्षिण में गोविंदपुर का घना जंगल है। दो-चार घरों की आबादी। बाघों और लठैतों का खतरा। कालिकता ग्राम में ही जंगल काटना शुरू किया गया। काफ़ी क्षेत्र साफ-सुथरा किया गया। नये व्यापारियों का जाना-आना शुरू हो गया। पुर्तगाली और जर्मन व्यवसायियों ने भी डेरा डाला। पंच-हाउस के कर वसूली से भी खासी आय हो जाती है। कैप्टन हिल ने खुद ही एक पंच-हाउस खोला है। वहाँ बिलियर्ड खेल का भी प्रबन्ध है। हिल आदमी बड़ा खुशामदी है; कौंसिल से किसी तरह पंच-हाउस का कर माफ करा लिया है।

हिल की अंगरेज स्त्री पेपिस्ट हो गयी है। उसकी देखा-देखी अंगरेजों की भारतीय स्त्रियाँ भी पेपिस्टों का अनुसरण करने लगी हैं। रोमन पादरियों के पाँव धीरे-धीरे शहर में जमने लगे है। जॉब चार्नक के पास शिकायत पहुँची। उसने इस पर ध्यान नहीं दिया। धर्म के लिए उसका कभी भी संकुचित दृष्टिकोण नहीं रहा।

आरमीनियनों का गिरजाघर भी बनने लगा है, पुर्तगालियों ने भी गिरजा बनाया। यदि कोई स्त्री पेपिस्ट बनती है, तो वह तो उसकी अपनी खुशी है। इन मामलों मे चार्नक क्यों अपना दिमाग खपाये?

फिर भी, चार्नक को बहुत संभलकर रहना पड रहा है। मुग़लों की मर्जी का हमेशा ध्यान रखना पड़ता है। फ़ौज तो बस सौ-एक सैनिकों की है। ऐसे में यदि धर्म-मजहब को लेकर कोई झमेला खड़ा हो जाये और नवाब के कानों तक खबर पहुंचे, फिर तो हो गया।

पुर्तगालियों का एक फ्रिजेट बिकाऊ था : बड़ी-बड़ी तोपों वाला युद्ध-पोत। चार्नक ने उसे खरीद लिया।

मुगल जब जमीन पर किला नहीं बनाने दे रहे हैं, तो फ्रिजेट ही पानी पर तैरते हुए किले का काम करेगा। यदि मुसीबत आन पड़े तो इसी फ्रिजेट से तोपों से बचाव करते हुए समंदर में जाया जा सकेगा। क़ीमत जरूर

काफ़ी ज्यादा भरनी पड़ी। गवर्नर येल दाम सुनेगा तो चीखेगा। छोडो भी। जैसे भी हो, सूतानूटी-कालिकता के अड्डे को मजबूत बनाना ही है।

17 फरवरी, 1691 को बादशाह का फ़रमान आया। मात्र तीन हज़ार रुपये वार्षिक शुल्क पर बादशाह ने अँगरेजों को व्यापार करने का अधिकार दे दिया है!

तो, इतने दिनों की कोशिश अब कामयाब हुई।

सूतानूटी में अँगरेजों की हर-एक बंदूक ने गरजकर इस सफलता की घोषणा की। नदी में फ्रिजेट की तोपों ने दूर-दूर तक इस खबर को फैला दिया।

सूतानूटी के अँगरेज मारे खुशी के नाच उठे। उस नाच में जॉब चार्नक ने भी सबका साथ दिया। पुर्तगाली, आरमीनियन, जेंटू—सभी तो उस खुशी की लहर में बह गये। बैठकखाना के पीपल-तले सभी जाति के लोगों की खुशी की हाट जमा हो गयी।

सेठ-बसाक-बाबू लोग भेंटें ले-लेकर आये। चार्नक को प्रणाम करके कहने लगे, 'आप सूतानूटी के राजा हैं, कालिकता के राजा हैं।'

राजा! चार्नक आईने के सामने खड़ा होकर अपना मुँह देखने लगा। राजा चार्नक! नेटिव लोग कैसी खुशामद करने लगे हैं! फिर भी सुनने में अच्छा ही लगा। राजा! राजा चार्नक यही! बालों में सफ़ेदी, चेहरे पर बुढ़ापे की रेखाएँ; आँखों के पास का चमड़ा सिकुड़ गया है; बदन का रंग जले ताँबे-सा, सारा शरीर शिथिल हो आया है! आईने में अपनी परछाईं देखकर चार्नक को हँसी आ गयी।

बीबी जाने कब आकर पीछे खड़ी हो गयी थी, चार्नक को पता नहीं। मजाक से बोली, 'क्यों जी, आप अपना ही रूप देखकर खुश हो रहे हो?'

चार्नक ने कहा, 'नहीं-नहीं, राजा चार्नक को देख रहा हूँ। राजा चार्नक! देख रहा हूँ और हँस रहा हूँ।'

'क्यों, मेरे राजा पर हँसने की क्या बात है। वह सचमुच राजा क्यों नहीं है? सच तो है, नहीं क्या?'

चार्नक ने कहा, 'जब ऐसी रानी है ! मगर राजधानी कहाँ है ?'

'यह, सूतानूटी ?'

'हुहः, राजधानी !' चार्नक ने लंबा निःश्वास छोड़ा, 'गोल पत्तों और बाँस के कुछ घर और तबू। कहीं एक इमारत होती, एक किला होता !'

'वह सब नहीं हो रहा तो क्या,' बीवी ने कहा, 'प्रजा के मन में ही तुम्हारी राजधानी हो। पता है तुम्हें, मैंने आज सूतानूटी के घाट पर अपने राजा के बारे में कितने बडी वीरता की कहानियाँ सुनी हैं ?'

'फिर क्या गपोड़े सुन आयी हो ?'

बीवी ने कहा, 'पालकी में बैठकर गंगा नहाने गयी थी। प्यादे-सिपाही साथ थे। औरतें तो डर से मरने लगी। मैंने उनकी शका दूर की। इस पर उन सबने मुझे घेर लिया। मै नहाने को उतरी। गले-भर पानी में खड़े-खड़े क्या-क्या बातें होती रही ! अजी, तुम्हारे उस नारियल तेल वाले इलाके मे क्या कहीं बात कर पायी थी। यहाँ गप-शप करके जी गयी।'

'हाँ, तो राजा के बारे में क्या कुछ सुना, सो तो कहो ?'

'अरे हाँ, असली बात तो भूल ही गयी। उन औरतों ने कहा—तुम वकील के साथ दक्षिण मुलक मे जाकर खुद बादशाह से मिल आये हो। सलाम करके सीधे बादशाह के सामने हाजिर हो गये। इतने मे वजीर ने बादशाह से कहा—जहाँपनाह, आपकी फौज का रसद खत्म हो गया है। इस पर तुम बोल उठे—कोई परवाह नहीं, मै जहाज से रसद भिजवा देता हूँ। रसद पाकर बादशाह तो बेहद खुश हो गया। बोला—फिरंगी, तुम्हे क्या चाहिए, बोलो। तुमने कहा—सिर्फ जहाँपनाह का हुक्म चाहिए, मै आपके दुश्मनो को परास्त किये देता हूँ। बादशाह ने तथास्तु कहा। फिर क्या था—तुमने कचाकच करके दुश्मनों का सफाया कर दिया। लौटकर बादशाह को सलाम बजाया। खुश होकर बादशाह ने तुम्हें कालिकता का राजा बना दिया। क्या कहानी ठीक नहीं है ?'

'सच, तुम्हारे देश के लोग कथा-कहानी खूब गढ लेते है '

'पर, अब तुम भी तो इसी देश के हो गये हो !' बीवी ने कहा, 'सोच देखो, अब तुम लौटकर अपने देश जा सकोगे ? हम तुम्हें वृन्दावन से द्वारका जाने दें, तब तो !'

काफी ज्यादा भरनी पड़ी। गवर्नर येल दाम सुनेगा तो चीखेगा। छोड़ो भी। जैसे भी हो, सूतानुटी-कालिकता के श्रड्डे को मजबूत बनाना ही है।

17 फरवरी, 1691 को बादशाह का फ़रमान ग्राया। मात्र तीन हज़ार रुपये वार्षिक शुल्क पर बादशाह ने अँगरेज़ों को व्यापार करने का अधिकार दे दिया है!

तो, इतने दिनों की कोशिश अब कामयाब हुई।

सूतानूटी में अँगरेज़ों की हर-एक बंदूक ने गरजकर इस सफलता की घोषणा की। नदी में फ्रिजेट की तोपों ने दूर-दूर तक इस ख़बर को फैला दिया।

सूतानूटी के अँगरेज मारे खुशी के नाच उठे। उस नाच में जॉब चार्नक ने भी सबका साथ दिया। पुर्तगाली, आरमीनियन, जेंटू—सभी तो उस खुशी की लहर में बह गये। बैठकखाना के पीपल-तले सभी जाति के लोगों की खुशी की हाट जमा हो गयी।

सेठ-बसाक-बाबू लोग भेंटें ले-लेकर आये। चार्नक को प्रणाम करके कहने लगे, 'आप सूतानूटी के राजा हैं, कालिकता के राजा हैं।'

राजा! चार्नक आईने के सामने खड़ा होकर अपना मुँह देखने लगा। राजा चार्नक! नेटिव लोग कैसी खुशामद करने लगे हैं! फिर भी सुनने में अच्छा ही लगा। राजा! राजा चार्नक यही! बालों में सफेदी, चेहरे पर बुढ़ापे की रेखाएँ; आँखों के पास का चमड़ा सिकुड़ गया है; बदन का रंग जले ताँबे-सा, सारा शरीर शिथिल हो आया है! आईने में अपनी परछाई देखकर चार्नक को हँसी आ गयी।

बीबी जाने कब आकर पीछे खड़ी हो गयी थी, चार्नक को पता नहीं। मज़ाक से बोली, 'क्यों जी, आप अपना ही रूप देखकर खुश हो रहे हो?'

चार्नक ने कहा, 'नहीं-नहीं, राजा चार्नक को देख रहा हूँ। राजा चार्नक! देख रहा हूँ और हँस रहा हूँ।'

'क्यों, मेरे राजा पर हँसने की क्या बात है। वह सचमुच राजा क्यों नहीं है? सच तो है, नहीं क्या?'

चार्नक ने कहा, 'जब ऐसी रानी है ! मगर राजधानी कहाँ है ?'

'यह, सूतानूटी ?'

'हुंह:, राजधानी !' चार्नक ने लंबा निःश्वास छोड़ा, 'गोल पत्तों और बाँस के कुछ घर और तंबू। कहीं एक इमारत होती, एक क़िला होता !'

'वह सब नहीं हो रहा तो क्या,' बीवी ने कहा, 'प्रजा के मन में ही तुम्हारी राजधानी हो। पता है तुम्हें, मैंने आज सूतानूटी के घाट पर अपने राजा के बारे में कितने बड़ी वीरता की कहानियाँ सुनी हैं ?'

'फिर क्या गपोड़े सुन आयी हो ?'

बीवी ने कहा, 'पालकी में बैठकर गंगा नहाने गयी थी। प्यादे-सिपाही साथ थे। औरतें तो डर से मरने लगी। मैंने उनकी शंका दूर की। इस पर उन सबने मुझे घेर लिया। मैं नहाने को उतरी। गले-भर पानी में खड़े-खड़े क्या-क्या बातें होती रहीं ! अजी, तुम्हारे उस नारियल तेल वाले इलाके में क्या कहीं बात कर पायी थी। यहाँ गप-शप करके जी गयी।'

'हाँ, तो राजा के बारे में क्या कुछ सुना, सो तो कहो ?'

'अरे हाँ, असली बात तो भूल ही गयी। उन औरतों ने कहा—तुम वकील के साथ दक्षिण मुलक में जाकर खुद बादशाह से मिल आये हो। सलाम करके सीधे बादशाह के सामने हाज़िर हो गये। इतने में वज़ीर ने बादशाह से कहा—जहाँपनाह, आपकी फ़ौज का रसद ख़त्म हो गया है। इस पर तुम बोल उठे—कोई परवाह नहीं, मैं जहाज़ से रसद भिजवा देता हूँ। रसद पाकर बादशाह तो बेहद खुश हो गया। बोला—फिरंगी, तुम्हें क्या चाहिए, बोलो। तुमने कहा—सिर्फ़ जहाँपनाह का हुक्म चाहिए, मैं आपके दुश्मनों को परास्त किये देता हूँ। बादशाह ने तथास्तु कहा। फिर क्या था—तुमने कचाकच करके दुश्मनों का सफ़ाया कर दिया। लौटकर बादशाह को सलाम बजाया। खुश होकर बादशाह ने तुम्हें कालिकता का राजा बना दिया। क्या कहानी ठीक नहीं है ?'

'सच, तुम्हारे देश के लोग कथा-कहानी खूब गढ़ लेते हैं '

'पर, अब तुम भी तो इसी देश के हो गये हो !' बीवी ने कहा, 'सोच देखो, अब तुम लौटकर अपने देश जा सकोगे ? हम तुम्हें वृन्दावन से द्वारका जाने दें, तब तो !'

काफी ज्यादा भरनी पडी। गवर्नर येल दाम सुनेगा तो चीखेगा। छोड़ो भी। जैसे भी हो, सूतानूटी-कालिकता के अड्डे को मजबूत बनाना ही है।

17 फरवरी, 1691 को बादशाह का फरमान आया। मात्र तीन हजार रुपये वार्षिक शुल्क पर बादशाह ने अँगरेजों को व्यापार करने का अधिकार दे दिया है!

तो, इतने दिनों की कोशिश अब कामयाब हुई।

सूतानूटी मे अँगरेजों की हर-एक बंदूक ने गरजकर इस सफलता की घोषणा की। नदी में फ्रिजेट की तोपों ने दूर-दूर तक इस खबर को फैला दिया।

सूतानूटी के अँगरेज मारे खुशी के नाच उठे। उस नाच मे जॉब चार्नक ने भी सबका साथ दिया। पुर्तगाली, आरमीनियन, जेंटू—सभी तो उस खुशी की लहर मे बह गये। बैठकखाना के पीपल-तले सभी जाति के लोगों की खुशी की हाट जमा हो गयी।

सेठ-बसाक-बाबू लोग भेंटें ले-लेकर आये। चार्नक को प्रणाम करके कहने लगे, 'आप सूतानूटी के राजा हैं, कालिकता के राजा हैं।'

राजा! चार्नक आईने के सामने खड़ा होकर अपना मुंह देखने लगा। राजा चार्नक! नेटिव लोग कैसी खुशामद करने लगे है! फिर भी सुनने में अच्छा ही लगा। राजा! राजा चार्नक यही! बालों मे सफेदी, चेहरे पर बुढापे की रेखाएं; आँखों के पास का चमड़ा सिकुड गया है; बदन का रग जले ताँबे-सा, सारा शरीर शिथिल हो आया है! आईने मे अपनी परछाईं देखकर चार्नक को हँसी आ गयी।

बीवी जाने कब आकर पीछे खडी हो गयी थी, चार्नक को पता नहीं। मजाक से बोली, 'क्यो जी, आप अपना ही रूप देखकर खुश हो रहे हो?'

चार्नक ने कहा, 'नहीं-नहीं, राजा चार्नक को देख रहा हूँ। राजा चार्नक! देख रहा हूँ और हँस रहा हूँ।'

'क्यो, मेरे राजा पर हँसने की क्या बात है। वह सचमुच राजा क्यों नही है? सच तो है, नही क्या?'

चार्नक ने कहा, 'जब ऐसी रानी है ! मगर राजधानी कहाँ है ?'

'यह, सूतानूटी ?'

'हुंहः, राजधानी !' चार्नक ने लंबा नि:श्वास छोड़ा, 'गोल पत्तों और बाँस के कुछ घर और तंबू। कहीं एक इमारत होती, एक क़िला होता !'

'वह सब नहीं हो रहा तो क्या,' बीवी ने कहा, 'प्रजा के मन में ही तुम्हारी राजधानी हो। पता है तुम्हें, मैंने आज सूतानूटी के घाट पर अपने राजा के बारे में कितने बडी वीरता की कहानियाँ सुनी हैं ?'

'फिर क्या गपौड़े सुन आयी हो ?'

बीवी ने कहा, 'पालकी में बैठकर गंगा नहाने गयी थी। प्यादे-सिपाही साथ थे। औरतें तो डर से मरने लगी। मैंने उनकी शंका दूर की। इस पर उन सबने मुझे घेर लिया। मैं नहाने को उतरी। गले-भर पानी में खड़े-खडे क्या-क्या बातें होती रही ! अजी, तुम्हारे उस नारियल तेल वाले इलाके में क्या कही बात कर पायी थी। यहाँ गप-शप करके जी गयी।'

'हाँ, तो राजा के बारे में क्या कुछ सुना, सो तो कहो ?'

'अरे हाँ, असली बात तो भूल ही गयी। उन औरतों ने कहा—तुम वकील के साथ दक्षिण मुलक में जाकर खुद बादशाह से मिल आये हो। सलाम करके सीधे बादशाह के सामने हाजिर हो गये। इतने में वजीर ने बादशाह से कहा—जहाँपनाह, आपकी फ़ौज का रसद ख़त्म हो गया है। इस पर तुम बोल उठे—कोई परवाह नहीं, मैं जहाज़ से रसद भिजवा देता हूँ। रसद पाकर बादशाह तो बेहद ख़ुश हो गया। बोला—फिरंगी, तुम्हें क्या चाहिए, बोलो। तुमने कहा—सिर्फ़ जहाँपनाह का हुक्म चाहिए, मैं आपके दुश्मनों को परास्त किये देता हूँ। बादशाह ने तथास्तु कहा। फिर क्या था—तुमने कचाकच करके दुश्मनों का सफाया कर दिया। लौटकर बादशाह को सलाम बजाया। ख़ुश होकर बादशाह ने तुम्हें कालिकता का राजा बना दिया। क्या कहानी ठीक नहीं है ?'

'सच, तुम्हारे देश के लोग कथा-कहानी ख़ूब गढ लेते हैं'

'पर, अब तुम भी तो इसी देश के हो गये हो !' बीवी ने कहा, 'सोच देखो, अब तुम लौटकर अपने देश जा सकोगे ? हम तुम्हें वृन्दावन से द्वारका जाने दें, तब तो !'

रहोगी तो मुझे शांति कैसे मिलेगी ? मैं आज ही वैद्य चंद्रशेखर को खबर भेजता हूँ।'

वैद्य चंद्रशेखर हड़बड़ाकर आ पहुँचा। ध्यान से बीवी की नाड़ी देखी। प्लीहा बढ़ गया है। दिल कमज़ोर है। पाचन-अनुपान बताया और बिलकुल आराम करने को कहा।

मल्लाह छप-छप डाँड़ खे रहे हैं। बजरे के सजे-सजाए कमरे में चार्नक की बीवी लेटी है; बगल ही में तकिये के सहारे आराम से चार्नक। बाँदी हुक्का दे गयी है। चार्नक तबाकू पीने लगा।

चार्नक के झुर्री पड़े चेहरे पर आज चिंता की छाप है।

चिंता का कारण है।

शहर बसाने का काम मन-मुताबिक नहीं हो रहा है। अभी तक पक्के मकान नहीं बन पाये। मिट्टी-फूस के घर में कंपनी के कागज़-पत्तर रखना खतरे से खाली नहीं। कब आग लगने से सब स्वाहा हो जायेगा, इसका ठिकाना नहीं। ज़्यादातर लोग मिट्टी के घर, तंबू या नावों पर रह रहे हैं। मद्रास के फोर्ट सेंट जॉर्ज जैसा एक किला यहाँ कब बनेगा, कोई पता नहीं।

नये उपनिवेश में शांति बनाये रखना भी एक समस्या है। कैप्टन हिल के अधीन महज़ डेढ़-एक सौ वेतन-भोगी सैनिक हैं; उनमें से कुछ पुर्तगाली भी। उन्हें बैरक में रखने का कोई भी प्रबंध नहीं है। जिससे जहाँ बन पड़ता है, वहीं डेरा कर रहा है।

अंगरेज़ों में भी आपस में नहीं बनती। झगड़ा-झंझट चलता ही रहता है। छोटे-बड़े, किसी को भी इस कलह से छुटकारा नहीं। यहाँ तक कि अंगरेज़ महिलाओं में भी कलह-क्लेश बढ़ने लगा है। कौन महिला चर्च में आगे बैठेगी, इसके लिए भी कलह ! मिस्टर चार्ल्स पेल कंपनी का कारिन्दा है। लोगों को आपस में लड़ाना उसके लिए एक नशा है। एक सार्जेंट भी लोगों में डुएल कराकर मज़ा लेता है। कैप्टन डोरिल ने शिकायत की, शायद चार्नक ही इस अंतर्द्वंद्व को तरह दे रहा है। बिलकुल झूठ ! चार्नक ने उस सार्जेंट को कसकर डाँट दिया है।

मद्रास के जहाज़ से खबर आयी है। मिस्टर ट्रेंचफील्ड ने चार्नक पर

'सच एंजेला, मैं अब लौटकर अपने देश नहीं जाना चाहता। जीवन का ज्यादातर समय मैंने तुम्हारे ही देश में बिता दिया है, अपने देश की छवि अब धुँधली पड़ गयी है। बाकी बचे ये कुछ दिन अब कालिकता में बिता पाने से ही मुझे खुशी होगी। देख लेना तुम, मेरी कब्र इसी देश की मिट्टी में होगी।'

'छि', ऐसी अशुभ बात नहीं कहते हैं। मैं तुम्हारी क़ब्र क्यों देखने लगी? एक बार विधवा मैं हो चुकी हूँ, अब विधवा नहीं बन सकती। मैं कह रखती हूँ, मैं तुमसे पहले मर जाऊँगी।'

'लेकिन तुम्हें छोड़कर मैं कैसे ज़िदा रहूँगा, एंजेला? मोतिया चली गयी, दु:ख हुआ। पर तुमसे सच कहता हूँ, उस दु:ख से मैं डिगा या डगमगाया नहीं। मोतिया तो बहुत दिनों से ही खिसक रही थी, जब से मैंने तुम्हें पाया था। पर जीवन के अंतिम कुछ दिनों में अगर मैं तुम्हें पास न पाऊँ, तो मेरी हृदयेश्वरी, मेरा भविष्य अँधेरा हो जायेगा।'

'तो फिर एक काम करो। ऐसा करें कि हम दोनों एक साथ ही मरें। क्यों?' बीबी ने मजाक में प्रस्ताव किया।

चार्नक चुप रह गया।

बीबी बोली, 'तुम सोचने लगोगे, इस डर से एक बात मैं तुमसे बहुत दिनों से छिपाती आयी हूँ, आज कहनी पड़ रही है। हुगली की उस बीमारी के बाद से मेरी सेहत बिलकुल ही अच्छी नहीं रही है। कैसी तो कमजोर हो गयी हूँ; पेट में दर्द रहता है; भोजन की रुचि जाती रही है, जरा-जरा-सी बात में सिर चकराता है। मुझे लग रहा है, मैं अब ज्यादा दिन नहीं जी सकूँगी।'

'ऐं!' चार्नक चिंतित होकर बोला, 'मुझे तुमने पहले क्यों नहीं बताया? मद्रास कंपनी के श्रेष्ठ चिकित्सक से तुम्हारा इलाज कराता।'

'तुम्हारा गोरा डॉक्टर यहाँ की स्त्रियों की बीमारी का पता नहीं कर सकता। वे भला इस देश की बीमारियों के बारे में क्या जानते हैं? रोग को पकड़ नहीं पाते तो कह देते हैं, खून निकलवाओ, जाँच कराओ।'

'तो फिर वैद्य को बुलाऊँ? छि:, तुम अपने स्वास्थ्य की इतनी लापरवाही न करो। तुम्हारा शरीर अकेले तुम्हारा नहीं, मेरा भी है। तुम बीमार

रहोगी तो मुझे शांति कैसे मिलेगी ? मैं आज ही वैद्य चंद्रशेखर को खबर भेजता हूँ।'

वैद्य चंद्रशेखर हड़बड़ाकर आ पहुँचा। ध्यान से बीवी की नाड़ी देखी। प्लीहा बढ़ गया है। दिल कमज़ोर है। पाचन-अनुपान बताया और बिलकुल आराम करने को कहा।

मल्लाह छप-छप डाँड खे रहे हैं। बजरे के सजे-सजाए कमरे में चार्नक की बीवी लेटी है; बगल ही में तकिये के सहारे आराम से चार्नक। बाँदी हुक्का दे गयी है। चार्नक तंबाकू पीने लगा।

चार्नक के झुर्री पड़े चेहरे पर आज चिंता की छाप है।

चिंता का कारण है।

शहर बसाने का काम मन-मुताबिक़ नहीं हो रहा है। अभी तक पक्के मकान नहीं बन पाये। मिट्टी-फूस के घर में कंपनी के कागज़-पत्तर रखना खतरे से खाली नहीं। कब आग लगने से सब स्वाहा हो जायेगा, इसका ठिकाना नहीं। ज्यादातर लोग मिट्टी के घर, तंबू या नावों पर रह रहे हैं। मद्रास के फोर्ट सेंट जॉर्ज जैसा एक किला यहाँ कब बनेगा, कोई पता नहीं।

नये उपनिवेश में शांति बनाये रखना भी एक समस्या है। कैप्टन हिल के अधीन महज़ डेढ़-एक सौ वेतन-भोगी सैनिक हैं; उनमें से कुछ पुर्तगाली भी। उन्हें बैरक में रखने का कोई भी प्रबंध नहीं है। जिससे जहाँ बन पड़ता है, वहीं डेरा कर रहा है।

अँगरेज़ों में भी आपस में नहीं बनती। झगड़ा-झंझट चलता ही रहता है। छोटे-बड़े, किसी को भी इस कलह से छुटकारा नहीं। यहाँ तक कि अँगरेज महिलाओं में भी कलह-क्लेश बढ़ने लगा है। कौन महिला चर्च में आगे बैठेगी, इसके लिए भी कलह! मिस्टर चार्ल्स पेल कंपनी का कारिन्दा है। लोगों को आपस में लड़ाना उसके लिए एक नशा है। एक सार्जेंट भी लोगों में डुएल कराकर मज़ा लेता है। कैप्टन डोरिल ने शिकायत की, शायद चार्नक ही इस अंतर्द्वंद्व को तरह दे रहा है। बिलकुल झूठ! चार्नक ने उस सार्जेंट को कसकर डाँट दिया है।

मद्रास के जहाज से खबर आयी है। मिस्टर ट्रेंचफील्ड ने चार्नक पर

मान-हानि का मुकदमा किया है। चार्नक ने ट्रेंचफील्ड के खिलाफ कंपनी को जो कुछ लिखा था, उसी के आधार पर। मातहत कर्मचारियों के काम की आलोचना करने का अधिकार तो ऊपर वाले अफ़सर का है। पर डर इस बात का है कि गवर्नर येल ट्रेंचफील्ड के साथ है। उसी ने यह कारसाजी की है। रोजर ब्रेडाइल ने कहा था, आप जब वरशिपफुल नहीं रहेंगे, तो मैं अदालत मे देख लूंगा, यह उसी की पूर्व-सूचना है क्या ?

'यूरोप' जहाज़ में ज़ोरों की अफवाह है कि कंपनी की दशा शोचनीय हो रही है। नयी कंपनी की बुनियाद डाली जायेगी। बुढापे में जॉब चार्नक का भविष्य डाँवाडोल हो रहा है।

फिर भी चार्नक को कोई अफ़सोस नहीं। हिंदुस्तान आकर वह मानो नियति में विश्वास करने लगा है। कभी भाग्य की बात पर बीवी से उसने कितना मजाक किया था ! पर पूरे जीवन का पुनरावलोकन करके चार्नक ने देखा, बहुत हद तक अदृष्ट ही रहस्यमयी क्रीड़ा करता रहता है !

बीवी ने धीमे से पूछा, 'इतना क्या सोच रहे हो, अग्नि ?'

'कितनी ही बातें।'

'इतना मत सोचो। वह देखो, नदी के पूरबी किनारे पर सूतानूटी-कालिकता दिखायी दे रहा है। तुम्हारा सपना साकार हो रहा है। अब तक शहर के नक़्शे को लेकर तुम्हारा कितना मज़ाक बनाती रही हूँ। अब वह शहर बस ही चला है।'

'सूतानूटी-कालिकता की मैंने बुनियाद ही डाली है, पर शायद इसे बसा जाना मुमकिन नहीं। बड़ी उम्मीद की थी मैंने, मद्रास के मुकाबले का शहर बसाऊँगा, पर वह सपना ही रह गया। देख नहीं रही हो एंजेला, कैसी-कैसी विषम बाधाएँ मेरे सामने है ?'

'मुझे विश्वास है, एक दिन सब बाधाएँ दूर हो जायेंगी। पहले भी तो कितनी बाधाओं से सामना नहीं करना पड़ा ? पटना, कासिम बाज़ार, हुगली, हिजली के दिन याद करो। वे दिन और आज का दिन ! आज तुम राजा जॉब चार्नक हो !'

'तुम भी व्यंग्य कर रही हो, एंजेला।' चार्नक ने हताश होकर कहा, 'राजा कहकर तुम मेरी खिल्ली न उड़ाओ। नयी कंपनी बन रही है, मेरा

भविष्य निश्चित नहीं है।'

'ईश्वर करें, मैं तुम्हारा कोई भी दुर्दिन देखने को ज़िदा न रहूँ। मैं समझ रही हूँ, मेरे दिन खत्म हो आये।'

'वह सब रहने दो, एंजेला !' चार्नक का स्वर करुण हो उठा।

बीवी ने कहा, 'सुनो अग्नि, मेरा अंतिम अनुरोध है, इस पुण्यतोया भागीरथी के तीर पर मेरे शव का संस्कार करना।'

'मैं तुम्हें एक दिन चिता से उठा लाया था, इस सुंदर रूप को मैं चिता के हवाले नहीं कर सकूंगा, एंजेला।'

'नहीं-नहीं, मेरा अंतिम अनुरोध तुम्हें रखना ही होगा। मेरा नश्वर शरीर जलकर जब भस्म हो जायेगा, तो मेरी आत्मा तुममें मिल जायेगी, अग्नि! मेरा अंतिम अनुरोध रहा, भागीरथी के तट पर मेरा शव-दाह-संस्कार करना। ब्राह्मणों को बुलवाकर मेरा श्राद्ध करना।'

जॉब चार्नक बीवी के काले बालों पर धीरे-धीरे हाथ फेरने लगा। शांत नदी के वक्ष में डांड की छप-छप अधिक मुखर हो उठी।

चार्नक की बीवी सचमुच ही एक दिन चल बसी। जो स्त्री एक दिन भयावह नाटकीय स्थिति में मृत्यु से मिलने जा रही थी, उसकी मृत्यु निहायत मामूली घरेलू आबोहवा में हुई। मामूली बीमारी के बाद उसने अंतिम साँस ली और आँखें सदा के लिए मूंद लीं।

उसकी मृत्यु से सारे उपनिवेश पर शोक की छाया पड़ गयी। कोठी के ऊपर का झंडा आधा झुका दिया गया। बच्चियाँ रोयीं, दास-दासी रोयीं। चार्नक बुत बना बैठा रहा! प्रांगण में भीड़ लग गयी। एलिस आया, पिञ्ची आया। कैप्टन डोरिल, कैप्टन हिल, चार्ल्स पेल—यहाँ तक कि रोजर ब्रेडाइल भी आया। चार्नक चिलम-पर-चिलम तंबाकू पीता रहा; किसी से बात नहीं की; उसकी सूनी दृष्टि सिर्फ़ नारियल की फाँक से नीले आसमान पर टिकी रही। लोग-बाग आते-जाते रहे; शोक प्रकट करते रहे, पर चार्नक का ध्यान किसी की ओर नहीं गया।

केनाराम सेठ, जनार्दन सेठ, बसाक बाबू वगैरह भी आये। सबके चेहरे विषाद से उदास। लेकिन चार्नक के चेहरे पर कोई भाव ही नहीं था।

कैप्टन डोरिल ने अंत्येष्टि की बात छेड़ी। वह बहुत ही वास्तविकता-वादी है; उसने इसी बीच कॉफिन का आदेश दे दिया था। बहुत सुंदर कार्च वाला कॉफिन आया। श्वेत पद्म की ढेरों मालाएँ आयीं।

जॉब चार्नक ने हुक्म दिया, 'बीवी का दाह-संस्कार होगा। ब्राह्मणों को खबर भेजो।'

अँगरेजों में फुसफुसाहट हुई। ईसाई की बीवी। जेंटू हुई तो क्या! शव-दाह क्यों? चैपलेन समझाने आया कि कब्र में दफन करने से ही उसकी सद्‌गति होगी। वह चार्नक की डाँट सुनकर पीछे हट गया।

सेठ-बसाकों की बुलाहट हुई। भागीरथी के तट पर शव-दाह का इंत-जाम करो। वे आपस में एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। यह कैसी बात! फिरंगी की स्त्री। ब्राह्मण की स्त्री होकर जिस औरत ने चिता का त्याग किया था, उसकी अंत्येष्टि-क्रिया कराने कौन ब्राह्मण आयेगा?

कैप्टन डोरिल ने जरा सख्त स्वर में कहा, 'वह सब कट्टरपन छोड़ो, चार्नक की बीवी के शव-दाह की व्यवस्था करो। ब्राह्मणों को बुला लाओ।'

चिंतित होकर सेठ-बाबू लोग चले गये।

कुछ देर बाद वे सब उदास होकर लौट आये। 'साहब, कोई भी ब्राह्मण मेम साहब की अंत्येष्टि कराने को तैयार नहीं हो रहा है। सबको नरक का डर है।'

कैप्टन डोरिल मन-ही-मन खुश हुआ।

सुनते ही जॉब चार्नक गरज उठा, 'ब्राह्मणों को पकड़वा मँगाओ। जो राजी न हों तो कोड़े लगाकर उन्हें राजी करो।'

हुक्म होते ही कैप्टन हिल दौड़ा गया, पर उसके पहले ही यह खबर मुहल्लों में फैल गयी थी। ब्लैक टाउन की खाक छान डाली, किसी ब्राह्मण की चुटिया तक नहीं दिखायी पड़ी। खबर पाते ही वे पहले ही दुबक गये थे।

सेठ-बसाक और बाबुओं का सिर झुक गया।

किसी ने शायद चार्नक को बताया: 'सूतानूटी-कालिकता के ब्राह्मण गायब हो गये हैं।'

चार्नक गुस्से के मारे फट-सा पड़ा। बताने वाले को थप्पड़-मुक्का मारकर भगा दिया।

सभी फिक्र में पड़ गये। अचानक यह कैसा परिवर्तन! शोक-ताप में साहब का दिमाग़ तो सही है न!

हिल की स्त्री ने चार्नक की छोटी लड़की कैथेरिना को चतुराई से उसके पास भेज दिया।

कैथेरिना बाप की छाती से चिपटकर रोने लगी।

और, जॉब चार्नक के आँसुओं का बांध टूट गया। बेटी को गले से लगाकर वह फुक्का फाड़कर रो उठा।

आखिर चार्नक की बीवी के लिए कब्र खोदी गयी। बैठकखाने से जो रास्ता पश्चिम की ओर आया है, उसी के दक्षिण। दीघी के दक्षिण-पश्चिम में क़ब्र बनी। गोरी फौज ने शोक की धुन बजायी। कॉफ़िन के पीछे-पीछे शोकमथित जुलूस। अँगरेज़, पुर्तगाली, खोजा, जेंटू, मूर—कितनी जाति के कितने लोग शव-यात्रा में शामिल हुए। कब्र की जगह के आसपास गाड़ी-पालकी की भीड़ लग गयी। सूतानूटी-कालिकता मानो उजड़कर यहीं जमा हो आया।

कब्र पर मिट्टी डाल दी गयी।

सुदर कहार ने जाने कहाँ से एक मुरगी लाकर चार्नक के हाथ मे दी। आँखों-आँखों मे कुछ सकेत। चार्नक ने सबको हैरत में डालकर कब्र पर उस मुरगी की बलि चढ़ायी।

यह क्या? बहुतों को अचरज हुआ।

सुदर ने कहा, 'साहब ने पंचपीर के लिए बलि दी है। धर्मनाश के डर से ब्राह्मण-लोग नही आये। पचपीर की दरगाह पर जात-धर्म का कोई सवाल नही है। पीर बीवी-दीदी की आत्मा को सद्गति देंगे।'

चैंपलेन खीझा। कालिकता के प्रधान अँगरेज़ का यह कैसा पैगन-विश्वास? परंतु शोकाकुल एजेंट से हुज्जत करने की हिम्मत किसी को नहीं पड़ी।

इसके बाद चार्नक के चरित्र में अनोखा परिवर्तन हो गया। वह रात-दिन गुमसुम बैठा रहता और पंच की शराब के प्याले-पर-प्याले खाली करता रहता। जीवन में तारतम्य ही नहीं रहा। कौंसिल के काम-काज में जी नहीं लगता। मौका पाकर चार्ल्स पेल कर्मचारियों में झगड़ा करा देता है। उनके कलह से चार्नक को अस्वाभाविक आनंद आने लगा है। कैप्टन हिल की बिलियर्ड-टेबिल की बाजी के लिए कैसा विवाद हुआ। दो अँगरेजों का डुएल होने वाला है। कैप्टन डोरिल ने चार्नक से इस द्वंद्व-युद्ध की खून-खराबी को रोकने के लिए कहा। चार्नक खामखा डोरिल पर बिगड़ उठा। लड़ाई न करके अँगरेज कायर होते जा रहे हैं। आपस में ही लड़ें—उसका अद्भुत तर्क।

कौंसिल के दूसरे अफसर एलिस ने शिकायत की। शहर की जमीन-जगह का बाँट-बंदोवस्त करना होता है। कोई नक़शा नहीं है, जो जहाँ पाता है, ज़मीन दखल करके घर बनाने लगता है। मिट्टी खोदकर पोखर-गढ़ा बनाता है। कम-से-कम कोठी-क़िले का नक़शा बनाकर पहले उपयुक्त जगह को घेर लेना चाहिए।

चार्नक ने एलिस की बात पर ध्यान नहीं दिया। वह प्याले-पर-प्याले पंच पीता गया। एजेंट का कोई निदेश न पाकर एलिस हताश होकर लौट गया।

ये कम्बख्त नेटिव लोग इतना चिल्लाते क्यों हैं? यों काम बिना चीं-चपड़ किये करते चले जायेंगे, पर चिल्लाना उनका स्वभाव है। चार्नक अब तक उनका चीत्कार सुनता आया है। आज लेकिन उसकी बरदाश्त से बाहर हो रहा है। रोको उन्हें। मगर स्वभाव कहाँ इस तरह बदलेगा? लगाओ कोड़े! कैप्टन हिल के संतरी कारण-अकारण उन पर कोड़े बरसाने लगे। चार्नक को फिर भी चैन नहीं। 'मेरे सामने पीटो।'

गोरे चार्नक के बँगले के सामने नेटिवों को कोड़े से पीटने लगे। पीड़ा से उन्हें चीखते हुए सुनकर, चार्नक ने अकेले बैठकर अपना खाना खत्म किया। आँखों में अस्वाभाविक चमक उभर आयी थी।

इन दिनों बच्चियाँ तक उसके पास फटकने का साहस नहीं करतीं। चार्नक का मिजाज कब ठीक है, कब बिगड़ा हुआ—समझना कठिन हो

गया है। लेकिन इतना खयाल है कि मिजाज प्रायः हर समय ही बिगड़ा रहता है। मेरी ने कहा था—'पापा, अब एलिजाबेथ का ब्याह कर दो।' चार्नक झुँझला उठा था, 'यह सब मुझसे नहीं होगा। तुम्हें जो अच्छा समझ में आये, करो।'

एक सुंदर कहार ही उसके पास रह पाता है। जॉब चार्नक चुपचाप बैठा रहता है। सुंदर भी। दोनों में से कोई भी बोलता नहीं।

बीवी की मृत्यु के बाद इसी तरह से एक वर्ष बीत गया। पादरियों ने गिरजे में प्रार्थनाएँ कीं। मगर जॉब चार्नक सुंदर को लेकर बीवी की कब्र पर गया और फिर मुरगी की बलि दे आया।

अपने अनियम और अपने अत्याचार से चार्नक की सेहत गिर गयी। एक अजीब आलस-सा उस पर छा गया। पालकी से चार्नक बैठकखाना के पीपल-तले पहुँचता। दास लोग तंबाकू ला देते। पेड़ तले बैठकर वह तंबाकू पीता रहता। सोचता रहता, और सोचता रहता। चिंता का कोई आदि-अंत नहीं है, कायदे-कानून की परवाह न करके जिंदगी-भर की खंड-खंड पुरानी छवियाँ मन में घूमने लगतीं। कुछ लोग कहने लगे, 'बीवी के शोक से साहब पागल हो गये हैं।' दुर्जनों का कहना था, 'बीवी की प्रेतनी साहब पर सवार हो गयी है। किसी दिन साहब की गरदन मरोड़कर तालाब में फेंक देगी।'

सुंदर कहार कहता, 'साहब, शरीर का खयाल कीजिए। यह वाहियात पच-पंच पीना छोड़िए। डॉक्टर-वैद्य को दिखाइये।'

चार्नक उसे डाँट-डपटकर भगा देता।

1692 का क्रिसमस निकट है। पर नये उपनिवेश में धूमधाम की कोई तैयारी नहीं। एजेंट चार्नक सख्त बीमार है। खाट पकड़ ली है। कैप्टन डोरिल ने ज़ोर-ज़बरदस्ती करके डॉक्टर को दिखाया था। डॉक्टर ने कोई भरोसा नहीं दिया। बेहद शराब पीने से जिगर खराब हो गया है। हृदय दुर्बल है। डॉक्टर दवा बता गया था। चार्नक ने दवा के प्याले को फेंककर तोड़ दिया। बेटियों ने दवा पीने को बड़ा निहोरा किया, पर कोई उसे

बूंद-भर दवा नहीं पिला सकी। जॉब चार्नक ने चिल्लाकर कहा, 'पंच ले आओ, पंच। उसी से अपनी ज्वाला बुझाऊँगा।'

डॉक्टर ने शराब पीने की मनाही कर रखी थी।

चार्नक ने डॉक्टर को गालियाँ दी। डॉक्टर ने तमतमाये हुए चेहरे से कहा, 'वरशिपफुल मिस्टर चार्नक, आपके दिन पूरे हो आये। अब दिन नहीं, घंटों का प्रश्न है। चाहे तो अपने कॉफ़िन का हुक्म दे दीजिये, क़ब्र के ऊपर के प्रस्तर फलक पर जो चाहते हों, गोदने को कह दीजिए।'

हठात् स्वर को नर्म करके चार्नक ने डॉक्टर को धन्यवाद दिया। 'डॉक्टर, आप देवदूत हैं, आपकी इस बात ने मुझे सात्वना दी है।'

डॉक्टर ने कहा, 'मैं साफ़ समझ रहा हूँ, आप आत्महत्या कर रहे हैं।'

'नहीं-नहीं डॉक्टर, मैं मुक्ति को गले लगा रहा हूँ। बहुत लड़ चुका हूँ; अब शांति चाहता हूँ। आयर, कहाँ है आयर?'

जामाता चार्ल्स आयर आया।

'माई बॉय,' चार्नक ने कहा, 'माई लविंग सन! मेरी कब्र के ऊपर के एपिटाफ़ के लिए ऑर्डर दे दो। उसमे सिर्फ जॉब लिख दो। सिर्फ जॉब। हिंदुस्तान आया था राइट ऑनरेबुल कंपनी का जॉब लेकर, मेरी क़ब्र पर केवल वही परिचय हो।'

'लेकिन सर,' आयर ने कहा, 'आप कालिकता के प्रतिष्ठाता हैं, इस शहर के जनक। मैं शपथ लेता हूँ, आपकी कब्र पर बहुत बडा स्मृति सौध बनवाऊँगा।'

'नहीं बेटे, मेरे जीर्ण शरीर पर नाहक ही खर्च मत करना। हाँ, मेरी प्रियतमा एंजेला के पास ही मेरी क़ब्र बनाना। उसी के पास।'

जॉब चार्नक पर एक आच्छन्नता-सी घिर आयी। उसकी आँखों से सामने के लोग धुल गये। किसी पुरानी याद में वह डूब गया।

ऐसी हालत में क्रिसमस का उत्सव कैसे हो?

जॉब चार्नक कुछ घड़ियों का ही मेहमान है, इस पर किसी को संदेह नहीं रहा। पीड़ा से घायल शरीर मौत से जूझने लगा। पर हृदय मानो मृत्यु को बुला रहा हो। अंतिम समय में चार्नक ने डॉक्टर-वैद्य, अपने सगे-

साथी—किसी को पास नहीं ग्राने दिया। केवल मुदर कहार ही पत्थर की मूरत वना उसके पायताने वैठा रहा।

कैप्टन डोरिल एक दिन कमरे मे गया। उसके विस्तर के पास कुरसी पर वैठकर वोला, 'वरशिपफुल सर, हमें वहुत ही दु.ख है कि ग्राप हम लोगों से विदा ले रहे हैं। पर ग्रापकी जगह पर कौन रहेगा ? ग्राप निदेश दीजिए।'

ग्रस्फुट स्वर से जॉव चार्नक ने कहा, 'निदेश मैं क्या दूं, निदेश देगा वह ऊपर वाला।'

ग्राकाश की ग्रोर इशारा करके वह ऊपर ताकने लगा।

ऊपरवाला, यानी ईश्वर, गॉड।

'फिर भी ग्राप कहिए सर, ग्राप किसे योग्य समझते हैं ?'

'वेयर्ड। उसका वाप मेरा उच्चाधिकारी था। वहुत सज्जन था। मुझे वहुत मानता था।'

'लेकिन उसकी उम्र वहुत कम है सर, वह क्या कालिकता का भार सम्हाल सकेगा ?'

'तो स्टैनली—या एलिस—या व्रेडाइल। हां, व्रेडाइल ही ठीक है।'

'कह क्या रहे हैं ग्राप ? व्रेडाइल ने तो ग्रापका सरेग्राम ग्रपमान किया था ?'

'नहीं-नहीं, वह काम का ग्रादमी है। चतुर है। पटना से कैसे भाग ग्राया ! ढाका में नवाब से जमा लिया। सबसे बडी बात कि साहस करके उसने मेरे मुंह पर मुझे भी सुना दिया। ऐसे साहसी ग्रादमी की ही जरूरत है।'

'ग्रौर ग्रापका जामाता चार्ल्स ग्रायर, उसे ग्राप ग्रपना योग्य उत्तराधिकारी नहीं मानते ?'

'ग्रायर वड़ा ग्रच्छा लड़का है, व्राइट वॉय है, मैं उसे वहुत मानता हूं,' चार्नक ने कहा, 'पर वह कालिकता का उत्तरदायित्व नहीं ले सकेगा। कैप्टन, मैं एक साहसी, चालाक, सख्त ग्रादमी को चाहता हूं, जो इस शहर को वसा सके। मुझसे नहीं हो सका, मुझसे यह कार्य पूरा नहीं हो सका।'

'ग्राप कालिकता के प्रतिष्ठाता हैं, कालिकता के जनक। घर-वाहर

झगड़ा-लडाई करके आपने ही हमारे यहाँ रहने का ठिकाना बनाया है ।'

'मैं फादर ऑफ कालिकता हूँ ! राजा ऑफ कालिकता !' चार्नक के गले में व्यंग्य था । 'न, मैं कालिकता से कुछ भी नही चाहता, कुछ भी नही । चाहता हूँ सिर्फ थोडी-सी ज़मीन अपनी प्रियतमा की क़ब्र के पास । बस । वही मेरी देह ज़मीदोज़ होगी । इतनी-सी ज़मीन ही मैं सदा के लिए चाहता हूँ । कैप्टन, कालिकता मुझे इतनी-सी ज़मीन तो दे देगा न !'

'कह क्या रहे है सर, सारा कालिकता तो आप ही के लिए है ।'

चार्नक ने और कुछ नही कहा। फिर आच्छन्न भाव ने उसे घेर लिया ।

फिर भी मृत्यु नही आयी । क्रिसमस पार हो गया । सन् 1693 आ गया । चार्नक के प्राणों ने फिर भी देह का त्याग नही किया । 10 जनवरी, 1693 । मौत की राह का मुसाफ़िर चार्नक चीख़ उठा, 'पंच दो, पंच । ऐ सूअर के बच्चे ! सबने मुझे बिना पिलाये मारने का मनसूबा गाँठ लिया है । लाओ, पंच ले आओ ।'

डॉक्टर की मनाही थी । पंच का प्याला किसी ने नही दिया । जॉब चार्नक का चिल्लाना और बढ गया । उसने ख़ुद ही पंच लाना चाहा । नही ला पाया । बिस्तर के पास गिर पड़ा । ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा । 'ये लोग मुझे शांति से मरने नही देंगे, ये मुझे प्यासा ही मार डालेंगे । पंच, ए मीअर पेग ऑफ पंच !'

बेटी-दामाद ने एक-दूसरे का मुँह देखा । नौकर-नौकरानी किंकर्त्तव्य-विमूढ । सुदर कहार ने जाने कहाँ से एक प्याले मे पंच लाकर जॉब चार्नक के हाथों में पकडा दिया ।

चार्नक के होठो पर कृतज्ञता की मुसकराहट खिल आयी । उसने सूखे होठों पर पंच के प्याले को उँडेल लिया । कुछ शराब तो मुँह के अंदर गयी, कुछ दोनो गालो से होकर नीचे बह गयी ।

प्याला खाली हो गया । खाली प्याले के आईने में देखने लगा चार्नक अपने मुँह की बिरूप-परछाई । अकेला, यहाँ बिलकुल अकेला—

कि पंच का पात्र गिरकर चूर-चूर हो गया । जॉब चार्नक का हाथ फिर कभी पंच का प्याला नही पकड़ सकेगा ।